



## भूमिका ।

सहृदय वंधुगण । आज मैं आप के करकमलोंमें यह तीसचौथीसीपूजा पाठ उपास्थित करता हूँ । इस ग्रंथ के रचयिता जैनसमाज के सुपरिचित काशीवासी कविवर वृंदावनदासजी हैं । जिनके रचित वृंदावनविलास, वर्तमान चौथीसी पाठ आदि अनेक ग्रंथ प्रचालित हैं इनका जीवनचरित "जैनग्रंथ रत्नाकरकार्यालय मुम्बई" द्वारा मुद्रित वृंदावनविलासमें छप चुका है इससिये इस संक्षिप्त भूमिका में फिर से इनका जीवन चरित देना उचित नहीं समझा । इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं कि जो कार्य लोकहित की दृष्टि से किया जाता है उसमें अधिक सफलता प्राप्त हुये बिना नहीं रहती । इससे कार्यकर्ता का अधिनाशी यश तो संसार में फैलता ही है पर लोकोपकार भी अपार होता है । जैन साहित्य की रचना भी लोकोपकार जानकर ही हुई है । अमृतचंद खरिने पचाध्यायी के प्रारंभ में बहुत ही ठीक कहा है—

अचान्तरद्गद्गुयंयपि भाव, कवेर्विशुद्धतर ।

नेतोस्तथापि वेदु साध्वी सर्वोपकारिणी बुद्धिः ॥

अर्थात् यद्यपि कवि ( ग्रंथकार ) के विशुद्धतर भाग ही किसी ग्रंथ की रचना के लिये प्रधान कारण हैं तो भी संपूर्ण प्राणियों के लिये हितकर विचार ग्रंथकार के परिणामों को अत्यंत विशुद्ध बनाने में कारण हैं, अर्थात् परोपकार करने वाली बुद्धि ही परिणाम संबंधी विशुद्धी की जननी है " लोकोपकार से प्रेरित होकर ही हमारे पूज्यपाद प्रात. स्मरणीय ऋषि महर्षियों ने और प्रौढ़ प्रतिभाशाली कवियों ने जैन साहित्य को सर्वोद्गुण्डर बनाया, पर दु'ख का विषय है कि हमारे उन आचार्यों की कृतिआ का जितना आदर और प्रचार होना चाहिये था, जैन समाजकी असावधानता और अदूरदर्शिता से उतना नहीं हुआ, हमारा बड़ा भारी संस्कृत साहित्य हमारे देखते २ नष्टप्राय, तथा लुप्तप्राय हो गया और होता चला जाता है और आगे भी यदि जिन वाणी माता के पुत्र इस और पूर्णतया लक्ष न देंगे तो एक दिन वह उपस्थित होगा जबकि उसका नामो-निशान भी सुनने में न आवेगा । पर खुसी की बात है कि कुछ दिन से समाज का ध्यान ग्रथ प्रकाशन की ओर भी आकर्षित हुआ है, दो एक संस्था भी इस ओर अग्रसर हुई हैं और कितने ही कार्यालयों ने भी इस ओर दृष्टि डाली है हम इन संस्था और कार्यालयों की स्थायी सफलता के अभिलाषी हैं ।

जो ग्रथ आज आप के सामने है वह एक पूजा पाठ है और छंदोबद्ध है तथा हिन्दी भाषा में है । कुछ लोग भाषा के ग्रंथों को अनावर की दृष्टि से देखते हैं, पर हमारी समझ में उनके विचार अममूलक ही कहना चाहिये । क्योंकि-

“ भाव अनेखे चाहिये भाषा कोऊ होय ”

वास्तव में तो कविता का महत्व कोई भाषा पर निर्भर नहीं है बल्कि भाव पर ही अधिक निर्भर है भाषा की रचना अच्छी होने पर भी, यदि उसमें उत्तम भाव नहीं है तो वह अनुपादेय होती है पर भावपूर्ण रचना किसी भाषा में क्यों न हो सहृदय पाठकों के लिये अवश्य ही वह रोचक होती है। इस ग्रंथ के विषय में भी यही बात युक्तियुक्त है, इसकी कविता ललित और सरस है। इस में शब्दों की सुंदरता के साथ २ भाव संकलन का समावेश कविता की सजीवता का परिचायक है।

इस ग्रंथ में जीवादितत्वों तथा मोक्षमार्ग का मुख्यतया विचार नहीं किया गया है पर ग्रथकारने इस ग्रंथ में भक्तिमार्ग, और उपासनामार्ग तथा अर्चना फल को सचित्र अंकित कर दिया है। आप इस ग्रंथ के किसी छंद को पढ़ जाइये आप के परिणामों में अवश्य ही एक अनिर्वचनीय फरक ही जायगा।

“ देव पूजा ” गृहस्थों के छह आवश्यक कर्मों में से प्रथम कर्तव्य है पर समय के परिवर्तन से दूसरे २ कर्तव्यों की तरह हमारा नित्य नैमित्तिक क्रिया-काण्ड भी अस्त प्राय हो गया है। यह बात हमारे लिये कितनी लज्जाजनक है कि जिन जिनेंद्र भगवान की पूजा के लिये अतुलविभूतियुक्त देवेन्द्र भी हमें शह उत्सुक रहते हैं उन्हीं जिनेंद्र भगवान की पूजा और प्रशाल करने के लिये



पुजारियों को रखना पड़ता है। इससे बढ़कर हमारी शिथिलता का क्या उदाहरण हो सकता है।

नित्य नियमादि पूजा पाठ तो सब जगह मिलते हैं और वे सुदृष्ट भी हो चुके हैं पर ऐसे २ पूजा पाठ प्रायः सब जगह नहीं पाये जाते हैं इसलिये इनके प्राप्त करने में थड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती है इन्हीं सब बातों को सोचकर भाई दुर्लबंजी ने इसे सुदृष्ट कराकर इसकी आवश्यकता की पूर्ति की। ग्रथ का संपादन मैंने भरसक सावधानता पूर्वक किया है, इसके संबंध में मे इतना और कह देना आवश्यक समझता हूँ कि "इसका संपादन उसी पुस्तक पर से किया गया है जिसे कविवर ने स्वयं अपने हाथ से लिखा था"। तो भी इसमें प्रमादबश या दृष्टिदोषसे कोई दोष रह गया हो तो विश्व पाठक मुझे क्षमा करेंगे। क्योंकि—

गच्छतस्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः

हसन्ति दुर्जनास्तत्र क्षमो दधति सज्जना ।

३१-१-१७

बनारस

जैनसमाज का दास-

मुन्नालाल जैन

मालर्योन [ सागर ]



नमः सिद्धेभ्यः

काशी निवासी कविधर शुदावनदासजी कृत-

# तीसचौवीसी पूजा ।



प्रथम मंगलाचरन ।

दोहा-सिद्धसदन सुखददन जिन, मदनकदन अभिराम ।  
विघ्नहरन मंगलकरन, लुम पद सदा प्रणाम ॥१॥  
गत आगत वरतत सकल, तीर्थकर जगदीश ।  
भरतैरावत पंच गिरि, नमों सातसै वीस ॥२॥

अथ मूलश्लोक अनुसार मंगलम् ।

दोहा-भवभयते भयभीत है, शरणगही प्रसु आय ।

उदाशीन हौ भोगतं, यह लखि परसौ पाय ॥३॥

अथ नामावलिस्तोत्र लिख्यते ।

( छद्द तामरस तथा चण्डी तथा नयमालिनी मात्रा १६ ) यथा—

तीर्थकर जिनधीश नमस्ते । जिन विभु शुद्ध मतीश नमस्ते ।

अकलंको महवोध नमस्ते । जिष्णु केवली शोध नमस्ते ॥१॥

महानाद महनन्द नमस्ते । विदु उत्तम चिदुनद नमस्ते ।

स्वज्ञ स्वयं प्रसु विष्णु नमस्ते । विद्या ब्रह्म महिष्णु नमस्ते ॥२॥

कामोमेश अनत नमस्ते । शुभ शकर सुगतत नमस्ते ।

भीम अर्द्धनारीश नमस्ते । अंतकजीति धनीश नमस्ते ॥३॥

कर्त्ता हर्त्ता कर्म नमस्ते । स्वय ज्योति जिन परम नमस्ते ।

केवलदृग केवली नमस्ते । ईशश्रुत वंच्छली नमस्ते ॥४॥

सृष्ट्युजय सुखचार नमस्ते । वेदज्ञानि श्रुतिपार नमस्ते ।

वेदकार शुचिधीश नमस्ते । हरि बृहस्पति सदीश नमस्ते ॥५॥  
 चन्द्रकलाधर ज्येष्ठ नमस्ते । ईशानो वृषभेष्ट नमस्ते ।  
 द्वादशात्म श्रीमान नमस्ते । विद्युःसुधी जिनवान नमस्ते ।  
 जै क्रोविद श्रीकंठ नमस्ते । आत्मभू निरगथ नमस्ते ।  
 रज्यभूव श्रेष्ठाथ नमस्ते । जै जै जै जैदाय नमस्ते ॥७॥  
 कमलाशन ध्येभूव नमस्ते । गौतमित्त माधूव नमस्ते ॥  
 स्वामिबास वसुलांछ नमस्ते । सुग निरंजन निःक्रांछ नमस्ते ॥  
 निरअम्बर निररेक नमस्ते । निकल त्रिमल शान्तिक नमस्ते ।  
 भववर्जित सुमतीय नमस्ते । चेतन चिद्रूपीय नमस्ते ॥  
 महउत्तमचेता सु नमस्ते । विदमान्यो नेता सु नमस्ते  
 निगुण अकरता धीर नमस्ते । मत्सर मनमथचोर

१ सुख देने वाले । २ भूतकाल सम्बन्धी । ३ भक्ति  
 कालके । ५ महाबोध । ६ क्रमोंका जितने वाला ।  
 जितने वाली । ९ वासस्य युक्त ।

शोद्धिभर्तु वृषकर्तु नमस्ते । धर्मचक्रि वृषभर्तु नमस्ते ।  
 बीतराग, निरहार नमस्ते । मूलभागकर्रतार नमस्ते ॥१॥  
 त्रिधाज्ञान सिद्धांत नमस्ते । शुभयः स्याद्वादांत नमस्ते ।  
 विधिवेत्ता वादीश नमस्ते । द्वैताद्वैत मुनीश नमस्ते ॥२॥  
 सुनयोत्तर बोधक्ष नमस्ते । दो प्रमाण नय वक्ष नमस्ते ।  
 ऐकांतिक मतदार नमस्ते । सकल पाप परिहार नमस्ते ॥३॥  
 धचा-जो नर तिरकालं नामविशालं यह शत आठ सुपाठ करै ।  
 सो जिन पदसारं लहि अविकारं शुक्त भुक्त जूत मुक्त वरै ॥४॥

इति पठित्वा प्रणामं कृत्वा मंडलायामे मध्यभागे स्थापितकमलास्थोपरि-  
 पुष्पञ्जलिं क्षपेत् ।

अथ प्रथमजम्बूद्वीपे पूर्वापरविदेहे सीमंधर-  
 जुगमंधर-बाहु-सुबाहु-चतुर्विद्यमान-  
 तीर्थकरपूजा प्रारभ्यते ।

दोहा-सुर सुरपति पूजत सदा, विहरमान जिनचार ।

आदि मेरु सुविदेह में, थापौं भव भय टार ॥१॥

ॐ ह्रीं सीमंधरादिचत्वारः जिनाः अत्रात्रतरत अवतरत सर्वौपद् ।

ॐ ह्रीं सीमंधरादिचत्वारः जिनाः अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं सीमंधरादिचत्वारः जिनाः अत्र सम सन्निहिताः भवंत भवत वपद् ।

तोष्टक छंद--

जल उज्जल निर्झल गंध मई । प्रसु अग्र समग्र सुधार दई ॥  
गिरिआदिय विद्य विदेहनिमें । जजिहौं जिनचारिसु गेहनिमें ॥१॥

ॐ ह्रीं सीमंधर-शुगंधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय  
जल निर्वपामि [ इति स्वाहा ] ॥ ? ॥

हरिचंदन केदलिनंदनलै । पद पूजनतैं दुख दंद टलै ॥ गिरि ० ॥२॥

ॐ ह्रीं सीमंधर-शुगंधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थकरेभ्यो भवतापविनाशनाय  
चन्दनं निर्वपामि ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीयुगमंधराय अर्घं निर्वपामि ॥ २ ॥

सीतोदा दच्छिन गिरि आद । बाहुयैरं मृगलच्छन पाद ।

विजया मातु पिता सुग्रीव । जज्ञौ सुसीमा नगर अतीव ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सीतोदा उत्तर गिरि आद । श्री सुबाहु कपिलच्छ अवाद ।

निशितिलराय सुनंदामात । जज्ञौ अजोत्था जगर्विख्यात ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुबाहुरुस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥ ४ ॥

पूरन अर्घं वनायो रुष्ट । जज्ञौ चरन चहुंजिनगुन पुष्ट ।

मिटै विध्न दुख दारिद दुष्ट । प्रगटै परमं शर्मं शिव सुष्ट ॥

ॐ ह्रीं सीमधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थकरेभ्यः पूर्णाधिं निर्वपामि ॥ ५ ॥

अथ जयमाला-

छदरथोद्धता ( वर्ण ११ )

तीरथेश गुणधेश देवही । इंदं चद गन इंदं सेवही ॥

वर्तमान सुविदेह वासकी । आदिमेरु जयमाल तासकी ॥१॥

छंद पद्मजी ( लघ्वत मात्रा ( १६ )

जय श्रीमंथर जुगमंधरेश । जय बाहु सुबाहु तीरथेश ॥  
 गिरि प्रथम पुंज्व पच्छिम बिदेह । ता माहि विराजतु है अवेह ॥२॥  
 धनु पंच शतक तन उच्च सुच्च । धिति कोटि पुंज्वकी है समुच्च ।  
 है केवलज्ञान विराजमान । जुतसमवशरन रचना महान ॥३॥  
 सुरनर खग पूजत चरन आन । गुन गान करत बहु भगत ठान ।  
 जहै बानी खिरत त्रिकाल सार । भवि सुनत लहत आनैद अपार ॥४॥  
 जहै जिन गुनमं मुनि होय मग्न । शिवसम्पति लेकर कर्मभग्न ।  
 शिव नगर डगर नित चलत जत्र । है सकल शलाकं पुरुष तत्र ॥५॥  
 उतकृष्ट काल चौथो सदीव । जहै वरततु है आनैद अतीव ।  
 प्रसु करत बिहार जहौ पुनीत । जुत समवशरन चवघाति जीत ॥६॥  
 गनधर आदिक चवसंघजुक्त । सो धन्यक्षेत्र वैदेह शुक्त ।  
 मै जाचतु हौं तुमसौं दयाल । भव सागरतें मोकौं निकाल ॥७॥



मति ढीलकरो करुनानिधान । यह अरज हमारी सुनछु कान ।  
संसार कष्ट चकचूर चूर । आनंद अनूपम पूर पूर ॥८॥

घत्ताछद—

जय श्री जिननायक, गुनगनछायक, बिम्बविनायक, हौ सबही ।  
“वृंदावन” ध्यावत, नितयुनगावत, वांछितपावतु है अबही ॥

ॐ ही सीमधर-युगमधर-बाहु-सुबाहु-तीर्थकरेश्यो महार्घ निर्वपामि ।

दोहा-प्रथम सुदर्शन मेरुके, विहरमान जिनचार ।

जो पूजै सो सकल सुख, लहै अनेक प्रकार ॥

इत्याशीर्वादः ( पुष्पांजलिक्षपत् )

इति प्रथममेरु पूजा समाप्ता ॥१॥

अथ जम्बूदीपभरतक्षेत्रस्थवर्तमानचतुर्विंशति ।

पूजा प्रारभ्यते ।

छंद लोहतरंग ( वर्ण ?? )

श्रीवृषभादि जिनेसुर सारं । चोविस राजतु हें अविकारं ।  
शापतु हों पदपूजन हेता । दुःख विनाशि सैं सुख देता ॥

ॐ हों श्रीवृषभादिर्वर्चमानचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्रावतर अतर सर्वोपद् ।

ॐ हों श्रीवृषभादिर्वर्चमानचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र तिष्ठ व. ठः

ॐ हों श्रीवृषभादिर्वर्चमानचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव

भव वपद् स्वाहा ।

अष्टक ।

छंद लोहतरंग-( वर्ण ?? )

नीरग हीर भरी हिमभारी । धार करों त्रयताप निवारी ।  
आदि गिरिंद जिनिंद जितवा । वर्त्तत भर्त्त करों तसु सेवा ॥१॥

ॐ हों श्रीवृषभादिर्वर्चमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥ ? ॥

चन्दन केशर कदली नंदा लैयसिपूजिनशै दुखदंदा ॥आदि०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीष्टपमादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥ २ ॥

तंदुलमंडुलपुंजघरीजै । सुंदर सार अखै सुख लीजै । आदि० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीष्टपमादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥ ३ ॥

केतुकि आदि प्रसून चढ़ावो । शूलनिमूल सुशील बढ़ावो आ० ॥

ॐ ह्रीं श्रीष्टपमादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥ ४ ॥

नेवज सुंदर अर्पण कजि । हे प्रभु मोहि निराकुल दीजे । आदि०

ॐ ह्रीं श्री ष्टपमादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

दीप उदोत करुं तुम आगै । नाशिविमोह सुबोध सु जागै । आदि०

ॐ ह्रीं श्री ष्टपमादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥ ६ ॥

धूप हुताशन माहिं उखेवो । कर्मजराय निजातम बेवो । आदि० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं वृषपमादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥ ७ ॥

१ उज्वल । २ शूल । ३ जिसमें आकुलता नहीं ऐसा मोक्ष ।

भेटधरों फल प्रोसुकलाई । द्यो शिवनश्रतनी ठकुराई ॥ आदि० ॥

ॐ ही श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥ ८ ॥

अर्घ वनायचद्रावहुं स्वामी । वेगकरो हमकों शिवगामी । आदि० ॥ ९ ॥

ॐ ही श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥ ९ ॥

प्रत्येक अर्थ ।

रूपचौपाई ॥ मात्रा १६ ॥

नाभिनेंद वृषलच्छन धारी । कनक वरन कौशिल अवतारी ।

पांच शतक धनु तुंगशरीरा । जजौं भरत वसतत यह धीरा ॥ १॥

ॐ ही श्री वृषभाय अर्घं निर्वपामि ॥ १ ॥

विजय मातु सुत सुवरन वरना । तनुधनु साढचार शतधरना ।

वंश इक्ष्वाकु अजित गज चरना । जजौं भरत यह आनेंद भनारा ॥

ॐ ही श्री अजिताय अर्घं निर्वपामि ॥ २ ॥

श्रावस्ती दिद्रथके नंदा । चार शतक धनु कनक अमंदा ।

संभव वाजिचिहन पग धरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ३  
 ॐ ह्रीं श्री संभवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सिद्धाश्रय सुत कौशल्यनी । कपिलच्छन अभिनंदन तनी ॥  
 वंशीक्ष्वाकु कनक तनु वरना । जजौं भरत यह भवभय हरना ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ४ ॥

वंश इक्ष्वाकु मेघशयनंदन । कोकचिहन तन कनक अमंदन ।  
 सुमति तीनशत तनुयनु धरना । जजौं भरत यह त्रिभुवन शरना ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

धारन पिता सुक्षीमा माता । कौशांबी छत्रि पद्म विख्याता ।  
 धनुषतुग ढाईसौ वरना । जजौं भरत यह भवसररना ॥६॥  
 ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ ६ ॥

१ अनुभवन करों, जानों । २ जीव जन्तु रहित-शुद्ध । ३ अजोध्या ।

सुपरतिष्ठ 'पृथिवीदे' माय । हस्ति वरन दो सौ धनुकाय ॥  
जिनसुपास काशी अवतरना । जजौ भरत यह अघअरि हरना । ७।

ॐ ह्रीं श्रीसुपाश्वनाथाय अर्घ्य ॥ ७ ॥

मातु लच्छमना पितु महसेन । वंद चंद तन दुति सुखदेन ॥  
डेढु शतक धनु तनु शशिशि चरना । जजौ भरत यह भवतप हरना ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनाय अर्घ्यं निर्विषामि ॥ ८ ॥

नृप सुग्रीव रमासुत सुन्दर । कुंदवरन तन विनत पुरंदर ॥  
पुष्पदंत तनु धनु शत वरना । जजौ भरत यह आनंद भरना ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्ताय अर्घ्य ॥ ९ ॥

राजभद्रपुर दिटरथ नंदन । नैषेचाप तन दुति अभिनंदन ॥  
शीतल चिन्ह कल्प तरु चरना । जजौ भरत कह दारिद्र द्रना १०

ॐ ह्रीं श्रीशीतलाय अर्घ्यं ॥ १० ॥

विष्णुतात विष्णुश्रीमाता । तनकन चाप असी विल्याता ॥  
 श्रेय सिंधपुर पातक हरना । जजौं भरत यह विपत विदरना ॥११॥  
 ॐ ही श्रीश्र्यांशनाथाय अर्घ ॥११॥

चंपापुर वसुपूज नरेशुर । बासुपूज जिन जजत सुरेशुर ॥  
 सत्तर धनुतनु मानिक वरना । जजौं भरत यह आतम तरना ॥१२॥  
 ॐ ही श्रीवासुपूजनाथाय अर्घ ॥१२॥

नगर कंपिला सौर्य नरेश । कनक काय धनु साठ धेश ॥  
 विमल बराह चिहन पगधरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ॥१३॥  
 ॐ ही श्रीविमलाय अर्घ निर्वपामि ॥१३॥

सिंहसेन नृप सुवृत माय । नगर अजोध्या सुवरन काय ॥  
 धनु पंचास अनंत मुख धरना । जजौं भरत यह भवदधि तरना ॥१४॥  
 ॐ ही श्रीअनंतनाथाय अर्घ निर्वपामि ॥१४॥

भानुपिता सुप्रभदे मात । रतनपुत्री जञ्चिन्द गात ॥

धनु पैताल धरम तनु धरना । जजौ भरत यह तारन तरना ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

विथसेन ऐरादे मात । जनमें शांति नागपुर ख्यात ।

चालिस धनु तन त्रय पद धरना । जजौ भरत यह आनंद भरना ॥

ॐ ह्रीं श्रीगातिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

शूरसेन सुत मित्रा माय । छाग चिन्ह धनु पैतिस काय ।

कुंथ हस्तनापुर कनवरना । जजौ भरत यह त्रिभुवन शरना ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तात सुदरसन प्रभवति माता । हस्तनाग कुखंश विख्याता ।

तीसचाप तन अर अरिहरना । जजौ भरत यह आनंद भरना ॥१८॥

१ सोना । २ हस्तनागपुर ।



ॐ ही श्री अरहनाथाय अर्घं निर्वणामि ॥१८॥

पद्मावति तिय कुभ नरेसुर । मिथुलेसुर श्रीमल्लिजिनेसुर ।

धनुपचीस तन हाईक वरना । जजौ भरत यह मनमल्लहरना ॥१९॥

ॐ ही श्री मल्लिनाथाय अर्घं निर्वणामि १९॥

राजग्रह वप्रासुत सुन्दर । श्रीसुनिसुवृत धरम धुरंधर ।

वीसत्ताप कच्छप पग धरना । जजौ भरत यह आनंद भरना ॥२०॥

ॐ ही श्री सुनिसुवतनाथाय अर्घं निर्वणामि ॥२०॥

मिथुल नगर विजयाशय नंदा । नमि सुहेम तन आनंद कंदा ।

कमल विह्वन पंद्रह धनुवरना । जजौ भरत यह आनंद भरना ॥२१॥

ॐ ही श्री नमिनाथाय अर्घं निर्वणामि ॥२१॥

समुदविजय शिवदेवी नंदन । नेमि नीलतन शंख सुछंदन ॥

तन धनु देश द्वागवति बरना । जजौ भरत यह तालन तरना ॥२२॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥  
 विश्वसेन वामादे जननी । तनुदुति हस्ति हाथ नव गननी ॥  
 कार्शी पार्श्वनाथ अंबतरना । जजौं भरत यह आनंद भरना ॥२३॥  
 ॐ ह्रीं श्री पार्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥  
 सिद्धरथ त्रिशलादे माता । कुडनग्र हरि चिहन विख्याता ॥  
 सातहाथ तन सनमति धरना । जजौं भरत यह तारन तरना ॥२४॥

ॐ ह्रीं श्री बद्धमानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥  
 दोहा--वृषभादिक चौबीस जिन, वरतमान यहि थान ।

पूजौं पूरन अरघसौं, देत विमल कल्यान ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरान्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ।

जयमाला ।

दोहा--गुन अनंत भगवंत तुव, को करि सकै वखान ।

१ तथैकर, चक्रवर्ती और कामदेव । २ हस्तनागपुर । ३-४ सोना ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर संवौपट् ।  
 ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।  
 ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितभव  
 भव वपट् स्वाहा ॥

अष्टक ।

मोतीदाम छद्-

लिया भर झारिय निर्मल नीर । करौं त्रयधार हरो भवपीर ॥  
 सुदर्शन भर्त्तनें गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो, जन्मजरामृत्युविनाशनाय  
 जलं निर्वपामि ।

सुगंध धँसाय पवित्र अपार । चढ़ाय हरो भवताप विकार ॥  
 सुदर्शन भर्त्तने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेवा॥२॥  
 ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनभ्यो सुगन्धं ॥२॥

अखंडित् तंदुल पुंज धरंत । सवै दुख दरिद्र चूरिकरंत ॥  
सुदर्शन भर्त्तने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥३॥

ॐ हीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अस्य ॥३॥

प्रसून सुदुम आदिअनेक । चढाय हरों सरसूल तितेक ॥  
सुदर्शन भर्त्तने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥४॥

ॐ हीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पुष्यं ॥४॥

छहोस पूरति नेवज लाय । चढावत रोग छुया नशिजाय ॥  
सुदर्शन भर्त्तने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥५॥

ॐ हीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं ॥५॥

प्रकाशित दीप धरों द्विग लेय । प्रभूमोहि ज्ञानसु केवल देय ॥  
सुदर्शन भर्त्तने गत एव । जजौं नित चौविस श्रीजिनदेव ॥६॥

ॐ हीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं ॥६॥

सुखेवत धूप सुगंधित पर्प । ततच्छन दुष्ट जरे वसुकर्म ॥  
सुदर्शन भर्त्तने गत एव । जज्ञौ नित चौविस श्रीजिनदेव ॥७७

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं ॥७७॥

अदोषितलेफलसुंदरएव । धरोढिगद्यौशिवहे जिनदेवलं सुदर्शन०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरताती तचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं ॥८॥

चद्वावतअर्घप्रमोदसमेत । अनर्घ पदस्थततच्छनदेत सुदर्शन०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभरतार्तातचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं ॥९॥

अथ प्रत्येकार्यं ।

पाईता छंद-( मात्रा १४)

निखान जिनेसुर ध्यावों । निखान सुथानक पावों ॥

यह जंबूभारत सुंदर । नितर्तित जजंति पुंंदर ॥

ॐ ह्रीं श्रीनिर्वाणाय अर्घं निर्वाणामि ॥१॥

भवसागर तारन हारे । जिन सागर परम उदारे । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसागराय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नित साधु सुध्यावतजाकौ । जिन साधु नमो नित ताकौ । यह

ॐ ह्रीं श्री महासाधवे अर्घं निर्वपामि ॥३॥

मल वजित श्री विमलेश्या । नित दायक सौख्य असेशा । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री विमलप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

शुद्धाभ विशुद्ध सरूपी । मति शुद्ध करै शिव भूपी । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धाभाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

जुग श्रीधर श्रीधर स्वामी । भवि श्रीकरतार नमामी । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्रीधराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

सब जीव मित्रता दाता । जिन दत्तनाथ विख्याता । यह० ॥

ॐ ह्रीं श्रीदत्तनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

१ अतीत-भूतकाल सम्बन्धी ।

अमलप्रभ नाम जिनेशा । मल नाश क्रियोजुअसेशा । यह० ॥

ॐ ही श्री अमलप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

जग जंतु अनंत उधारे । प्रभु उद्धरनाथ हमारे । यह० ॥

ॐ ही श्री उद्धराय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

कर्मधन भस्म करैया । जिन अग्निनाथ सुखदेया । यह० ॥

ॐ ही श्री अग्निनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

वरछायक संजम दाता ! जिन संजमनाथ विख्याता । यह० ॥

ॐ ही श्री संजमाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

सुर पुष्पांजलि पद देवै । जिन पुष्पांजलिकों सेवै ॥ यह० ॥

ॐ ही पुष्पाजलिने अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

नाना गुन गन भंडारी । शिव गुण अधिपति भौतारी । यह० ॥

ॐ ही शिवगुणाधिपाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

अरि चुरे सुत उतसाहा । शिवधाम लहे उतसाहा । यह०॥

ॐ ही उतसाहाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

जिन ज्ञान विज्ञान बताई । जिन ज्ञाननेत्र सुखदाई । यह० ॥

ॐ ही ज्ञाननेत्रायर्घं निर्वपामि ॥१५॥

सुत परमेश्वर्य विराजे । परमेशुर श्री जिनराजे । यह० ॥

ॐ ही श्री परमेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

विमलेशुरकों उर ध्यावों । गुन निर्मल आतम पावों । यह० ॥

ॐ ही श्री विमलेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

गुन सकल जयास्थ धारी । जय श्रीजयार्थ भव तरी । यह०॥

ॐ ही श्री यथार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

जसरास लोकमेंह ह्ययो । मुजशोधर देव कहायो । यह० ॥

ॐ ही श्री यशोधराय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥



कालिकर्म कलंकानि चूरे । जिनकृष्ण स्वच्छगुनपूरे । यह० ॥  
 ॐ ही श्रीकृष्णाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

वर केवल सन्मति दाता । जिन ज्ञानमती जगताता । यह० ॥

ॐ ही श्रीमतिज्ञानाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सुविशुद्धमती जिननामी । सुविशुद्धिद दायक स्वामी । यह० ॥

ॐ ही श्रीविशुद्धमतये अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

श्री भद्रनाम जिन जनों । गुनसार्थीक उर आनों । यह० ॥

ॐ ही श्री भदाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

शुभ शांति करै जगमाहीं । जिन शांति सुशान्ति दाहीं । यह० ॥

ॐ ही श्री शान्तिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

सोऽथा-मेरु सुदरशन सार, भरततीत चौबीस जिन ।

जजौ भरत भरतार, पूरन आनंद दीजिये ॥

१ चारों प्रकार के देव ।

ॐ ही श्री भरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पूर्णाधिं निर्वपामि ।

जयमाला ।

लोलतरंग छंद-

श्रीमततीत जिनेसुर देवा । सेवतु है सुर चारिउ भेवा ॥  
जम्बुव भरततीत विशाला । तासतनी जयमाल रसाळा ॥१॥

तोटक छन्द--

निरवानकरं निरवान जिनं । सुख सागर सागर नाम गिनं ॥  
नित साधुनतं जिन साधुमहा । विमलप्रभ भाव पुनीत लहा ॥२॥  
जिन शुद्धअभा भवदाघ हर । जिन श्रीधर नित्य सुश्रीयकर ॥  
जिनदत्त सदा शुभ कर्म करै । अमल प्रभ कर्म कलक हरै ॥३॥  
जगजंतु उधारन उद्धरनं । अरि इंधन अग्नि जिनं शरन ॥  
जिन संजम संजम दायक है । पुहपांजलिजी शिवलायक है ॥४॥  
शिवराज गणाधिप सुंदर है । उतसाह नमत पुरंदर है ॥  
जिन ज्ञान सुनैत अमंदित है । परमसुर सत सुर बंदित है ॥५॥

। चंदन केदलीनिंदन सीर । घासिकर जजत हस्त भवपीर ॥  
हरो भव पीर । जै जै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ही जम्बूभरतभावीजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥

शुक्त सुक्त जनु तंदुल हीर । पुंज धरत दारिद दुख चीर ॥  
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ही जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥

सुमन सुमन सम सुमन धेरत । समर सूत निरमूलन हेत ॥  
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ही जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

नव्य गव्य रसरंजित सार । जजत चरन प्रशु आकुलटार ।  
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ ही जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

दीपकं जोत उदोत करंत । आरति करत मोहतम श्रंत ॥  
हरो भव पीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ हीं जम्बूभरतभावीजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

खेवों धूप उड़े यह धूम । करत भरम जरि उड़े सुधूम ॥  
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ हीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

प्राशुक फल कल वर्जित लाय । हरत विघन जिनचरन चढ़ाय ॥  
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ हीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं निर्वपामि ॥८॥

परम पुनीत थरों दिग अर्थ । वेग देहु पद मोहि अनर्थ ॥  
हरो भवपीर । जैजै जिनवर गुन गंभीर ॥ जम्बूभरतभ० ।

ॐ हीं जम्बूभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्थं निर्वपामि ॥९॥

प्रत्येक अर्घ ।

मोतीदाम छद् (वर्ण १०)

समान्वित पद्म उभै परस्कार । महावर पद्म जिनेगुर सार ॥

अनागत जम्बुव भारत थान । जजों जिन भव्य सरोरुह भान ॥

ॐ ह्रीं महापद्माय अर्घं निर्वापामि ॥१॥

सैवै सुर सेवत मूरजिनिद । अतस्त्र्यच्छपातमकों दिनं इंद ॥

अनागत जम्बुव भारत थान । जजों जिन भव्य सरोरुह भान ॥

ॐ ह्रीं मूरुने अर्घं निर्वापामि ॥२॥

प्रभा सुवि मंडित सुप्रभ देव । प्रवोधक भव्य भजो वसु भेव ॥

अनागत जम्बुव भारत थान । जजों जिन भव्य सरोरुह भान ॥

ॐ ह्रीं सुप्रभाय अर्घं निर्वापामि ॥३॥

१ अतस्त्र्यच्छपातमकों अं १कारनां । २ सूर्ये ।

स्वयंप्रभ देव स्वयं मतिवंत । स्वयं सरवज्ञ स्वयं भगवंत ॥  
अनागत जम्बुव भारत थान । जजों जिन भव्य सरोरुह मान ॥

ॐ स्वयंप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

छद् तोटक ( प्रस्तार० ॥५॥॥५॥॥५॥ एवं वर्ण १२ )

सर्वायुध आयुध ज्ञान धरो । अरि कर्म ततच्छन चूरि करे ॥  
यह जंबुव भारत आगत है । तिनकौं जजेंतें मन पागत है ॥

ॐ ही सर्वायुधाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

जगदेव जगत्रय नायक हैं । त्रिजगद्गुरुजी सब लायक हैं ॥यह०

ॐ ही जगदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

विसदोदय देव प्रनाम करो । विसदोदय दायक ध्यान धरो ॥यह०

ॐ ही उदयदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

रविकोटिप्रभा जहँलाजलुहै । सुप्रभा जिनकी छवि छजलुहै ॥यह०

ॐ ही प्रभादेवाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

उदकेस जिनेश देयाकित हैं। सुमतेस मेहेश निशांकित हैं॥यह०  
ॐ ही उदकाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

जिन प्रश्न सुकीरत ध्यान धरों। सब संशय भर्म प्रहारकरों॥यह०॥  
ॐ ह्रीं प्रश्नकीर्तये अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

जमुकीरतसार जगत्त उदै। उदये वरकीरत नाम लहै॥यह०  
ॐ ही उदयकीर्तये अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जय वर्तत जास त्रिलोक त्रिषं। जयवर्त जिनेश नमामि त्रिषं॥यह०  
ॐ ह्रीं जयकीर्तये अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

छद् रथोद्धता (मस्तार० ऽऽऽ॥ऽऽऽऽ वर्ण ११) यथा—

ज्ञान केवल प्रकाश के सही। पूर्ण बुद्धि भवितारि हैं यही ॥

१ इस पूजा में ११ वें तर्धिकर उदयकीर्ति हे सोसंस्कृतपाठमें यह नाम है।  
इसके बदले में मस्कृत पाठमें १६ वें तीर्थकर निर्मलजी अधिकार हैं।

पूजि हों सुजिन होनहार हैं । जंबु भारत विषैं उदार हैं ॥

ॐ ही पूर्णबुद्धाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥१३॥

निःकषाय विषयादि तीत हैं। निःकषाय निरुद्धं मीत हैं ॥पूजिहों०

ॐ ही निःकषयाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥१४॥

कर्म भर्म मल छै अशेष हैं । सो जिनेश विमले सुभंस हैं ॥पूजिहों०

ॐ ही विमलप्रभाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥१५॥

जासकौ अतुलै प्रभावना । सो जिनंद बहुलेश ध्यावना ॥पूजिहों०

ॐ ही बहुलाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥१६॥

हे विचित्र त्रय गुप्त जासके । चित्रगुप्त नमि पादतासके ॥ पूजिहों०

ॐ चित्रगुप्ताय अर्घ्यं निर्वापामि ॥१७॥

हेसमाधि सुखगुप्त सारजी।सो समाधि जिन गुप्त धारजी ॥पूजिहों०

ॐ ही समाधिगुप्ताय अर्घ्यं निर्वापामि ॥१८॥

श्री स्वयंभुव प्रनाम में करों । तासके सुगुन दामही धरों ॥पूजि हों०

ॐ ही श्री स्वयंभुवे अर्घ्यं निर्वापामि ॥१९॥



जिनके कल्याणक माहि आय । सुर चतुर निकायक जज्ञै पाय ॥५॥  
 मैं वदतु हों मन वचन काय । पूजों पद आठो दरवलाय ॥  
 तुम भगत करों नाटक मचाय । द्विम द्विम द्विम मादल बजाय ६  
 तुम तारन तरन हरन कलेश । जै जै जै जै जै जै जै जै जै जै जै जै ॥  
 भव सकट दूर करो दयाल । “वृंदावन” वंदतु हैं त्रिकाल ॥७॥

घचाउद-

जै मेरु सुदरशन, आनंदवर्पन, भरत अनागत देवरा ।  
 जिननाथ नमामिय, चिरधरामिय, ज्यों शिवपामिय विधनहरा ॥

ॐ ही जनुभरतभावीजिनसमूहेभ्यो महार्घ निर्वपामि ॥

सोरावा-जो पूजै मनलाय, जंबूभरत भाविष्य जिन ।

सो भंवि सुरपुर पाय, अमल अचल शिवपुरलहै ॥१॥

इत्याशीर्वादः ।

इति जंबूवीपभरतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ॥३॥

अथ जंबूद्वीपैरावतवर्तमानचतुर्विंशति  
जिन पूजा लिख्यते ।

वसंततिलका छंद-( वर्ण १३ )

जंबू सुउत्तरविषंवरक्षेत्र छाजे । ऐरावतख्यतितवर्त्तत श्रीसमाजे ।  
श्रीत्रालचन्द्र जिन आदि समस्त देवा ।

थापौं यहाँ त्रिविध नाथ करों सु सेवा ॥

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्रात्रतरत अत्रत सर्वौपद् ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ङःः ।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावते वर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिताः भवत भवत वपद्

अथाष्टक ।

नाराच छंद-( वर्ण २६ )

सुजान्द्वीय वारि हेमभासिं भरों सही ।  
त्रिधार देत हों प्रभू हरो त्रिरोग सो गही ।

जजामि जंबू उत्तरे जिनेश वर्त्तमान जी ।

सुरेश औगनेश जासु धारत सुभ्यानजी ॥  
ॐ ही जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥  
कपूर देवतारु चंदनादि गंध पावने ।

चढ़ावते समस्त पाप तापकों नशावते । जजामि० ॥  
ॐ ही जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥  
अखड शाल शालमें उजाल जोतवंत हैं ।

धरंत पुंज कर्म छुज भर्मको हरंत हैं । जजामि ॥  
ॐ ही जंबूद्वीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥  
सरोज केतुकी चमेली पुष्प भांति भांतिके ।

गैथाय पूजियों सुदेव दाम पांति पांति के ॥ जजामि० ।  
ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो पुष्प निर्वपामि ॥४॥

रथाल मोदकादि सद्यसार सुष्ट मिष्ट हैं ।  
निरोगता प्रकाश हेतु पूज सिष्ट इष्ट हैं ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्य निर्वणामि ॥५॥

अमोल दीपकों उदोत तास आरती करों ।  
समस्त कर्म भर्म नाश ज्ञान भान विस्तेंगं । जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीप निर्वणामि स्वाहा ॥६॥

दशांग घूप अग्नि माहि खेय हों हुलासों ।  
सुधूम घूमकै मनो नचै मचै सुवाससों ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो घूपं निर्वणामि ॥७॥

सुपक और पुनीत आम्रकाम्रकादि ल्याइयो ।  
चढ़ाय वीतराग मोक्ष थान हेतु पाइयो ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वणामि ॥८॥

जजामि जंबू उत्तरे जिनेश वर्त्तमान जी ।

सुरेश औगनेश जासु धास्त सुध्यानजी ॥

ॐ ही जंबूद्धीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥

कपूर देवतारु चंदनादि गंध पावने ।

चढ़ावते समस्त पाप तापको नशावते । जजामि० ॥

ॐ ही जंबूद्धीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥

अषड शाल थालमें उजाल जोतवंत है ।

धंसत पुंज कर्म कुंज भर्मको हंसत हैं । जजामि ॥

ॐ ही जंबूद्धीपैरावते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥३॥

सरोज केतुकी चमेली पुष्प भांति भांतिके ।

गैथाय पूजियो सुदेव दाम पांति पांति के ॥ जजामि० ।

ॐ ही जंबूद्धीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो पुष्प निर्वपामि ॥४॥

रथाल मोदकादि सद्यसार सुष्ट मिष्ट हैं ।

निरोगता प्रकाश हेतु पूज सिष्ट इष्ट हैं ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

अमोल दीपकों उदोत तास आरती करों ।

समस्त कर्म भर्म नाश ज्ञान भान विस्तर्गें । जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि स्वाहा ॥६॥

दशांग धूप अग्नि माहि खिय हों हुलासों ।

सुधूम घूमकै मनौ नचै मचै सुवाससों ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुपक्क और पुनीत आम्रकाम्रकादि ल्याइयो ।

चढ़ाय वीतराग मोक्ष थान हेतु पाइयो ॥ जजामि० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामि ॥८॥

जलादि अष्ट सुष्ट पुष्ट द्रव्य अर्घ में धरा ।

तुम्हें चढ़ाय नाथजी अनर्घ थान विस्तरा ॥ जजामि० ।

ॐ ही जबुद्धीऐरावते वरतमानजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ निर्वपामि ॥२॥

प्रत्येकार्घ ।

दोहा--चाल चंद्र समसुख बद्धत. बालचंद्र जिन जोय ।

जंबू ऐरावत विषै, वरतमान जजि सोय ॥

ॐ ही बालचन्द्राय अर्घ निर्वपामि ॥१॥

सुव्रत सुव्रत देत नित, सेवत सुव्रत लोय ।

जंबू ऐरावत विषै, वरतमान जजि सोय ॥

ॐ ही सुव्रताय अर्घ निर्वपामि ॥२॥

करम काठ कौं अग्नि सम, अग्निसेन जिनचंद्र ।

जजौं जंबु ऐरावते वरतमान सुख कंद ॥

ॐ ही अग्निसेनाय अर्घ निर्वपामि ॥३॥

त्रिभुवन में आनंद करन, नंद सेन सुखदेन ।  
जैवैरावत वरत जजि, कवि कुल काम दधेन ॥

ॐ ही नंदसेनाय अर्घ्य निर्वपामि ॥४॥

भव्यनि कौं श्री देतवर, सुख सागर श्रीदत्त ।  
नमों जंबु ऐरावतें, जजों सु जै वरदत्त ॥

ॐ ही श्रीदत्ताय अर्घ्य निर्वपामि ॥५॥

व्रतधारक नित नमत जिहिं, ऐसे व्रतधर देव ।  
वरतत जैवैरावतें, करों तास पद सेव ॥

ॐ ही व्रतधराय अर्घ्य निर्वपामि ॥६॥

शोम सोम सम सुख सदन, शोमचंद्र जिन चंद्र ।  
जजों जंबु ऐरावतें, वरतमान गुन कंद ॥

ॐ ही शोमचन्द्राय अर्घ्य निर्वपामि ॥७॥



धारें दीरघ दृष्टिवर, धृत दीरघ जिन देव ।

जंवरिवत वरतते, जजौं ध्यान धरि एव ॥

ॐ ही धृतदीर्घाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

शत पुष्पक जिनवर जजौं, शत पुष्पनि कस्वीर ।

जंवरिवत वरतते, हरत मदन सर पीर ॥

ॐ ही शतपुष्पाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

सुख अनंत भोगत सदा, शिवशत नाम जिनेश ।

जंवरिवत संतं जजि, सेवत शेष महेश ॥

ॐ ही शिवशतये अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

श्रेय मार्ग उपदेशियौ, जिन श्रियांश श्रीजुक्त ।

१ सस्कृत पुजार्थे 'शतपुष्पक' नाम लिखा है तसको कविने 'शतपुष्प' नाम समझ कर ऐसाही दोहे में गूथा है । खपुस्तक में भी ऐसाही पाठ है ।

जैवरावत संत जाजि, दीज मुक्त सुमुक्त ॥

ॐ ही श्रेयांशाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

श्रुति जलतें मल कसम धै, श्रुति जल भरा पवित्र ।

जैवरावत संत जाजि, जै जिन त्रिभुवन मित्र ॥

ॐ ही श्रुतिजलाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

बल अनंत संजुक्त श्री, सिंहसेन सुखेदेन ।

जैवरावत वरत जाजि, दारिद दुस्ति रहेन ॥

ॐ ही सिंहसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

कीन क्रोध उपशांत जिन, लीन शांत उपशांत ।

जैवरावत सत जाजि, मिटत सकल भवभ्रांत ॥

ॐ ही उपशांताय अर्घं निर्वपामि १४

१ सस्कृत पूजा के स्वयजल तथा स्वयंज्वल पाठ लिखा है कविने उसको श्रुतिजल नाम रक्खा है ।

तीन गुप्त छुतजे धेरें, गुप्ताशन निज ध्यान ।  
जँवैरावत संत जजि, गुप्ताशन भगवान ॥

ॐ हीं गुप्ताशनाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

वीरज विसद अनंत करि, डारे करम निवीर्य ।  
जँवैरावत संत जजि, जै अनंत वरवीर्य ॥

ॐ ही अनतवीर्याय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

निजनिधि भव्यनि देतु हैं, आपु निकट सु बुलाय ।  
जँवैरावत संत जजि, पार्श्वनाथ जिनराय ॥

ॐ हीं पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

श्री जिनवर अभिधान नित, भोगत परम निधान ।  
जँवैरावत संत जजि, नमों जोर जुगपान ॥

ॐ ही अभिधानाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

मरुत देव सेवत सदा, श्री मरुदेव जिनेश ।  
जंवेरावत संत जजि, मेढत कुमति कलेश ॥

ॐ ही मरुदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

शोभा विमल विभूति जुग, धौरे श्रीधर सार ।  
जंवेरावत संत जजि, तार तार अवतार ॥

ॐ ही श्रीधराय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

इंद चंद नागेंद जस, गावत सुस सुकंठ ।  
जंवेरावत संत जजि, जे जिन श्याम सुकंठ ।

ॐ ही श्यामकटाय अर्घं निर्वपामि २१॥

विघन सघन वन दहन कौं, अगिन अग्निप्रभु पुष्ट ।  
जंवेरावत संत जजि, द्यो शिव संपति सुष्ट ॥

ॐ ही अग्निप्रथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

दाहक करम कबंधके अग्निदत्त जिनराज ।  
जैवैरावत संत जाजि, यह शिव सहज इलाज ॥

ॐ हीं अग्निदत्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

वीर धीर सेवत चरन, वीर सेन जिनचंद्र ।  
जैवैरावत संत जाजि, हरेँ सकल दुखदंड ॥

ॐ ही वीरसेनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २४ ॥

छंद चौपाई--( मात्रा १५ )

प्रथम मेरु ऐरावत सुन्दर । वरतमान जिन जजत पुरंदर ॥  
चौविस जिनवर धरम धुरंधर । जजौ ध्यान अपने उर मंदर ॥  
ॐ हीं जम्बूत्तरावते वर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥ २५ ॥

जयमाला ।

छंद घटांनंद ( मात्रा २३ )

जे सदगुण जुक्ता, भवभय मुक्ता, अंतद मुक्ता, शुक्त वरा ।

दारिद्र्य तम खंडा, भानु प्रंचडा, जे ब्रह्ममंडा, मंड करा ॥१॥

छंद पाळडी--( मात्रा १६ लघ्वंत )

जै बालचंद्र सुव्रंत व्रतेन, जै अग्निसेन अरु नन्दिसेन ।  
 श्रीदत्ता जयति व्रतधर उदार । श्री शोमचन्द्र घृत दीर्घसार ॥७॥  
 शतंपुष्प शिखसन श्रियांशदेव । श्रुति जल जै सिंह सुसेन एव ।  
 उपशति सुगुप्तासन जिनिद । सुअनंतवीर्य प्रभु पार्श्ववद ॥ ३ ॥  
 अभिधान मरुत श्रीधर दयाल । जिनध्यामकंठ अगिनि प्रमाल ॥  
 जै अग्नि दत्त जै वीरसेन । तव गुण अनंत कवि कह सक्रेन ॥४॥  
 शुचि बुद्धि सिंधु सिद्धांत पार । हुति मारतह परचडहार ॥  
 तनस्वेदरहित निरमल लसत । शुकसेतवरन समचतुर वंत ॥५॥  
 संस्थान प्रथम अति रूपवान । तन शौरभ शुभ लच्छन प्रमान ।  
 अतिचल प्रियवच भापतमहेश । दुरभिक्ष हरन नभगतजिनेश ॥६॥

? यहा पर कविवर ने अपने वनाये हुए छंद में 'शतपुष्पक' 'नामको' भी विगाड़ कर शतपुष्प लिल दिया है । कपुस्तक में भी शतपुष्प ऐसाही पाठ है ।

जियवाधा विनुनित सुख लहंत । तरु फल फूलित शंका हरत ॥  
 सुख चार। सरव विद्या अधीश। उनमेष रहित दृग जय जगदीश ७  
 नख केश वृद्धितें रहित सुष्ट । धुनि मागधि सब जिय प्रीति पुष्ट ॥  
 दिग शोभित भूतल सुकरजम । मारुत सुगंध दायक सुखेम ॥८॥  
 गंधोदवृष्टि सुर रचत पद्म । फल भार शालि नुतशर्म सद्म ॥  
 निरमल अक्राश सुरजय उचार । कवला अहार वर्जित निहार ॥९॥  
 वृषचक्र दिपै मंगल सुदर्व । वसुप्रातिहार्यनव लब्ध सर्वे ॥  
 इत्यादि अनंत सुगुन निधान । “ वृन्दावन ” वंदत जोरि पान ॥१०॥

वत्ता--जै दीनदयाला, गुन मनिमाला, ऐरावतथित दीप यही ।  
 सुर नर मुनि वंदत, पाप निकंदत, दीजे मोकूं मुक्त मही ॥

ॐ ह्रीं-जम्बूद्वीपैरावते वर्त्तमानजिनेन्द्रेभ्यो महार्धे निर्वपामि ॥११॥

आर्याछंद--जो पूजै मानलाई, जंबू ऐरावते सुथित भाई ।  
 चौबीसों जिनराई, सो पावै भुक्ति मुक्ति ठकुराई ॥१२॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्री जंबूद्वीपैरावतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथ जंबूद्वीप ऐरावतातीतचतुर्विंशति-  
शातिजिनपूजा प्रारभ्यते ।

इन्द्रजा—

नागेन्द्र के उत्तर भाग सोहे । ऐरावत क्षेत्र सुनेत्र मोहे ॥  
तामें अतीतं जिनराज राजें । थापों तिन्हें मुक्ति समाज काजें ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिना अत्रावतरत अत्रतरत संवोपद् ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठःठः ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता भवत

भवत वपद् स्वाहा ।

अथाष्टक ।

वा-रमनीय जल दमनीय मल कमनीय कल शमनीय है ।  
नीय दुख पमनीय सुप अमनीय रुष गमनीय है ॥



जै तीत त्रिभुवन मीत सुरगिर सीत ऐरावीत है ।

धरि प्रीति ताहि जजीत परम पुनीत धरमलहीत है ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।

भवताप, विकल कलाप, रुज संताप, आपु विनाशिया ।

मोकों करो, निजसम, जगतमें, जजहु गंध सुवासिया ॥ जै तीत ० ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यश्चदंनं निर्वपामि ॥ २ ॥

अति सेत द्रग छवि देत मलय समेत तंदुल लेत है ।

धरि पुंज हरि कलि कुंज जगजसगुंज शिव भुंजतहैं । जै तीत ० ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ॥ ३ ॥

जगशूल मनमथ धूलकों निरमूल तुम सम कूलये ।

यह फूललै सुखमूल पूजों भूल भेटि अतूलये ॥ जै तीत ० ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

प्राशुक सुरस मृदु नयन मन रंजित विभंजित हे ह्रुथा ।  
नैवेद्य सौं निखेदतैं निखेद पद पावत बुधा । जैतीत त्रिभुवन० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैत्रेद्य निर्वपामि ॥५॥

तमखंड दुति ब्रह्मंड मंडि अखंड दीप समंडिया ।

परखंड मोह विहंडि केवल मारतंड उमंडिया । जैतीत० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध धूप अनूप लै शिव भूप सनमुख खेय हों ।

दृहि करम भरम मरम जनित निज, परम धरम सुवेय हों ॥ जैतीत० ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

फल सकल अकल ललित मलित मल दलित दालिद दीनता ।

मुख फलित कलित अचलिन पद उच्छलित शिव अमलीनता । जै० ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

आनंद कंद जिनंद चंद अमंद वंदन कीजिये ।  
 वसु दरव छंद सुछंद दे निरफंद थानक लीजिये । जैतीत० ।  
 ॐ ह्रीं जंबूद्वीपैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्थं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्ध ।

छंद चौपाई—( मात्रा १५ )

कल्यानक पांचो जिन पाय । पंच रूप सो जिन सुखदाय ।  
 जंबू ऐरावत गत मोख । जजों मोहि समकित रस पोख ॥

ॐ ह्रीं पचरूपाय अर्थं निर्वपामि ॥१॥

नाना जन सेवें जसु पाय । श्रीजिनधर सो मोहि सहाय । जंबू० ।

ॐ ह्रीं जिनधराय अर्थं निर्वपामि ॥२॥

शमता धरें धरासमधीर । सांप्रतीक सो गुन गंभीर ॥ जंबू० ।

ॐ ह्रीं साप्रतीकाय अर्थं निर्वपामि ॥३॥

दुर्जय जीति फुरी सदवीर्य । सो जिन उर्जयंत जुत धीर्य ॥ जंबू० ।

ॐ ही उर्जयंताय अर्घ्यं निर्वापामि ॥४॥

छायक नवों लब्धि लहि जेह । अधि छायाक जिनवर हें तेह ॥ जंबू०

ॐ ही अधिशायाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥५॥

जगदानंद देत अविकार । अभिनंदन जिन जगदाधार ॥ जंबू० ।

ॐ ही अभिनंदनाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥६॥

रतन तीनके ईश महान । सो रतनेश नाम भगवान ॥ जंबू० ।

ॐ ही रतनेशाय अर्घ्यं निर्वापामि ॥७॥

शिव रामके ईसुर जेह । रामेसुर जिन कहियत तेह ॥ जंबू० ।

ॐ ही रामेश्वराय अर्घ्यं निर्वापामि ॥८॥

पांचों तन जिनकीनो भंग । अंगोत्थित जिनसो शिवसंग ॥ जंबू० ।

ॐ ही अंगोत्थिताय अर्घ्यं निर्वापामि ॥९॥

धरमविधान ततायो सार । सो विन्याश देव अविकार ॥ जंबू० ।

ॐ ही विन्यासाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

रागद्वेषहत पोखें धर्म । सो अरोष जिन द्यौ शिवशर्म ॥ जंबू० ।

ॐ ही अरोषाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

नाना विधि विधान शिवभाष । सो सुविधान नाम अभिलाष ॥ जंबू० ॥

ॐ ही सुविधानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

अपुनरभव दिद्वृतवताय । सो जिन विप्रदत्त सुखदाय ॥ जंबू० ।

ॐ ही विप्रदत्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

काम कुमति करि हरिसम धीर । श्रीकुमार जिनवर वरवीर ॥ जंबू० ॥

ॐ ही कुमाराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

प्रगट गुरुगुन गिरि समजान । सो जिन सर्वशैल उरआन ॥ जंबू० ॥

ॐ ही सर्वशैलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

अतिशय परम मुनिन कहदेत । सो परभंजन जिन भवसेत ॥ जंबू० ॥

ॐ ही प्रभंजनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

जसु जसरास भस्यो जगमेव । सो सौभाज्ञ शुभाकृत देव ॥ जंबू० ।

ॐ ही शौभाज्ञाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

कुमति छपातम मर्द्दन कीन । नाथ दिवाकर परम प्रवीन ॥ जंबू० ।

ॐ ही दिवाकराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

विमलव्रतनि के सागर सार । श्रीव्रतविंदु भवोदधि तरा ॥ जंबू० ।

ॐ ही व्रतविंदवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥१९॥

सिद्ध करत भविजन के काज । सिद्ध सुकर्त्ता श्रीमहाराज ॥ जंबू० ।

ॐ ही सिद्धकर्त्रे अर्घ्यं निर्वपामि ॥२०॥

महाज्ञान प्रकट्यौ तनधीर । सो जिनवर हैं ज्ञान शरीर ॥ जंबू० ।

ॐ ही ज्ञानशरीराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

१ । संस्कृत पूजार्थे 'दिनकर' नाम है । कविवरकी कविता में दिनकर शब्द आया नहीं इसलिये 'दिवाकर' नाम रख दिया है । (२) संस्कृत पाठमें 'सिद्धिकर' नाम है । कविवरने, सिद्धसुकर्त्ता नाम बनाया है ।

वाञ्छितार्थ सुख दायक ज्योय । कल्पद्रुम जिनवर हैं सोय ॥ जंबू० ।

ॐ ही कल्पद्रुमाय अर्घ्यं निर्घामि ॥२२॥

जसु तीरथ सार्थक फलदेत । सो तीरथ फलसुगुननिकेत ॥ जंबू० ।

ॐ ही तीर्थफलाय अर्घ्यं निर्घामि ॥२३॥

जसु प्रभा जग रमत सुहात । सो वीरमम रक्षक ख्यात ॥ जंबू० ।

ॐ ही वीरमप्रभाय अर्घ्यं निर्घामि २४॥

मोदकछद प्रस्तार (१०१)॥१॥ वरन २१)

पुरन अर्घ्य बनाय मनोहर । पूजत हों प्रभुजी भय भौहर ॥

१ मूलमें तीर्थनाथ नाम है कविवरने अपनी कविता में 'तीर्थफल' नाम बना दिया । २ कविवरके हाथकी लिखी प्रतिके छंदमें तो 'सो वीरम मम' ऐसा लिखा है और मंत्रमें वीरमप्रम लिखा है और संस्कृत मूलमें चौईसवें तीर्थका नाम 'फलेश' लिखा है । इस कारण हमने मंत्रमें फलेशाय बनाया है ।

मेरु सुदर्शन को ऐरावत । तीत जलै शिव संपति पावत ॥

ॐ ह्रीं जम्बैरावतातीतचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो महार्घ ।

अथ जयमाला ।

घचाछन्द—भवविपति विमुक्ता, शिवपद लुक्ता मुक्ता शुक्ताशर्म वरा ।  
मद मदन बिहंडन, दारिद्र खंडन, अन्नैद मंडन परमपरा ॥१॥

मोतीदाम छन्द--

नमो जिन पंचसरूप महान । जिनंधर आतम ज्ञान बखान ॥  
नमो नित सांप्रतिक्राय अमद । सदाजय उज्जययंत सुखंद ॥२॥  
अधिष्ठभिनंदन रत्न सुईश । रमेसुर जैति अंगोज्जित धीश ॥  
नमो विनयांश अरोप जिनेश । नमो सुविधान सुविप्रदतेश ॥३॥  
कुमार नमो सब शैल प्रभंज । नमो सब भाग दिवाकर कंज ॥  
सदा त्रतविदु करों परनाप । करै सब सिद्ध जथा पदनाम ॥४॥  
नमो जिन ज्ञानशरीर अनंत । सदा कल्पद्रुम शर्मकरंत ॥



नमो नित तीर्थफली भगवंत । सदा विरमप्रभ विघ्न हरंत ॥५॥  
 विशुद्ध बुधार्णव वर्द्धनचंद्र । विवेक सरोज प्रमोद दिनद ॥  
 सुरेश नरेश खगेश फनेश । गनेशनम धरि प्रीति अशेषा ॥६॥  
 किये जगजंत अनत उधार । बखानत जासु लहे नहिं पार ।  
 दयावृष तस्व बखान जिनेश । कियो शिवमंदिर माहि प्रवेश ॥७॥  
 अनत गुनाकर एक सरूप । नमों नित चित्त विषै शिवभूप ॥  
 बुलाय प्रभु हमकौं निजपास । तुरंत मिलै शिव सम्पत्तिरास ॥८॥  
 घतानद-जैजै जिनस्वामी, त्रिभुवन नामी पंच सुरूपादिक निपुनं ।  
 जंबू ऐरावत, तीत कहावत, गुन अनंत मुनिबुंद युनं ॥  
 ॐ ही जंबूद्वीपैरावतातीतजिनेभ्यो महार्धं निर्वणमि ॥९॥

शोरठा-जो पूजे मनलाय, जँवैरावतातीत जिन ।

सो सुरार पदपाय, अनुक्रम शिव तियकौं वरै ॥ इत्याशीः ।

इति श्री जम्बूऐरावतातीतपूजा समाप्त ।

अथ जंबूऐरावतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा ।

अडिह-प्रथममेरु उत्तर ऐरावत जानिये ।

होनहार चौविस जिनेसुर मानिये ॥

थापों इत चित लाय सुपूजन कारने ।

हे प्रभु तिष्टो आय भवोदधि तारने ॥

ॐ ही जंबूद्वीपैरावतभावीचतुर्विंशतिजिना अत्रात्तरत अवतरत संबोपद् ।

ॐ ही जंबूद्वीपैरावतभावीचतुर्विंशतिजिना अत्र तिष्ठत त्रिः उः ३ ।

ॐ ही जंबूद्वीपैरावतभावीचतुर्विंशतिजिना अत्र मम सन्निहिता भवत

भमत वषद् ।

अथाष्टक ।

रेखता-

अमल जल धारिकें भारी । धार त्रय देत आविकारी ॥

प्रभू सुनके अरज म्हारी । करम मल मेदि दुखकारी ॥

प्रथम गिरि उत्तरं जानौं । सुखद एखवैतें मानौं ॥

भविष्यत सार चौबीशी । जजों जिन ज्ञानमें दीशी ॥

ॐ हीं जंबूद्वीपैरावते भावीजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥२॥

केदली नंदघसि चंदन । करों जिन चंद पद बंदन ॥

हरो दुखदंद भौ फंदन । करो आनंद जग बंदन ॥ प्र० भ० ।

ॐ हीं जंबूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दनं निर्वपामि ॥२॥

अखंडी शालिशित डंडी । सुमंडी पुंज द्रुति चंडी ॥

विहंडी विघ्न की मंडी । उमंडी शौख्य ब्रहमंडी ॥ प्र० भ० ।

ॐ हीं जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान निर्वपामि ॥३॥

सुमन मन घ्रानको रंजै । सुमनमथ जंगकों भंजै ॥

धस्त दिग पुंज अलिगुंजै । सुजस सुखशील भविभुंजै ॥ प्र० भ० ।

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥४॥

तुरत नैवेद्य लेनकिं । मधुरस पूरिते धीके ॥

करन निखेद पदवीके । धरं उरध्यान श्रीजकिं ॥ प्र० भ० ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

सुजग मग दीप उजियारा । प्रभू तनमं लशे सारा ॥

मनो यह ध्यान शिसि धारा । दहत वसुकर्म कंतारा ॥ प्र० भ० ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥

दशंगी गंध वहुरंगी । वरंगी वन्दिमं चंगी ।

उखेयें धूम भिसि नाचै । दहत अरि कर्मक्रों माचै ॥ प्र० भ० ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

विध्न तरु निध्न के करता । समरचों मुक्त तीभरता ॥

परम फल पकरस गरता । नयन मनमांद आदरता ॥ प्र० भ० ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

दखलै अष्ट परकारा । अरघ तसु सुष्ट करधारा ।  
 करो भवभाव निरवारा । शरन जगराज में धारा ॥  
 प्रथम गिरि उत्तरे जानों । सुखद ऐरावते मानों ।  
 भविष्यत सार चौत्रिंसी । जजों जिन ज्ञानमें दीसी ॥

ॐ ही जम्बूद्वीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥१॥

अथ प्रत्येकार्घं ।

इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्राच्छुद्ध—

सिद्धार्थदेवं सव सिद्धकर्ता । सिद्धप्रियं सर्वं समृद्ध भर्ता ।  
 जबू महैरावत ह्योनहार । पूजों चतुर्विंशति देव सार ॥

ॐ ही सिद्धार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

अंतर्वहिः सर्वकलंक चूरु । श्रीदेवदेवं विमलेश पूरे ॥ जंबू०॥  
 ॐ ह्रीं विमलाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

कर्मांशिकों जीति विजैसु पायो । जै घोषनामा जगमें कहायो ॥ जंत्रू ॥

ॐ ह्रीं जघघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

आनंद सेनं धृत परमं शर्मं । जगद्गुरुवीतित कर्मभ्रमं ॥ जंत्रू ॥

ॐ ह्रीं आनंदसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीस्वर्ग संमंगल देव मोहे । उत्पत्ति में मंगल स्वर्ग होहे ॥ जंत्रू ॥

ॐ ह्रीं स्वर्गमंगलाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

वज्रेश जाको नित नाम ध्यावैं । जिनेश सो वज्रधरं कहावैं ॥ जंत्रू ॥

ॐ ह्रीं वज्रधराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

निर्वाणको मार्ग जिन्हों प्रकाशें । निर्वाण सो मार समस्त नाशें ॥ जंत्रू ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

१. संस्कृत मूल पाठमें चौथे तार्यिकरका नाम ' नदिसन ' है कविवरने उसकी जगद् 'आनदसेन' नाम रक्खा हे ।

सुकोशलेसं सुगुनं अनन्ते । आभ्यन्तरे कोशविषे धन्ते ॥ जंभू० ॥

ॐ श्री सुकोशलाय अर्थं निर्वयापि ॥२०॥

अनन्त संसाग जिन्हों विनाशि । अनन्तस्वामी गुनन्तराशे । जंभू० ॥

ॐ श्री अनन्ताय अर्थं निर्वयापि ॥२१॥

अष्टादशो दोषनिवार डारे । मोई जिनेसं विमलं हमारे ॥ जंभू० ॥

ॐ श्री विमलाय अर्थं निर्वयापि ॥२२॥

नमो सदा अमृतसेन स्वामी । विज्ञान वागनिधि पाशामी ॥ जंभू० ॥

ॐ श्री अमृतसेनाय अर्थं निर्वयापि ॥२३॥

ध्यानग्नि में कर्म सुकाठ जारे । श्री अग्निदंत भविष्युन्दतारे जंभू० ॥

ॐ श्री अग्निदन्ताय अर्थं निर्वयापि ॥२४॥

गङ्गा रत्ननिष्ठा—

जंभूसुराद्रिअइराधतेश्वरगजे । तामे मविप्र्यत जिनेश जितेविराजे ॥

पूजोतिन्हें भगतभाव हि ए धराई । पूर्णार्धिसों लुरित भुक्त सुमुक्तदाई  
ॐ ह्रीं जवृद्धीपैरावते भावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महाधं निर्वपामि ॥२५॥

जयमाला ।

घत्त॥छद—

जयविपतविहंडित, शिवमगमंडित, अतिथ अखंडित, शुद्धमती ।  
निजनिधि वरदायक, सच विधिलायक, जै निज नायक, बुद्ध पती । १ ।

तोटक छद—

जय सिद्ध सुअर्थ जिनदर्वरा । विमलं जयघोष अदोष करा ॥  
जय नद सुसेन अनंत मती । जय स्वर्ग सुमगल बाल जती ॥२॥  
जय वज्रधरं निरवान महा । जयधर्म धुजी सिद्धसेनकहा ॥  
महसेन नमों रवि मित्रपदं । सतसेन सुचंद जिनंद सदं ॥३॥  
महचद भुतांजन नायक हैं । मम देव सुसेन सहायक हैं ॥  
जय सुव्रत नौमि जिनिद सदा । प्रणमामि सुपाश्वर्ष प्रमोद ददा ॥४॥



जयवत सुक्रीजलेदेव ममं । सु अनन नमो विमल प्रशमं ॥  
 सुगदामृतमेन जिनिंद नमो । जय अग्निसुदत्त कलंरु दमो ॥५॥  
 तुम मगल मूरत देव वरा । नित सेवन शक्र मुचक्र वरा ॥  
 गुन नारद नारद गान करे । भव नारद पारद पाय परे ॥६॥  
 गिरि आश्रय रावत भाधिय रे । लख गात नानंद पाधिय रे ॥  
 शरनागत पालन जानि मन्त्री । भवि "वृद्ध" गर्मी चरनारजनी ॥७॥  
 पति-जयजय सुप्रसाधन. भव भयवाधन, नित आगधन, साधगनं  
 ब्रह्मादिकेसेवन, नित गुनसेवन, आनंदलेखन, मुक्त मनं ॥ पूर्णा ॥

वरा मंगेदना ( वरों ७३ )

होनहार जिनराज मेवई । जेचु उत्तर वरावते जई ॥  
 मो समस्तसुख भांगि के यहाँ । परमं जर्म भविलेनु हें उहाँ ॥४॥

शुभभांगेदः ।

श्री श्री जन्मदीपसने भांगेचुंगुणिनिनिनराजा ममाता ॥

अथ धातुकीद्वीपपूर्वविजयमेरुसम्बन्धि विदेहस्य—  
चतुर्विहरमानजिनपूजालिख्यते ।

छंद सुदरी—

दुतिय द्वीप सुप्लव मेरुके । विहरमान तु चार सुटेर के ॥  
तिनाहिं थापतु पूजन कारने । प्रभु हमें भव सागर तारने ॥

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेरुविदेहसस्थितविहरमानचत्वारः जिना अत्रावतरत  
अवतरत संवौपद् ।

ॐ ह्रीं धातुकीत्रिजयमेरुविदेहसस्थितविहरमानचत्वारः जिना अत्र तिष्ठत  
तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं धातुकीविजयमेरुविदेहसस्थितविहरमान चत्वारः जिनाः अत्रमम सन्नि-  
हिता भवत भवत वपद् ।

अथाष्टक ।

(चाल दानतरायजी कृत नंदीश्वराष्टक की अनेक रागों में) यथा—

छ्बीरेदधि सो सुराय, नित प्रति सेव करै ।

प्रभुमो पे सो न मोहाय, लाजनि पाँय परे ॥  
संजातक आदि जिनद, चागें सुखकारी ।

गिरि विजय विदेह सुछंद पूजन नरनारी ॥

ॐ श्रीं पातुर्गापिजयेन्नुत्तरेऽपि देव्यपिरमानजिनाः मजातस्यंयमभृगि-  
भाननअनंतरीर्षीयैरेभ्यो नम निर्भगामि ॥ १ ॥

सुरपति अनि प्रीति वढ़ाय, दिव्य सुगंध धरे ।

हमचंदन चग्न चढ़ाय, भव आताप हरे । संजातक० ॥

ॐ श्रीं पातुर्गापिजयेन्नुत्तरेऽपि देव्यपिरमानजिनसंजातस्यंयमभृगिभा-  
ननअनंतरीर्षीयैरेभ्यो नन्दनं निर्भगामि ॥ २ ॥

मित वासिन वासमनीय, हामित मेत कलं ।

सुखगामिन पुत्र धर्गेय, नाशिन पापमलं ॥ मजातक० ॥

ॐ श्रीं पातुर्गापिजयेन्नुत्तरेऽपि देव्यपिरमानजिनसंजातस्यंयमभृगिभान-  
नअनंतरीर्षीयैरेभ्यो नन्दनं निर्भगामि ॥ ३ ॥

चुंदार इंदु मंदार सुमन चद्रावत हैं ।

हम फूलनि पूजि उदार, शील चद्रावत हैं ॥ संजातक०

ॐ ही धातुकीविजयमेरुचंद्रविंदहस्थविहरमानजिनसजातस्वयंप्रभक्रुपिभाननअंतवीर्यतीर्थकरेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥ ४ ॥

सुरनायक अमृत रास पास धराय जजैं ।

हम नेवज मिष्ट सुवास, पूजहिं डुल भजैं ॥संजातक० ।

ॐ ही धातुकीविजयमेरुचंद्रविंदहस्थविहरमानजिनसंजातस्वयंप्रभक्रुपिभाननअंतवीर्यतीर्थकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

मनि दीप शचीपति लेय, आरति भक्त करै ।

यह दीप धरों उमगेय, संशय भाव हरै ॥ संजातक० ।

ॐ हीं धातुकीविजय मेरुचंद्रविंदहस्थविहरमानजिनसंजातस्वयंप्रभक्रुपिभाननअंतवीर्यतीर्थकरेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥ ६ ॥

द्वित्रिगंधं सुगंध अशेष, खेवत भाव धरं ।

हम धूप उलेय महेश, ज्यों अरि कर्म जेरें ॥ संजातक० ।

ॐ श्री धातुकीरिजमेरुवर्तादिस्वयिद्विमानजिनमंजातस्वयंप्रभरुपिभा-  
ननभ्रनवर्णतीर्णरेण्यो ऋ निर्यामि ॥ ७ ॥

फल पर सुगेपम सार, वासव आनि धरे ।

हम पृजत फल भरियाग, विघन समूह हरे ॥ संजातक० ।

ॐ श्री धातुकीरिजमेरुवर्तादिस्वयिद्विमानजिनमंजातस्वयंप्रभरुपि-  
भाननभ्रनवर्णतीर्णरेण्यो ऋ निर्यामि ॥ ८ ॥

बसु दसव अनुपम आन, इंद चढावत हें ।

हम अरव जजें धरि ध्यान शर्म चढावत हें ॥ संजातक० ।

ॐ श्री धातुकीरिजमेरुवर्तादिस्वयिद्विमानजिन मंजातस्वयंप्रभरुपिभा-  
ननभ्रनवर्णतीर्णरेण्यो ऋ निर्यामि ॥ ९ ॥

प्रत्येकार्थे ।

शोरठा-संजातक रवि अंक, सीतोत्तर अलकापुरी ।

देवसेन सुनिशंक, जजौं देव सेना. तनुज ॥

ॐ हौं धातुकीखड्गपूर्वविजयमेरुसीतोत्तरानेकशोभाविराजमानपट्स्वडमडल-  
मडितअलकापुरी तत्र विरहमानभगवान श्रीसंजातकाय अर्घं निर्वपामि ।

दोहा-शसि लच्छन पग स्वयं प्रभु, सीता दच्छिन ल्यात ।

मित्रभूत विजयानगर, जजौं सुमंगल मात ॥

ॐ ही धातुकीविजयमेरुसीतादच्छिणानेकशोभाविराजमानविजयानगरस्थ-  
श्रीस्वयंप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

पढ़ड़ी छद—

रिपमानन हरि पग में सुहात । कीरत नृप वीर सुसेन मात ॥

सीतोदा दच्छिन में प्रमान । जजिनगर सुशीमा गुन निधान ॥

ॐ ह्रीं धातुहोरांडविजयसंस्मृतीदादक्षिणमुगीमानगर अनेकशोभाचिरा-  
जमानविद्यमान श्री शिंपभाननाय अर्थे निर्वाणामि ।

श्री०मेघराय सुत मंगल जननी । श्री अंनंत वीरजगजतननी ॥  
सीतोदा उत्तर उर धरनी । जर्जो अजोन्था भवसर तरनी ॥

ॐ ह्रीं धातुह्रींदापरिजयसीतोदाउत्तरयोभ्यानगरस्य विद्यमानजिनश्री अ-  
नंतयोनाय अर्थे निर्वाणामि ॥३॥

उद बोळनंग--

श्रीमत्तरियनाय नमामी, मेरु विजे सुगिंदूह महामी ।  
चारिउ संघ समोशून माहीं पूजत प्ररुन औनैद पाहीं ॥

ॐ ह्रीं धातुहोरांडविजयसंस्मृतीदादक्षिणमुगीमानजिनमंजानस्ययंत्रमुक्त-  
विमानअनंतयोनायैर्यकरेन्यो मदर्न निर्वाणामि ॥३॥

अथजयमाळा ।

एता-ने जे जिन सुंदर, गुनगनमंदर, जजतपुंरिंदर अमथग ।

संशयमतवर्जन, शिवमगशर्जन, नितधुनिगर्जन, मेघवरा ॥१॥

कामिनीमोहन छन्द-

जयति जिनचन्द आनन्द अमृत करन ।

जयति जिनभानु भवि कमल मोदति करन ॥

जयति जिनमेघ कल्याण वारिद भरन ।

जयति जिन समवश्रुततिथि अमित दुति धरन ॥१॥

जयति जिन परम वृष तत्त्व उद्धित करन ।

जयति जिन दिव्य लक्ष्मी लसित शित चरन ॥

हरत भवि शोकर सुमन नभते परत ।

दिव्य वानी सुनत भविक भवसर तरत ॥ २ ॥

चमर जेहे अमर ढारत सुसिंघाशनं ।

देहकी कांति भवशांति प्रतिभाशनं ॥

कुन्दुभीनाद शिर छत्र अनुपम लसत ।

ज्ञान हग शर्म वीरज अनते वसत ॥ ३ ॥



गुण अगम आपुके कौन धरनन करे ।

इंद गनडंड लडिजत सुपांयन परे ॥  
विधिय विधि विद्युय तुव भगतमें साचही ।

तततता अततता मुंगत गर नाचही ॥ ५ ॥  
अननन अननन नूपरे बाजही ।

किनिनिनिनि किनिनिनिनि किकिनी झाजही ॥  
साप्रदि समाप्रदि सातंगि धुनि करत है ।

त्रिम सुखिम विधिविधिविधि सुगज आदरत है ॥ ५ ॥  
ताड कसाल कसाल बीनादि है ।

मससुर महित बाले सुषट् लय मिले ॥  
करन गुनगान अमन्यान भगवानके ।

कई जन धरत प्रायक अमर धानके ॥ ६ ॥  
ईद सुनि कौन केर सोपपुर जात है ।

आपुके निरुट अदभुत यनीवाल है ॥

धन्य तुमदेव धनी थान सोहै सही ।

नमत तुमकौ मिलत परम पदकी मही ॥ ७ ॥

धरा-जैजिनगुनमडित, अमल अखंडित, नितनुतपंडित, प्रीतिधरै ।  
चारों सुखदायक, विघन विनायक, दास सहायक, पापहरै ॥

ॐ ही धातुकीविजयमेरुचतुर्विदेहस्थविरहमानजिनसंजातस्वयंप्रभक्तुपिभा-  
ननअनंतवीर्यतीर्थरुरेशो महार्घ निर्वपामि ॥८॥

छंद सवैया तथा कवित्त—(मात्रा ३१)

विजय मेरुके शुभ विदेह में, चारों तीर्थकर अविकार ।

समवसरन रचना सुत राजत, कवहुंक करत जिनेश विहार ॥

तिनके पदंपंकज कों पूजे जो प्राणी गुनमाल उचार ।

समकित सहित भोग इंद्रो, सुख अति इन्द्री सुखलहै अपार ॥८॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजयमेरुसम्बंधीचतुर्विहरमानजिनपृजा समाप्ताः ।

अथ विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशति-  
जिन पूजा प्रारभ्यते ।

पादया उर- ( भाग १४ )

इति धातुकी दीप प्रमानों । गिरि विजय मुद्रच्छिन मानों ।  
जिन वरतमान नवमीमें । इन थापतु हों जगदीशं ॥

ॐ श्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिना नयावतन जगतन भवौगट ।

ॐ श्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिना नम निवृत्त निवृत्त ड. ड. ।

ॐ श्री विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिना अर मम मन्निहिना ममत

नया वरत ।

अथाष्टक ।

इतिविंशति नया मुन्दरी छर-

निगमनी गद्दीर सुलायजी । रुत धार कलंक नथायजी ।  
विजय रच्छिन भाग वृजिय । गनमान जिनेमुर पुजिये ॥

- ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥२॥  
 कदलि नंदन चंदन वावनं । भजि जिन्द सुदंद नशावनं ॥ वि० ।
- ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दन निर्वपामि ॥१॥  
 शितनिशेश हिमामिय तन्दुलं । धरत पुंज अमंदन दंदलं ॥वि० ।
- ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अक्षतान निर्वपामि ॥३॥  
 समरशूल निमूलन कारनें । सुमन शौरभि ले करि धारनें ॥वि० ।
- ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥  
 रुजछुधा तुमनें चकचूरिया । धरत हौं चरु लै रस पूरिया ॥ वि० ।
- ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥  
 तुवविमोहविनाशकं मे लखा । जजति दीप निजानंदको चखा ॥ वि० ।
- ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥६॥  
 अगर चंदन धूप सुधूमकै । हवत कर्म उडै जरि धूमके । वि० ।
- ॐ ह्रीं विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

परम पावन आनि फलावली । द्विगधरो मोहितार उतवली ॥ वि०

ॐ श्रीं निरामेकमवतारोमानचतुस्रितिकेभ्यः फलं निरामि ॥॥

अथ मे तुम सन्मुख लेन हों । भवसमुद्र जलंजलि देन हों ॥ वि०

ॐ श्रीं विजयेक धर्मपंचमानचतुस्रितिकेभ्योऽयं निरामि ॥०॥

प्रत्येकार्ये ।

नागत एव- तुगादि देव ध्याइये सदैव शीघ्र नाइये ।

अनादि भूल भाव त्याग आपु शुद्ध पाइये ॥

दुर्तीयदीप पुर्वमेक भर्त्सवर्त्तमान हें ।

जर्जो जलादि सां निन्दे सुमुक्त सुकदान हें ॥

ॐ श्रीं गुणदिज्ञात श्रीं निरामि ॥१॥

गिद्धान सुद्ध साधियो सिद्धान देवने मही ।

प्रसिद्ध गिद्ध देन हें अनंत धर्मकी मही ॥ दुर्तीय० ॥

ॐ श्रीं सिद्धीप श्रीं निरामि ॥२॥

महेशनाथेनं अशेष वस्तुकों विलोकिया ।  
 तिसी प्रकार भासियो गनिंद इंद धोकिया ॥ दुतीयं०

ॐ ह्री महेशनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

सदैव हैं सहाय परम शर्म मार्ग जानको ।  
 सुनिंद वृंदकर्ते हैं सुपरम अर्थ ध्यानको ॥ दुतीयं० ।

ॐ ह्री परमार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

नरेश और सुरेश श्रीगनेश जाहि ध्यावहीं ।  
 वरं सुसेनके जुकीर्त्त किन्नरिंद गावहीं ॥ दुतीयं० ।

ॐ ह्री वरसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

सुभव्यकों भवाब्धितें उधारकों सुधीर हैं ।  
 जिनेश श्रीसमुद्धर नमों नमों सुधीर हैं ॥ दुतीयं० ।

ॐ ह्री समुद्धराय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

१ सस्कृत पुत्रांमं पात्रेवं मगवानका 'वरसेन' नाम नहीं है 'समुद्धर' है ।  
 किंतु अठारवे तर्थाकर 'त्रिसुष्टि' है तो ऋग्विषुने ग्रहण नहीं किया है ।

नेंद्र औ सुंद्र नाग इंद्र चंद्र मेवहीं ।

त्रिनेश भृश्याक्षे अशेष शर्म वेवहीं ॥ दुर्तीय० ॥

ॐ ॥ भृशनाथाय नमो नित्यामि ॥ १॥

सुबोध भानुर्ने त्रिलोक को प्रकाश कर्ते हं ।

उदंतनाथ त्री सुसर्म कर्म भर्म हर्ते हं ॥ दुर्तीय० ॥

ॐ ॥ उदंतनाथ नमो नित्यामि ॥ ८॥

विगुहमार आर्जवाधिको धरं विगजही ।

नमामि नित आर्जवं ममस्त दृश्य भाजहीं ॥ दुर्तीय० ॥

ॐ ॥ अर्जनाथाय नमो नित्यामि ॥ १० ॥

विनाशि मान मे अमे करं हरं क्लेशजी ।

ओमे त्रिनेश को त्रपं गिलि सुमुक्त देवजी । दुर्तीय० ॥

ॐ ॥ त्रिनेशाय नमो नित्यामि ॥ १२ ॥

अकंप रूपराजही अनंत शक्ति साजही ।

जिनेश अप्रकंप कौं जजें दरिद्र भाजही ॥ दुतीय० ।

ॐ ही अप्रकंपाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

शरीर पद्मवर्ण है सुपद्म सद्मकर्ण है ।

सुपद्मनाथ सेवतें सुहोत पद्म वर्ण है ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्री पद्मस्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सुभव्य पद्मराशिकों दिनंद श्रीजिनंद हैं ।

सुपद्म नंदि वंदतैं अमंद पद्म कंद है ॥ दुतीय० ।

ॐ ही पद्मनंदिने अर्घं निर्वपामि ॥३॥

गनेश वृंदकौं महा सु प्रीय आपु लागते ।

प्रियंकर प्रभू भजें कलेश दूर भागते ॥ दुतीय० ।

ॐ ही प्रियकराय-अर्घं निर्वपामि ॥४॥



पुनीत पुन्य जागके जपे तुंरत हीत हें ।

सुदृत्तनाय देव तीनलोकमें उदोन हें ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं सुदृत्तनाय जपे निर्वाणाय ॥२०॥

सगमन दुल चरियो सुभद्र भू प्ररियो ।

सुभद्र देवको नमों तुमी कलंक चरियो ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं भद्रेश्वर जपे निर्वाणाय ॥२१॥

मुनीय चंद्रजी अमंद नंद रूप हें महा ।

त्रिलोक जीवहो अनंद कंद दैत हे कहां ॥ दुतीय० ।

ॐ ह्रीं मनिचन्द्र जपे निर्वाणाय ॥२२॥

१ मन्मथ रूपी निन्दित नमो ह्रीं कृष्णने उदकी नाम सुदृत्तनाय  
२२ दियो हें ।

सुपंच मुष्टि केशसीसंतं उपास्थियो वरं ।

सुपंच मुष्टि देव सेध केवल प्रभाधरं ॥ दुतीय० ।

ॐ ही पचमुष्टये अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

सुगंग की छटा समान स्वच्छ कीर्त जासकौ ।

सुगांगयेय संय आश पूरते सुदासकौ ॥ दुतीय० ।

ॐ ही गागयिकैनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

चहूं प्रकार संग जासके गुनं अराधहीं ।

गणं सु नाथ देव शोभनीक सार साथहीं ॥ दुतीय० ।

ॐ ही गणाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

समस्त अंग सुंदराकृती सुदीप्तकौ धरै ।

सु सर्व अंगदेवजी सुपाप पुंजकौ हरै ॥ दुतीय० ।

१ संस्कृत पूजामें गागिक वा 'गागिकनाथ' नाम है । २ संस्कृत पूजामें गणनाथ नाम है ।

ॐ ह्रीं मांगेदेवार अर्पे निर्णामि ॥०१॥  
 पुनीन पूर्ण ब्रह्मके पदस्य में विराज ही ।

सु ब्रह्महं द नाथेदेव शुद्ध सुद्ध साजही ॥ दुनीय० ।

ॐ ह्रीं पुण्ड्रनाथाय अर्पे निर्णामि ॥०२॥

संनंद जासकों नमै समस्त दुसकों दमै ।

जिनद इंददत्त भुक्ति मुक्तशुक्तश्री हमै ॥ दुनीय० ।

ॐ ॥ इन्द्रनाथ अर्पे निर्णामि ॥०३॥

जिनेश पूजनीक नै दया विधान भामिया ।

दया मुनाथ भवते सुहमे भमै नाशिया ॥ दुनीय० ।

ॐ ॥ इन्द्रनाथाय अर्पे निर्णामि ॥०४॥

जीवन्-भानु दीप गिगविजे वग्वान । भगन्नेत्र वरतन भगवान ॥

पुत्रो चरन जोर हुगपान । पूरत अरथ अपल गुनस्तान ॥

१ : स्वयं पूजा नै इन्द्रनाथ इन्द्र अर्पे निर्णामि नाम है ।

ॐ ही विजयमेरुभरतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ।

जयमाला ।

घृत्ना-सतसंपतिजुक्ता, विपनिविमुक्ता, आनंदमुक्ता, मुक्तावरा ।  
चौवीसजिनंदा, गुननिधिचदा, नमत सुरिंदा, भरत भग ॥१॥

तोटकनामछंद--

जयवंत जुगादि जिनेश सदा । भुम भजन देव सिद्धत वंदा ॥  
सु महेश कलेश अशेष हरै । परमारथ आतम शर्म भरै ॥२॥  
वरसेन जगज्जन तारत है । सु समुद्धर भौ दुख टारत है ॥  
जिन भूधर अष्टम भूमि पती । जयवत उदोत उदोत मती ॥३॥  
नित आर्ज्वव आर्ज्वव भाव धरे । भयनाश अभै जिनराज करै  
अप्रकप निकप दशा करि है । जिन पद्म सुसका रमाभरि है ॥४॥  
जिन पद्म सुनंद अमंद कला । सुप्रियकर कर्म कलंक दला ॥  
सुकृतारथ साम सुभाव करै । नित भद्र समुद्र सुभद्र भरै ॥५॥  
मुनिचद्र भवातप चूरत है । जिन पंचसु मुष्टि अकूरत है ॥

ॐ श्री धानुकीरोगपिजयेकेल्यग्रभूतवर्णित्तिना अत्र निष्ठत निष्ठ-  
त ३: ३: ।

ॐ श्री धानुकीरोगपिजयेकेल्यग्रभूतवर्णित्तिना अत्र मम मन्त्रिद्विना  
मया नरा पद ।

अथाष्टक ।

( पाठ विज्ञाष्टक शान्तसर्गपिजयम श्री स्वराज एत )

रुतक रक्षाधी के विषं, मनि भृंग भग जन्तसार ।

धार करों निहु भाव मों, मग कम कळंक निवार ॥

तीत जिनेनुर पुजिये, गिरि विजग सुभारत जाय ।

रगत प्रभ आदिक मद्रा, जिहि पूजत सुर सुर गय ॥ नीन०

३० श्री धानुकीरोगपिजयेकेल्यग्रभूतवर्णित्तिना अत्र मन्त्रिद्विना ॥ १ ॥

चंद्रन यमि केशर नीर मों, भवताप विनाजन हेन ।

जिनर रगत चंद्राड्ये, प्रसु अजर अमर पद देन । नीन०

ॐ ही धातुकी द्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चन्दन निर्वपामि ॥२॥

तंडुल शित मुन्दर शोभने, सुकता फल शशि समलेय ।

पुंज धरत उच्छाह सों, प्रसु मोहि अखय पद देय ॥ तीत०

ॐ ही धातुकी द्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽक्षताननिर्वपामि ॥३॥

कमल केतुकी आदि दे, बहु फूल सुवास उदार ।

तुम पद पद्म चढ़ाय हों, मम समरशूल निखार ॥ तीत० ॥४॥

ॐ द्वी धातुकी द्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प निर्वपामि ॥४॥

षट् रस करि पूरन सार है, नेवज इन्द्री वलकार ।

तासों तुम पद पूजि हों, मम ह्रुया रोग निखार ॥ तीत० ।

ॐ ही धातुकी द्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥५॥

दीपक दुति उदित है महा, घट पट परकाशनहार ।

तासु आरती में करों, मम तिमिर मोह निखार ॥ तीत० ।

ॐ ही धातुकी द्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

कृष्णागर अगर कपूरका, बरगंध हवों तुम पास ।

करम जेर मस करे, तसु धूप उड़े परगास ॥ नीन जिने० ।

ॐ श्री धार्तराजोपनिषदस्य मन्त्रानामि जिनेभ्यो नमः ॥५॥

अतु फलकल वडिअत सोहने, दृग मनको अति सुसदाय ।

नामो तुम पद पृथि हो, मग विघन सुधन नशिजाय ॥ नीन०

ॐ श्री धार्तराजोपनिषदस्य मन्त्रानामि जिनेभ्यः क्लृप्ते नमः ॥५॥

यह आठों दाव सैवागिरे, नमि आठों अंग उदार ।

अष्टम छिति मोहि दीजिये, तुम आठों गुनगनधार ॥ नीन० ।

ॐ श्री धार्तराजोपनिषदस्य मन्त्रानामि जिनेभ्यो नमः ॥५॥

प्रत्येकायि ।

धम्म जं (ने १०)

धम्म नीन की प्रभा अनूर ज्ञाम में लमे ।

मो जिनेश धम्मप्रभाव्य मो हिये वीम ॥

धातु दीप पूर्व मेरु भर्त्त भूत जांनियो ।

तासुको पदाब्ज पूज कर्म भर्म भानियो ॥

ॐ ह्रीं रत्नप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

वीतराग भाव जास में प्रशस्त शोभितं ।

सो अमित्त देव चित्त मो करो अछोभितं ॥ धातु०

ॐ ह्रीं अमिताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

संभवेशेन अशेस भौ कलेश भानियो ।

आत्म संपदा सुहेत पर्म्म धर्म जांनियो ॥धातु०

ॐ ह्रीं संभवाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

सर्व ही कलंक पंकते अटंक हूँ महा ।

निःकलंकनाथ सेवतें कलंक कौ दहा ॥ धातु०

ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

१ सस्कृत पुलामें 'अमितनाथ' नाम है ।



कौटचंद्र जीनि जास जोनि तें लज्जात हे ।

चंद्रस्त्र्यांमि देवसो त्रिलोक में विख्यात हे ॥ धातु०

ॐ श्री चंद्रस्त्र्यांमि नमो नित्यामि ॥२॥

सर्व जीवकों पुर्ननि पुन्य लाभ देत हे ।

देवसो शुभंकर प्रमोद वृंद हेत हे ॥ धातु०

ॐ श्री शुभंकराय नमो नित्यामि ॥३॥

सागभूतसर्व सर्व जास ज्ञानमें लसे ।

तत्सनाय देव सो त्रिलोक भर्मको नसे ॥ धातु०

ॐ श्री तत्सनाय नमो नित्यामि ॥४॥

सर्व अंग सुन्दरं दृष्टि दुष्य दानकं ।

स्वामि सुन्दरं नभामि सो समुद्र तारकं ॥ धातु०

ॐ श्री समुद्राय नमो नित्यामि ॥५॥

कर्म सर्प्य दर्प्य हारि देव सो पुंरं ।  
जास पाठ पदमकों जलैं भलैं पुंरं ॥ धातु० ।

ॐ हीं पुंरंराय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

जासकों सुरेश औ नरेश वृंद सेवहीं ।  
मैं जपों सदैव सो जिनेश स्वामि देवहीं ॥ धातु० ।

ॐ हीं स्वामिने अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

देह दीसवान मान लक्ष्मी निधान हैं ।  
देवदरा देवनित्त भुक्ति मुक्ति दान हैं ॥ धातु० ।

ॐ हीं देवदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

आठ काठ जारिकें सुमुक्ति वास देत हैं ।  
वासवं सु दत्त दास वासवं सचेत हैं ॥ धातु० ।

ॐ हीं वासवदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

पदवी कर्ण छंद-

जे रत्नप्रस जे अमित देव । जे संभव जे अकलंक देव ॥  
 जेचंद जयति गुण कर पुर्णत । जे तरुनाथ सुंदर सुमीत ॥२॥  
 जे देव पुरंदर जयति स्वामि । जे देववरा यासव नमामि ॥  
 जे श्रेय विश्वतप तेजान । प्रति यो रक निद्राथ मदान ॥३॥  
 जे असलनाथ मजम सुनेन । देवेंद्र प्रवर जय विश्वमेन ॥  
 जे मेघनंद त्रेनेत्रनाथ । गनीत जिनेसुर मुक्त माथ ॥४॥  
 जे सिद्धान गुन असल जुरक । ज्ञायक समकित जिनि परम गुरक ॥  
 जिनि ज्ञान दरम सुख हे अनंत । श्रीगज अत्रगाहन सकतान ॥५॥  
 अति गृहित अग्यावाय धार । वा अगुरु लय अनुगम इदार ॥  
 इत्यादि अचल गुन हे अनंत । गनार मे कलत न लहत अंत ॥६॥  
 मनार आहूति निरुपल लमत । जहे एक रूप आतप रमत ॥

१. 'अहो नार' दण्डी ना हेतु छिया हे । (२) गगो पुरा  
 किंकि श्री गणेश मंत्र नाद नाद छिया हे ।

सो जगत नाथ करुना निधान । मम उरमें अब कीजे सुथान ॥७॥  
 संसार दुक्ख चक चूरचूर । समता शिव संगल परचूर ॥  
 यह विघ्न महीरुह खंडखंड । आनद अनूपम मंडमंड ॥८॥  
 तुम से दाता लखि जगत राज । क्यों जांचो लघु संसार काज ॥  
 शिवराज हेत मोहि देह देह । तजिके विलव सुधि लेहलेह ॥९॥  
 वचा-जै जिन जैवंता, सुगुन अनंता, ध्यावत संता, मोद भरा ।  
 “वृंदावन” वंदत मन आनंदत, जै जै जै शिव रमनिवर ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ ।

दोहा-जो पूजै जिन दसव विधि, भाव सहित लवलाय ।  
 विजय भरत अतीत सो, सुरशिव सम्पत्ति पाय ॥

इत्याशीर्वाद ।

इति श्रीविजयमेरुभरतभूतचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथ विजयमेरुभरतप्राचीचतुर्विंशति जिनपूजा ।

एव शार्ङ्गमिर्ममिन् -

शोभा नागर धालु दीप लघिये नाके दिजा पूर्व हे ।

नामै मेरु विजे विगजत महा मौवर्णभा कूर्वेहे ॥

नाको दन्दिन्न क्षेत्र भारत विपे भावी चतुर्विंशती ।

शार्ङ्गो मिल्ह मुनाय आदिक यहां श्रीसमदाके पती ॥

ॐ श्रीं शार्ङ्गोतिपमेकसपथीचतुर्विंशतिना अवास्तव आस्तन मगोपठ

ॐ श्रीं शार्ङ्गोतिपमेकसपथीचतुर्विंशतिना अथ विष्टव विष्टव २: ३: ।

ॐ श्रीं शार्ङ्गोतिपमेकसपथीचतुर्विंशतिना अथ मम मन्दिनिना अथत  
मत्त तद ।

अष्टक ।

ने के प... गंगाजल भर कनकचंद्रोर्गे, शार्ङ्गम सकल धिन्नाय ।

जनम जगन्मृत मेटन काल, शार्ङ्गोर्गे गुनगाय ॥

दुजेमेरु के जजि, भरत भविष्यत ध्याय । दूजे मेरुके० ।

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वापामि  
केसर चंदन कदली नंदन, दाह निकंदन लाय ।

विधन ताप नाशनके कारण, जजों चरन उमगाय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यचन्दनं निर्वापामि२ ।  
सोम समान सुखद शुचि सुंदर, तंदुल मंदुल लाय ।

अखै संपदा कारन पूजा, वीतराग तुमपाय ॥ दूजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽक्षतान्निर्वपामि  
सुमन सुवरन सुगंधित पावन, सुवरन थार भराय ।

समर शूल निरमूलन कारन, तुम पद पदम चढ़ाय ॥ दूजे० ॥४॥

ॐ ह्रीं धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यःपुष्पंनिर्वपामि  
नाना विधि पकवान वनावों, देखत मन ललचाय ।

छुधारेग निस्वारन कारन, भेट करों शिरनाय ॥ दूजे मेरुके० ।

ॐ ह्रीं धातुमीशित्पणमेकभक्तभारीननुविंशतित्रिनेत्र्यो नैवनिर्गामी॥१॥  
केवलभानु प्रकाश चराचर, तुम देवत जिनगय ।

श्रीप धरो दिग नेह महित द्रुत, ज्यो उर निमिर नशाय ॥ दृजे० ॥  
ॐ ह्रीं धातुमीशित्पणमेकभक्तभारीननुविंशतित्रिनेत्र्यो नैवनिर्गामी॥३॥

कम काट तुम ध्यान अगिन में, भसम कस्यो जगगय ।

दसविधि गंध नुपेवो यानं, ज्यो वसुकरम जराय ॥ दृजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुमीशित्पणमेकभक्तभारीननुविंशतित्रिनेत्र्यो नैवनिर्गामी॥५॥  
आत्म ज्ञान अनिद्रिय आनंद, अतुल सुफल तुमपाय ।

पूजो पाशुक फलसो तुम एव, ज्यो शिव फल सुल्हाय ॥ दृजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुमीशित्पणमेकभक्तभारीननुविंशतित्रिनेत्र्यो नैवनिर्गामी॥७॥  
आठ दरय नर लेय मनोहर, अग्र सजे उमगाय ।

राजन त्रिम त्रिम सुदंग गत, पूजत प्रीति वराय ॥ दृजे० ॥

ॐ ह्रीं धातुमीशित्पणमेकभक्तभारीननुविंशतित्रिनेत्र्यो नैवनिर्गामी॥९॥

प्रत्येकअर्घ ।

छद्द लोलतरंग

सिद्ध वधूवर सिद्धसुनाथं । सिद्ध करै सुविशुद्ध सनाथं ॥  
पूजत हौं तिनकौं नुत शीशं । भाविय भर्त्तं दुतीय गिरीशं ॥

ॐ ह्रीं सिद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सम्यक सार सवै गुनधामी । श्रीगुन सम्यक देव नमामी ॥पू.हौं०

ॐ ह्रीं सम्यगुणाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नाथ जिनिंद सदानंद धारी । सो प्रसुजी सुधि लेहु हमारी ॥पू.हौं०

ॐ ह्रीं जिनेद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

शुद्धचिदात्म रूप विराजै । सम्पतिनाथ सदासुख सार्जै ॥ पू.हौं०

ॐ ह्रीं संपन्नाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

१ सस्कृत पूजाम 'संपन्नाथ' नाम लिखा है ।





उत्तम पर्व उदोतक स्वामी । पूर्व जिनेश नमो शिवगामी ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

देव अकासुक को नितंबंदो । वांछित आनंद पाय अनंदो ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं अकासुकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

शुक्ल सुध्यान वलें अरि चूरे । ध्यान सुनाथ जगद्गुरु पूरे ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं व्याननाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

कल्प जिनेश समस्त प्रकारें । आतम को अविकल्प विचारें ॥ पू० ।

ॐ ह्रीं कल्पजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

बंध सतावन आश्रव द्वारें । संवर रोकत संवर धारें ॥ पू० हो०

ॐ ह्रीं संवराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

स्वच्छ जिनेसुर स्वच्छ स्वरूपं । स्वच्छजती जपि हें शिव भूपं ॥  
पूजत हों तिनको नुत शीशं । भाविय भर्तं दुतीय गिरीशं ॥

ॐ ह्रीं स्वच्छनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

आनन्दनाथ अनंत सुखी हं । पूजन ब्रह्म सुमोक्ष मुखी हं ॥ पूजन हों ०

ॐ श्री आनन्दनाथ अर्थ निरंतामि ॥१३॥

उद्यत जालु प्रभा रचिते हं । देव स्वीप्रभ सुप्रभ से हं ॥ पूजन हों ०

ॐ श्री रक्षिभाष अर्थ निरंतामि ॥१४॥

चंद्रश्री प्रभं प्रभारी । चंद्रप्रभं चिनमूति धारी ॥ पूजन हों ०

ॐ श्री चंद्रभाष अर्थ निरंतामि ॥१५॥

आनंद कंद निदानंद वंदो । देव सुतंद जनानंद संदो ॥ पूजन हों ०

ॐ श्री सुतंद अर्थ निरंतामि ॥१६॥

नीनदुल्योक्त सुने बुनि जा हो देव सुकर्ण नमो पद नाको ॥ पूजन हों ०

ॐ श्री सुकर्ण अर्थ निरंतामि ॥१७॥

नीरय रूप उद्रे जह सोहे । देव सुकर्म जिनसु मोहे ॥ पूजन हों ०

ॐ श्री सुकर्णे अर्थ निरंतामि ॥१८॥

नो ममता पद सुकर्म भंगे हं । नो अममं शिव जुक्त नये हं ॥ पूजन हों ०

ॐ श्री ममता अर्थ निरंतामि ॥१९॥

पारसनाथ शिवालय स्वामी भव्यनिकों भवपार लगामी पूजतहों०

ॐ ही पार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

शास्वत आनंदं कंद धैरैया । शास्वतनाथ कलंक हरैया॥पूजतहों०

ॐ ही शास्वताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

सुदरी तथा इतिविलवित छंद ।

दतिय दीपसु पूरव भारते । जिन भविष्यत सद्गुण धारते ॥

जजहु पूरन अर्घ्य चढ़ायजी । हमहिं आनंद कंद बढ़ायजी ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपविजयमेरुभात्रीचतुर्विंशतिजिनभ्यः षण्णर्धि ।

जयमाला ।

घत्ता-जै जिन रमनीयं गुन कमननीयं अघदमनीयं पूजपदं ।

१ संस्कृत पूजार्थं “स्वस्थथाख्याजिन ध्येयं स्वास्थ्येसवकयोगिभिः” ऐसा पाठ है जिसपर से भगवान का नाम ‘स्वस्थ, ऐसा निकलता है परंतु कविवरने न मालूम ‘स्वच्छनाथ’ कहासे ग्रहण करके लिख दिया है ।

जे शिव गमनीयं व्रत जमनीयं जुत सुमुनीयं नीमिगदं ॥१॥

३३ नामाश्रिती तथा नदी तथा लानल (मात्रा १२)

शिवनाथ भगवान नमस्ते । सम्यक् गुण असक्यान नमस्ते ॥  
 ते जिमिद गुण तान नमस्ते । श्रीसक्यत सतान नमस्ते ॥२॥  
 सर्वे श्यामि गुनराज नमस्ते । मुनिनाथक शिवाज नमस्ते ॥  
 ते त्रिशिष्ट पर उष्ट्र नमस्ते । अश्रितोर हित शिष्ट नमस्ते ॥३॥  
 नलगांत भगवत नमस्ते । पानाथ सर अत नमस्ते ॥  
 जेति अतावुक वीर नमस्ते । पाननाथ परधीर नमस्ते ॥४॥  
 कल्प सोत्तन सान नमस्ते । परर संवर वान नमस्ते ॥  
 सचचना । निरुक्त नमस्ते । आरर कंद अदंरु नमस्ते ॥५॥  
 श्री शिवल अशिला नमस्ते । वन्द्यम शुग भज नमस्ते ॥  
 ते सुनर सुनरेंद्र नमस्ते । श्री मुकुर्ण निरकर नमस्ते ॥६॥  
 श्री सुकभ सुमभाष नमस्ते । पर संजन असमाय नमस्ते ॥  
 पार्श्वनाथ सुगदाय नमस्ते । शासन मद्रा मद्राय नमस्ते ॥७॥

विजय भरतभावीय नमस्ते । चौविस शिवतिय पीय नमस्ते ॥  
हरिहर नुतनित पाय नमस्ते । अमल अचल पददाय नमस्ते ॥८॥  
पंच कल्यानक ईश नमस्ते । गुन अनंत जगदीश नमस्ते ॥  
तारन तरन उदार नमस्ते । भविक "वृद्ध" आधार नमस्ते ॥९॥

वचा--जै जिन गुनदामं, अति अभिरामं जैजित कामं, काम ददं ।  
जै मुनिगन रंजन, भूमंतम भंजन, शिवसर मंजन, ज्ञानसदं ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपविजयमेरुभरतभावीजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामि ॥१०॥

शोरठा--दख भाव विधि लाय, विजय भरतभावी जिन ।  
जोजन जजन कराय, सो नर सुरेशिव सुखलैह ॥११॥

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजयधातुद्वीपभरतभावीचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथ श्रीधातुकी दीपपूर्वविजयमहोत्सवावतदेश्वरस्य  
वर्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा ।

शेष-तृतीय दीप गिरि विजयके, पोगवतके मांदि ।

वर्तमान चैवीस जिन, थापों ही हुळसाहि ॥

३० श्री विजयमहोत्सवावतर्तमानजिना आनरातन नरातन मोंपद ।

३१ श्री विजयमहोत्सवावतर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र लिप्यत लिप्यत ३ ३ ।

३२ श्री विजयमहोत्सवावतर्तमानचतुर्विंशतिजिना अत्र मय मन्निदित्ता  
अत्र मया पद रहता ।

अथाष्टकं ।

३३ गण-सुनो जिनराज अराज मेरी ।

विजयमेरु उचा पोगवन चतमान हेरी ॥ ट्रेक० ॥

उज्जल जल श्रमतागम मर्मले, थार तीन्देरी ।

जनम मान मल्लवेगि हगे प्रसु, कगे न अवंदेगी ॥ सुनो० ।

ॐ ही विजयमेरुदत्तैरावतवर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ॥१॥  
 कदली नंदन चंदन घॅसि करि, प्राशुक जल सेरी ।  
 भवतप हरन चरन परवारों, परमशांति देरी ॥ सुनो जिनराय० चं॥  
 तडुल शशि सम शित अखंड शुभ, सौरभ अविधेरी ।  
 पुंज धरत दुख दंद हरत, आनंद कंद देरी ॥ सुनो०॥ तंडुल ॥  
 समर सुभटनर अमर सकल जन, जेर करत घेरी ।  
 ताहिकियौ निरमूलजजें हों, फूल ललित लेरी ॥ सुनो०॥ पुष्पं ॥  
 निरआकुल सुख अमल अतिंद्री अनुपम तुम पेरी ।  
 चरुचढ़ाय जुग चरन जजौं ज्यों, टै व्याधि भेरी ॥ सुनो०॥ चं॥  
 केवल भानु प्रकाश चराचर, तुम निरखत हेरी ।  
 दीपक सों तुम करों आरती, तिमिर मोह खेरी ॥ सुनो०॥ दीपं ॥  
 करमकाठ तुम ध्यान अगिनिमें दहनकीन हेरी ।



धरा गुणं च उल्लेख जज्ञौ पद, जगति अरि सेवगी ॥ मुनो ० ॥ १४ ॥

भोग महाफल अमल अन्नपम तुग मुभोगेनेगी ॥

नाम आभके हेत जज्ञौ पद, प्राशुक्त फल्लेखी ॥ मुनो ० ॥ १५ ॥

ब्रह्म अनर्ग समता रम गजी. अविनाशी हेगी ।

हम प्रजन पद अग्य था म, हगे जगत फेगी ॥

मुनो जिन राज अरज भेगी ।

विज्ञे भेक उत्तर भोगवन वग्नमान हेगी ॥ १६ ॥

११ प्रयेजने ।

शेखर-मुक्त धामगे जाग, देव अणश्रिम वमतु हे ।

जज्ञौ चान मनलाय, विज योगवन संत जिन ॥ १७ ॥

१२ श्री गणेशाय नमः ।

उत्पन्न जिनगाय, सुपत्ताय मद हस्तु हे ।

जजों चरन लवलाय विजयैरावत संत जिन ॥२॥

ॐ ही पुष्पदाय अर्घं निर्वषामि ।

इंद्र जजत नित जाहि, अरिहंता अरिहंत सो ।

नित प्रति पूजों ताहि, विजयैरावत संत जिन ॥३॥

ॐ ही अरिहतायार्घं निर्वषामि ।

चारित रुचिर धराय, देव सुचारित चित हरन ।

पूजत सुरपति पाय विजयैरावत संत जिन ॥४॥

ॐ ही सुचारित्राय अर्घं निर्वषामि ।

शुद्धध्यान सुखदाय, शुद्धानंदधरें सदा ।

जंजत सकल सुराय, विजयैरावत संत जिन ॥५॥

ॐ ही शुद्धानंदाय अर्घं निर्वषामि ।

मोद अमंद धराय नंदग मोदत जगत सब ।

जजत मियत विनशाय, विजयैगवत संत जिन ॥६॥

ॐ श्रीं नशाप श्रीं निर्माणि ।

पञ्चाक्षर त्रिनाराय पञ्चाक्षर तसुदास चर ।

पूजन भिपति पलाय, विजयैगवत संतजिन ॥७॥

ॐ श्रीं पञ्चाक्षराप श्रीं निर्माणि ।

उदयनंदं त्रिनाराय, आनंदं मिथु वदावही ।

त्रजलें दुगिन नशाय, विजयैरावत संत जिन ॥८॥

ॐ श्रीं उदयनगर श्रीं निर्माणि ।

राम इंद्रु जिनाराय, राम इंद्रुमम दुति धरें ।

पूजतं दगिंद्रु जाय, विजयैगवन संत जिन ॥९॥

ॐ श्रीं रामेन्द्रो श्रीं निर्माणि ।

श्रीकृपाल शिवगय, भजत मिच्छ विचिन अग्य ।

पूजत वाँछित दाय विजयैरावत संत जिन ॥१०॥

ॐ ही कृणालाय अर्घं निर्वपामि ।

लोकालोक लखाय, प्रोष्ठिल केवलज्ञान में ।

जजत जगत सुखदाय, विजयैरावत संत जिन ॥११॥

ॐ ही प्रीच्छिलायार्घं निर्वपामि ।

प्रगट सिद्ध पददाय, सिद्धेसुर सिवतिय रमन ।

पूजत गनफन पाय, विजयैरावत संतजिन ॥१२॥

ॐ ही सिद्धेसुराय अर्घं निर्वपामि ।

वचपियूष सरशाय अमृत इंदु जिनराय तें ।

जजत परम पद, पाय विजयैरावत संत जिन ॥१३॥

ॐ ही अमृतइंदुजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

स्वामिनाथ जिनराय सुगत देत शिव हेत नित ।

पूजन मनवचक्राय, विजयैरावत मंत्र जिन ॥१४॥

ॐ श्रीं ग्याम्बिने नमो निरुत्तमि ।

भेनिन्त्रांग जगराय शिवसाधन हेतु हे ।

पूजन वाञ्छित दाय विजयैरावत संत जिन ॥१५॥

ॐ श्रीं भेनिन्त्राय नमो निरुत्तमि ।

सर्व आय नुभदाय, श्री भगवाथ सुगुननिध ।

पूजन श्रीं शिग्नाय विजयैरावत मंत्र जिन ॥१६॥

ॐ श्रीं सर्वदाय नमो निरुत्तमि ।

आनन्द धन सगाय भेधनंद जिन विजय धुत्र ।

पूजन भजन भवभाग विजयैरावत मंत्र जिन ॥१७॥

ॐ श्रीं भेधनंग नमो निरुत्तमि ।

संदर्भेज जिनगत शैश्यान्त्रि आनंद धर ।

पूजन पाण पत्न्याय विजयैरावत मंत्र जिन ॥१८॥

ॐ श्रीं भवेन्त्राय नमो निरुत्तमि ।

हरिहर प्रीत उपाय हरि जिन पदपंकज जजत ।  
पूजत विघन विलाय विजयैरावत संत जिन ॥११॥

ॐ ह्रीं हरिजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

जै अधिष्ट जिनराय शिष्ट इष्ट दातार वर ।  
पूजत अरघ चढाय विजयैरावत संत जिन ॥२०॥

ॐ ह्रीं अधिष्ठाय अर्घं निर्वपामि ।

शांतिक सब सुखदाय जोगारूढ निपुनमती ।  
जजौं जुगल तमुपाय विजयैरावत संत जिन ॥२१॥

ॐ ह्रीं शांतिकाय अर्घं निर्वपामि ।

आनंद संपति दाय नंद स्वामि भवि वृंदकों ।  
पूजत पाप पलाय विजयैरावत संत जिन ॥२२॥

ॐ ह्रीं नंदस्वामिने अर्घं निर्वपामि ।

त्रिभुवनपति शिरसाय कुन्द पार्श्वं नित सेवर्ही ।  
जजन चगन उमगाय विजयेरावत संत जिन ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं तंराध्यां अं निर्तामि ।

रुचि लर अधिक उपाय, देव विगोचनकों भजों ।  
वियन हसन छुगदाय, विजयेरावत संत जिन ॥२४॥  
ॐ ह्रीं विगोचनाय अं निर्तामि ।

मो योगदानकुन्द—

सजे वलुदर्शै पुनीतगुनीत । वजे मव माज सुनीत सुनीत ।  
जजों उर आनंद पाय सुभाय । विजेगिर उत्तर भाय सुभाय ॥२५॥

ॐ ह्रीं विजे उत्तमगतापैमानतुविजितिन्यः त्वांभे ।

अय जयमान्य ।

३३४ अं ( भाग ३२ )

जैजे जिनैश अनुपाम दिनेश भूगतम निवेश नायन अंशर ।

सेवत सुरेश वेवत गनेश महिमा महेश कारन कलेश ॥  
 गुन अतुल भेश मुनि भजत शेश शिवबल्लभेश हरि अरि प्रवेश ।  
 हम शान देश आये जगेश-भवसिंधुते समुद्धर रमेश ॥१॥

चौपाई छंद—

जै जिनराय अपश्चिम स्वामी । पुरुषपदत जैजै शिवगामी ॥  
 जै अरिहंत सत जन ध्यावै । देव सु चारित चित हरषावै ॥२॥  
 सिद्धानंद सुखंद जिनिंदा । जैजै नंदग आनंद कंदा ॥  
 जै पदमेश परमपद दाता । उदै नंद जै जगविख्याता ॥३॥  
 जै रुक्मैतु इंदु दुतिधारी । जै कृपाल करुना विस्तारी ॥  
 प्रेष्ठिलदेव परम वैरागी । जै सिद्धेश्वर शमता पागी ॥४॥  
 अमृतदेव ज्ञानामृत पूरे । जै स्वामी जिहि भव भे चूरे ॥  
 भेनिलांग अनंग मद गंजन । जै सरवारथ जन मन रंजन ॥५॥  
 मेघनंद आनंद जल पूरन । नंदकेश जिन भ्रमतम चूरन ।  
 जै हरि देव जजत हरि पाद । जै अधिष्ठ जिन कृतमरजाद ॥६॥



जैती शान्तिह जांति करैषा । नंद म्यामी मम विपत्त श्रैष्या ॥  
 हृद पार्श्वे जस शशि समलोकं । देव विरोचन मोचन जोरं ॥७॥  
 ए चउवीश ईश सुखसागर । वरनमान जस जगत उजागर ॥  
 सुविस्त सुखर हिसर नागर । गावा जस नाचत रमसागर ॥८॥  
 द्विम द्विम द्विम मांदल गौरी । उम उम उम नुंकि पग छाजै ।  
 हृदकिंकिनी हिननिनिनिकुंडी । पग नूपुर शिननिनिनिनि गुंजोह ।  
 पद पद पद पादत पुलि दे दे । धुंगुन भुगत गत भेई धेई सो दे ॥  
 दद दद भर पद नाद नंदनं । मधु मधु सुर सुजस रटनं ॥१०॥  
 दन समाज गुन भगत करं दे । भर वर जनिन कउं क हरे दे ॥  
 दस इंदन पद गुन हर जोरी । दरो प्रनु भर वागा मोंरी ॥११॥  
 दय अंजै गुनगुंदा गुन गुंथर भजन गुंदा भगतभग ।

हम जनत गुंदा मम उरंदा भरमतमंदर भानुपग । तं

भुजंगप्रयात छंद ।

जजै उत्तरावतें वर्तमानं । विजै मेरुके जे सुधी बुद्धिवानं ।  
लहै ते इहां सौख्य इन्द्रिजनीत । अतिंद्रि लहै फेरि होंनि निचीतं ।

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजैमेरुऐरावतवर्तमान चौबीशीपूजा समाप्ता ।

अथ विजैमेरुऐरावतातीत पूजा विख्यते ।

स्थापना छंद नंदि श्वराष्टक भाषाका--

गिरि विजय सुर उत्तर सार ऐरावत सो है ।  
तित तीत जिनेश उदार सुरनर मन मोहै ॥  
थापौं उर प्रीत लगाय पूजन हेत सही ।

प्रसु आपु विराजा आय दायक मुक्तिमही ॥३॥

ॐ ही धातुकी द्वीप विजयमेरु ऐरावतातीत जिन-अत्रावतर अबतर संमौ-  
पद् आह्वाननं ।

ॐ श्रीं पापुक्षीं गीरिजियमेरुगैरासतीनजिन । अत्र िष्टिनिष्ठुः ३ः स्थापनं  
 ॐ श्रीं पापुक्षीं गीरिजियमेरुगैरासतीनजिन अत्र मन मखिरिनी भव  
 वा एत स्थाप ।

अथाष्टक ।

वेदंष्टक नाम ३२ ।

सुरस्रितिवार प्राशुक अपार भरि हेम भार धारा निकार ।  
 ह जग अथार जिनवर उधार सुधिल्ल सवार मल करम टार ॥  
 गिग विजे थार उत्तर सिंगार नित तीत चारि अरु वीस तार ।  
 पुत्रों निहार प्रभु मो अवार मंसार मार्गें तार तार ॥

ॐ श्रीं पापुक्षीं गीरिजियमेरुगैरासतीनजिन अत्र िष्टिनिष्ठुः ३ः स्थापनं

कर पूरमार शीनिल निहार चन्दन उदार धमिलित्त मार ।  
 पूत्रों प्रचार जिनैगुन अगार भवनाप टार सुगद् अपार ॥ गि०

ॐ श्रीं पापुक्षीं गीरिजियमेरुगैरासतीनजिन अत्र िष्टिनिष्ठुः ३ः स्थापनं

अवन पिल्ल ईतन प्रतन अभिलिन अत्र गुणायकार ।

तसु पुंजरक्ष सुंखभुजस्वक्ष कलिंकुंजनक्ष शिवगक्षसार ॥ गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुएरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुल ।

यह मदनशूल सत्र जगतभूल कारक अकूल तुमकिय निमूल ।  
तातें सुफूल धरिहों अधूल प्रभुदे अतूल शुभ शीलभूल ॥ गि०

ॐ हों धातुकीद्वीपविजैमेरुएरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुण्य ।

खाजे रसाल मोदक विशाल भरि कनक थाल प्राशुक सुहाल ।  
सो हेदयाल तुमनिकट हाल धरि नमतभाल आकुलनिकाल गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुएरावतातीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैबेध निर्वपामि  
दाहक अमंद दीपत सुछंद सो जजि जिनिंद जगवंद चंद ।

भ्रमतमनिकंद केवलदिनंद प्रगटे अफंद सुखवंद नंद ॥ गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुएरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप ।

दशगंध आन सौरभ अमान खेवत प्रमान वसुकर्म हान ।  
दिशिदिशि उड़ान मनु मेघजान निरततसयान केकीसुजान ॥ गि

१० श्री धारुधीश्वरसिद्धिलोकगणपतीचतुर्गिनिजिनेभ्यो वृषं निर्दिशामि ।

फलपुरुमिष्ट मवशिष्ट इष्ट मेलि वशिष्ट पूजो जगिष्ट ।

हनि अष्टदृष्ट शिव दे सुपुष्ट देविश्वदृष्टि दायक अभिष्टागिण

अं ई धारुधीश्वरसिद्धिलोकगणपतीचतुर्गिनिजिनेभ्यः कृष्ट निर्दिशामि ।

जलकल मिलाय वसु अंगनाय वाजनवजाय सुख मुजगगाय ।

भद्र श्रीजिनाय मनवचनकाय वंदितल्लहाय भवभय लथाय ।

गिरी विजयथाग उचा सिंगागं नितर्नात चाग्रु वीसमार ॥

पजो निहाग प्रभुमो अवार संमारड्ढार्गे तार तार ॥

११ श्री धारुधीश्वरसिद्धिलोकगणपतीचतुर्गिनिजिनेभ्यो वृषं निर्दिशामि

अथ प्रत्येकार्ये ।

वडाभरी नारा १२

रामकडोम महागिरी ज्ञानो । भद्रक वज्र वज्रजिन मानो ।

दत्तिय दीप गिरीविजय सुदत्तोपेण्णयन अनीत जिन पूजो ॥१॥

ॐ ह्रीं वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

उदय विशुद्ध सदा जिन धारोऽउदयदत्त जिनवर अविकारे । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं उदयदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सूरवीरवर सूर्यं जिनंदा । भज्जों भविक मोदनगन चंदा । दु० ऐ० ।

ॐ ह्रीं सूर्याय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुरुषोत्तम नित सेवत जाकों । पुरपोत्तम जिनसदनसुधाको । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

भविकवृद्धको शरन सहाई । शरणस्वामि त्रिभुवनके राई । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं शरणाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

भवि समोध दायक शिवधामं । श्री अवबोध करों परनामं । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं अवबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

परम पराक्रम क्रांति धैर्या । निर्घटकजिन विपति हरैया । दु० ऐ०

ॐ ह्रीं निर्घटकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

अगम पराक्रम जोषे मोहे । सो विक्रमजिन जनमन मोहे । दु० ॥

ॐ श्री विरुभाय नमः ।

हरिहर इंद चंद्र पद वंदे । मो हरिंद केवल अभिनंदे ॥ दु० ॥

ॐ श्री हरिंदाय नमः ।

भनि शिवाथ पंथी पायेयं । पत्रिगिजिन मुनिगन येयादु० ॥

ॐ श्री परशुरामाय नमः ।

भविजनको पद दे निगानं । जिन निखान मूर भगवानंदु० ॥

ॐ श्री नितांगुये नमः ।

दोनों थरमभुगथर स्वामी । थरमहेन पद परम नमामी ॥ दु० ॥

ॐ श्री परमभुगथर नमः ।

चतुगनन चंद्रोद चवान । देव चतुमुल मंगय भाने ॥ दु० ॥

ॐ श्री चतुगनन नमः ।

इंद नरिंद चंद्र पद वंदे । मुहुनइंद जन चंद्र अनंदे ॥ दु० ॥

ॐ ही सुकृतेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

श्रुति अंबुच्छि भविजन श्रुतिद्वारे । देव श्रुतंबुधि अंबुधि तारे ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही श्रुताष्टुधाये अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

आदितसम तन विमल दिपै है । विमलादितजिन कर्म खिपै है ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही विमलादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

देव देवपति नमत अनेकं । देवदेवजिन नमों चिदेकं ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही देवदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

धरनी धर धरनेंद्र सुरेंद्रं । सेवत नित धरनेंद्र जिनेंद्रं ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही धरनेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

भविजन भव जलतें उच्छरे । तीरथ नाथ नमों अविकारे ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही तीर्थनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

परमानंद निरंतर भोगी । उदयानंद शुद्ध उपायोगी ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही उदयानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥



सखाग्र्य पद मिद्ध प्रदाना । सखाग्र्य जिन त्रिभुवन ताता ॥६०॥

ॐ श्रीं सर्वशंभु अं नितानि ॥२१॥

धर्मिक कह धनधान्य बढावैधार्भि रुजिन जन मुक्त बढावै ॥६०॥

ॐ श्रीं धर्मिचार अं नितानि ॥२२॥

गग क्षेत्रे क भवि शिर नोपे । क्षेत्रभ्यामि सो प्रीत बढावै ॥६०॥

ॐ श्रीं धर्म्याग्नि अं नितानि ॥२३॥

इंद्र चंद्र दिन इंद्र भेद्र है । जिन दृग्चिंद्र सुभोय सजे है ।  
 इतियत्री गिरि विजय सृष्टी । ऐंगवत अतीत जिन पूजे ॥

ॐ श्रीं धर्मिचार अं नितानि ॥२४॥

देव-पुंगव अमव वनाय वर पूजो उग्रर ध्यान ।

विजयेगवन तीत जिन नमो जेरि जुग पान ॥२४॥

ॐ श्रीं धर्म्याग्नि अं नितानि ॥२५॥

अथ जयमाला ।

घचानंद छंद ।

अविचल थल जुक्ता, शिवसुख भुक्ता, उक्तिनिरुक्ता, मुक्तिधरा ।  
भूमतम शतखंडा, आनंद मंडा, जै जै जै शिव रमनि वरा ॥१॥

कामिनी मोहन छंद-

जयति वज्रेश वज्रेश पूजत चरन ।

जय उदय दत्त सुख उदय भविजन करन ॥

जयति जिनसूर्य भविजलज के सूर है-

जयति पुरुषोत्तमं जानरस पूर है ॥२॥

शरन स्वामी त्रिजगजीव को शरन हैं ।

देव अबबोध बुधि विसद विस्तार हैं ॥

जयति विक्रम करम शत्रु तुम चूरियौ ।

जयति निरघंट तुम सामरस पूरियौ ॥३॥

जजत हरिहृद हरिहृद पद आहँके ।

भजन परधरितद्धि विबुधगन ध्यायके ॥  
 देव निरयान निरयान निज दासकी ।

रसके देव जिन परि भवि आसकी ॥४॥  
 चतुरमुन देव नित चतुर मुग सेवते ।

सकृत जिनराज गुन सकृत जन सेवते ॥  
 देव कृतिमिगु भविसिंधुने तासकी ।

रिसय आदिग्य मग मुकृत विम्वारकी ॥५॥  
 देव प्रसकी चतुरमेर मूर सेवते ।

देव धरनेट गुन मुमुन मन सेवते ॥  
 नाथ दोरग जगत जालने कारियो ।

उदय आनंद पानंद मेकि रात्रियो ॥६॥  
 जगति मर्यागे मर्यागेर दामर ली ।

धार्मिक देव जिन भवम आधार ली ॥  
 देव मर्यागे मुकृत ऐत्र दासक मदा ।

देव हरिचंद्र पद शरन हमने गहा ॥७॥  
ए चतुर बीस जगदीश नित बंदिये ।

विजय ऐरावतें तीन अभिनंदियै ॥  
तरन तारन हरनें करम जगजन्त के ।

गुन अमल अचल अनुपम लसै संतके ॥८॥  
ज्ञान द्विग शर्म धीरज विशद लसत है ।

सो परमदेव मो मन सदा वसत है ॥  
अरज कर जोरि जुग करछुं सुन लीजिये ।

धरम के नदकौ परम सुख दीजिये ॥९॥  
गता-जैजै करुनाकर मोह तिमरहर ज्ञानदिवाकर उदयकरा ।

संशयतम भंजन मुनिमन कंजन रंजन जै जै विधन हरा ।

अथाशीर्वादः । चाँबले छंद ।

जो पूजे जिनराय पाय जुग दरव भाव विधि मोदधरे ।

धातु दीप गिरि विजयैरावत तीत जगत जन भीत हरे ॥

सो पावे धन धान्य पुत्र प्रिय मित्र कलत्र प्रवीन वरे ।  
 सुगति होय नक्षपति हकें भगवत्कर धरि मुक्त वरे ॥  
 श्री धारुणेश्वरिभेत्पंगार्यागारुणितिपुत्र ममान्ना ।

— १३१३२२१३३ —

अथ ज्ञावीचनुविशानिजिन पूजा प्रारब्धते  
 नंदीश्वराष्टक ही चाल ।

वर धालुकी दीप विद्याल ध्रुव मेरु कला ।  
 नित पुरावन सुरमाल गोभा देत महा ।

नहै भार्या जिन चोरीज मत्र विधि ल्याक हो ।  
 धारुणु ही सो जगदीश दाम महायक हो ॥

\* ही शिखर, ता भार्याजिन भरातर वरुन मेतोह अशमन ।  
 \* ही शिखरमाल न हीजिन अर पिन्निष्ट इ इ अरान ।  
 \* श्री शिखरभार्याजिन अशमनविशेषि भा पर सदरमन ।

अथाष्टकं ।

चाल सुन्दरी छन्द ।

परम पावन वारि सुधारिणे । जजत हौं मलकर्म निवारिणे ।  
दुतिय दीप विजै अइरावते । जिन भविष्यजजौं मनभावते ॥

ॐ ही विजयैरावतभावीजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

कदलिनंदन चंदन लेइये । जजतु हौं भवताप उछेइये ।हु०।

ॐ ही विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदन ।

सुरभि तंतुल मंतुल लाइये । निकटधारि अखे पद पाइये ॥हु०॥

ॐ ही विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंतुलं निर्वपामि ।

समरशूल निमूलन कारने । सुभग फूल धरो मददारने ॥ हु०

ॐ ही विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

चरुशाल मनोहर लैधरो । सकल आकुलकलमपकों हरो ।

दुतिय दीप विजैऐरावते । जिन भविष्य जजौं मनभावते ॥

ॐ श्री विजयेगलभागीचायतिजिनैःश्यां चक्र निरंतामि ।

तिभिःपुनाशरु दीपक भारती कृत ह्ये प्रभु मन्मगु आग्नी॥दु०

ॐ श्री विजयेगलभागीचायतिजिनैःश्यां दीप निरंतामि ।

अगर आदि दशंग सुधूपत्री । हवत कर्म जे सु विरूपजी॥दु०

ॐ श्री विजयेगलभागीचायतिजिनैःश्यां ए निरंतामि ।

फल सु पक मनोग रमाल ह्ये । जजन वाञ्छित देत विशाल ह्ये ।दु० ।

ॐ श्री विजयेगलभागीचायतिजिनैःश्यां कृत् निरंतामि ।

जल फलादिकर्मो मजि अर्थ हे । जजन आनंद होत अनर्थ हे॥  
दुनिय दीप विजे एगवने । जिन भविष्य जजो मन भावत ॥

ॐ श्री विजयेगलभागीचायतिजिनैःश्यां निरंतामि ।

अथ प्रत्येकार्ये ।

श्री. श्री. १६१ ।

श्री. जिनगल आन शोभं, गग विर्तन तिन्हें नित शोक ।

धातु वज्रै गिरि उत्तर जाई । भवियदेव जज्ञौ शिरनाई ॥

ॐ ही वीरनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

देव विजै अरि जीत विराजै । सुंदर श्री उर अंतर छाजै ॥ धा०

ॐ ही विजयाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सत्यप्रभु बच सत्य वखानै । सत्य प्रभाजुत भौतम भानै ॥ धा०

ॐ ही सत्यप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

विष्टर जासु मृगेंद्र लसै है । देव मृगेन्द्र कुकर्म नशै है ॥ धा०

ॐ ही मृगेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

चिंतित लाभ सुदेत जिनिदा । देव सुचिंतमनी सुखकदा ॥ धा०

ॐ ही चिंतामणिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोक समूह विनाश करै हैं । आनंद थोक अशोक भरै हैं ॥ धा०

ॐ ही अशोकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

कर्म गयंग मृगेन्द्र समानं । सो द्विमृगेंद्र नमो भगवानं ॥ धा०



ॐ श्री लिंगेश्वर्य नमो निरुत्तमि ॥७॥

नष्ट स्त्रियो अरि अष्ट प्रकाश । श्री उपवाजिक परम उदारग ॥४०॥

ॐ श्री उपाधिपुत्र्य नमो निरुत्तमि ॥८॥

चद्रसमान सु आनन सो हें । पद्मसुन्दर जगज्जन मो हे ॥४१॥

ॐ श्री पद्मेश्वर्य नमो निरुत्तमि ॥९॥

भगवत्क मोदनि इंदु समान । बोधक इंदु नमो धरि ध्यान ॥४२॥

ॐ श्री योगेश्वर्य नमो निरुत्तमि ॥१०॥

उर योगेश्वर्य-

चिन्ता उन्मूलको हें पाला । चिन्ता हिम श्री चिन्तपुत्रमाला ।

धानु त्रिनेत्रे निरि उचर आई । भाविष्येद्व जज्ञो जिगनाई ॥११॥

ॐ श्री चिन्तापुत्र्य नमो निरुत्तमि ॥११॥

माहम उर उन्मादधर हें । उन्मादक चिन्त मुक्त्तवरे हें ॥ धानु त्रिनेत्रे

ॐ श्री उन्मादक नमो निरुत्तमि ॥१२॥

शिव सुख सहित अपासिक देवा । चतुनिकाय करें सुरसेवा ॥ धा०

ॐ ही अपासकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

करम ज्वाल कैंहे मेघसमाना । जै जलदेव जगत मनमाना ॥ धा०

ॐ ही जलदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

अरिको धातन जाकौं लागै । नारिकदेव भजै भय भागै ॥ धा०

ॐ ही नारिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

शांति सुधारस मेघ जिनिंदा । जै अनिंद्य जिन आनंदकंदा । धा०

ॐ ही अनिंदाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

नाग इंद्र आदिक सुर सेवै । नाग इंद्र जिन भेटि कुंटवै ॥ धा०

ॐ ही नागेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

नीलोत्पल सम श्याम विराजै । नीलोत्पल जिन समता साजै ॥ धा०

ॐ ही नीलोत्पलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

मेरु समान अकंप सरुपं । अप्रकंप करुणा रस कूपं ॥ धा०

ॐ श्री आरुणाय अर्घ्यं निर्वाणामि ॥१६॥

हिन कारज में पूरन स्वामी । नमों पुगेहिन जिन शिवगामी ॥धा०

ॐ श्रीं पुगेहिनाय अर्घ्यं निर्वाणामि ॥२०॥

पापताप भव भेदन हारे । भिंदकनाथ नमों अनिकारे ॥धा०

ॐ श्रीं भिंदकनाथ अर्घ्यं निर्वाणामि ॥२१॥

सदा भगनके पास विगजें । पार्थनाथ भजतें भग भाजें ॥धा०

ॐ श्रीं पार्थनाथाय अर्घ्यं निर्वाणामि ॥२२॥

चच मवृत्त तजनिर्वच स्वामी । दिव्य अग्नि उपदेजक नामी ॥धा०

ॐ श्रीं तजनिर्वचस्वामी अर्घ्यं निर्वाणामि ॥२३॥

गेष दोष नजि मग प्रकशे । नाथ विशेष मोल सुलगशे ॥

धातु विजें गिरि उत्तम जाई । भानिय देव जजों शिगनाई ॥२४॥

ॐ श्रीं शिगनाथाय अर्घ्यं निर्वाणामि ॥२४॥

ॐ श्रीं आठ दरपके अग्रमों पजों चगन जिनेश ।

विजयैरावत भावि तव नाशत सकल कलेश ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशति जिनैभ्यो घूर्णार्थं निर्वपामि ।

अथ जयमालं ।

घटा—परपरनति चूरन समता पूरन जै जिनराज अनंतयुनी ।  
नित सुरजश जंपत अंत कुंकंपत सेवत संपत होत धनी ॥१॥

चौपाइ छंद ।

वीर जिनेश नमै धरि धीरं । विजै देत नित विजै गहीरं ॥  
सत्य पद्म जिन सत्य प्रभावी । सदा मृगेंद्र सुरेंद्र जजावी ॥२॥  
चिन्तामनि चितचिंतित पूरै । सदा अशोक शोक चक चूरै ॥  
मृगपति सदा नमै द्रुमृगेंद्रं । उपवाशिक जै जैति जिनेंद्रं ॥३॥  
पद्मचंद्र सुनि कैरव चदा । बोधकेंद्रु भवि कमल दिनदा ॥  
शिताहिम मम आरति नाशै । उत्साहक उत्साह प्रकाशै ॥४॥  
हे अपाशि जिन हरि भवपाशी । सदा देवजल जिनअधिनाशी ॥  
नारक गति नारक जिन भंजै । जगत पूज अनिद मनरंजै ॥५॥

भाग हा नागिद्वि श्याथं । नीलोत्पल जिन हुति दर आर्धं ॥  
 अन्नरूप पर देत अरुपां । शिव जिन द्विमे पुंगेकित जंपो ॥६॥  
 भेदक रुमे भजे जिन भिदक । पार्थनाथ जिन मन आनदक ॥  
 निर्वीचा गुनचनन अंगोचर । श्रोत्रिरोप शिव पांग करेनर ॥७॥  
 न नरवीश भविग्यत स्वामी । विजयमरु गेगवन नामी ॥  
 गनवर असनि गन पर श्याथं । गुनसागळको पार न पाथं ॥८॥  
 जिनमो अग्न करी कर जोगी । हरो प्रम भयवाया मंसी ॥  
 आठ रुमे मोदि बेरि रंहे हे । इन मग हु म अन्नत मटे के ॥९॥  
 मो तुल वृति हरो जिन स्वामी । वारधार परपदस न नामी ॥  
 पत्नी अग्न शिंप न शरी । पृथ्वापनको सपदशि तागे ॥१०॥  
 स्वा-जे जे जिनमाने, भूगनमहाने, भविरुमलाने, मोदकरे ।

शिवमग परमात्मक, जे जगतात्मक, केवल्योय अगाथरो। नदरो  
 भाग १४८ पर ।

भविन जिनेज गेगवन थान । वित्र गिरिके लु जेने श्री थान ।

मिले मनबंधित आनंद ताहि । अनुक्रम सौ शिवयाम लहाहि ॥

इत्याशीर्वादः

इति श्रीविजैरुण्डेरावतयावीचौवीशीपूजा समाप्ता ।

—\* ० \*—

अथ श्रीधातुकीदीप अचलमेरु संबंधी पूजा ।

( प्रथम चारि विदेहनिके चारि विरहमान पूजा प्रारभ्ये )

दुतधिलवित तथ्य सुन्दरी छंद ।

दुतिय दीप सुधातुकि सोहनों, अचलमेरु तथा मनमोहनों ।  
तसु विदेहनिमं जिन चार हैं, तिनहिं थापत आपत टार हैं ॥

ॐ ही अचलमेरुविदेहस्यस्थितविहरमानजिन स्वरुपभ-विशालकीर्ति वज्रधर  
चंद्रानन अत्रावतर अवतर सर्वोपट्ट आह्वाननं ।

ॐ ही अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन मूरुप्रभ-विशालकीर्ति वज्र धर  
चंद्रानन अत्र तिष्ठ ठ.ठः स्थापन ।

ॐ ह्रीं श्यंगोलीःश्रम्विगापिग्याल निग युग्म विगायर्कोनि रमर  
 चंयान न मम तन्निशिनो भव भव पर स्नाहाः ।

अथाष्टक चाल टप्पा थी ।

प्रभु पूजो हो चरना । त्रितिय मेरु सुविदेह मे ॥ प्रभू ० ॥ । टिका ॥  
 उज्ज्वल जल भरि कनक भुगोमे थाग मनमुल करना ।  
 जनम गमन मल थोथ लुडित भव, सागर पार उतलना ।  
 प्रभू पूजो हो चरना । त्रुनिय मेरु सुविदेव मे ॥ प्रभू पूजो हो ० ॥

ॐ ह्रीं श्यंगोलीःश्रम्विगापिग्याल निग युग्म विगायर्कोनि रमर  
 चंयान न मम तन्निशिनो भव भव पर स्नाहाः ।

जगत त्रिनेत्र चरन कमल जुग भयानाप पगिहरना ॥ प्रभू ॥

ॐ ह्रीं श्यंगोलीःश्रम्विगापिग्याल निग युग्म विगायर्कोनि रमर  
 चंयान न मम तन्निशिनो भव भव पर स्नाहाः ।

तंदुल अमल निशाकर से शुभ सुवन थारी भना ।

पुंज धरत जिनराज चरन द्विग तुरंत अखे सुख वरना॥प्रभू॥

ॐ ही अचलमेशुदिहसंस्थितविहरमान जिन स्रप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-  
धर चद्राननाय तदुलं निर्मपामि ।

कमल केतुकी वेलि चमेली सुमन सुमन सम वरना ।

समरशूल निरमूल करनकों जजों जगत गुरु चरना ॥प्रभु॥

ॐ ही अचलमेशुदिहसंस्थितविहरमान जिन स्रप्रभ-विशाल कीर्ति वज्र-  
धर चद्राननाय पुंजं निर्मपामि ।

नव्य गव्य पकवान विविध मनमोदन मोदक करना ।

अंजुलि मंजुलि जोर जजन पद क्षुधारोग निखरना ॥प्रभु॥

ॐ ही अचलमेशुदिहसंस्थितविहरमान जिन स्रप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-  
धर चद्राननाय चरं निर्मपामि ।

दीपक जोत उद्योत होत तम खेत धूम विनु धरना ।



नामों जजन जगनिरवि तुमपद तिमिर मोह खरुना ॥ प्रभु ॥

ॐ श्री अत्यन्तद्विभक्तियोगविद्यमानजिन सख्या विद्याकीर्ति तत्-  
पर चक्रानाथ दीप निर्माणि ।

धूप द्योग छुगंधित लेकर खेत सनमुल करना ।

आठकाठ अरिष्टर जेरं मो धूप घप विभनना ॥ प्रभु ॥

ॐ श्री अत्यन्तद्विभक्तियोगविद्यमान जिन सख्यभ-विद्याकीर्ति तत्-  
पर चक्रानाथ धूप निर्माणि ।

आम्र कासक अनार मार कलु भार ललित शुचि वरना ।

तासों जजन विधन परि हरिका नृगति मुकतफल धरना ॥ प्रभु ॥

ॐ श्री अत्यन्तद्विभक्तियोगविद्यमान जिन सख्यभ-विद्याकीर्ति तत्-  
पर चक्रानाथ क निर्माणि ।

अत्यफल सरुल भिलाय मनोहा अरय कान गुन वरना ।

पुजत वान लुगल जिनसकं पुजन वंदित करना ॥

प्रभु पूजों हो चरना, तृतीय मरुसों विदेहे में । प्रभू पूजोहो०॥

ॐ ही अचलमेखविदेहस्थितविहरमान जिन खरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-  
धर चंद्रानमाय अर्थ निर्वणामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

चाल नंदीश्वराष्टक की

सूरप्रभ मूरज चिन्ह शिवभगं दर्शावैं ।

भद्रातें जनम जु लिन्ह विजयपुरी गावैं ॥

नृप नागराज महाराज सीतौत्तर जानो ।

तृतियाचल अचल समान पूजत सुखमानो ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपश्चिमरेखदस्रडमंडलमडितविदेहक्षेत्रस्य चक्रवर्त्यादि  
सेवित समवशरणादिविश्रुतिसुक्त श्रीखुरप्रभाय अर्थ ।

सीता दिग दक्खिन मान अचलाचल सोहै ।

सुविशाल कीर्त भगवान चंद्र चिहन मोहै ।

नर पुंडरीक पुर जान गय विजापति हं ।

विजया जननी सुखलान पूजत जापति हं ॥

१० श्री धार्वाकीय पश्चिममैत्रीतादक्षिणे पद्मप्रसंगमङ्गलिकादि  
नेत्रमन्त्रमाद्युष्णदिशिभिर्दिगजमानरिपार्यर्हर्षिणे अर्च ॥२॥

जिन वरू धैर्य महेश शंख निहन रजि ।

मीनोदा दक्षिन देश अचलाचल छोजे ॥

नगरीय छुशीमा मानु मरसति मनमो हं ।

पद्मपारय नृप मम आनु पूजत सुग हो हे ॥

११ श्री धार्वाकीयपश्चिममैत्रीतादक्षिणे सुशीमानगर्भन्दि  
पश्चिमदिशेयकनकराज्यादिशोर्वापद्ममन्त्रिरीस्वधैर्यापनमः त्रि ॥३॥

चंद्रानन आनन चंद्र वृषभ नृजा धरि ।

पद्मावति मान अमंद अचलाचल भारी ॥

सीतोदा उत्तर धाम पुंडरीक नीमें ।

बल्मीक पिता अभिराम पदमावति जी में ।

ॐ हीं धातुकीद्वीपअंचलमेरुसीतोदाउत्तरभंगे पदस्रडमंडलमडितचक्रूरर्यादि-  
सेव्यमानसमवशरणादिशोभाविगजमानविहरमानश्रीचंद्राननाय अर्घ्य॥४॥

चहुसंग सहित वृषभाप, करत विहार सही ।

गनधर सेवत अभिलाष, पावत मोप मही ॥

पद पूरन अरघ चढ़ाय सेवंत हौं स्वामी ।

मोहि आतमज्ञान बढ़ाय कीजे शिवगामी ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपअचलमेरुविदेहस्थितविहरमानजिन सूरप्रभ विशाल  
कीर्ति वज्रधर चद्राननाय पूर्णार्घ्य ॥

अथ जैमालं ॥

धत्ता-जै चारि जिनंदा आनंदकंदा विहरभानं दुखदंद हरा

समवश्रुत स्वामी त्रिभुवन नामी विश्रामी सुविदेह वरा ।

नमो जित सूर प्रभु अभिगम । जगज्जम कंजनिशो दिनव्यामि ।  
 विनाक सुकीर्त नग सरवज । शनैश्च जपे गुन गावनतज ॥३॥  
 मग जग पय चरेण विनेश । कुरुम कल्याणल यप्र समेज ।  
 जपो गिनचंद्र मु आनड कंद । सुमध्यकमोद प्रमोदन चंद ॥ ३ ॥  
 ममरश्रुत गजेंत गजन एव । विभूत अनूप लजे स्वयमेव ॥  
 सुरेश मदा पद मेयल आन । गनेश करे जह तत्त यत्नान ॥५॥  
 नरेण अगोप नमो कगजोप । अनेक सुषय्य सुने पुनि मंग ।  
 अनादि मित्याव मिशय नुंनत । अदे केर कंरुल जान अनंत ॥५॥  
 कंठ रूत श्रायकहो गति सुष्ट । लजे सुरमंपति पूरन पुष्ट ॥  
 कंठ सुरखंडर भक्ति करंत । यजारात गाज समाज अमृत ॥६॥  
 नणे रेड मार वयाप पुनीत । यजे पग नृप अदनुत गंत ॥  
 शानांशमंमनं शानजोप । रेडे पट्टति किनि किनिमिनि शोरा ॥७॥  
 मया मयया अमया धितयाप । मने गत धंगत धंगत पट्टदाप ॥

द्विम द्विमि द्विमिनाद करै मिरदंग । सुरान्बितचग ढपंग अमग ॥८॥  
 तनंनतान महानभनंत । इनादि समाज सजत महंत ॥  
 समौश्रुत माहि वन्यौ सुख साज । वनै नहि भाषत सो सप्र आज ६  
 हमें यह आश लगी जगदीश । मिलै कव दर्शन हे गुनईश ।  
 बुलाय समीप सुनौं तुम वैन । लहाँ निज आतम ज्ञान सुचैन १०  
 घचा-जै जै गुन छायक त्रिभुवननायक विघनविनायक बोधमहा  
 बंदतगननायक नितसुखदायक अव सत्र लायक-शरणगहा

ॐ ह्रीं अचजमेरुविदेहस्थितविहरमानजिनेन्द्रेभ्यो महार्धनिर्वपामी ।

कवित—

सूरप्रभ सु विशालकीर्त जिन वज्र धरेश अगम गुनधाम ।  
 चंद्रानन थे चार तीर्थपति अचल विदेहनि में विसराम ॥  
 कचहुक करहिं विहार कवहुं थित समवश्रन शोभित अभिराम  
 तिनहिं जजत मनवंछित सुषलहि सुकत होहि तिहि करो प्रनाम

गालि अगंडिन उज्जली हो, शशिसम हुति दमकाय ।

पुंज धरत तुम चरन द्विग हो, देहु अघेपद गय ॥ सदा ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

बेल चमेली केनकी हो, सुमन सुमन समलाय ।

ताते तुम पद पूजने हो, समर शूल नशिजाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वाजे ताजे साजके हो, मोहन मोदक लाय ।

नामों तुम पद पूजने हो, श्रुयांगेग नशि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

दीपगजोति सुहायनी हो जगमगात सुरदाय ।

नासों आर्नी कगत ही हो, तिमिर मोह निशि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कृष्णागर आदिक दशों हों, गंध सुगंधित लाय ।

धूप उखेवों चरन ढिग हो, अष्ट करम जरि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्बषामि ॥७॥

मधुर रसल्ले पावने हो, श्रीफल सुंदर लाय ।

तासों तुम पूजा करत हो सुकत महाफल पाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्बषामि ॥८॥

जल चंदन को आदि दे हों आठों दसव मिलाय ।

सो ले तुम आगे धरों हों संकट कोट नशाय ॥

सदा श्रीजिनवरका, पूजा करों सुखदाय ।

अचलमेरु दच्छिन दिशा हो भरतक्षेत्र दशाय ।

वरतमान चौबीस जिनको पूजत सुरपत पाय ॥सदा श्रीजिन०

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्बषामि ॥



अथ प्रत्येकार्थे ।

श्रीगार्ह ३८—

जगदानन्द कन्द सुख वृन्दा । विश्वचन्द्र जिन आनन चन्द्रा ॥

अचल मेरु भारत सुखद्वार्डे । वरतमान पूजो जय गार्डे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो निरंतायि ॥१॥

मकल धरा भारग परगाजे । कपिल देव शमता सुख गजे ।

अचल मेरु भाग सुखद्वार्डे । वरतमान पूजो यश गार्डे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो निरंतायि ॥२॥

वृषदागरु वृषभेन्दु स्वामी । सुभग शील संजुत शिवगामी । अ०

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो निरंतायि ॥३॥

आनमजोनि माहिसव व्यापा प्रियदग्धन जिन विगतकल्याण ०

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो निरंतायि ॥४॥

विषय अंग अतंग मदगंजन । ध्यावो भविकु मोद मन रंजन अ०

चारित रुचिर पात्र अभिरामी । चारित नाथ जिनेस नमामी । अ०

ॐ ही चारित्राय अर्थं निर्वपामि ॥६॥

शमदमप्रशमसहित नितराजै । प्रशमस्वामि जमजीति विराजै । अ०

ॐ ही प्रशमस्वामिने अर्थं निर्वपामि ॥७॥

प्रभादित्य पद तिहुँ जग वंदै । आदृत प्रभा जीति आनंदै । अ०

ॐ ही प्रभादित्याय अर्थं निर्वपामि ॥८॥

उद् पाइता मात्रा ? ४ ।

जिन मुजकेश पद ध्यावो । मन वांछित आनंद पावो ।

तृतियाचल भारत माहीं । पद पूजो वरतलु आहीं ॥९॥

ॐ ही मुंजकेशाय अर्थं निर्वपामि ॥९॥

तपसों तन दीपत जाको । जिन पीतवास कहि ताको । तृ० ॥

ॐ ही पीतवासाय अर्थं निर्वपामि ॥१०॥

नर ईश सुभासु द्वयं । नमने तु सुगन्धिप शशिं ॥ तृतीया ॥

ॐ श्री सुभासु द्वयं नित्यं ॥ ३३ ॥

दृश्या सुदया करि भोनों । जिन दयानाथ अमर्त्तनों ॥ तृ० ॥

ॐ श्री दयानाथ करे नित्यं ॥ ३४ ॥

तु महम्मदगि मम काया । सु महम्मदगि जिनगया ॥ तृ० ॥

ॐ श्री महम्मदगि मम करे नित्यं ॥ ३५ ॥

वसुधै कथं च भृगिंद । जिन भिंदनाम तु त्रिभिंदं ॥ तृ० ॥

ॐ श्री भिंदनाम करे नित्यं ॥ ३६ ॥

हर पैगमर हर मोदि । जिन भवमो मन मोदि ॥ तृतीया ॥

ॐ श्री पैगमर करे नित्यं ॥ ३७ ॥

जिन मरु जगो मुनिगजा । जिनके अर्थिन मत्र हाजा ॥ तृ० ॥

ॐ श्री मुनिगजा करे नित्यं ॥ ३८ ॥

नमरश्चन लब्धी धरि । श्रीमाल भवोदनि नरि ॥ तृतीया ॥

ॐ ही श्रीमालाय अर्घं निर्वापामि ॥१७॥

तिहुँ जोग हने सु अजोगी । निज जोगे सुधारस भोगी ॥तृ॥

ॐ ही अयोगाय अर्घं निर्वापामि ॥१८॥

सु अजोगनाथ पद सेवो । सव जोग समग्री लेवो ॥तृतीया०॥

ॐ ही अजोगनाथाय अर्घं निर्वापामि ॥१९॥

करिकों हरि जेम विदारें । तिमि काम रिपु मद मोरें ॥तृ०॥

ॐ ही कामरिपुवे अर्घं निर्वापामि ॥२०॥

सव दंभारंभ हरे हैं । शिव हेतारंभ करै हें ॥तृतीयाचल०॥

ॐ ही आरभाय अर्घं निर्वापामि ॥२१॥

जिन धर्मचक्र रथ नेमं । जिन नेम करै सव खेमं ॥तृतीया०॥

ॐ ही नेमिनाथाय अर्घं निर्वापामि ॥२२॥

तिहुँ ज्ञान गर्भतें धारी । जिन गर्भ ज्ञान अविकारी ॥तृतीया०॥

ॐ ही गर्भनाथाय अर्घं निर्वापामि ॥२३॥

भावस्य चापह कुल जन्म वेदि । भावस्य सम्मगति रहस्य मोदि १  
 सतस्य तुम भागन नरनधोप । भावस्य अनुभव विफलानिरोप २  
 सतस्य तागत अत शीलदान । भावस्य तुम सगधि मित्यो मश्रन ३  
 सतस्य भावगत संग शोप । सतस्य समस्यारि जुल सनजोग ४  
 सत जाल्य हीसो शीदुयाल । हरि विान हरो मगद रजा ५ ॥ १ ॥

"स्वैत्रै हरनायन मोहनपानहन सकल भव्यजन नोपपग ।  
 वेदन 'ध्रुवपन' भीन यों मन हो जिन संगति सदन भग ॥

"श्री गणेशाय नमः । श्रीमान्पुण्य" विनेत्यो नयो निंतामि ।

"श्री पद्मे मनलय, अचल भक्त नमन चरन ।  
 नो मन वेदित पाप अजाग पदहो लडे ॥

इत्युक्तं ।

श्री गणेशाय नमः । श्रीमान्पुण्य

अथाचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिपूजा प्रारभ्यते ।

तोटकच्छद-

तृतीयाचल भारतभूत जिनं । चौवीश महामुख सिंधु गिनं ।

तिहु थापतु हों इत जोरिकरं । प्रभु आय विराजहु पापहरं ॥

ॐ ह्रीं अचलभरतातीतजिन-अत्रात्र अत्र संशौपद् आहाननं स्वाहाः ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःडः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतजिन-अत्र मसे संनिहितो भवभव धपद् स्वाहाः ।

चाल प्रभू पूजारे भाई ।

तुम पद पूजोँ शिरनाई । जासों पातक जात पलाई ।

अचलमेरु दक्षिण दिशा हो भरततीत जिनराई ॥ तुम०।टेक॥

हिमवन गिरिगत गंगाजल वर, सुवन भुंग भराई ।

तासों पूजत चरन कमल जुग, वृषा रोग मिटिजाई ॥ तुमपद० ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥

शुद्धीं चंदनं चामनं चंद्रमं चंद्रमं चंद्रमं ॥

निघनं तपः निघनं तपः निघनं तपः ॥ तुमपदं ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥

नेदुल आलविजान्द नोति तुम गमक दगक दग्याई ।

पुंज भगन नुम चमन तमल दिग लहन अगेरद गंई ॥ नुम० ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥

नमन तुमन तपः तुमन तपः तुमन तपः ॥

नोदं नुमपद पदम जतो त्रिभि गमगज्जल नजिज्जदि ॥ नुम० ।

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥

ननु गज गननोदुन मोदक ननु नोत्रे नोत्रे ॥

मो पुन निपद यो त्रिनननक देद निगकुलाई । नुम० ॥

ॐ ही अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥  
 वृत पूरित अथवा कपूरमनि दीपक जोति लगाई ।

आरति करत हरत सब आरत आतम जोति जगाई ॥ तुमपद० ॥  
 ॐ ही अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन देवदारु सब लाई ।  
 धूप उखेवतु हों तुम आगे ज्यों वसुकरम जराई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ही अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्य धूपं निर्वपामि ॥७॥

आम्रकाम्रक अनार सार फल प्राशुक पक्क धराई ।  
 पूजौं तुम पदप्रीत लाइकेँ ज्यों वांछित पदथाई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ही अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फल निर्वपामि ॥८॥

जल फल सकल मिलाय मनोहर अरघ कियो उमगाई ।  
 नाचिराचि शिरनाई समरचौं ज्यों अनर्घ पदपाई ।



तुम पद पुरी शिखाई तामों पातक जान पलाई ।  
अपलंगक दक्षिण दिशा हो, भगनीन जिनगई । तुमपदपुत्रों०  
ॐ श्रीं पातकसखागीपतुशिविकेः सो अरे निरिगामि ।

अथ प्रत्येकार्थे ।

ॐ श्रीं गणेश—

शुभेय धें शृंगार जानन वन्दु मेवे ।

तुनियचल भागन धार तीन जजाभि अवे ॥२॥  
ॐ श्रीं गणेश श्रीं निरिगामि ।

प्रिय भित्र मरुळ जगणीन त्रिभयनकों प्यारे ।

तुनियचल भगन अनीत पूजन भवनेरे ॥३॥  
ॐ श्रीं गणेश श्रीं निरिगामि ।

सिन शानिनाथ जिनगण शानि कें मवही ।

तृतियाचल भरत जिनाय तीत जजौं अबही ॥३॥

ॐ ही शान्तिनाथाय अर्घं निर्वणामि ।

जिन सुमति सुमति दरशाय सुमतिनकों प्यारे ॥

तृतियाचल भारत ध्याय तीत जजौं सारे ॥४॥

ॐ ही सुमतिनाथाय अर्घं निर्वणामि ।

मनमथ मद मंथनहार आदि जिनेश कहा ।

तृतियाचल भरत उदार भूत जजामि महा ॥५॥

ॐ ही आदिजिनाय अर्घं विर्वणामि ।

अतिव्यक्त जगोत्तम रीत तीरथ व्यक्त करें ।

तृतियाचल भारततीत पूजत पाप टरे ॥६॥

ॐ ही अतिव्यक्ताय अर्घं निर्वणामि ।

जिन कलासेन भगवान सकल कलाधारी ।

गिर अचल भग्न गनवान पुत्रन नरनरि ॥७॥

ॐ श्री कृष्णाय नमो नित्यम् ।

जिन कर्म परं मग देव अचमद चरि दयो ।

वृत्तियाचल भग्न जु भेव नीन पुनीन भयो ॥८॥

ॐ श्री कृष्णाय नमो नित्यम् ।

मुनिनायक गुरु प्रबुद्ध गिड रु गिद्ध करे ।

वृत्तियाचल भग्न मगुल नीन जजाभि वेरे ॥९॥

ॐ श्री कृष्णाय नमो नित्यम् ।

भग्न भान प्रबुद्ध निर्बुद्ध देव प्रबुद्ध क्रिया ।

वृत्तियाचल भग्न अमृत्त नीन भर्गापि क्रिया ॥१०॥

ॐ श्री कृष्णाय नमो नित्यम् ।

मोक्षम भेरे निज भेरे मोक्षमेव भेरे ।

तृतियाचल भारत परम तीत जिनेश जजै ॥११॥  
 ॐ ही सौधर्माय अर्थ निर्वपामि ।

तमभानन आनन सार देव तमोदीपं ।

तृतियाचल भरत अघार तीत जजामीपं ॥१२॥

ॐ ही तमोदीप्ताय अर्थ निर्वपामि ।

जिन वज्र भजै वज्रेश वज्र शरीर धरै ।

तृतियाचल भरत महेश तीत जजामि वरै ॥१३॥

ॐ ही वजाय अर्थ निर्वपामि ।

सुप्रवृद्धनाथ जिन स्वामि सेवत शुद्धमती ।

तृतियाचल भरत जजामि तीत अभीत जती ॥१४॥

ॐ ही प्रवृद्धनाथाय अर्थ निर्वपामि ।

निराबंध प्रबंध जिनंद कीर्त प्रबंध कहा ।

तृनियानल भग्न सुहृदं नति जज्ञाणि महा ॥१२॥  
 ॐ श्री परमाणु शरी निरागणि ।

देवल सुविमान अनीत गति पंकज पोष्ये ।

तृनियानल भग्न अनीत पूजत दुल मोर्गे ॥१३॥  
 ॐ श्री परमाणु शरी निरागणि ।

जिन सुमुप भविक आनंद दायक गुनगर्वो ।

तृनियानल भग्न सुहृदं नीत जज्ञो यावो ॥१४॥  
 ॐ श्री गुमनाथ शरी निरागणि ।

एतौपम देव पुनीत उपमा रीत गही ।

तृनियानल भग्न अनीत पुजत ज्ञान गही ॥१५॥  
 ॐ श्री परमाणु शरी निरागणि ।

सोपादि परीज विनाश रीत जज्ञोप जिनं ।

तृतियाचल भरत जजास तीत निचीत गिनं ॥१६॥

ॐ ही अकोपाय अर्घं निर्वपामि ।

जिन निष्ठित देव उदार पूजत इष्ट मिलें ।

गज भरत तृतिय गिरि सार संकट कोट टले ॥२०॥

ॐ ही निष्ठिताय अर्घं निर्वपामि ।

मृगनाभि शरीर सुगंध पावन सुखकरि ।

तृतियाचल भरत अबंध तीत जजों भारी ॥२१॥

ॐ ही मृगनाभये अर्घं निर्वपामि ।

देवेन्द्र जिनेंद्र मुनेंद्र इंद्र भजे सारे ।

तृतियाचल भरत महेन्द्र तीत जजों प्यारे ॥२२॥

ॐ ही देवेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ।

मुनिवृंद पदस्थित देव सेवत गुनगाई ।

तृतियाचल भारत एव तीत जजों भाई ॥२३॥

ॐ श्री परमिभार श्री निस्तमि ।

श्रीमानाथ नमो श्री प्रीन दायक मुक्तमही ।

श्रुतियाचल भग्नर्त्तन पूजन शगे लही ॥२४॥

ॐ श्री शिवायार श्री निस्तमि ।

द्वे-पान अथ मज्ञोय के नमो नमन श्री प्रीन ।

अचल भान मन जगनपानि हसन विचन जइरीन ॥

ॐ श्री पाठेभयमार्गीपानिगिनिस्तमि न पूजोपे निस्तमि ।

श्री प्रेमाय ।

ॐ श्री त्रिन गुननागर मुजन उजागर निनननागर मेवकरे ।

श्री जग उजाःक नमदशितारक भयिक "दुंद" नृव प्राणयेरे ॥

ॐ श्री उर-

श्रीदयक शिपुमेन मण । शिपनाथ श्री शिव मुक्त मण ।

श्रुतशानि मज्ञोयि नमिद श्री । सुमेनेन भयान कृत्तुदि श्री ॥२५॥

जिन आदि अनादि विवाद हैं । अतिव्यक्त चिदात्मव्यक्त करें।  
 प्रणामामि कलाधर सेन जिन । जित कर्म जिनं अमलीन गिनं ॥३॥  
 भवि बोधक देव प्रबुद्ध सही । परिवृत्त करै भवि मुक्तमही ।  
 सब धर्म निजात्म धर्म धरै । तम दीपित कर्म कलंक हरै ॥४॥  
 प्रभुवज्र सबै टुल चूर करै । सुप्रबुद्ध महारिपु क्रुद्ध हरै ।  
 निरवध प्रवध प्रनाम करो । सुअतीत जपों भवसिधु तरौ ॥५॥  
 सुसुखेश महेश दयाधर हैं । सुपलोपम मोह विथाहर है ।  
 विनुकोप अकोप सु शत्रुहरै । जिन निष्ठित इष्टित पुष्टकरै ॥६॥  
 मृगनाभ अन्त गुनाकर हैं । नित देव सुइंद सुधाधर हैं ।  
 अति उच्च पदस्थ पदस्थ करै । शिवनाथ प्रमोद प्रसस्त भरै ॥७॥  
 चउवीश धेई जगदीश महा । तृतियाचल भारततीत कहा ॥  
 गुनसार अनत धरै नित है । द्रगज्ञान सुवीरज सजुत है ॥८॥  
 सुख सूत्रम ना लघुना गुरुता । अवगाह अवाध सदा पुरता ॥  
 निररूप सरूप चिदात्म हैं । भवव्याधि व्यतीत शुचात्म है ॥९॥



पर धातम ज्ञोति प्रसाजनु है । अससाह सुपासह साजानु है ॥  
 निरादोष अलोभ अगोभ से । असलीन अनीन अदीन भये ॥  
 अमन अमन आप अकले । असद असद अटल अतडे ।  
 इन आदि अनंत पर पुन है । नित नितनु नित सदासुन है ॥१॥  
 सुमती करजार रक्षो वितरी । सासागर सां शिष्यास पर्यो ।  
 नित आत्म जोगि उदोत हर । दुपदशरिदि पित्त समूह हरौ ॥२॥  
 अज्ञे जे नितस्वामी शिवसुगामी । सुवज्ञनापी देवमहा ।

"बृदाविव" वाचन शीम नवावन बोद्धिन अये प्रकच्छ लक्ष्मी  
 ॥ गणकर्मयोगपरिणामिनेये धर्म ॥

अज्ञे जे अन्त अनीन भगवतिन जेजे सुगामी ।  
 दस भार विधि गहिन सु ती नर हे वडभागी ।  
 वद भार सुय धनधान्य सकल मनवदित्त पाई ।  
 सुगनि होई पुनोन चक्रमनि हे शिव गदि ॥

इत्याशीर्वादः ।

इतिथी अचलभरतातीतचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

अथाचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशति जिन पूजा ।

अहिल उद् ।

दुतिय दीप सुविशाल धातुकी सोहनों ।

पश्चिम अचल सुमेरु भरतमन मोहनों ।

होनहार चौवीथ जिनेसुर सारजी ।

थापो पूजन हेत प्रभू सुपधारजी ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्राप्रतर अत्रतर संवैपद् आद्धानन ।

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ टःठः स्थापनं ।

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भवभव वपद् स्वाहा ।

त्रिमंगी अपनाशक छद् ।

हिमवनगत गंगा जलभरि भृगा मुचि सरवंगा सुखकारी ।

शुभ पटनर स्वामी शार हगमी तुगा नगागि अतिभारी ॥  
 निगि अचल्यनिगने अति छविछाने भगतममाजे मुपमज्जे ।  
 तिन भापियेदेवे चवविज एवं कृत्वाद् मेवं दृढ भाजे ॥

॥ १ ॥ पटनर स्वामी शार हगमी तुगा नगागि अतिभारी ॥ १ ॥

वगि वावनचदन कदली नंदन द्रुहनिरुद् जीनवं ।

करि तुगापदंजन हे जिनचदन हरि भवकंदन भवकं गि० नि०

॥ २ ॥ पटनर स्वामी शार हगमी तुगा नगागि अतिभारी ॥ २ ॥

वद्वृत्त दुनि माडिन अगि छविगडिन पुंचउमडित मनद्वगि ।

दुपद्वगिने चद्वंजिन वनगनमडिनअडिन छविअडिन हितथगिगिगिगि

॥ ३ ॥ पटनर स्वामी शार हगमी तुगा नगागि अतिभारी ॥ ३ ॥

मागल नगावन तुम पमु पावन जील वद्वंजन ज्ञानिमद्व ।

पट दल्यदुहावन दिगमन भावन चगनचयवन अतिगद्व ॥ गि०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥  
 पटरम करिजित धुधाविभंजिन चरु दुखगजित मृदुसो हे ।  
 तुमपद पूजत जगजशकूजत शिववर हूजत मन मोहे । गि०ति०  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैऋद्य निर्वपामी ॥५॥  
 दीपगतमखडन दुतिदिगमडन सत्रव्रह्ममंडन मोदकरा ।  
 सो तुम दिगवारों श्रुति विस्तारों भूमतमटारों बोधकरा ॥ गि०ति०  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो द्वीप निर्वपामि ॥६॥  
 दशगंध बनाईं तुम दिगलाईं हे जिनराईं जशगाईं ।  
 खेवों उमगाईं हरप बड़ाईं करम जराईं शिख्राईं ॥ गि०ति०  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो द्रुपं निर्वपामि ॥७॥  
 फल पक्वमुहावन मनललचावन विघननशावन लै आयौ ।  
 तुम पदतर धारत दारिद्रहारित सुखविसतारत उभगायौ ॥ गि०ति०

ॐ श्री अचलेश्वरभगवांशुशिरानिजिनंभ्यः कृत्त निरोगायि ॥८॥

जलरुज्ज मरमाजे राजनवाजे विविध ममाजे जुतराजे ।

नुम मेवनरुजे हे महागजे भगतकाजे शिवपाजे ॥

शिरि अचल विगजे अति छवि छान्ने भक्तममाजे मुलमाजे ।

भित भाविसंभं चवविश पयं कृतपद मेवं दुलभाजे ॥

ॐ श्री सत्यशक्त्यात्मनिशिरानिजिनंभ्यो जं निरोगायि ॥९॥

अथ प्रत्येकाये ।

शक्त्येश जिनराय, कारकणि केश हे मरुल ।

इच्छिन शिवपद दाय, अचल भक्तभायी जजो ॥१॥

ॐ श्री मरुतेस्तुत दो निरोगायि ।

चक्रद्वान जिनदेव, भाविक चक्र शक्र मज्ज ।

शक्त्यरु रुति मेय, अचल भक्त भावी चजो ॥२॥

ॐ हीं चक्रहस्ताय अर्धं निर्वपामि ।

बहुनृप सेवते पाथ, द्वेष रहित कृतनाथ जिन ।

मोपर होहु सहाय, अचल भरत भावी जजों ॥३॥

ॐ हीं कृतनाथाय अर्धं निर्वपामि ।

पद्मेसुग जिनचंद्र चंद्रवदन छवि देत नित ।

हरत सकल दुखदद अचल भरत भावी जजों ॥४॥

ॐ हीं परमेश्वराय अर्धं निर्वपामि ॥४॥

गनहर मूरत जास, देवसु मूरत जगत हित ।

जस कीरतकी राश अचल भरत भावी जजों ॥५॥

ॐ हीं सुमूर्तये अर्धं निर्वपामि ॥५॥

मुक्तक्रांत जिन स्याम, मुक्त रमनिवर मुक्त कर ।

नमों क्रांति सुखधाम, अचल भरत भावी जजों ॥६॥

ॐ ह्रीं मुक्तिरान्ताय अर्धं निर्वपामि ॥६॥

केशसमूह उपाग. व्रतधोरं निःकेश जिन ।

सो मो पतित उधार, अचल भक्त भावी जजों ॥७॥

ॐ ह्रीं निःकेशाय अर्धं निर्वपामि ।

देव प्रशस्तिक सार, देत प्रशस्त महान सुख ।

मम दुखदं निवार, अचल भक्त भावी जजों ॥८॥

ॐ ह्रीं प्रशस्तिरूप अर्धं निर्वपामि ।

निराहार जिनसार कमलाहार वितीत नित ।

सो मम विघ्न निवार, अचल भक्त भावी जजों ॥९॥

ॐ ह्रीं निराहारय अर्धं निर्वपामि ।

भजों अमूरत देव विमल शान्ति चिद्रूपवन ।

कस्त शर्चापति सेव. अचल भक्त भावी जजों ॥१०॥

ॐ हीं अमृतर्था अर्थं निर्णयामि ।

चार वरग नित जाहि सेधित सो द्विजराज जिन ।

नमों जोरकर ताहि अचल भरत भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं द्विजनाथाय अर्थं निर्णयामि ।

श्रेयनाथ भगवान, श्रेयकरै पातक हरें ।

देत सकल सुखखान अचल भरत भावी जजों ॥११॥

ॐ हीं श्रेयनाथाय अर्थं निर्णयामि ।

छंदनाराच ।

रुजादि दोष नाशिकें निजात्म शुद्ध भाशियो ।

प्रबोधि भव्य वृंदकों अरुज्जकर्म नाशियो ॥

नमामि पाद पंकजं सुंद्रं जासकों भजें ।

तृतीय मेरु भारते भविष्यतं जिनं जजें ॥१३॥



ॐ ही अरुजाय अर्थ निर्वणामि ।

समस्त देव सेवही सदैव देवनाथकों ।

भवाब्धि हूवते गहो जिनेश वेणि हाथकों । न०तृ० ॥१४॥

ॐ ही देवनाथाय अर्थ निर्वणामि ।

समस्त दीनपै दया धेरं दयाधिके जिन ।

निजातम स्वभाव में विगजने सदा तिनं । न०तृ० ॥१५॥

ॐ ही दयाधिकाय अर्थ निर्वणामि ।

सुपुण्यनाथ नायकं सुप्रमं धर्म दायकं ।

सु पुण्यत्राप दायकं प्रशस्तशील लायकं । न०तृ० ॥१६॥

ॐ ही पुण्यनाथाय अर्थ निर्वणामि ।

नरेश ओ सुरेश वृंद जाहि नित्य भेवही ।

नेगजनाथ देवमो भवाब्धि नाव भवही न०तृ० ॥१७॥

ॐ ह्रीं नरेणाय अर्घं निर्वणामि ।

समस्त जीवोंपे दया धौं सदा विराजहीं ।

प्रती सुसूतकों भजें अशेष क्लेश भाजहीं ॥ न० तृ० ॥ १८८ ॥

ॐ ह्रीं प्रतिभृताय अर्घं निर्वणामि ।

दिविंद भाव निंदचंद वितरंद भ्यावही ।

सुनाग इंद्र देव सेवते सुशर्म पावही । न० तृ० ॥ १९१ ॥

ॐ ह्रीं नागैश्वर्याय अर्घं निर्वणामि ।

महा तपोदिके धनी तपोधिकं अरायही ।

नमों सदा तिन्हें समस्त परम शर्म सायही । न० तृ० ॥ १९० ॥

ॐ ह्रीं तपोधिकाय अर्घं निर्वणामि ।

दशोदिशा विषं सुव्याप्त कीर्त जास हे रह्यौ ।

दशाननाख्य देव सेवते सुबोधको गह्यौं । न० तृ० ॥ १९१ ॥

ॐ हीं दशाननाय अर्धं निर्वापामि ।

उभे प्रकारको तपादि तासके धनी सही ।

अरण्यनाथको नमामि देत मुक्तकी मही । न०तु०॥२२॥

ॐ हीं अरण्यनाथाय अर्धं निर्वापामि ।

अतंगके दशों अनीनकों विनाश कीन हें ।

दशा सुनीक्कों नमों सदैव सो प्रवीन हें । न०तु०॥२३॥

ॐ हीं दशानीकाय अर्धं निर्वापामि ।

सदा अछोभ राजही पुनीत भाव साजही ।

जिनेंद्र शालिकं भजें दरिद्र दुख भाजही ।

नमामि पादपंकजं सुंदर जासकों भजें ।

तृतीयमेरु भास्ते भविष्यतं जिन जत्रें ॥२२॥

ॐ हीं शान्तिराज्य कर्धं निर्वापामि ।

स्थाद्वता-अष्टद्रव्य सब छाजिकें वरं, नाचिाच गुनगायहीथरं ।  
 पूजिहो अचल भारते महा, होनहार चवगीश जे कहा॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णां चिं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

धत्ता-जै जिन कलपटुम दयावेलि तुम सुमन सुजसगम कंतवरा ।  
 फल शिवसुरमंडित विपति विहंडित वांछितार्थपद पुष्टकरा॥

पाद्री छंद—

जै रक्तकेश आनंद भेश । जै चक्रहस्त तुत शक्रशेष ॥  
 कुतनाथ कुतारथ करत भव्व । परमसुर पूरत ज्ञान सब्व ॥१॥  
 जय देव सु सूरत मदनभग । जय सुकतकांत शिवकांत संग ॥  
 निकेश केश तजि व्रतवराय । जय जय प्रशस्तपद परमदाय ॥३॥  
 जय निराहार अचिकार बुद्ध । जय जय अमूर्त जिन सुगुन शुद्ध  
 द्विजनाथ मोहि दुखतं निकार । श्रेयो गति मो दै श्रेयसार ॥४॥

जय अरुज हरो मम रोग एव । जय दयानाथ सुधि धेनि लेन ॥  
प्रणमामि दयाधिक दयाधीश । जे पुष्पनाथ गुननिधि जर्गीश ॥५॥  
नरनाथ नमं नरनाथ पाय । प्रतिभृत गहन गुनगन जिनाय ॥  
नागेंद्र देव नागेंद्रराज । नित देव तपोनिध सुखसमाज ॥६॥  
जय जैति वज्रानन सुजशराज । आरण्यरुके सुर असुर दाम ॥  
नित नमो द्जानिक निगुन देव । शाब्धिक जिनवर पद करो मंत्र ॥  
ए धातुर्दीप गिरि अचल नाम । नित भगत भविष्यत सुगुन धाम  
मुनिमडल नित चित धरत ध्यान । मुरनग्वगपजत चरन आना ॥८॥  
ये तारन तरन दरन फलेज । निरदोष मोनपोषक महेज ।  
प्रियुषन जनमन परज दिनद । सुगसागर बरुन मदग चंद्र ॥९॥  
"वृंदावन" मंचत जुगलपाप । जिमि विचनमनन तनछिन चित्ताग ।  
अप जगन गरी प्रभु प्रीत गार । भवसागरतें मोकां निहार ॥१०॥  
ए-जैजे जिननाथक मवविधिलायक द्वायकभाव अनंतपती  
भवतापनशायक शानि बदायक तुम गुन नित चित जपत जती

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभायीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो मद्भायं निर्भयामि ।  
 आथा छ०—जो पूजे मनलाई, तृतियाचल भारतेश सुखदाई ।  
 भायी त्रिभुवनराई, सो पवि मुक्त मुक्तकराई ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति अचलमेरुभरतभायीचतुर्विंशतिजिनपूजा सप्तर्णा ।

**अथाचलमेरुऐरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन पूजा ।**

रोडक उद—

दुतियदीप अभिराम अचल पश्चिम छवि छजे ।

ताकी उत्तर माहि क्षेत्र ऐवरावत गजे ॥

वरतमान चौवीश तहां त्रिभुवन के नायक ।

थापतु हों करजोर इहां आधो वरदायक ॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रायतरअवतर संशोपद् आढाननं

ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ. स्थापन ।  
 ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिन—अत्र मम मन्निहितो धरा  
 धरा मद् स्वाहा ।

( चाल फेडग नारण धानतराहन पूजा ताके अष्टकी )

सकल सुखदान, पूजो चरनकमल अमलान । सकल सुख० ।  
 अचलाचल ऐगवतथान, वरतमान जनकंजन भान । स० टिक॥  
 मुनिमनमम जल्लउज्वल आन, धारकत मन्मुखदुखहान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिनेभ्यो नमः निर्गामि ॥१॥

चदन केरलिनंदनमान, घसि लशि शशि सम ममतादान । म० ।  
 ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिनेभ्यः नमः निर्गामि ॥२॥

तंदुलमंदुल उज्वल भान, पुत्रविगुंजन शिवपददान । म०  
 ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिनेभ्यो नमः निर्गामि ॥३॥

सुपन मल्ल अलि गुंजन आन, धरत हगन उर मदन वितान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुण्यं निर्वपामि ॥४॥  
नेवज तुरितपुरितरसथान, जजतभजत आकुल कलकान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

दीपक जोत दिपत दुतिथान, जजततुरित उरतिमिरनसान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगरदहतवसुकुसुम दहान धूम धूम यह तास उडान । स०अ०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

फलकलदलनचलन शिवथान, तुमढिगथारत विवनविलान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

जलफलसकल विमलशुभ आन, अरघजजत करि अनुभौ पान ।

सकल सुखदान, पूजों चरन कमल अमलान । सकलसुख०

अचलाचल ऐरावत थान, वरतमान जनकंजन भान । स०॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥१०॥



अथ प्रत्येकार्थ ।

नौषाई उट—

माथित नाम जिनेश नमामी । जिनको व्यावत हं शिवगामी ॥  
 धातु अचल गेरावत यानो । वरतमान पूजो वरि यानो ॥१॥

ॐ नो माथिताय नमं निर्वायि ॥१॥

जिनस्वामी त्रिभुवन आधार । सेवत संव चार परकार ॥धा० व०  
 ॐ श्री जिनन्वायिनेऽं निर्वायि ॥२॥

ममितिंद्रिय जिनद मितिंद्रिय । नमित इंद्रजे अनिइंद्रिय ॥धा० व०  
 ॐ श्री म्मितिंद्राय नमं निर्वायि ॥३॥

अन्यानंद जिनदभिमगम । अनंदमदिर शिवपुग्धाम । धा० व०  
 ॐ श्री न्यानन्दाय नमं निर्वायि ॥४॥

पुष्टुपकोत्पुष्टकजिन इश । कुण्डिन कमलनयननिजिदीश । धा० व०  
 ॐ श्री पुष्टुपकोत्पुष्टकाय नमं निर्वायि ॥५॥

त्रिभुवन मंडनमंडन सहा । मुंडक नाम नमो निरमल्ल । धा० व०

ॐ ह्रीं मुडकाय अर्घं निर्वापामि ॥६॥

प्रहतहते कंदर्प प्रचंड । सेवत सुरनरनाग रमंड । धा० व० ।

ॐ ह्रीं महताय अर्घं निर्वापामि ॥७॥

मदनसिंघ प्रणमो करजोर । वेगि प्रभु भवसंकल तोर । धा० व०

ॐ ह्रीं मदनसिंघाय अर्घं निर्वापामि ॥८॥

इंद्र समूह नमै पदकंज । हसमिंद्र जिन भो भै भंज । धा० व०

ॐ ह्रीं हंसमिंद्राय अर्घं निर्वापामि ॥९॥

इंद्रचंद्र दिग सेवत पाय । चंद्र पार्थजिन गुनसमुदाय । धा० व०

ॐ ह्रीं चंद्रगर्वाय अर्घं निर्वापामि ॥१०॥

भाविकअब्जवोधकजिमभान । अब्जवोधजिन सुगुननिधान । धा०

ॐ ह्रीं अब्जवोधाय अर्घं निर्वापामि ॥११॥

जिनको रूप रुचिर दृश्यात । जिनवल्लभसो जगविर्यात । था०  
 ॐ श्री जिनवल्लभाय अर्थ निर्वाणाय ॥१३॥

ॐ श्री गौतमाय ।

विभ्रूति अनूप लगे जुगजास । विभ्रूत जिनेश नमों सुखराश ।  
 तृतीय गुराचल उत्तर यान । जजों ऐश्वर्य वर्तसु मान ॥१३॥  
 ॐ श्री विभ्रूणाय अर्थ निर्वाणाय ।

कुकुशाजिनेश सुखामृतकुंड नमों जिनको नित वासवकुंड ॥ तृ०  
 ॐ श्री कुकुशाय अर्थ निर्वाणाय ॥१४॥

सुवर्ण शरीर लामे सुखदाय । सुवर्णशरीर नमों जिनराय ॥ तृ०  
 ॐ श्री सुवर्णशरीराय अर्थ निर्वाणाय ॥१५॥

महा जगोमं जयवंत मरूप । नमों हरिवाम सुधागम कर ॥ तृ०  
 ॐ श्री हरिवामाय अर्थ निर्वाणाय ॥१६॥

नमैन्नित प्रीतधरं भवि जाहि । नमो प्रियमित्र धगे उर ताहि । तृ० ।

ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१७॥

निजातम धर्म समस्त धरेय । सुधर्म जिनेसुर कर्म हेरेय । तृ० ।

ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१८॥

प्रिया रतनेश जिनेश नमाम । रमाशिव संग क्रियौ विसराम । तृ० ।

ॐ ह्रीं प्रियारत्नाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१९॥

सैवसुर आनंद धारि नमंत । सुनादित नाथ नमो भगवंत । तृ० ।

ॐ ह्रीं नंदनाथाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥२०॥

अखड पदस्त लियौ जिनगज । नमो अमुनीक सैव सुखसाजा । तृ० ।

ॐ ह्रीं अथानीकाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥२१॥

सुपर्व जिनेशनि गर्व लशेय । सदा समद्रिष्टिय चित्तधरेय । तृ० ।

ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥२२॥

ततनतवन अततन वितताई। मनननननन फिरि किल्लडाई॥१०॥  
 शम्भमशमशमप्रमप्रमकंती । दमदमदमदमदमदमदसकंती ॥  
 भगतभार उर अतुल धरे हे । सकलकला नृत प्रगट करेहे ॥११॥  
 निजभय सकलसफल तः करही भगति प्रसाद करमदल मलनी ॥  
 धन्यदेव तुम विसुवन तावन । अशाग्न शान जगत उद्गाग्न ॥१२॥  
 सोपे कृपात्मो जगनायक । देह्र सोपसुख अविचल दायक ।  
 वसो मदा उर अंतर मोरे । "तृन्दावन" यदत कर जोरे ॥१३॥  
 धात-जे जे शिवमंडन भवगत खंडन इद्रिनिंदन शुद्धमती ।  
 तृतिथे योगवत सुगति ध्यानत वगतमान जिन बुद्धपती ॥१४॥  
 ॐ ह्रीं नमोभक्तमनमानवृत्तिगतिजिने-भो मन्मथे नितिरामि ।  
 गोशा-जो पूजे मनलाय वगतमान जिनराजपद !  
 तृत्तियैगवन ध्याग मो मंत्र सुख लहि शिववेर ॥

द्वयाकीमंत्र ।

श्री श्री नचयेकेशोर्गाते त्तमान पुना समागा ।

अथाचलमेरु ऐरावतेऽतीत जिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्थापना—(चाल नदीश्वराष्टक की)

दुतिदीप अचल गिराज ऐरावत जानों ।

तित तीत नमों जिनराय चौविश युति ठानों ॥

थापों त्रिविधा करजोर हे त्रिभुवन स्वामी ।

इत आय हरो दुःख धोर कीजे शिवगामी ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्रावतरअवतर सर्वौपट् आसनन

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठाडः स्थापनं ।

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिनअत्रममसन्निहितोभवभवपट्स्वाहा

अथाष्टक—(प्रभु पूजारे भाई)

नित पूजारे भाई मुक्तमन जिनराजकौं नित० ।

अचलमेरु उत्तर ऐरावततीत सकल सुखदाई ।

सुरसुरेश पद पूजत जाके तनमन प्रीत उपाई । नि० ॥ टिक ॥

मोहमहामल भोग प्रभु तुम ह्यायक समकत पाई ।

जान्हवीय जलमों हम पूजें । ह्यायक सम्यक दाई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्नीह्रीपाचयमेग्रेगतातीनजिनेभ्यो जल निर्वापामि ॥ १ ॥

ज्ञाना वरनी नाथ प्रभु तुम ज्ञान अनंत उपाई ।

चंद्रन सो पद पूजों जातें ज्ञान अनंत लहई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्नीह्रीपाचयमेग्रेगतातीनजिनेभ्यो सुगंधं निर्वापामि ॥ २ ॥

दृश आवसन नशिनाथ तुम दृश अनंत जगाई ।

तदुल अमल लेय पद पूजों ज्यों अनंत द्विग थाई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्नीह्रीपाचयमेग्रेगतातीनजिनेभ्योऽन्नं निर्वापामि ॥ ३ ॥

अंतगय अरि चरु प्रभु, तुम बल अनंत उपजाई ।

कृल भोगं तुम चरन कमल द्विग ब्यो अनंत प्रभुताई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीतजिनेभ्यः पुणं निर्वपामि ॥४॥

धुधविदनी नाशि लियौ तुम निरुआकुल ठकुराई ।

चरु चढाय पूजों पदपकज ज्यौं अत्राध पदपाई ॥नि०अचल०

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीतजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

आयुकरम अवगाहन गुन मम रोकि रह्यो जिनराई ।

दीप चढाय जजों प्रभु तुमको जिमि सों गुन उदय कराई ॥नि०

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीतजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

नाम करम सूछिम गुन ढकिकें जग बहु नाच नचाई ।

धूप दहों तुम चरनन आगे सो गुन प्रकट कराई ॥नि०अ०॥

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

गोत अगुरुलहु गुन मम रोक्यौ बहु विधि जग भरमाई ।

फलसों पूजत यह फल पावों अजर अमर ठकुराई ॥नि०अ०॥

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥



जल फल सकल ललित लेकर मैं भगत भाव उभगाई ।  
 जगत तुम त्रिभुवन के नायक मनवाँछित सुखपाई ॥  
 नित पूजारे भाई, मुकत रमनि जिनराजकों । नित पूजो रे०  
 अचलमेरु उत्तर ऐगवत तीत सकल सुखदाई ॥

सु सुशेष पद पूजत जाके तनमन प्रीत लगाई ॥ नित पू० ।  
 ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ८ ॥

अथ प्रत्येकार्थ ।

शेख—सुगिरि सम गुरु जगतगुरु श्रीगुरु जिनगय ।

अचलैरावन तीत पद पूजों मन वचकाय ॥१॥

ॐ श्री गुरुदेव्यै नमः ॥

जिनकृत जिनकृत मोद जग मुकत रमनिपति न्याय ॥ अ०

ॐ श्री विष्णुनाथाय नमः नमः ॥ १० ॥

कैटभनाथ जपों सदा मनवांछित उपजाय ॥ अचलै०॥३॥

ॐ ही कैटभनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

श्री प्रशस्त जिनचंद्र कों पूजत पाप पलाय ॥ अचलै०॥४॥

ॐ ही प्रशस्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

निरद्वै जिन अरि दमन क्रिय दया धुरंधरं राय ॥ अचलै०॥५॥

ॐ ही निर्दयाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

निजकुल कमल दिनेंद्र हैं श्रीकुलकर जिनराय ॥ अ० ॥६॥

ॐ ही कुलकराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

वर्धमान गुन वृद्धजुत उदय अपूर्व पाय ॥ अचलै० ॥७॥

ॐ ही वर्द्धमानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

अमृत इंद्र गुनवृंद प्रभु अमृत इंद्र पदपाय ॥ अचलै० ॥८॥

ॐ ही अमृतेंद्रवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

संख्यानेंद्र जिनेंद्र नित आनेंद्र अमित कराय ॥ अच०॥९॥

ॐ ह्रीं मर्यादानंदाय अर्थं निर्वापामि ॥०॥

कल्पद्रुम सम देत सुख कल्पप्रकृत जिनराय ॥ अच० ॥१०॥

ॐ ह्रीं कल्पद्रुमाय अर्थं निर्वापामि ॥१०॥

मेवत हरि नित तासको श्रीहरिनाय जिनाराय ॥ अच० ॥१३॥

ॐ ह्रीं हरिनाथाय अर्थं निर्वापामि ॥१३॥

बहु स्वामी त्रिभुवन तिलक मेवत त्रिभुवन पाय ॥ अ० ॥१३॥

ॐ ह्रीं बहूस्वामिने अर्थं निर्वापामि ॥१३॥

उद मारुवत प्रन्नार ५॥५॥५ भात वर्णं १०

भद्र जिनेसु भद्र भेरं । आनंद अत्रुधि वृद्ध करे ।

भेम्बृतीय ऐरावत हे । तीन जेजे सुख पावत हे ॥१४॥

ॐ ह्रीं पद्मेराय अर्थं निर्वापामि ॥१४॥

श्रीप्रविषात जिनेश वरा कर्म कुलाचल भेद रुग ॥ भे०ती

ॐ नं प्रतिपानाय अर्थं निर्वापामि ॥१५॥

पूरन ब्रह्म विचार जती । ब्रह्म सुचारिणि शुद्धगती ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचारिनाय अर्थं निर्वपामि ॥ १६ ॥

मुक्तसती जुत केलि करै । नाथ वियोखित दुःख हैँ ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं वियोपिताय अर्थं निर्वपामि ॥ १७ ॥

शाक्षिरूप त्रिलोक लखैँ । नाथ अशाक्षिक शर्म चखैँ ॥ मे०

ॐ ह्रीं अशाक्षिनाय अर्थं निर्वपामि ॥ १८ ॥

चारित सैन प्रनाम करौँ ज्यौँ जिन चारित भार धरा ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं चारित्रसेनाय अर्थं निर्वपामि ॥ १९ ॥

जो परणामिक भाव यहै सो परणामिक देव कहै ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं परिणामिकाय अर्थं निर्वपामि ॥ २० ॥

शाश्वत आनंद देत हमें शाश्वतनाथ कलंक दमें ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं शाश्वतनाथाय अर्थं निर्वपामि ॥ २१ ॥

श्रीनिधिनाथ प्रनाम करौँ ज्यौँ निधि सार सुधाम भरोँ ॥ मे०

ॐ श्रीं निगिनाथाय अर्पे निर्यामि ॥२०॥

कौशिकनाथ दयाल महा दारिद्रि दुःखस्य कुकर्म दहा ॥ भे०ती०

ॐ श्रीं कौशिकनाथ अर्पे निर्यामि ॥२१॥

श्रीधरमेश जिनेश नमो आनन्दकंद समस्त पमो ।

भेखृतीय पंगवत हे तीत जेजे सुखपावत हे ॥२४॥

ॐ श्रीं धर्मेश्वराय अर्पे निर्यामि ॥२४॥

मोतीमान छंद ।

वृत्तिय सुगच्छ उत्तर जान । अतीत जिनेश महागुनग्वान ।

जजो पद पूरण अर्थ चहाय । कलेश अज्ञेप सर्वे नशिजाय ॥

ॐ श्रीं धारुकीतीगान्त्वमेत्येरायततीतजिनग्यो पूर्णां निर्यामि ।

जयमान्ये ।

प०॥ जेजे करुनाथन श्रीचर वानलन मेवकजन आनंद कर ॥

जेजे जयदायक मत्र विधित्तायक कर्मकलंक अशेष हरा ॥२॥

जै जै सुमेरू थिर मेरु जेम । जै जै कृत जिनकृत सुकृत छेम ।  
 जै कैटभ अघकानन हुताश । जै जै प्रशस्त भवि भरत आश ॥२॥  
 जै निर्दय जिन जुग दयार्हिश । जै जै कुलकर नुत सकल ईश ॥  
 जै वर्द्धमान गुन वृद्ध सुष्ट । जै अभितिद्रिय आनंद पुष्ट ॥३॥  
 जै सख्यानंद अनंत ज्ञान । जै कल्पकृत कृत सुख निधान ॥  
 हरिसेवत नित हरिनाथ देव । बहुस्वामि सकल सुर करतसेव ॥४॥  
 जै भार्गव भवतप दमन सूर । जै भद्रदेव भवि भद्रपूर ॥  
 प्रधिपातन जिन दारिद्र हर्ण । जिन ब्रह्मचारि चारित्र भर्ण ॥५॥  
 जै जैति वियोषित शिव रमेश । जै जैति अशाक्षिक भवतरेश ॥  
 जै चारितसेन दयाल धीर । परिनामक जिनवर हरत पीर ॥६॥  
 शाश्वतजिन शाश्वत थान देत । निधिनाथ निधान करत निकेत ॥  
 कौशिक जिन कौशिकराज देहि । धरमेश तुरित भवतार देहि ॥७॥  
 ए भूत चतुरविशति जिनेश । गिरि अचलैरावत सुगुन भेश ॥

गन्धर मुनिभ्यावत सुजयराश। सुर असुर जासके भये दाजा ॥८॥  
 नर विद्याभर सेवत त्रिकाल । गुन गावत नाचत चरत भाल ॥  
 किन्नर नारद तुवर अवस्थ । दा हा हृ हृ विश्वासुवस्थ ॥०॥  
 एनाचत धेउ थेउ उमंग । लय तान नान गावत सुरंग ॥  
 तमलां अम्लां द्विमि द्विमि मृदंगमंनप्रदि माप्रदि मारगिसग?०  
 पगनूपुर अननन अनननाय। कर्दकि त्तिनि किनिनिनिनि सुगाय  
 करनाल लाल करमे लसंत। किरिकिरि शुकि शुकि भावगि रचन?०  
 रसगम प्रगट लुन करत भक्त । पावत समाज सम्यक्त्त व्यक्त ॥  
 हम तुम पद चदन चार चार । वृष चंदनद भवि "चूद" तार ॥२॥  
 वसा-जे जे जगंजन भूषतम भंजन भविकंजन जिनगजवग ।  
 नित मुनिजनबंधन पाप निकंदत पावत आतम ज्ञानवरा ॥  
 ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गान्धी ३३-तृतीय अचलमेरु इन्दौरगावते है ।  
 नित अतिन जिनसंमध्य कृ भायते है ॥

२१०

तिन पद जुगसारं जो जलै प्रीतलाई ।

सुरनर सुससार भोगि सो सुक्ति जाई ॥

इत्याशीर्वाद -

इत्ति श्रीअचलमेखेणरावतातीत चौवीसी पूजा संपूर्णा ।

अथ अचलमेखेणरावतभावीजिन पूजा प्रारब्धते

लक्ष्मीधरा उद ।

मेरु तीजोमहाशोभनीकं लसं । क्षेत्रेणरावते उत्तरे सो वसे ॥  
तासमें भावतव्यं जिनेसं कही । यापिहों अत्र आवो प्रभूजीसही

ॐ ही अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्रावतर अमतर संवौपट् आदानन ।

ॐ ही अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन ।

ॐ ही अचलैरावतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा ।

छद सारगी न्वनि सव गुरु वर्ण ।

गंगा भंगा पानी चंगा भारी धारी आनी है ।



धार तीनों ताकी दीनों तीनों तापं हानी हे ॥  
तीजो मेरं ताके हेरं ऐशवंतं राजें हें ।

भावी देवं कीजै सेवं जो आनंदे साजें हें ॥

ॐ ह्रीं धावृद्धिषीषाचयेरणरातभाविजिनेभ्यो जलं निर्णयामि ॥१॥

कुंभूमाद्यै गंधं सारं करणुगैघं ले आयो ।

अंबुत्कृष्टा वृषा सुष्टा दुष्टा तापं कूं घायो ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धावृद्धिषीषाचयेरणरातभाविजिनेभ्यश्चन्दन निर्णयामि ॥२॥

शाला ह्यला शुद्धं बुद्धं सुक्ता के से शुक्ता हें ।

सो ले साग पुंजे वाग भो भे सो हो सुक्ता हें ॥ ती० भा०

ॐ ह्रीं धावृद्धिषीषाचयेरणरातभाविजिनेभ्यो अल निर्णयामि ॥३॥

नेना वाना कौ आमोदे गेमे फूले आना हे ।

१ अल वरा वृषु । २ स्य ३ जल मे अर्च्यो वरा ।

तासों स्वामी सेवों आमी कामों वाना हाना है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुकिद्वीपाचलमेरुरावतभाविजिनेभ्य पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

फेनी श्रेनी खाने ताने साजे मिष्टा पुष्टा है ।

सो लै थारी आगे थारी वाधा नष्टा दुष्टा है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुकिद्वीपाचलमेरुरावतभाविजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥५॥

वी को दीयौँ ऐसो लीयो जासौँ भाँतँ नाशा है ।

तासों पूँजै ऐसो हूँजै तीनों लोकं भाशा है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुकिद्वीपाचलमेरुरावतभाविजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

गंधा धारं धूपोदारं सेवों वन्ही माही है ।

कूरं कर्म होवे चूरं धूमा घूमोडाही है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुकिद्वीपाचलमेरुरावतभाविजिनेभ्यो घृषु निर्वपामि ॥७॥

पुंगी नारंगी जंबीरा एला केला लाए हैं ।

तासो सेवो आपा देवो साता "वृद्धो" पयि हे ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुनिटीपाचळ्येःप्यगातभाविजिनेभ्यः क्लृन्निव्यापि ॥८॥

आडो द्रव्यो सेती पूजो आच्छे वाजे वाजे हे ।

नाचो राचो शर्णो आवो मोक्ष स्थानं पाजे हे ॥

तीजो भेरं ताके हेरं एगवते राजे हे ।

भावी देवा कीजे मेवा सो आनंदे साजे हे ॥

ॐ ही धातुमितीपाचळ्येःप्यगातभापिजिनेभ्यो ऽर्चं निव्यापि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्थ ।

लोल्लसंग उद—

श्री गवि इंद्रं जिनेंद्रं नमामी । श्वेदविवर्द्धित अर्जित स्वामी ।  
 गेरु तृतीय एगवत यानो । भाविय देव जजो धरिध्वानो ॥१॥  
 ॐ ही मीच्येऽर्चं निव्यापि ॥१॥

निर्मल काय जसे सुखदाई । श्री सुकुमालक मोहि सहाई । मे०

ॐ ही सुकुमालिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

प्रश्रितवंत नमो भगवता । क्षीर समान सुस्त धरंता । मे० भा०

ॐ ही प्रश्रितवन्तैर्ध्वं निर्वपामि ॥३॥

श्रीकुलरत्न जिनेसुर मानो । चारिउ थान समान प्रमानो मे०॥४॥

ॐ ही कुलरत्नाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धर्म जिनेसुर आनंदकारी । आदि शरीर लैसे अविकारी मे०॥५॥

ॐ हा धर्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोभ जिनेंद अमंद प्रतापी । सुंदररूप सुधारस वापी । मे०॥६॥

ॐ ही शोभजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

श्रीवसुदेव जिनिद नमाभी । सौरभकाय धेरं अभिरामी मे०॥७॥

ॐ ही वसुदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

श्रीअभिनंदन आनंददाता । साष्ट सहस्र सुलक्षणगता मे० ॥८॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्थं निर्यामि ॥८॥

श्रीसखेश नमो वरज्ञानी । अप्रमितं बलजामुबलानी मं॥१॥

ॐ ह्रीं सर्वनायाय अर्थं निर्यामि ॥९॥

नेन महाप्रिय हे हितकर्गी । नाथ मुदिष्ट नमो भवतर्गी॥मि०॥१०॥

ॐ ह्रीं मुदिष्टनायाय अर्थं निर्यामि ॥१०॥

उद तोटक—

जसु अर्थं सुमागत्रवेन खिरे । जिन शिष्ट नमो भवसिंधुतिरे ॥  
तृतीयानलको गेगवत हे । भवतद्य जेजे मुखपावत हे ॥११॥

ॐ ह्रीं त्रिव्यजिनाय अर्थं निर्यामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतेन परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुधन्याय अर्थं निर्यामि ॥१२॥

फानफुल सर्व गितुके निर्वणे । जह शोमशयी प्रमुजी हुकजे ॥तृ०

ॐ ह्रीं शोमचटाय अर्थं निर्यामि ॥१३॥

हितदर्पणितुल्य प्रकाश धरै । जहं क्षेत्र अधीश निवास करै ॥तृ०

ॐ ही क्षेत्राधीशाय अर्घं निर्वाणामि ॥१४॥

नित आनन्द अंशुधि वृद्ध करै । सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरे ॥तृ०

ॐ ही सदंतिकाय अर्घं निर्वाणामि ॥१५॥

अनुकूल वयार पुनीत वहै । जहं श्रीजिनराज जयंत अहै ॥तृ०

ॐ ही जयताय अर्घं निर्वाणामि ॥१६॥

तृण कटक धूलि विनाशित है । जिनराज तमोरिपु मोचित है ॥तृ०

ॐ ही तमोरिपवेऽर्घं निर्वाणामि ॥१७॥

जलगध समेत पुनीत परै । जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥तृ०

ॐ ही निर्मलाय अर्घं निर्वाणामि ॥१८॥

नभमें कनकंजन पै चलही । कृत पारस विघ्न सबै दलही ॥तृ०

ॐ ही कृतपार्श्वाय अर्घं निर्वाणामि ॥१९॥

फलभार सबैथल धान्य नये । जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥तृ०

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्घं निर्णयामि ॥८॥

श्रीसखेश नमो वरज्ञानी । अप्रमितं बलजामुबखानीमिं॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वनायाय अर्घं निर्णयामि ॥९॥

नैनमहाप्रियं है हितकरी । नाथमुदिष्टनमो भवतरीमिं॥१०॥

ॐ ह्रीं मुदिष्टनाथाय अर्घं निर्णयामि ॥१०॥

छद् तोटक--

जसु अर्थसुमागधवेनखिर । जिनशिष्टनमो भवसिंधुतिरे ॥

वृत्तियाचलको ऐरावत है । भवतव्यजजे सुखपावत है ॥११॥

ॐ ह्रीं शिष्टजिनाय अर्घं निर्णयामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्रभये । जिनधन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुधन्याय अर्घं निर्णयामि ॥१२॥

फलफूलसर्वैरितुकेनिर्वसे । जहशोमशशीप्रभुजीहुलये ॥तृ०

ॐ ह्रीं शोमचंद्राय अर्घं निर्णयामि ॥१३॥

छितदर्पनतुल्य प्रकाश धरे । जहँ क्षेत्र अर्थाश निवास करै ॥तृ०

ॐ ही क्षेत्राधीशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

नित आनंद अंबुधि वृद्ध करै । सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरे ॥तृ०

ॐ ही सदंतिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

अतुकूल वयार पुनीत वहै । जहँ श्रीजिनराज जयंत अहै ॥तृ०

ॐ ही जयताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

तृण कटक धूलि विनाशित हे । जिनराज तमोरिपु मोचित है ॥तृ०

ॐ ही तमोरिपवेर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जलगंध समेत पुनीत परै । जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥तृ०

ॐ ही निर्मलाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

नभमें कनकंजन पै चलही । कृत पारस विघ्न सबै दलही ॥तृ०

ॐ ही कृतपारंवाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

फलभार सबैथल धान्य नये । जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥तृ०



ॐ ह्रीं गोधत्राभाय अर्घं निर्मायामि ॥२०॥

नमनिर्मल ओं दिगसुन्दर हे । बहुनद नमंत पुंद्र हे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं मृनदाय अर्घं निर्मायामि ॥२१॥

सुखेसत हें भविजीयनिकों । जिनदिष्ट सुधावच पीवनकों । तृ०

ॐ ह्रीं दिष्टस्वामिने ऽर्घं निर्मायामि ॥२२॥

वृषचक्र धोर अरिचक्र हें । जिन कुंकुम आभ सुवर्ण करे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं कुकुमाभाय अर्घं निर्मायामि ॥२३॥

वसु मंगल द्रव्य पुनीत धरें । जिनवक्ष सु ईश कलेश हरें ॥

तृतीयाचलको ऐरावत हे । भवतव्य जजें सुख पावत हे ॥

ॐ ह्रीं श्लेगाय अर्घं निर्मायामि ॥२४॥

यह पूरन अर्घ लियो करम में । पद पूजन हों प्रभुको घसे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं भारीचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं पूर्णार्घं निर्मायामि स्वाहा ।

जयमाला ।

ध्या-जै जै मंडित पून पंडित विघ्न विहंडित ज्ञानधरा ।  
सेवक प्रणरक्षक त्रिभुवन लक्षक लक्ष अमदित देतवरा ॥

( उद् तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी )

जै रवींद्र जिनद नमस्ते । सुकुमालिक जगवंद नमस्ते ॥  
प्रथीवंत महंत नमस्ते । जै कुलरत्न भवंत नमस्ते ॥ २ ॥  
धर्मनाथ कृत गर्भ नमस्ते । शोमनाथ पद पर्भ नमस्ते ॥  
वरुणनाथ दुग्धहरण नमस्ते । अभिनंदन सुचक्रन नमस्ते ॥ ३ ॥  
सर्वनाथ निग्दीप नमस्ते । जिन सुदिष्ट कृतमोत्र नमस्ते ।  
शिष्टनाथ कृत ऽष्ट नमस्ते । जै रुग्ण्य भुनि भिष्ट नमस्ते ॥ ४ ॥  
शोमचंद्र निकलंक नमस्ते । क्षेत्राधीश निशक नमस्ते ॥  
जे संदंतक जिनेश नमस्ते । जै जयन वप भेश नमस्ते ॥५॥  
देव तमोरिषु पात्र नमस्ते । निर्मल जिन सुगदाय नमस्ते ॥  
जै कृतपारशनाथ नमस्ते । बांध लाभ शिव साथ नमस्ते ॥६॥

जै बहूनंद अमंद नमस्ते । द्विष्ट स्वामि सुखकंद नमस्ते ॥  
 कुंकुमाभ निरफद नमस्ते । जै वक्षेज अदंद नमस्ते ॥७॥  
 ए भाबी चौवीश नमस्ते । अचलैरायत धीश नमस्ते ॥  
 सेवन इंद समस्त नमस्ते । जानन जुगपत वस्तु नमस्ते ॥८॥  
 विघ्नमहीधर विज्जु नमस्ते । जै ऊरधिगति रिज्जु नमस्ते ॥  
 सुकृतिरमनि मह शिज्जु नमस्ते । त्रिसुवन आनंद किज्जु नमस्ते  
 ध्यावत सज्जन सत नमस्ते । पावतु है भव अत नमस्ते ॥  
 गुन अनत अधिकार नमस्ते । तारन तरन उदार नमस्ते ॥१०॥  
 सकल कलेश निरवार नमस्ते । दारिद दुःख परिहार नमस्ते ॥  
 वांछित पद दातार नमस्ते । “बुंदावन” विस्तार नमस्ते ॥११॥

वषा-जै जिननायक, विघ्नविनायक सवसुखदायक देववरा ।  
 हम शरनें आये शीशनवाये गुनगन गाये सेवकरा ॥१२॥

ॐ ही धातुकिंदीपाचलमेरुएरातभाविजिनेभ्यो महार्घं निर्भयामि ।

अथाग्नीर्विदः । गीताहंद्—

जो दख अरु वरभाय सेती जैजे जिन चौवीशजी ।  
वर धातुदीप अचल सुषेरावते भावी ईशजी ॥

सो पुत्रमित्रकलत्र संपत सुख लहे नवनीतजी ।  
पुनिशक्र चक्रतनो सुपद लहिहोइ सुकत निचीतजी ॥

इति श्रीअचलैराजतभायी चौवीशी पूजा संपूर्णा ।

वृत्तिगमेरु संबंधी पूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्ध्दीपमंदिरमेरुसंबंधीविरहमान

जिनचारिपूजा प्रारभ्यते ।

छद् अमृतध्वनि त्रिभागी पर ।

दमकततनसारं रविशशियारं अतिदुतिथारं मुखकारं ।

भ्रमतम शतखंडन शिवमगमंडन कलुषविहंडन दुखदारं ॥

त्रितिदीप सुहेरं मंदमेरं पूरवेहरं श्रुति सज्जी ।

तित विहर सुमानं चहु भगवानं सुयुननियानं धुनिगज्जै॥१॥

गज्जत्र धुनि सज्जनसुनि रज्जनमन ।

सज्जम नम भज्जम गम मज्जज्जन नन ॥

चंचनरन सुंधावुभकरन सुसचस्समकत ।

ठःठः थपत सुज्जे जपत प्रभादंदमकत ॥२॥

ॐ ह्रीं मदिग्मेरुविदेहस्यपिहरमानजिन चंद्राहु-भुजगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वर  
अत्रातर अतर मयापद् आपाननं ।

ॐ ह्रीं मदिग्मेरुविदेहस्यपिहरमानजिन चंद्राहु-भुजगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वर  
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।

ॐ ह्रीं मदिग्मेरुविदेहस्यपिहरमानजिन चंद्राहु भुजगप्रभ ईश्वरनमीश्वर  
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहाः ।

## अथाष्टकं ।

प्रमिताक्षरा उद—

जल भृग माहि भरि धार करों । पदपूजि नाथ दुखदोपहरों ।  
त्रिति द्वीपमंदिर विदेहनिमें । जिनचार सार जजि गेहनिमें ॥  
ॐ ही चंद्रवाहु-भुजंगप्रभ ईश्वर-नसीदरेश्वरो-जन्ममृत्युविनाशाय जलं ॥१॥

वरगंध चंदन कपूर घशै । जिनराज पूजि भवताप नशै ॥त्रि०  
ॐ ही चंद्रवाहु-सुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेश्वरो सत्सारातापनाशाय गंव ॥२॥

शुभशालि मुक्त मनु शुक्त समंतसुपुंज शुंज भवदुःख गमं ॥त्रि०  
ॐ ही चंद्रवाहु-मुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेश्वरो अक्षयपदप्राप्तये अक्षत ॥३॥

निरदोष फूल सुख मूल महा । तुव अग्रधारि सरशूल दहा ॥त्रि०  
ॐ ही चंद्रवाहु-सुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेश्वर्य कामागणनाशाय पुष्पं ॥४॥

रसपूर सारचरु भूरिकरा । जजते शुधादि अरिहूर हरा ॥ त्रि०  
ॐ ही चंद्रवाहु-सुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेश्वरो नैवेद्यं निर्वयामि ॥५॥

मनि दीपजोत तम नाशतु है । पद सेवते सुगुन भासतु है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-सुजंगमभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेयमन माचतु है । मनु धूमधूम मिशि नाचतु है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-सुजंगमभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

रसमिष्ट शिष्ट फल सुष्ट धरो । जिनचंद्र वृंद सुखकंद वरो ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-सुजंगमभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

वसुद्रव्य सर्गं सजि अर्घकरो । पद पूजिसार शिवनारि वरो ॥

त्रिति दीप मंदिर विदेहनिभे । जिन चार सार जजि गेहनिभे ॥

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-सुजंगमभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

आर्या छद-पुष्करमंदिर एवं, सीतोत्तर विहरमान जिनदेवं ।

श्रीचंद्रवाहु सेवं, समवशृत संस्थित वसूभेवं ॥१॥

रेणुकमाता ख्याता, तमों पिता देवनंद विख्याता ।  
नगर विनीतं जाना, जजों सदा पद्मअंक सुखदाता ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धीपे . मंदिरमेकवयिभीतोत्तरतटे पद्मसंडमंडलमंडितचक्र  
वर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन चंद्रवाहुस्वामिने उर्व ॥१॥

पुष्करमंदिर जानं सीता दच्छिन विदेहथित मानं ।

देव भुजंग प्रमानं, पूजों समवशृत भगवानं ॥२॥

महिमा माता जानों, पिता महाबल दयाल गुनवानों ।

लेच्छन चंद्र प्रमानों विजया नगरी त्रिलोकपति थानों ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धीपे मंदिरमेरु सीतादक्षिणतटे पद्मसंड मंडलमंडितचक्र-  
वर्त्यादि सेव्यमान जिन भुजंगप्रभाय अर्थ ॥२॥

पुष्करमंदिर जोहे सीतोदा दक्षिणे सुमन मोहे ।

ईश्वर स्वामी सोहें ताहि जजें सर्व संपदा होहें ॥३॥



ज्वाला जतनी राजें. नगर मुमीमा अनूप छवि द्वडि ।

गल्लेन जासुगजे, गवि पदमें चिन्ह कोटि गविलाजे ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पाद्वर्धपेगदिरमेस्मीतोदादशितडे पद्मडमडल्लमडित चक्र-  
चर्यादिसेव्यमानविहरमानजिन इंदरनयाय नरे ॥३॥

पुष्कर मंदिर नामी, सीतोदा उत्तरेतु अभिगामी ।

श्रीनिमीथर स्वामी, समवशूनस्थित जजामि शिवगामी ॥१॥

सेना माता जाकी, पिता नमां वीरराण शुभ नाधी ।

वृषलच्छन पद्मा की, नगर अयोध्या प्रमोदपद माकी ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पाद्वर्धपेगदिरमेस्मीतोदायाउत्तरतडे पद्मडमडल्लमडित चक्र-  
चर्यादिसेव्यमानविहरमानजिन नमीडयराय अर्थ ॥४॥

सुदरी ङंद—

त्रितिय पुष्करदीप सुहावनो । प्रथम मंदिर मेरु तथा वनो ॥

तसु विदेहनिमें जिन चारहें । जजन होत भवोदधि पार हें ॥

ॐ ह्रीं चद्राक्षुजंगप्रभईगगनमीदरेभ्योऽर्थे पुर्णार्थे निवेसायि ।

अथ जयमाला ।

वरा—जेजे जगवंदन कलुगनिकंदन त्रिभुवनजन आनंद कग ।

जे केवलभानं भूपनमहानं भविकमलानं मोदभग ॥१॥

तोटक ७३—

जे भोजिन चंद सुवाटु महा । जे जेनि भुजंग प्रवेका कहा ।

श्वर नाथ अनाथ त्रितू । नमि दुश्चर नाथ त्रिलोक पितू ॥२॥

भीषणि मंदर धरु वसे । निचरो गुप्त जत्र विदेह वसे ॥

शूत छादका जोजन हें । भवि सांमत यत्र प्रयोजन हें ॥३॥

रस को हेई पान कर । वसु कर्मनि को धरि व्यान करे ॥

करे नहु भांति नटां । गुल गावन नावन भाल ननु ॥४॥

चतु हें ममनं सननं । धुनि नृप दे जनन दुनन ॥

फिनि गुंजत फिनननं । सुर लेव केई तनन तनन ॥५॥

केइ वारह भावन भावत हैं । अपनो गुन आपु लखावत हैं ॥  
 केइ चारित भार सम्हारत है । केइ कर्म ततच्छन जारत है ॥६॥  
 वह धन्य विदेह सुयान सही । शिव मारग नित्त चलै चितही ॥  
 जह आपु विहार पुनीत करै । चवसंघ लिये अघ सघ हरै ॥७॥  
 गनराज जहां धुनि झेलत हैं । भवि को सत्र सशय टेलत हैं ॥  
 रतनत्रय भवि उदोत करै । सुनिके भविजी शिवनारि वरै ॥८॥  
 हम जाचतु है तुमसों जिनजी । निज संनिधिओ विमती सुनजी ॥  
 तुव वैन सुधास पान करों । लखि रूप मैव दुखदद हरों ॥९॥  
 धरा—जैजे जिनदेवं सुरकृत सेवं सुगुनअच्छेवं शुद्धमती ।

शिवसपति दायक विघनविनायक जै जै जै चिद्रूपपती ॥  
 ॐ ह्रीं चद्रवाहु-भुजंगभ-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो महार्घ निर्वपामि ॥१०॥

वसंत तिलका—आशीर्वादः ।

श्रीपुष्करार्द्ध मह मंदिर मेरु काजै ।

ताकी विदेहनि विषे जिनराज राजे ॥

पूजे तिन्हें भविक जो बहु भक्ति लाई ।

सो सर्वसार सुखभुक्त सु मुक्त जाई ॥

इति मद्राजलमेरुविगजमानविरहमानजिनपूजा समाप्ता ।

अथ पुष्कारर्द्धदीपमंदिरमेरुभरत  
वर्तमानचौवीशीपूजा ।

छंद कुंडलिया—

मदरमेरु विराजई पुष्कार पूव वोर

ताकी दख्खिन में लसै भरत छेत्र शुभ ठोर ॥

भरत छेत्र शुभ ठोर तहां त्रिभुवन हितकारी ।

वसतमान चौथीश ईश पूजे नर नारी ॥

जिन्ह को गुन उर ध्याय मुदित मन जजत पुरंदर ।  
तिन्ह को थापों इहां जहां जिनवर को मंदर ॥

ॐ ही भरत वर्तमान जिन चतुर्विंशतिअत्रायनर अवतर सर्वौपद् आह्वाननं ।  
ॐ ही भरत वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।  
ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रमम सन्निहितो भवभव षपद्स्थाना ।

अथाष्टकं ।

( चाल जचताल आदि में )

भवसागर तांगेजी, दीन दयाल जिनेसुर जी । भव० ।  
पुष्करदीप शिखरमंदिर के दच्छिन भरत विराजै ।  
वरतमान चौबीश जिनेसुर पूजत भव भै भाजेजी ॥भौ०टिक॥  
गगाजल भरि कनक भृग में तन मन प्रीत उपायो ।  
धारा तीन करत पद आगे करम कलक हरायौ जी ॥ भव० ॥

ॐ ह्रीं भगवतर्त्तमानचतुर्भुविगिजिनममृहेभ्यो जल निर्गामि ॥१॥

केशर चंदन कदली नंदन दाहनिंकंदन लायो ।

शिव तिग जिनवर सुम पद पूजत सव दुखदंद नशाथौजी ॥भी०॥

ॐ ह्रीं भगवतर्त्तमानचतुर्भुविगिजिनममृःभ्यो गथ निर्गामि ॥२॥

तंडुल मंडुल शोरभि मंडित अमल अखंड सोहायो ।

पुंज धगत दुखदद हगत सुखकंद भगत मगमाथौजी ॥ भव० ॥

ॐ ह्रीं भगवतर्त्तमानचतुर्भुविगिजिनममृहेभ्यस्तदुलं निर्गामि ॥३॥

सुमन सुमन सम सुवरन थारी सुवरन थार भरायो ।

मनमथमदमथ नाथ लुम्हे लखि हाथ साथ शिरनाथौजी भो०

ॐ ह्रीं भगवतर्त्तमानचतुर्भुविगिजिनममृहेभ्यः पुण निर्गामि ॥४॥

धेवर वावर फेनी श्रेनी खाजे ताजे भायो ।

धुधारोग निस्वारन कारन मनमुख ले शिरनाथौजी ॥भी०॥

ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यश्चक्रं निर्वपामि ॥५॥

जगमग जोति होत दश दिश में ऐसो दीप अनाथौ ।

तासो तुम पद पूजत संशय विभ्रममोह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योदीपं निर्वपामि ॥६॥

दशविध गंध पुनीतम लै करि खेवत शौरभि ह्यार्यौ ।

अष्ट करम मम दुष्ट जरत है धूम घूमसु उड़ायौजी ॥भौ०॥

ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुरस वरन रसना मन भावन पक्क सुफल उपगायौ ।

पूजत चरन कमल जिनवर के विघनसमूह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

आठों द्रव मिलाय मनोहर हरष हरष गुनगायौ ।

पूजत चरन कमल जिनवर के शिवतरु वीज बुवायौ ।

भौ सागर तारो जी दीन दयाल सुरेसुरजी ॥भव॥  
 पुष्कर दीप शिखर मंदर के दखिछन भरत विराजे ।  
 वरतमान चौवीश जिनेसुर पूजत भौ भै भाजे जी भवसा० ॥  
 ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योऽर्घं निर्दिशामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ

पाईता छद—

शत आठ कोश सुभिछं । जिन जगन्नाथ क्रिय सुच्छं ।  
 गिरि मंदिर भरत सुहायौ । जजि वरतमान सुखपायो ॥१॥

ॐ ह्रीं जगन्नाथाय अर्घं निर्दिशामि ॥१॥

नभ माहिचलै जिन स्वामी ।जिनदेव प्रभाश नमामी ।गि० २।

ॐ ह्रीं प्रभाशाय अर्घं निर्दिशामि ॥२॥

नाहि जीव जहां वध हो हे । जिन सूर स्वामि मम सो हे । गि० ३



ॐ ही सूरस्वमिन्दर्धं निर्वपामि ॥३॥  
 नहि कवलाहार करै हूँ । भरतेश कलेश हरै हूँ ॥ गि० ४ ॥

ॐ ही भरतेशाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥  
 उपसर्गं वितीत विराजै । जिन दीर्घानन छवि छाजै । गि० ५

ॐ ही दीर्घानाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥  
 चतुरानन मूगति दरसै । सुनिजात कीर्त सुख सरसै । गि० ६॥

ॐ ही विजातकीर्तयेऽर्घं निर्वपामि ॥६॥  
 सव विद्या के पति जानों । अवशानन सो पहिचानों । गि० ७

ॐ हा अनगानाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥  
 तन की न परै परछाई । सुप्रबोधन देव कहाही । गि० ८॥

ॐ ही प्रबोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥  
 द्विग में न निमेष लगे हूँ । सुतपोनिधि ज्ञान पैगै द्वै गि० ९

ॐ हा तपोनिधयेऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

नखकेश बँढे नहि जाकौ । जिन पावक नाम सुताको ॥ गि०

ॐ ह्रीं पापकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छट रथोद्धता—

शोक चूरन अशोक वृक्ष हे । सो जिनेश त्रिपुरेश इच्छेहैं ।

पुंजकार्द्ध गिरि मंदरं सही । भर्तवर्तत जजामि हों यही ११

ॐ ह्रीं त्रिपुरेणाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

पुष्पवृष्टि नभतें जहां परै । शोगतेश सरशूल कों हरे ॥ पु०

ॐ ह्रीं शोगताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

दिग्भेवन सुखसों जहां खिरै । श्रीयवास सुखराशकों भरे । पु०

ॐ ह्रीं श्रीयसाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

चौर चौसठ सुरेश दारही । श्री मनोहर कलेश ठारही ॥ पु० १५

ॐ मनोहराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

सिंहपीठ पर जे विराजही । श्री जिनेश शुभकर्म छाजही ॥ पु०

ॐ ही शुभकर्मसाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

कायक्रांति कृतमंडला कृतं । इष्ट सेवक सुचित्त में धृतं ॥ पु०

ॐ ही इष्टसेवकाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

देवदुंदुभि अकाश में वज्रै । श्रीजिनेंद्र अमलेंद्र में भजै ॥ पु०

ॐ ही अमलेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तीनछत्र तिहु रत्नसे लशै । धर्मवाश जिन त्रासकों नशै ॥ पु०

ॐ ही धर्मत्रासाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

छद्द मोतीदाम—

अनंत सुध्यायक ज्ञान महान । प्रशाद जिनेश धरें अमलान ।

सुमदर भारत दृच्छिन सेत । जजों जिन वर्तत है छविदेत ॥

ॐ ही प्रशादाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

अनंत अगाध लशै द्विग जास । प्रभामृग अंक भरै भविआश ॥ सु०

ॐ ही प्रभामृगांकाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

अनंत सुखामृत अदभुत कूप । नमों अकलंक निशंकसरूप ॥ सु० ।

ॐ हौं अकलंकाय अर्घं निर्वपामि ॥ २१ ॥

अनंत अवाधित वीरज जास । नमों स्फटिकप्रभुकों शिवआस । सु०

ॐ हौं स्फटिकप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥ २२ ॥

छद् भुजंग द्रयात् ।

हनुं दोष अप्पादशौं मूलसेती । गनेंद्रं जिनेंद्रं नमों सुक्तहेती ।

जजौं मंदिराख्या चले भर्तं थानों गुणग्रामधारी प्रभूर्वर्तमानों ॥

ॐ ह्रीं गनेंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥ २३ ॥

चिदानंदकोध्यानधारे विराजें । नमों ध्यानस्वामी असह्यध्यान भजें

जजौं मंदिराख्याचले भर्तं थानों । गुणग्रामधारी प्रभूर्वर्तमानों ॥

ॐ हौं ध्यानजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥ २४ ॥

लोलतरंग छंद—

पूरन अर्घं वनाय पुनीतं । पूजतु हौं सवही जिनमीतं ।

अडिल्ल छंद

जो पूजे चौबीस जिनेसुर देवजी ।

पुष्कर मंदर भरत विराजे घेवजी ॥

सो मनवांछित सार सख सुख पायजी ।

शक्र चक्र पद भोगि मुक्त पुर जायजी ॥

इत्यार्शवादः ।

इतिपुष्करद्वीपभरतवरतमानचौबीशी पूजा समाप्ता ।

अथ मंदरमेरुभरतातीतचौबीशीपूजामाह

छंद माधवी सवैया सिंघावलोकन मुक्तपदग्रस्त यथा

मंदिर मेरु विराजतु है नित पुष्करद्वीप विपै अति सुंदर ।  
सुंदर दच्छिन भर्त वसै तित तीत जिनेसुर धर्म धुरंधर ॥

धर्म धुरंधर सेवतु हे गुन वृंद सुध्यावत जाहि पुरंदर ।  
 जाहि पुरंदर ध्यावतु ताहि सुथापहु पूजन को जिन मंदर ॥  
 ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्रावतरअमतर सर्वोपट्आदानन  
 ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः३ः स्थापन ॥  
 ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिन अत्र मम संनिहितो भव भव ऋषद् स्वाहा ।

गीता छंद-

कलधौत वसन उतंग कुल गिरि गंग चंग सुवार है ।  
 भरि कनक झारी धार द्वारी जनग मरुन निवार है ॥  
 वर दीप पुष्कर मेरुमंदर पूर्व आति छवि ह्यजई ।  
 तसु भरततीत जिनेश पूजत सकल भौं भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।  
 वरमलय चंदन कदलिनंदन मुजलसंग वशात है ।  
 तुम चरन पुष्कर पूजते भवताप लुशति नशात है ॥वर०॥

ॐ ही मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥  
 शित शाला द्रुति उजियाल हीर हिमाल ते आति सोहनों ।  
 तसु पुंज परम विद्युजते सुख भुंजते मनमोहनों ॥वर द्वीप०॥

ॐ ही मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ॥३॥  
 पुष्कर कदंब कुंड केतक सुमन सुमन समान है ।

लुव चरन पुष्कर पूजतें प्रभु नश्यत मनमथ वान है ॥वर०॥  
 ॐ ही मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पकवान सुरस सवार सुवरन थार भर कर में लिया ।  
 तासों समरचत चरन जुग दुख दोष कों पानी दिया ॥वर०॥

ॐ ही मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

द्रुति दीप दिपत दिगंतरा ले सकल घटपट भास है ।  
 तासों उतास्त आर्ता जिनपर प्रबोध प्रकाश है ॥वरद्वीप०॥

ॐ हीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वापामि ॥६॥  
दशगंध खेय हुताश्र माही मोद उर धरि संत हे ।

वसु करम भरम जरंत ताको धूम धूम उडंत हे ॥वरद्वी०॥

ॐ हीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वापामि ॥७॥

ऋतु जनित फल कलअहित सुंदर पक्व मिष्ट मनोगता ।

तासों समरचत चरनजुग वांछित भविक सुख भोगत्ता ।व०॥

ॐ हीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वापामि ॥८॥

जल फल विमल वसुदसव को शुभ अरघ थार विपें करों ।

कर जोरि जुग तुम चरन चरचत तुरित भौसागर तरों ।

वर दीप पुष्कर मेरु मंदर पूर्व अति छवि छाजई ।

तसु भरत तीत जिनेस पूजत सकल भौ भे भाजई ॥

ॐ हीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वापामि ॥९॥



छंद तामरस तथा नाराच ।

ती. चौ

२४६

तीर्थस्वामी सेइयै सदैव शर्म वेइयै,

कर्म भर्मनाशि शुद्ध परम धर्म लेइयै ॥  
सुपुष्करार्ध मंदराचले सुभर्त खेत है,

पूजिये अतीत देव सुक्त मुक्त देत है ॥१३॥  
ॐ ही तीर्थस्वामिने अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

धर्म धीश परम धर्मको प्रकाश कर्त हैं,

धर्मचंद नंदकौ पुनीत पुन्य भर्त हैं ॥पु०॥  
ॐ ही धर्माधीशाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१४॥

क्षमा धरी अधीश धारणेश सीस नावही,

पुनीत ध्यान धारिके अमीत शर्म पावही ॥पु०॥  
ॐ ही धरणेशाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

प्रभाव जासु लोक में प्रसिद्धसिद्धदाय है,

नमों प्रभाव देव जो विशुद्धबुद्ध पाय है ॥पु०॥

ॐ ह्रीं प्रभावाय अर्थ निर्णयामि ॥१६॥

अनादि देव ध्याइये निशंकितंग पाइये,

अनादि शुद्ध बुद्ध सिद्ध को उपाइये ॥पुष्करार्थ॥

ॐ ह्रीं अनादिदेवाय अर्थ निर्णयामि ॥१७॥

नमों अनादि सुप्रभं विषादवादवर्जितं,

निकाञ्छितंग दायकं कलंक संत तर्जितं ॥पुष्करार्थ॥

ॐ ह्रीं अनादि प्रभयेऽर्थ निर्णयामि १८॥

सर्व तीर्थनाथकूं सदैव माथ नाइये,

ग्लान भाव नासि शुद्धभावन लहाइये ॥पु०॥

ॐ ह्रीं सर्वतीर्थाय अर्थ निर्णयामि ॥१९॥

निरूपमाय श्रीजिनाय ऊपमा अतीत हैं ।

अमूढ़ भाव देत हैं कलेश सो वितीत हैं ॥५०॥

ॐ ह्रीं निरूपमाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

कुमार मार वर्जितं सुभव्यवर्गं सर्जितं ।

सु सोपगूहनांग देत अब्द शब्द गर्जित ॥५०॥

ॐ ह्रीं कुमाराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

विहार गेह देवने त्रिलोक वस्तुकों लखा,

सु धर्मसों डिगे तिनें सुधर्म में थिरा रखा ॥५०॥

ॐ ह्रीं विहारग्रहाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

धारणे श्वरेशकों सुरेश्वृंद वंदते,

वातसत्य अंग पाय पापकों निकंदते ॥५०॥

ॐ ह्रीं धारणेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

विकाश देवने समस्त वस्तुकों विकाशियो,  
सुमार्ग की प्रभावना दिखाय पाप नाशियो ॥

सुपष्करार्द्ध मंदिराचले सुभर्त खेत है,  
सुपूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥२४॥

ॐ ही विकाशाय अर्घ्यं निवपामि ॥२४॥

छंद सुंदरी तथा द्रतविलवित—

जल फलादि मिलाय मनोहरं । अरघ पून कीन सुभौहरं ।  
जजत पुष्करमंदिर भर्त है । जिन अतीत महासुख कर्त है ॥२५॥

अथ जयमालं ।

वत्ता-जै केवल चंदा उदय अमंदा आनंदकंदा निरदंदा ।  
कृतभक्तिक कर्मोदं परमप्रमोदं ज्ञानमहोदं सुखवृंदा ॥१॥

पढ़ई छद ।

जै मदनकदन मदनेंद्र देव, सूरति स्वामी कृत सुख स्वमेव ।  
 नीराग स्वामी चिनु रागदोष, जै जै प्रलवित जगत्तपोष ॥३॥  
 पृथ्वीपति मो भव उदधि तार, चारित निधि कुमति कलेश दार ।  
 अपराजित प्रभु पद परम देह, जै जै सुबोध सुधि वेग लेह ॥३॥  
 बुद्धेश करे कमला सुधाम, वैतालिक जिन पद को प्रनाम ।  
 जै जै त्रिसुष्ट वर इष्ट देत, सुनि बोधक जिन भवसिन्धु सेत ॥४॥  
 तीरथ स्वामी भेटत कलेश, जै धर्म शीश सेवत सुरेश ।  
 धरनेश नमत धरनेश शीश, प्रभवेश परमपावन जगीश ॥५॥  
 जै जै अनादजिन गुन समुद्र, जै जै अनादि प्रभ नमत रुद्र ।  
 जै सर्वतीर्थ त्रिसुवन पुनीत, निरूपम अनुपम गुन जगत मीत ॥६॥  
 श्रीजिनकुमार प्रत्यूह खंड, जै जै विहार ग्रह सुख डमंड ।  
 धरणेश्वर जगदाधार परम, जै जै विकासजुत परम शर्म ॥७॥  
 ए तीत जिनेसुर भरत थान, गिर मंदर पुष्करदीप जान ।

विनाश, सातें त्रय नौ छतीस नाश ॥८॥

वैधे गुन सात प्रकृत विनाश, सातें त्रय नौ छतीस नाश ॥९॥

दशमेक द्वादशें सोल चूर, ऐ अ्रेसट छै केवल प्रपर ।

बौदहे बहतर तेर हान, सिव धान जैसे करुना निधान ।

तुम गुन गावत सुर असुरराय, नाचत ताथेइ धेइ पग चलाय ।

द्विमि द्विमि धिधितवलां सुरजनाद, संसाग्रदि सांरगी सुरपुरतवाद ।

पगनूपुर झननननननाय, कटकिं किनि किनिनिनिनि सुहाय ॥११॥

बहु हाव भाव रसको बताय, तनननन साज सिष्ट ।

पट पटपट पाटह नाद मिष्ट, दुंदुभि शीनादिक साज सिष्ट ।

सजि साज भगततुव करत देव, निज जनम सफल करते सुमेव ।

तुम धन्य अमल गुनगन निधान, भवसागर तारन तारन जान ।

हम शरन गही मन वचन काय मन बांछित सुख द्यौहे जिनाय ।

घटा—जै जनप्रनरक्षक अरिअहितक्षक, वस्तुविवक्षक दक्षपर्ता ।

सेवत सुर जक्षक लासि शिवगच्छक जै गुन कक्षक स्वच्छमती

ॐ ही मद्रमेरुभरतातीतजिनसमृद्धेयो मर्षार्थ निर्वपामि ।

दोहा — पुष्कर मंदर भरत के, तीत जिनंद दयाल ।  
जो पूजे सो सकल सुख लहे भविक गुनमाल ॥

इत्याशीवादि ।

इति मंदिराचलभरततीत चौबीशीपूजा समाप्ता ।

ॐ

अथ भावी चौबीशी पूजा प्रारभ्यते ।

छंदचित्र पवर्तवध वाईसा ।

आय सही वे हेरे अति आरति इंद थुने तिहितें जु सया ।  
हो इत थापत मंदर के परतच्छ सु भर्त भविष्य तथा ॥  
भर्म विनाशक आतम भायक भव्यजीव कंहं शर्म दया ।  
आय सेव तिथु हो पमजी सु जीभव हो युति देसय आ ॥

ॐ हौ मंदरमेरुभर्त भात्री जिन अत्र अवरत अतरत सौपट् अदानन

ॐ हौ मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र तिष्ठत तिष्ठत दः दः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं मंदरमेश्वर्य भवती जिनि अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वपद् स्वाहाः ।

आ	य	स	वे	ति	शु	ह्रीं	प	म	जी	सु
ह्रीं	अ	द	या	के	या	व्य				
	इं	इ	स	र	त	भ				
		ति	जु	द	व्य	क				
				तं	मं	वि	श			
					त	म	मा			
						ते	म	आ		
									त	
										या
			ह	आ	ने	इ	र	मं	व	
			र	ति	त	त	वि	के		
				हि	या	छ	ना	हे		
						प	छ	श	श	
							म	क	म	या
										द
										त्रा



सुदगी तथा द्रुतिविलंबित छंद—

सुर नद्री जल उज्जल पावनो, त्रिविध कर्मकलंक नशावनो ।  
त्रितिय दीप सु मंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भावी जिन जन्य जरामृत्यु विनाशाय जल ।

कदलिनंदन चंदन सो घसै । जजत ही भगदंदनको नसै । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरतभावि जिन सप्तरतापविनाशाय चंद्रं निर्वपामि ॥२

विमल मंडुल तंदुल आनिये । धरत पुंज सेवे दुख हानिये । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावी जिनभ्योऽक्षयपद्मप्राप्तये तदुल निर्वपामि ॥३॥

सुमन सौरभिरंग सोहावनो । जजत शूल समस्त नशावनो । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावि जिनेंद्रभ्यःपुाप निर्वपामि ॥४॥

शशि सुधासम नेवज लै धरा, जजि पदांबुज रोग छुथा हरा । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यश्चंद्रं निर्वपामि ॥५॥

तमविनाशक दीपकजोत है, करत आरति ज्ञान उदोत है ॥ त्रि०

ॐ ही मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो दीप भिर्व्यामि ॥६॥

अगर चंदन आदिक धूप है, जजत होत सुगंध अनूप है ॥ त्रि०

ॐ ही मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो धूपं निर्व्यामि ॥७॥

रिति फलोत्तम पक्व रशाल है । जजत आनंद होत विशाल है त्रि०

ॐ ही मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्य. फलं निर्व्यामि ॥८॥

जल फलादिक को सज अर्घ है, जजत पावत थान अनर्घ है ।

त्रितिय दीप सुमंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ही मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्व्यामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ

छद् नंदीधराष्टक की

क्षित क्षिमापती गुंनवृंद देव वसंत धुजं ।

गिर मंदर भरत सुछंद भविय देव पुजं ॥१॥

ॐ ही वसतध्वजाय अर्घं निर्व्यामि ॥१॥

वृषमार्द्धव गुणमनिमाल श्रीत्रिजयंत सही ।

गिर मंदर भरत विशाल भाविय सेवतही ॥२॥

ॐ ही त्रिजयताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

वृष आर्जव आर्जव एव श्रीस्त्रिस्थंभ कहा ।

जजि मंदिर भरत सुदेव भाविय नाथ महा ॥३॥

ॐ हीं स्त्रिस्थंभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

वचसत्य रतनके खान खान परम ब्रह्म जिनं ।

गिर मंदर भरत सुथान भाविय सेय तिनं ॥४॥

ॐ हीं परमब्रह्मय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

जुग शौच धरमके मूलनाथ अवालीशं ।

जजिमंदर भरत अतूत भाविय सुतशीशं ॥५॥

ॐ हीं अयालीशाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

जुगसम दमजम जुत देव नाथ प्रवादिक है ।

जजिमंदर भरत लखेव भावियतादिक है ॥६॥

ॐ ह्रीं प्रमादिकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

दो विधि तपसागर चंद भुमानंद जिनं ।

गिर मंदर भरत अफंद भावि जजामि तिनं ॥७॥

ॐ ह्रीं भुमानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

जुगत्याग धरमके मूल त्रिनयन जिन जानों ।

गिर मंदर भरत अतूल भावित भजि ध्यानो ॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिनयनाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

परिगहग्रह त्याग जिनेश श्रीविद्वेष जती ।

गिर मंदर भरत भवेश पूजत शुद्धमती ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्वेषाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

परमात्म प्रशंग महेश ब्रह्माचार धरा ।

गिर मंदर भरत जिनेश भाविय सेवकरा ॥१०॥

ॐ ही परमात्मप्रशंगाय अर्थ निर्वपामि ॥१०॥

भूमिंद्र चंद्र नागिंद्र भूमिंद्रेश जपैं ।

गिर मंदर भरत गनिंद्र भात्रिय पाप खपैं ॥११॥

ॐ ही भूमिंद्राय अर्थ निर्वपामि ॥११॥

गोपाल लंगली सेय गोस्वामि हि सदा ।

गिर मंदर भरत भवेय पूजों ताहिअदा ॥१२॥

ॐ ही गोस्वामिनेऽर्थ निर्वपामि ॥१२॥

कल्याण प्रकाशित स्वामि पंच उच्छाह धरें ।

गिर मंदर भरत यजामि भाविय विघ्नहरें ॥१३॥

ॐ ही कल्याणप्रकाशिताय अर्थ निर्वपामि ॥१३॥

दुति मंडित मंडल ईश मंडलनाथ नमैं ।

गिर मंदर भरत भवीश पूजत पाप दमैं ॥१४॥

ह्रीं मंडलेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

चौपाई-लक्ष्मी जासु पदांबु वसै हे, देव महा वसवेस वहै हे ।  
पुष्कर पूरव मंदर जानौ भाविय भर्त जजौ धरिध्यानौ ॥ १४॥

ॐ ह्रीं महावसवेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

जनम स्नान सुमेर पवित्रं, तेज उदै जिनसौ जगमित्रं ॥पु० १६॥  
ॐ ह्रीं तेजउदयाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

चारित धारि हरे सव कर्म, दिव्य जोतिपी जिनगुनपरमं ॥पु० १७॥  
ॐ ह्रीं दिव्यज्योतिषे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

घाति विघाति प्रबोध धरैया, जैति प्रबोध कुबोध हरैया ॥पु० १८॥  
ॐ ह्रीं प्रबोधिताय निर्वपामि ॥१८॥

मुक्तसती आलिंगन होर, श्री अभयंक नमों जगतारे ॥पु० १९॥  
ॐ ह्रीं अभयंकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

मुक्ततिया जु कटाक्ष चलौवै, जो परसो प्रमितेश कहौवै ॥पु० २०॥  
ॐ ह्रीं प्रमिताय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

दिव्य स्फारक श्रीजिनदेवा, चार प्रकार करै सुरसेवा ॥ पु० २१  
ॐ ह्रीं दिव्यस्फारकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जे व्रतव्रात अघात धरैया । ते व्रत स्वामी दोष हरैया ॥ पु०  
ॐ ह्रीं व्रतस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२२॥

जो निधि दुर्लभ है जगमाहीं, सो निधिनाथ जपै निपजाही ॥  
ॐ ह्रीं निधिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

कर्म कलंक निशंक सिपाये, देव निकर्मक नाम कहाये ।  
पुष्कर पूरव मंदर जानौं, भाविय भर्त जजौं धरि ध्यानौं ॥२४॥  
ॐ ह्रीं निकर्मकाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा-श्रीपुष्कर पूरव दिशा भरत भविष्यंत देव ।

पूजौं पूरन अर्घं सौं विघनमिटे स्वयमेव ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

षष्ठा-जे जे जनरक्षक शिवमग वक्षक चारितकक्षक स्वक्षरा ।

जै लक्षअलक्षक सर्वविलक्षक दक्षक पक्षक रक्षकरा ॥

४६ नैमालिनी—

धरम ध्वज वशत धुज जैजै , खिजयंते नमो अरुज जैजै ।  
 खिस्थंमन भवभंजन जै जै, परम ब्रह्म मुनि रंजन जै जै ॥२॥  
 अवालीश छयालिशगुन जै जै, श्री प्रवादिक परमधुन जै जै ।  
 भूमानंद कंद जस जै जै, त्रिनयन त्रिजग लसत वस जै जै ॥३॥  
 विद्वेषिक निरसगिक जै जै, परमात्म परसगिक जै जै ।  
 भूमिंदक शनेन्द्र नुत जै जै, गोस्वामी गनेन्द्र नुत जै जै ॥४॥  
 शुभ कल्याण प्रकाशित जै जै, मंडल आत्म भासित जै जै ।  
 महावसव वासवनुत जै जै, उदें तेज समरस नुत जै जै ॥५॥  
 दिव्य जोति चतुरानन जै जै, श्रीप्रबोध भवभानन जै जै ।  
 अभैअंक जगजानन जै जै, प्रमित परम पहिचानन जै जै ॥६॥  
 दिस्फरक सुख सागर जै जै, त्रत स्वामी नुत नागर जै जै ।  
 श्रीनिधान निधि दायक जै जै, जिन निःकर्म सहायक जै जै ॥७॥



जान्हवी नीरसां हेमभारी भरों, धार दे तीन तीनों विथाकों हरों  
पुष्करार्द्धे गिरे मंदैरावते, वर्तमानं जजे शर्मकों पावते ॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं निर्वपामि स्वाहा ।

केदलीनंदनौ चंदनं वावना, पूजते तालुसों शान्तिता पावना । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ।

देवजीरादिसे शालि शोभामई पुंजकों धारते शर्म साता लई । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

पुष्करं पुष्कराद्या धरें पुष्करं, कामनाशै सही पुष्करं दुष्करं पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यःपुष्पं निर्वपामि ।

नव्यगव्यादि नैवेद्यनीके किये, धार में धारते सुखसता लिये पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।  
 दीपसों हे प्रभू मैं करो आरती, ज्ञान उद्योतता दीजिये भारती । पु०  
 ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।  
 अग्नि माही दशों गंध खेवो सही, अष्टदुष्टै जैँ धूमधूमै वही पु०  
 ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

आम्र काम्रादि एलासु केला लये, पूजतें विघ्नका आजु पानी दये  
 ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यःफल निर्वपामि ।  
 नीर गंधादि लै अर्थ कीनों वरा, पूजतें कर्मकंतारसों निस्तारा  
 पुष्करार्द्धे गिरि मंदैरावते, वर्तमानं जजै शर्मकों पावते ॥  
 ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

दुति मध्यक छंद—

शंकर शंकरते जगमाही, धर्म उदोतक सो निज आही ।

१ जन्म मरण नरा । २ भारती सरस्वती । ३ ज्ञानावरणादि । ४ कर्मरूपी जंगल ।

मंदर मेरु सु उत्तर जानों, वस्तु है अयरावत थानों ॥१॥

ॐ ह्रीं गङ्गाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

कौनन कर्म हुताशनसे है, जिनवर अश्व सुवाश कहे है। म०२

ॐ ह्रीं अक्षयाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

सर्व उपाधिनिवारि सुखदा । अनुभव मग्न सुनग्न जिनंदा । मं०

ॐ ह्रीं नग्याय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

नग्न सुआदि महातप धारी, अमल महा नगनाधिप भारी । मं०

ॐ ह्रीं नग्नाधिपाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

चौपाई-नष्ट क्रिये पाखंड अनेक, नष्ट पखंड नमों शिष्टेक ।

मंदर ऐरावत भगवान वस्तत है पूजों धरि ध्यान ॥५॥

ॐ ह्रीं नष्ट पास्तडाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

१ अग्नि ।

षोडशसुपन लखे जसु माय । स्वप्नबोधजिन सो सुखदाय मं०

ॐ ह्रीं स्वप्नबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशतप विधि निधि दातार । नमो तपोधन जिन अविकार मं०

ॐ ह्रीं तपोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

पुष्पकांड खंडन दुखदंद । पुष्पकेतु मंडन सुखकंद ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्पकेतवेऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

दशौ धरम परकाशक स्वामी । धार्मिक जिन पदपदमनमामी । मं०

ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

चंद्रकेतु चंद्रानन सुष्ट, किखिषहरत करत सुख पुष्ट ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेतवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

वीते राग दोष समुदाय । सो निज वीत राग सुखदाय । मं०

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

महाजोति धारी धरमज्ञ । श्री अनुक्त जपे उरतज्ञ ॥ मं० ॥

ॐ ही अनुरक्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

आतम ज्योति उद्योत करंत । उद्योतक निज शिवतियकंत मं०

ॐ ही उद्योतकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

भविउर तिमिर करत चकचूर तमोपेछ जिन गुनगन पूर । मं०

ॐ ही तमोपेक्षाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

माथव मधुसेवें पदपद्म । श्री मधुनाथ देत शिव सन्न । मं०

ॐ ही मधुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

चक्र गदाथर गनधर वृंद । श्रीमरु देव नमं सानंद । मं०

ॐ ही मरुदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

शमदमजमजुत केवलभान श्रीदममाय जपों धरि ध्यान । मं०

ॐ ही दममाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

वृषचक्री वृषकेत लशंत । वृषदायक वृषभेसुर संत । मं०

ॐ ही वृषभेसुराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

पांडुशिलातन क्रांतिपवित्र । नमो शिलातन त्रिभुवनमित्र । मं०

ॐ ह्रीं शिलनाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

विश्वमाहि जिनसम नहिं नाथ । विश्वनाथ सो हें शिवसाथ । मं०

ॐ ह्रीं विश्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

मोतीदाम छद ।

गनेंद्र सुरेंद्र नरेंद्र खगेंद्र जयें नित चित्त महेंद्र जिनेन्द्र ।

सुपुष्कर पूरुष मंतर जान । जजो अयरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं महेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जगज्जन ओनेंद्र अबुधि चंद्र । अनंत सुखाकर नंद जिनंद । सु०

ॐ ह्रीं नंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

शरीर प्रभातम भंजन जास । तमोनिभ नाथ महा जशरास । सु०

ॐ ह्रीं तमोनिभाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

सुब्रह्म विचारन तारन ब्रह्म । नमों जिन ब्रह्म सुधारन ब्रह्म ॥  
सुपुष्कर मंदर पूरव जान । जजों अथरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मधारणाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

शोखा-आठों दरव बनाय आठों अंग नमायकें ।

जजों हरप उरलाय चटु गिरि ऐरावत जिनं ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः पूर्णांघं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घटा-तुव सुजशविशाला गुन मनिमाला परमशाला सुकुमाला ।  
नर सुगगपताला पति तिरकाला कृतनुतमाला सुखसाला ॥

छंद कामिनी मोहन तथा आर्या शखला ।

सारसुखकारसंकर जिनसुरमहा॥स्वच्छअक्षीणपदअक्षवासी लहा॥  
मगन आनंद में नगन जिननायकं भग्नसंताप नगनाधिर्प लायकं ॥

आर्या—पाखंड भुंड खडन नष्ट पाखंड देवअरि दंडन ।

श्रीस्वप्नबोध भडन नमों नमों मंट मंट भवहंडन ॥२॥

कामिनीमोहन छंद—

मेदि भवहंडनं तपोधन मुक्तहै पुष्पकेतुकजिनं परम सुख मुक्त है ।

आतमोद्धरन धरंमेशह्यामी कदा चंद्रकेतू नमों होत साता महा ॥

आर्या—साता महाउपाई तजि राँ वीतराग जिनराई ।

अनुरक्त मुक्तदाई ज्ञानानंद नमों जिनराई ॥४॥

कामिनी मोहन छंद—

नायशिर इंद्र चंदंति उद्योतित जै तमोपेक्षितं सारसुख जो जितं ॥

नमों मधुनाथशिवसाधनिरदोषहै जैति मरुदेव सुखदेवभवि पोषहैं ॥

आर्या छंद—पोषहि शमदम सुष्ट भीदममाय जिनेन्द्र गुनपुष्ट ।

जै शृपभेश अडुष्ट लोचकृतं केशपंचकरु सुष्टं ॥६॥

कामिनी मोहन छंद—

पंचकरमुष्ट मह शिलातनतपधरे जैति जिन विश्वनाथ शकल भैरहै ॥



नमत शतहृद मोहेन्द पद पकजं। नद आनद दाता जगत रजन॥  
 आर्या छंद-रंजन जन भव भंजन तमोनिधी दोष दुष्ट दुखगंजन ।  
 श्रीत्रयधार भजन नमो नमो ज्ञान नैनन के अंजन ॥

अंजनं मोखमगगामिके हँ सही, जैति चऊबीसजगराज सुखकेमाही  
 पुष्करे मंदिरैरावते वर्त ही, पंचकलयानपाति ध्याय भवि तर्तही॥६॥  
 आर्या--भवतर्तहि लाखि देवै सुर ध्यावै नाय भाल पद सेवें ।  
 नाचें चहु गति लेषें साजै रसाल बहु भेवें ॥१०॥

कामिनी मोहन छंद—

साज बाजै रसालें सुवहु भेवजी सम्रादिसंसाप्रदिसारंगी धुनि लेवजी  
 झिनिनिनिसिनिनिनि झलछरी बाजई ।

धिकट धुनि धधप पुनि त्रिम सुरज साजई ॥  
 आर्या-बाजई वीनानाद तनननन तान छेत अहलाद ।

सनननाट अवादं कृत सुरसुर साल ताल तलपादं॥१२॥

कामिनी मोहन—

तालतलमाद वादिते जो बाजई, तासु उपमान कछु जगत मे छाजई॥

धन्य जिनशब्द गुनवृद्धपदबद्धही, गायजस आज हम छेत आनंद ही॥  
 वषा—जे मनमथमंथक नित शिव पंथक कृतश्रुत ग्रंथक ग्रंथपती ।  
 जे करुना मंदर जंजत पुंरं दर धरम धुरंधर शुद्धमती ॥१४॥

रथोद्धता छद—

पुष्करार्द्धवर पुव्व में कहा, मंदिराद्रि अयरावते महा ।  
 वर्तमान पद जो जै सही, वांछितार्थ पदलेत सो सही ॥१५॥

इत्याशेषादि ।

इति मदिराचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिपूजा समाप्ता ।

अथपुष्करार्द्धपिमंदिराचलैरावतातीत पूजाप्रारभ्यते

स्थापना धनुषबंध—

दोहा—चतुरथ गिरिवर उत्तरे जिन जे तीत प्रमान ।  
 तिनहि सुथापतु भावसों उपजे पदनिखान ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपे मंदराचलैरावतातीतजिनअत्रात्तरअत्रतरसंवीपट्ट आञ्जानन  
 ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपे मंदराचलैरावतातीतजिनअत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन  
 ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपे मंदराचलैरावतातीतजिनअत्रमसंनिहितोभव भव वषट्स्त्रा

अथाष्टक तालजच्च होली की चाल में

गिर मंदिर उत्तरथान पूजों तीतकों ॥ गिर० ॥ टेक ॥

पदमद्रह गतनीर सार शुभ कनक कुंभ भरिआन ।

धार करत तुम चरनन आगे करम कलंक नशान ॥ पूजों० ॥१॥

ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपे मंदराचलैरावतातीतजिनभ्यः जलं निर्वपामि ।

वाधन चंदन कदली नंदन केशर संघ घशान ।

भवतपहरन चरन परि पूजत विधन तपतकी हान ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपमदाराचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनभ्यो गध निर्वपामि ।

शालि अपंडित शौरभि मंडित शसि सम हुति दमकान ।

औषे संपदा कारन पूजों हे जिनवर धरि धान ॥ पूजों० ॥३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

सुमन सुगंधित प्राशुक लीनों गुंजत अलिंगन आन ।

पूजत चरन कमल जिनवर तुव मनमथवान नशानं ॥ पूजों ० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः श्रुप्य निर्वपामि ॥

धेवर वावर फेनी श्रेनी सौरभ सरस महान ।

छुधा रोग निखारन कारन जजों निराकुल दान ॥ पूजों ० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥

मनिमय दीप उदोत होतवर हे जिन भूमतमभान ।

तासों आरति करत जगत गुरु उपजै आतम ज्ञान ॥ पूजों ० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः दीपं निर्वपामि ॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन धूप सुगंध अमान ।

खेवत धर्मकेतु मैहि ताको जसत दुख दान ॥ पूजों ० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीत जिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।  
 श्रीफल पत्रव मनोहर पावन । मधुर रसीले आन ।  
 पूजत मनवांछित परिपूजत अनुक्रम अनुपम यान । पूजों०  
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ।  
 जलफल आदि द्रव वसु साजे अरघ ललित वरदान ।  
 नाचिराचि शिरनाय समरचत मिलत विमल मुखयान । पूजों०॥  
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्योऽर्घ्व निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

लोलतरंग छद्--

जे उपगारिय वैन बखानैं । ते कृतनाथ नमों धर ध्यानैं ।  
 पुष्कर मंदिर उत्तर मानों । तीत जजों अईरावत यानों ॥१॥  
 ॐ ह्रीं कृतनाथाय अर्घ निर्वपामि ।

इष्ट भिसिष्ट प्रविष्ट करै हैं । श्री उपविष्ट अरिष्ट हरैहैं ॥पु०॥

ॐ ह्रीं उपविष्टाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

मोहमहा तमभंजन भानं । आदित देवनमो गुनखानं ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं आदितदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

अष्टम भूमि सुथानकवासीश्रीअसथान नमो अविनासी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं अस्थानिकाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

चन्द्रसमान प्रमोद प्रकाशी । देव प्रचंद नमो सुखरासी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं प्रचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

वणूके जस गावत देवा । वेनुक गावत हें बहुभेवा ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं वेणुकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

कोटिकमानु छिपे छविदेखें । नाथत्रिमानु विभूतिविशेखें ॥पु०॥

ॐ ह्रीं त्रिमानवे अर्घं निर्वपामि ॥७॥

ब्रह्मसु ब्रह्म जिनेसुर स्वामी । ब्रह्मविकाशक ब्रह्म नमामी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्म्याय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

वज्रशरीर लसे जसु आदी वज्र सुअंग नमों निखादी ॥पु०॥

ॐ ही वज्रागाय अर्घ निर्वपामि ॥६॥

वेरविरोध निरोधन होरे, श्रीअविरोधन है अविक्कारे । पुष्कर० ॥

ॐ ही अविरोधनाय अर्घ निर्वपामि ॥१०॥

पापप्रकृत सवे चक्रचूरे, जैति अपाप जिनाधिप पूरे ॥ पु० ॥

ॐ ही अपापाय अर्घनिर्वपामि ॥११॥

लोक अलोक लसे जसरासी लोक मुउत्तर ग्यान प्रकाशीपु०॥

ॐ ही लोकोत्तराय अर्घ निर्वपामि ॥१२॥

इंद्रवंश्रा छंद—

जलाधिशेषं जिनराज स्वामी जगत्रयी ईशपदं नमामी ।

सुपुष्करे मंदर मेरु सोहै । ऐरावतें तीत जजामि जौहै ॥१३॥

ॐ ही जलाधिशेषाय अर्घ निर्वपामि ॥१३॥

विद्योदितु द्योतित वोथलोके । विद्यापती सेवत देय धोकं ॥सु०॥

ॐ ही विद्योत्तिताय अर्थं निर्वपामि ॥१४॥

सुमेरसे गौर सुमेरनाथ भवान्धि मे द्रुवत थाभि हाथ ॥सु०॥

ॐ ही सुमेरवे अर्थं निर्वपामि ॥१५॥

श्री भावितं भव्य समस्त सेवें । आनंद देवें भवनात्र खें ॥सु०॥

ॐ ही भाविताय अर्थं निर्वपामि ॥१६॥

समस्त पे वच्छल लच्छकरी । नमों नमों वच्छल स्वच्छधारी ॥सु०॥

ॐ ही वच्छलाय अर्थं निर्वपामि ॥१७॥

अतिद्रियज्ञान प्रकाश कीर्त्तों । नमों जिनालं जिन ध्यानभीर्त्तों ॥सु०॥

ॐ ही जिनालयेऽर्थं निर्वपामि ॥१८॥

पापं सरोजं दहने तुषारं । नमों तुषारं जिन शर्मकारं ॥सु०॥

ॐ ही तुषाराय अर्थं निर्वपामि ॥१९॥

निर्विघ्नदाता भुवनेस स्वामी । आनंद वारानिध चंद्रनामी ॥सु०॥



ॐ ही सुवनेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

कंदर्पं सर्पापहरं खगेशं सुकामस्वामी प्रणमो जिनेशं ॥सु०॥

ॐ ही सुकामाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

आनंदकंदं जिनचंद्र वंदं देवाधिदेवं प्रणमो अमंदं ॥ सु० ॥

ॐ ही देवाधिदेवाय अब निर्वपामि ॥२२॥

आकारिमं देवरं पवित्रं निरूपमं रूप अरूपचित्रं ॥ सु० ॥

ॐ ही आकारिमाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

विनीतनें नीत सनै वतायो विनीत सेयें निज नीत पायौ ॥

सुपुष्करें मंदरेमर सोहे ऐरावते तीत जजामि जौहे ॥२४॥

ॐ ही विनीताय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

वसततिलका छद्द—

जै तीततीर्थपति मंदरपुष्करार्थे । ऐरावते परमआतम धर्मसाधे ।

ताकों समर्चत सुपूरन अर्थधारी पावे समस्तसुख सो उभयप्रकारी॥

ॐ ही पुकराद्धीपमंदराचल्लावतातीतजिनेभ्यः पूर्णार्थं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

वचा-जे जिन मलवर्जित अरिहरितर्जिति यनमिषगर्जित वैनवरं  
भविजनमनसर्जित सुमति उपर्जित विघनविवर्जित चैनकरं॥

३० मात्रा का उद्द—

वदापो कृत नंदा मदा चंदासे आनंदा दान ।

शुद्धं शुद्धं है निःकृढं देवादित्यं सुष्टामान ।  
इष्टं शिष्टं नष्टानिष्टं श्रोत्रपविष्टं पुष्टादान ॥

स्वशक्षेमा हृदा हृदा स्थानिकं संरक्षोमान ॥२॥

त्रिभुव्यापि है अथापी प्राचंदापी लक्ष्मीमान ।

गोभाषारी जे भौतारी प्रीबेणुंरु जे जे जे वान ।

मातंहा भाखंडं मह चड जोत भीषीमान् ।

ब्रह्मब्रह्मा ब्रह्मव्यापी ब्रह्मोपेक्षी ब्रह्मध्यान् ॥३॥  
 ब्रह्माधीशं कृतचतुतशीसं श्रीवज्रांगा वज्रांगान् ।  
 ध्याता ध्येर्यं ग्याता गेर्यं अववोधनजुत शसैहान् ।  
 पापात्यक्ता आपाजुक्ता भुक्ता सुक्ता शंमौधान् ।  
 लोकालोक सर्वविलोकं लोकोत्तर श्रीशोभावान् ॥४॥  
 हेयोदेय समुद्र विमंथन ग्रंथ निग्रंथ जलाधिपवान् ।  
 अद्रितियद्भुत जानोद्योत विद्योत सद्धिधादान् ।

ध्यानी ग्यानी हैं निःकंपी मानो मेरु सुमेरु समात्र ।  
 प्रानी भावै भाधित के गुन धीरज वीरज सुकृत खान ॥५॥

निच्छल स्वच्छल सत सुवच्छल वच्छल लच्छित लच्छविधान  
 चक्री शक्रधरं धृषचक्र जिनालै देव नमै हैं आन् ।  
 सातासाना जुगमविमुक्ता जुक्तुपारं मुक्तस्थान् ।

तातातीनों लोकतने हैं श्रीभुनेसुर कृतकल्यात्र ॥६॥  
 जीवाजीवादे प्रत्यभ्रं वकेलक्ष सुकामजितान् ।

धर्माधर्म विशेष विक्काजो श्रीदेवाधिमुदेवमहान् ॥

कर्त्ताकर्ती भुक्ता भुक्ता आकारिक कीनों विश्रवात् ।

नीतानीत विनीत यताये नीतमती मानि हे आज ॥७॥

जे चौथीसा पुष्करमंदर ऐरावर्मे हे तातात् ।

ताको इदं चंद गनिदं, वंदं हे नागिंदं आत् ।

ताकों सर्वं हें जे प्रानी ते होवें श्रीजोभावात्

पूजाठानै शुनउर आने "वृद्" नरिद घरं हं ध्यात् ॥८॥

पद्या—जे श्रीजिनकुंजर हरि भवपिंजर कीरति गुंज रही जगमें

जे सुक्तथापति बुक्तमहामति मंगलद्रायक श्यो मगमें ॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपमंदराचलपतातीनजिनेभ्यो महायं निर्वामि ।

अथाशीर्वादः । अडिल्लच्छंद-

पुष्करमंदरऐरावत जिन तीत जी ।

पूजत सुस्तर नारि तिन्हे धरि प्रीतजी ।

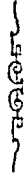
जो सैव मनलाय हरप उमगायजी ।

सो सुरनर सुख भोगि परमपददायजी ।

इति श्रीपुष्कराद्यै पूर्वमंदराचलैरावत २४ पूजा संश्रुणा ।

२८४

ती चौ.



अथ पुष्करार्धे मंदराचलैरावते भाविपूजा प्रारभ्यते।

कमलवद्ध चित्र—

दोहा—चवथवग्नि वर वतावते वनै वरावतवनाव

भावेदेव भव भाव सव आव आव सिवराव ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रावतरअवतर सर्वौपद् आह्वानन ।

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापन ।

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रमम सन्निहितो भव भव वपद् स्वाहाः

अथाष्टकम् ।

( चाल नंदीश्वराष्टक भाषाधानतरायजी कृततालजत्तादिमें बने है )

यह सलिल कलिल मलहार भारी माही भरा ।

पदपंकज पूजत सार मेटत जनम जरा ॥

वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वसे ।

ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसे ॥१॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिनेभ्यो जन्माद्विनाशाय नलं निर्वपामि ।  
घसि चंदन केसर सार सौरभि भृंग भरा ।

तुम चरन कमल पखार भौ आताप हरा । वर०॥२॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विगतिजिनेभ्यश्चंदन निर्वपामि ।  
हिम हीर शशीसम सेत तंदुल मंडुल से ।

तसु पुंज विथुंज धेत वारिद दुःख नसे । वर०॥३॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विगतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

यह काम महाजग शूल आपु निमूल किया ।

यातें लेकर वर फूल पूजत खोल हिया। वर०॥४॥

ॐ ही मद्राचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

जग रोगवली इक भूख दूपत सव प्राणी ।

ताको तुम नासि अरूप नेवज में आनी। वर०॥५॥

ॐ ह्रीं मद्राचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ।

तुम ज्ञान प्रकाश जिनेश लोकलोक लखें ।

हम दीप चढाय महेश आपा आप चखें। वर०॥६॥

ॐ ही मद्राचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

तुम कर्म कलंक विनाश आतम शुद्ध भये ।

हम खेवत धूप सुवास नाचत कर्म चये। वर०॥७॥

ॐ ही मद्राचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

तुम पाय अतिद्रिय शर्म परम पुनीत फलें ।

फलसौं पूजों तजि भर्म दीजो मोक्ष थलं । वर॥८॥

ॐ ही मंदराचलैरावतभावित्तुर्गित्तिजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

तुम आँनंद कंद जिनद सव दुख बंद हरे ।

हम अरघ लेय अभिनंद पूजत भक्त धरे ॥

वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वैसे ।

ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसे ॥९॥

ॐ ही मंदराचलैरावतभावित्तुर्गित्तिजिनेन्द्रभ्यर्ध्व निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्धे ।

चौपाई छद ।

विसद सुखद जस पूजन चंद । नमों जशोधर जगदानंद ।

पुष्कर पूरव मंदर मेर । जजों भाविण्यैरावत हेर ॥१॥

ॐ ही यशोधराय अर्थ निर्वपामि ॥१॥



परम सुकृत पद दायक परम । सुकृतदेव कृत नितजिनधर्मपु०॥

ॐ ह्रीं सुकृताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

अभै घोषनाकृत जगजेन । अभैघोष जिन निजगुन देन । पु०॥

ॐ ह्रीं अभैघोषाय अर्घं निवपामि ॥३॥

दायक पद निर्वाण उदार । श्रीनिर्वाण नमो भवतार । पु० ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

शुद्ध सकलव्रत जिनके पास । सो व्रतवास भरत भविआशापु०॥

ॐ ह्रीं व्रतवासाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

राजनिके राजा पदसेय । सो अतिराज राजपद देय । पु० ॥

ॐ ह्रीं अतिराजाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

ध्यान अथ चटुके शिवलीन नमो अथजिन परमप्रवीन । पु०॥

ॐ ह्रीं अथजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

अर्चुनवर्न विवर्डिजत मान, जै अर्चुन जिन गुनमनि खानापु०॥

ॐ ह्रीं अर्जुनजिनाय अर्घं निर्घामि ॥८॥

धरम सुधाधरतें मिय चखें, तपश्चंद्र सो चिदगुन लखें ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं तपश्चंद्राय अर्घं निर्घामि ॥९॥

पंच परावर्तन चक्रचूर । शारीरिक जिन समता पूर । पुष्कर०

ॐ ह्रीं शारीरिकाय अर्घं निर्घामि ॥१०॥

मनवांच्छित पद देत मिलाय । नमों म्हेशुर जिनके पाय । पु० ।

ॐ ह्रीं महेश्वराय अर्घं निर्घामि ॥११॥

सुंदर ग्रीव लखत द्विगचैन । श्रीसुग्रीव नमों निरणेन । पुष्कर०

ॐ ह्रीं सुग्रीवाय अर्घं निर्घामि ॥१२॥

द्विदु प्रहागें अरि खेकीन । द्विदुप्रहार समतारस भीन । पु० ।

ॐ ह्रीं द्विदुप्रहाराय अर्घं निर्घामि ॥१३॥

दयानीत जग जस विख्यात दयानीत जिनवर वरगात ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं दयानीताय अर्घं निर्घामि ॥१४॥

पाडता उंद-जिन अंघरीख पद सेवों निरुदोप निजातम वेंवों ।

गिरि मंदर पूज रचावों अयशवत भावत भावों ॥१५॥

ॐ ह्रीं अघरीपाय अर्घं निर्वपामि १५॥

जश नारद तुंवर गावैं । जिन तुंवर सों लय लावैं ॥ गिरि ० ॥

ॐ ह्रीं तुसाय अर्घं निर्वपामि ॥ १६ ॥

विफलीकृत कामकलका । जिन सर्व शील जु अटका ॥ गि ० ॥

ॐ ह्रीं सर्वशील्यय अर्घं निर्वपामि ॥ १७ ॥

जनमोच्छ्व सार धरें हैं । प्रतिजातक पाप हरें हैं । गिरि ० ॥

ॐ ह्रीं प्रतिजातकाय अर्घं निर्वपामि ॥ १८ ॥

जित इंद्रिय दिव्य भए हैं । सुअतिंद्रिय शर्म लए हैं । गि ० ॥

ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय अर्घं निर्वपामि ॥ १९ ॥

तप आदिततें अति तेजा । तप आदित भवि शिवभेजा । गि ०

ॐ ह्रीं तपादित्याय अर्घं निर्वपामि ॥ २० ॥

रतनत्रय क्रांत धरें हैं । शिव रतनकीर्ण सुवरें हैं । गिरि०॥

ॐ ही रतनकिरणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

दिवसाधिप सेवत आई । प्रणमामि दिवेश सदाई ॥ गिरि०॥

ॐ ही दिवेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

शुभ लच्छन लच्छित गीता । जिन लांछित सो जग तीता।गि०॥

ॐ ही लच्छनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

निज शुद्ध प्रदंश करैया । सुप्रदंश कलेश हरैया।

गिरि मंदर पूज रचावों । अयरावत भावित भावों ॥२४॥

ॐ ही सुप्रदेगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

लोलतरंग उद्द ।

पूरन अर्घ्य वनाय पुनीतं । पूजत हों जिनके नुत भीतं ॥

मंदर उत्तर भाविय सारं । वदत “वृंद” करो भवगारं ॥२५॥

ॐ ही मंदराचलैरात्रत भाविचतुर्विगतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

वत्सा-जै चिद्रगुन दर्पन भविसंतर्पन शिवदिव्य अर्पन विघ्नहरा।  
जै जै भगवंतं कृत भव अंतं अतुल अनंतं ज्ञानधरा ॥१॥

तोटक उद--

प्रणमामि जशोधरसार जसी । कृत सुकृत सुकृत देव वसी ।  
जय घोष अम्बै जिन शुद्धमती । निरवान नमो निर्दोष जती ॥२॥  
व्रतवास सदा भवत्रास हरेँ । अतिराज नमो सुखकंद करैँ ॥  
नित अश्वजिनेश विपाद हरेँ । जिन अर्जुन अर्जुन कीर्त करैँ ॥  
चंद्र जिनद गर्निद भजे । सु सरीरिऊ पाय संतद जजैँ ।

र मेर महेश महा । पद ग्रीवक ग्रीवसु देत रुहा ॥४॥

सु प्रहार दिदप्रहर । प्रणमामि दयानिन नीत धरं ॥

संवर अवर ईप गहा । जश गावत तुंवर तुंवरहा ॥५॥

सब सील महामनि भूखन हैँ । प्रतिजात सदा निरदूखन हैँ ।

सुख शुद्ध अतिप्रिय चूखन हैँ । तप आदित ज्ञान अदूखन हैँ ॥६॥

रतमश्रय रत्न सु कर्ण धरै । सु दिवेश महामल जीर्ण करै ।  
 जिन लांछन लांछित वीरकला । सुप्रदेश अशेष कलेश दला ॥७॥  
 वर पुष्कर मंदर मेर लसै । अथरावत उत्तर तास वसै ।  
 तसु भाविय तीरथ नाथ सही । गुनध्यावत पावत मोच्छ मही ८  
 तिनसौं अरदास करों नितही । प्रभु भक्ति सदा निवसो चित ही ।  
 तव आगमज्ञान रहो हियमें । नित आतमध्यान जगो जियमें ९  
 रतनत्रय प्राप्त होहु सही । जिहि ते द्रष्ट पाइय मोच्छ मही ।  
 जब लौं न मिलै जिनराज हमें । तवलों इतनों हम नित पमें ॥१०॥  
 शिवसाधन जोग सदैव मिलो । अनुभौ रस अद्भुत चित्त पिलो ।  
 दु खदारिद्र विघ्न विनाशकरो । सुखसंपत्तसार सु गेह भरो ॥११॥  
 धता-जै शिवसरमंजन कलमलमंजन मुनिमनकंजन रंजकरा ।  
 जै सद्यनिरंजन भविद्विगंजन विपतिविगंजन तंज हरा ॥  
 ॐ ही मंदराचलैरावतभावि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महाधर्मा निर्वपामि ।

अथाशीर्वादः । चौबोल छंद-

ती.चौ.

२९४

आठों दरब मिलाय गाय गुन जो पूजे जिनराज जती ।  
पुष्करदीप लुसति मंदिर गिर ऐरावत भावत सुमती ॥  
सो जन पुत्र भिन्न धन जोवन वांछित लाभ लहत है अती ।  
शक्र चक्र अनुभूति पायके "वृंदावन" है मुक्तपती ॥

इति श्रीपुष्करार्द्धदीपे मंत्रराचलैराग्रतभाविपूजा समाप्ता ।

इति चतुर्थमेरूपूजा सपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धदीपे मेरुसंबंधी विदेहक्षेत्र संस्थित  
विहरमान पूजा प्रारभ्यते ।

छंद सारंगी धुनिवर्ण १५

आपा शुद्ध चैतन्यं मे जे धीरं साधिं बैठे ।

जा देखें हैं हों शं जीमें निग्रयार्थो ज्यो पेटे ॥  
सो ह्याति में चाहों तेरो सेवा स्वामी नौ माभी ।

पाचै मेरं वेदे हों में थापों ह्यां चारों स्वामी ॥  
ॐ हीं पुण्ड्रद्वीपश्चिमिधुन्मालीमेरुकेविदेहक्षेत्रसर्वधी चारिविहरमान  
श्रीवीरसेनमहाभट्ट देवजशञ्जितवीर्यं जिन-अत्रावतर अद्वतर संवोपद् आह्वाननं ।  
अत्र तिष्ठतिष्ठ टाड स्थानं । अत्रमम सन्निहितो भवभव वपद् स्वाः ।

अथाष्टकम् ।

(चाल भाषा सिद्धाष्टक धानतीवलाशकी)

नीर विमल शीतलमहा भरि कंचनभारी लाय ।  
तुम पद पदम चढ़ाइयो मम करम कलंक नशाय ॥  
विद्यन्माली मेरुके लखि चारि विदेह महान ।  
समवसरन जुत पूजिहौं चहु विहरमान भगवान । वि०



ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्यचतुर्विहरमानजिनेभ्यःश्री-  
वीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्य जन्मजरामृत्युचिनाशाय जल निर्वपामि ।

केशर चंदन वावनों घसि कदलीनंद मिलाय ।

तुम चरनन पर पूजते सच विघन सघन मिटिजाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्यचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्री  
वीरसेन-महाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यश्चन्दन निर्वपामि ।

शालि अखंडित सेत हैं शुभ पुंज धरंत सुधाय ।

दरिद्र द्रुम दुखनाशिकें सुख अखय संपदा पाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्यचतुर्विहरमानजिनेभ्यः  
श्रीवीरसेनमहाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

कूल सुगंध सुवास है अलिगुंजत जाँपे आय ।

सो तुम आगे धारते सच समरशूल नशिजाय ।वि०

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिममेरुविदेहस्यचतुर्विहरमानजिनेभ्यःश्रीवीरसेन-म-

हाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यः पुण्यं निर्वपामि ।

नेवज सज छुरस सुगंधता मन नैन स्सन सुखदाय ।

सो ले तुम आगे धरें सम रोग छुवा नशिजाय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं षण्कारधर्त्रीपश्चिममेरुद्विदक्षत्रस्यचतुर्विहरमानजिनभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्यः नैवेद्यं निर्वपामि ।

यह दीप प्रकाश महालक्ष्मि निरक्षम नयन प्रिय लाय ।

तासों तुम आरति करों उर आरततम छै जय । वि०

ॐ ह्रीं त्रिभुन्मात्रीमेरुद्विदक्षत्रस्यत्रिहरामानजिनभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्यः दीपं निर्वपामि ।

दशगंध सुगंध उखेइये जिन तुम चरनन द्विग लाय ।

करम कलंक जरूँ सही मो धूम द्रम उडाय । विहरमा० ॥

ॐ हां त्रिभुन्मालीमेरुद्विदक्षत्रस्यत्रिहरामानजितेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेवराज-अजितवीर्येभ्यः धूं निर्वपामि ।

फल पक्क रसीले पावने भरि हाटक थार मगाय ।

दारिद्र विघन विनाशियै हम पूजत हैं शिरनाय ॥ वि० ॥

ॐ ही विद्युन्मालीभेषजिद्वेदक्षेत्रस्थविहरजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव  
जग अजितवीर्येभ्यः फलं निर्वापामि ।

जल फल वसु दसव संजोयके कर जेरि जजों शिवराय ।

आनंद संपति दीजियै अरिनाथ कसो जिनराय ॥ वि० ॥

ॐ ही विद्युन्मालीभेषजिद्वेदक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव  
जग अजितवीर्येभ्यो अर्घं निर्वापामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई छंद—

पुष्करार्द्ध गिर पश्चिम शीता । उत्तर पुंडरीक नी मीता ।

भातु मातु भुविपाल नरिंदा वीरसेन शैरावत छंदा ॥

ॐ ही वीरसेनाय अर्घं निर्वापामि ॥१॥

पुष्करार्द्धं गिर पश्चिम शीता दृच्छन् विजे नगर नवनीता ।  
देवराज सुउमादे जननी । महाभद्र जजि शशियुग जननी ॥

ॐ ही महाभद्राय अर्थं निर्वणामि ॥२॥

पुष्करार्द्धं गिर पश्चिम लसे सीतोदा जम सुशिमाम वसे ।  
गंगा माश्रव भूत नरेसुर स्वस्ति लच्छ देवजस जिनेसुर ॥

ॐ ही देवजगाय अर्थं निर्वणामि ॥३॥

पुष्करार्द्धं गिर पश्चिम गनों सीतोदा उत्तर तट भनों ।  
अजितवीर्य नगरीय अजोभ्या मातु कननिका कमल सुवोभ्या

ॐ ही अजितवीर्याय अर्थं निर्वणामि ॥४॥

दोहा—समव शरन शोभा सहित विहरमान भगवान ।

पूजत सुरनर नागपति ह्यम पूजत धरिन्मान ॥

ॐ ही विष्णुमाळी मेरुविदेह क्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्र

देवजश अजितवीर्येभ्यः पूर्णाधि निर्वपामि ॥

ती चौ.

अथ जयमाला

वचा—जै केवलदिनमनि मोहतिमिरहनि भव्यसंराजनि मोदकरा  
शिवराय दिखावनं जे जगपावन प्रापनशावन विघ्नहरा १

नैमालनी तामरस चंडी छंद—

वीरसेन गुनसेन नमस्ते । महाभद्र सुखदेव नमस्ते ॥

सदा देव जेशदाय नमस्ते । अजित वीर्ये पदध्याय नमस्ते ॥२॥

तीर्थर अमलान नमस्ते । संजुत केवलज्ञान नमस्ते ।

समवसरन थित देव नमस्ते । इंद चढ गनसेव नमस्ते ॥३॥

द्वयालिश गुनभडार नमस्ते अशरन जन आधार नमस्ते ।

वानी खरत त्रिकाल नमस्ते । क्षैलत गनधर हाल नमस्ते ॥४॥

दरसावत सब तत्त्व नमस्ते । गहत जहां भविसत्व नमस्ते ।

केहू श्रावक त्रतधार नमस्ते । केहू होत अनगार नमस्ते ॥५॥

केहू करम प्रजाल नमस्ते । लहत केवल विशाल नमस्ते ।

केइ अघान बियात नमस्ते । शिखपुरकीं सुनिजात नमस्ते ॥६॥  
 केइ आत्मम अनुभवत नमस्ते । सांत सुधारस पवन नमस्ते ।  
 इत्यादिक धृप रीत नमस्ते । चलन मुकूनमग नीन नमस्ते ॥७॥  
 सदा अगम गुनवंत नमस्ते । जै जै शिवतिय कंत नमस्ते ।  
 मम मनसा परिपूर नमस्ते । रहो सु आप हजूर नमस्ते ॥८॥  
 सेवो जुगपद कंज नमस्ते । भववाधा मम भंज नमस्ते ।  
 तुम प्रसाद हानि कर्म नमस्ते । होहु आप सम पर्भ नमस्ते ॥९॥  
 वता-जै जै गुनसंचन दूपन रंच न देव अवंचन ज्ञानपते ।

तुम सेवत सज्जन वाजतवज्जन गावतभज्जन भावरेते ?०

ओं तीं त्रिधुःमायैरुदित्थेनस्थमिहमान जिनभ्यः श्रीश्रीभ्यै न महाभद्र  
 देवज्य अजितवीर्यभ्यः महानं निर्मपामि ।

अनादाश्रीर्वादिः-गीताञ्जलि—

जश गाय गुन उर धाय दख मिलाय जो शिरसाईजी ।

पूजै सदा जिनराय पुष्कर अरध पश्चिम जाइजी ॥  
श्री वीरसेन सु आदि चार विहारमान विदेहमें ।

सोनर सुरग सुख भोग आतम सुख लहे शिवगेहमें ॥  
इति श्री विद्युन्माली मेरु के विदेहक्षेत्रस्थ विहरमान पूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुके भरतक्षेत्र संबंधी  
वर्तमाना २४ जिनपूजा ।

लोलतरग छंद—

विद्युतमालिय मेरु विराजै । दन्दिन्नभर्त सुतामधि छजै ।  
त्रौविश वर्तसुमान जिनंदा । यापतु हों सुखसागर चंदा ॥

ॐ हौं विद्युन्मालीमेरुभरत वर्तमानजिनअत्रावतर अवतर संवौपद् आह्वाननं  
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव  
वपद् स्वाहाः ।

• अथाष्टकं ।

( चाल-मोहि राखो हो शरना ) दृष्या—

हम पूजैँ हो चरना । वरतमान जिनराजके ।हम०  
 विद्युन्माली मेरु विराजत दच्छिन भरत सु वरना  
 चौविश जिन सुरनरसुनिगन धर सेवत पातकहरना।हम०टेका  
 प्राशुक जलभरि कनकभृंगमैँ धार तीन सो दरना ।  
 जनम मरन मल धोय तुरति भो सागर पार उतरना ।हम०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतर्तमानजिनेभ्योजन्माद्विविनागाय जल्यैर्निर्वषामि  
 वाचनचंदन कदलीनंदन घस सुगंध विसतरना ।

भवतप हरन चरन जुग पूजत विधन ताप निखरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतर्तमानजिनेभ्यो गंधं निर्वषामि ।.२।।

तंदुल मंडुल शशिसम शोभत अजिय जुगत जसु वरना ।



पुंज धरत तुम चरनकमल द्विग अखै संपदा करना ॥हम०॥

ॐ ही त्रिदुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योऽक्षतं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सुवरन सुमन सुगंधित शोभित सुवरन थारी भरना ।

मनमथ मथन चरनतर धारत समरशूल छैकरना ।हम०।

ॐ ही त्रिदुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः पुणं निर्वपामि ॥ ४ ॥

नव्य गव्य पक्कवान वनाथौ मधुर सुरस मृदु धरना ।

क्षुधा रोग निखारन कारन पूजत हों तुम चरना ।हम०॥

ॐ हीं त्रिदुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यश्चक्रं निर्वपामि ।

जग मग जोत होत दीपगकी तासों आरति करना ।

तिमरमोह निश्नासि छुरित निज आनमजोत सुधरना ।हम०।

ॐ हीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

दशविध गंध मनोहर'ले जिन सनमुख खेवन करना ।

करम काठकों जारि प्रभू यह विनती बहुविध करना ।हम०॥

ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो धूप निर्मपामि ।

सुरस मधुर रितु फल कलवर्जित रसन नैनमन हरना ।

चरचत चरन जुगल जिनवाके सुकतरमनिकुं वरना ।हम०॥

ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्मपामि ।

जल फल सकल मिलाय अरघकरि सुजश विविधविधिवरना ।

जजों तुमें त्रिसुवनपति जिनवर भवचाथा परिहरना ।

हम पूजैं हो चरना, वरतमान जिनराजके । हम पूजैं० ।

विद्युन्माली मेरु विराजित दच्छिन भरत सु वरना ।

त्रौविश जिन सुनर मुनिगनवर सेवत पातक हरना ।हम०॥

ॐ हीं विद्युन्माली मेरु भरत वर्तमान जिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्मपामि ।

अथ प्रत्येकार्थ ।

दोहा-हितकारी सर बांगके श्री सर्वांग जिनेश ।

जजों भर्त वर्तत महा विद्युत नाम नरेश ॥२॥

ॐ ह्रीं सर्वांगस्वामिनंद्यं निर्वपामि ॥२॥

प्रभव अनूपमकूं धरें देव प्रभाकर भेस । ज० वि० ॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युत्प्रभाय अर्थं निर्वपामि ॥२॥

श्री पदमाकर पद्मद्युति पद्मा देत अशेश । ज० वि० ॥३॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्थं निर्वपामि ॥३॥

बल अनंत बलनाथमें शोभत नवल निवेश । ज० वि० ॥४॥

ॐ ह्रीं बलनाथाय अर्थं निर्वपामि ॥४॥

तिहू जोग निम्बार निज जोगनाथ गुनभेस । ज० वि० ॥५॥

ॐ ह्रीं जोगीश्वराय अर्थं निर्वपामि ॥५॥

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपात क्रिय । मूक्ष्म अंग निपुनेस । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्माङ्गाय अर्थं निर्वणामि ॥६॥

चल मल दोष वितीत हे । चला तीत घृतदेश । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं चलातीताय अर्थं निर्वणामि ॥७॥

ध्वांत ध्वंस कारता अखिल । देव कलंत्रक येश । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं कलत्रसाय अर्थं निर्वणामि ॥८॥

पर परन्त परित्याग क्रिय । श्रीपरित्याग महेश । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं परित्यागाय अर्थं निर्वणामि ॥९॥

विधि पोषक सोपक अविधि श्रीनिषेधक जिनेस । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं निषेधकाय अर्थं निर्वणामि ॥१०॥

पाप हरन सुख करन सत्र ॥ पाप प्रहार जगेस । ज० ॥

ॐ ह्रीं पापप्रहाराय अर्थं निर्वणामि ॥११॥

मुक्त बधू वर-विमल गुन । मुक्त चंद्र बुधि भेस ।

जजो भर्त्तं वर्त्तन महा । विद्युत मालि नगेस ॥१२॥

ॐ ह्रीं मुक्तचंद्राय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१२॥

ब्रह्म सारवती-

स्थान मई अप्रकाश जिनं । वामध सेवत पाय तिनं ।

विद्युत मालिय भर्त्तमहा । वर्त्तन पूजत सुक्खलहा ॥१३॥

ॐ ह्रीं अमकाशाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१३॥

अस्त रु नास्त पदार्थं कहे । श्री जै चंद्र कलेस दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं जैचंद्राय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१४॥

अन्तर बाह्य हरे मलको । देहु मलाधर श्यो थलको ।विद्यु०॥

ॐ ह्रीं मलधारिणे अर्घ्यं निर्वणामि ॥१८॥

स्याद सु अस्त पदार्थं कहे । जैति सु संजत कर्म दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं सुसंजताय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१६॥

स्याद सु नास्तिय वस्तु भने । निरमल श्रीमल सिंधुवने ।वि०॥

ॐ ह्रीं मलैस्त्रिन्धवे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

स्यादकंथचित्त अस्त परं । स्वक्ष गुनाकर अक्ष धरं । त्रि०॥

ॐ ह्रीं अक्षधराय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

अस्त अकथ्य कंथचित है । जैति धरा गुन संचित है । वि०॥

ॐ ह्रीं धराय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

नास्ति अकथ्य कथचित है । देव गणाधिप दोष दहे । वि०॥

ॐ ह्रीं गणाधिपाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

अस्त रु नास्त अवाच कथं । चित्त अकामिक पाप मथं । वि०॥

ॐ ह्रीं अकामिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सातहु भंग अंभंग भने । नित्य विनीत अनीत हने । वि०॥

ॐ ह्रीं विनीताय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

राग रु दोष वितीत सदा । वीतित राग जिनेश वदा । वि०॥

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

आनंद अंशुधि वृद्ध करे । शुद्ध स्तानंद मोद भरे ।  
विद्युत मालिय भर्त महा । वर्तत पूजत शर्म लहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं स्तानदाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा छंद-विद्युत माली मेरु, पुष्करार्ध पूख दिशा ।

भरत संत जिन हेर, पूजों पूरण अर्घं सो ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतस्थवर्तमानजिनभ्यो पूर्णार्घं ।

अथ जयमाला ।

धृता-जै जै जगवंदित पाप निकंदित नित आनंदित शुद्धमती ।  
जुत विभव अमंदित सदयसुखंदित जै निरफंदित वोधपती ।

पद्यही छंद—

जय जगतहितू सरवांगदेव । वंदामि प्रभाकर शुन अद्वैव ।  
जै पद्माकर पदमानिधान । बलनाथ तनें सुनि धरत ध्यान ॥२॥  
जै जोगीश्वर सुर नमत पाय । सूक्ष्मांग नमों मन वचन काय ।

ॐ बलातीत निहचल सरूप । ॐ ऐति कलंकक सुख अन्तूप ॥३॥  
 परित्याग नमों करजोर चित्त । ॐ ऐति नियत्र जिन जगपचित्त ।  
 ॐ पापप्रहारी हरन पाप । ॐ मुक्तचंद भबिहरत ताप ॥४॥  
 ॐ अपक्राशक प्रकाश ज्ञान । जयचद जिनद दयानिधान ।  
 ॐ मल धारी जिन शिवधाम देत । ॐ ऐति सुसंजत सुगुनसेत ॥५॥  
 मलसिंधु धिमल गुन वेत सार । प्रणमामि अन्नधर जगत तार ।  
 ॐ धरादेव भिव धरा दाय । ॐ ऐति देवगण नितसहाय ॥६॥  
 सुरगज अगामिक नमत आन । नित नीत निपुन सु विनीतवान ॥७॥  
 ॐ वीतराग करुना निधान । लछ देतु रतानद सकल धान ।  
 ए चौविश जिनवर धरतमान । निशुतमाली गिर भरत जान ।  
 जिहि सेवत वासव सुदित अंग । गुन ध्यावत गावत साजसग ८  
 द्विमि द्विमि धिधिरुडवाजत मृदंग । संसाग्रदि साग्रदिसारगिचंग ।  
 क्रिनिकिनिकिनिकिनि क्रिक्रिनि करत । करतलसुरान्वितथुनिधुरन्त ।  
 ता थेड थेड थेड थेड धरत पाव । ताना थेड थुगत अंगत चलाव ।  
 धुगतां धुगतां धुगतां गतवजे पुष्ट । तनननन तान अलापि सुष्ट ॥१०॥



इत्यादि समाज मिलाय इंद्र । तुव जशगावतु ॐ हे जिनंद ।  
 तुम पच कल्याणक ईश परम । गुन सागर अगम अनत शर्म ११ ॥॥  
 हम शरन गही दुख खड खड । मन वांछित आनंद मंड मंड ॥  
 भव वाधा मेरी मंड मंड । शिवराधा सों कर भेट भेट ॥१२॥  
 धवा-जै जै गुनमूरत अनुपमसूरत आनंद पूरत परमपती ।

“वृदावन” ध्यावत शीसनवावत वांछित पावत शर्म अती १३  
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्यो महार्धं निर्वपामि ॥

अथाशीर्वाद-शार्दूलविकीर्णित छंद—

जो पूजे मनलैय पाय जिनके सद्द्रव्य औ भावसों ।  
 विद्युन्मालिय भर्त वंरतु महा ताकों जपें चावसों ॥  
 सो पावे धन धान्य शर्म सकलं शक्राधि द्वै के सही ।  
 चक्री होय अतिद्वि आनंद लहै श्रीसिद्ध की जो मही ॥

इति विद्युन्माली मेरुभरतवर्तमान पुजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्माली मेरुभरतीति जिन पूजा प्रारभ्यते ।  
दोहा-विद्युन्मालाय मेरु के भरतीति जिनराय ।

थापों चौविश सुगुननिधि आय आय प्रभु आय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराक्ष्मीये विद्युन्मालीमेरुभरतीतच्चतुर्विंशतिजिनसमूह अत्रा-  
वतर अवतर सर्वोपद् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ टः टः स्थानं । अत्र  
मम सन्निहितो भव भव वपद् स्वाहा

अथाष्टकं ।

वशंततिलका वंद—

सज्जान्हवीय जल उज्जल हेमंभारी धाराकरों त्रिविध रोग हरो हमारी  
श्रीपुष्कर च्छर्द्दगिरिविद्युतमालिनामीपूजोंसुभर्तवर्तीतिजिनेशस्वामी

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरु भरतीतच्चतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वयामि ॥

काश्मीरचंदनकपूरसुगंधपूरेतसोंसमरचतप्रभु भवतापचूरे ।श्री०।

ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ॥  
 युक्ता समान सित तंदुलसार सेहे,

‘धारंत पुंज मनवांछित सुख हो है । श्री० ।

ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥  
 कुंदारु विंदवर केतुकि पुष्पसार,

हे नाथ धारहुँ इहां हर शूलम्हारे । श्री० ।

ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥  
 नानाप्रकार चरुसार रसाल लायो,

तासों समरचत क्षुदा दुखको नशायौ । श्री० ।

ॐ हीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥  
 चाती कपूर घृत पूरित दीपकीनों,

ताकों चढ़ाय निज आतम ज्ञान लीनों । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥  
 कृष्णागरु प्रमुख धूप अनूप सेवों,

कर्मोद्य दाहि निज आतमरूप बेवों । श्री० ।

ओं ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥

काम्राप्रजाम शुभ पक्वदल्वंग एला,

इत्यादि सोचत मिले शिव संगवेत्ता । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥

गंगा जलादि सव द्रव्यफलार्थ साजे,

वाजे वजे जजत पाप समस्त भाजे ।

श्रीपुष्करार्द्ध गिरि विद्युतमलिनामी,

पूजों सुभर्तवरतीत जिनेश्वामी ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥

## अथ प्रत्येकार्घं ।

मोदक छंद—

पद्मसुचंद महा ह्यवि आनन । भाषतर्धम अदोप पुरानन ।  
विश्रुतमालियमर्त विराजत तीतज्जे भवि ओनेद साजत ॥

ॐ ही पद्मचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सद्गुणरत्न विभूषन भूषित रत्नशरीर नमो निरद्वीपत । वि० ।

ॐ ही रत्नांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

जोगि यजोगिनि द्वार निहास्त । देव अजोग तिजोगनिवारत । वि०

ॐ ही अजोगाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दायकसिद्ध सु अर्थ पुनीतम । श्रीसखाथ सिद्ध अभीतम । वि०

ॐ ही सिद्धार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीकृपनाथ किये कृप कर्मनि । दीप्त शरीर हरो भवि भर्मानि । वि०

ॐ श्री कृपनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

इंद सुचंद सदा पद सेवत । श्रीहरिचंद निजांतम वेवत । वि० ।

ॐ ह्रीं हरिचन्द्राय अर्थं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशभेव सभा जशगावत । सद्गुणजुक्त गुणाधिप ध्यावता । वि० ।

ॐ ह्रीं गुणाधिपाय अर्थं निर्वपामि ॥७॥

या भव औ परभौ सुख कारन । देव परत्र कलेश निवारना । वि० ।

ॐ ह्रीं परत्रेकाय अर्थं निर्वपामि ॥८॥

पूरन ब्रह्म पदाविन्त राजत । ब्रह्म सु नाथ प्रभाष्ठि च्छाजता । वि० ।

ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्थं निर्वपामि ॥९॥

आँनदकंद चिदानंद स्वामिय । श्रीमुनिचंद नमै शिवगामिय । वि० ।

ॐ ह्रीं मुनिचन्द्राय अर्थं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीकुल दीपक दीपक वंदिय । दायक मोखपुरी अभिनंदिय । वि० ।

ॐ ह्रीं कुलदीपकाय अर्थं निर्वपामि ॥११॥

राजनिके पति पूजत पंडित । राजशिषी रिषिपंकति मंडित । वि० ।

ॐ ही राजर्षये अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

भव्यप्रबोधक धर्म सु भाषत । देव विशाख निजानंद चाखत वि०

ॐ ही विशाखाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

नाथ अनंदित आनंद मंदिर । हें निकलंक्र नमंत पुंरंदर ।वि०

ॐ ही आनंदिताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

छंद इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्र ।

जे मानुसे दीप्त धरें शरीरं वंदों रवि स्वामि जिनें संधीरं ।

श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ही रविस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

श्रीसोमदत्तं प्रणमामि देव । आनंदकंदं शतइंद सेव ।श्री०

ॐ ही सोमदत्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

जेकामे शत्रू कहि छीन कीनों नमों जयस्वामि महाप्रवीनों श्री०

ॐ ही जयस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

जे मोक्षलक्ष्मी जुत केल कर्ते । ते मोक्षनाथं भवतीत हर्ते । श्री०

ॐ ह्रीं मोक्षनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

निसर्गसम्यक्तसुव्यक्त दाता सो अग्रभावी जगमंविख्याता । श्री०

ॐ ह्रीं अग्रभानवेऽर्घं निर्वपामि ॥१९॥

ध्यावों सदा सो धनुषांग स्वामी धनुषिशचित सुक्तधामी । श्री०

ॐ ह्रीं धनुषांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सुधाधरं व्यक्त उत्तंगकाया श्रीमुक्तनाथं प्रणमों जिनाया । श्री०

ॐ ह्रीं मुक्तनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

रोमांचको ध्यावत शर्म पावै आनंद रोमांच तुरंत आवै । श्री०

ॐ ह्रीं रोमाचाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

प्रसिद्ध संबंध खुसिद्ध धारी । प्रसिद्धनाथं भव सिंधुतारी । श्री०

ॐ ह्रीं प्रसिद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

जो जीव को वांछित देत नीके जिनेश सो ईस सवे जती के ।



श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी । पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ही जिनेशस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा-पूरन अर्घ वनायकें जजों जुगल कर जोर ।

विद्युतमाली भर्तके तीत जिनेसुर ओर ॥२५॥

ॐ ही पुष्कराद्विहीपविद्युन्मालीमेरुभरतातीतजिनेभ्यः पूर्णांघं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घटा-जै जिनगुनसागर सुजश उजागर सेवत नागर नीतमती ।

सत्र विघनविनाशन उन्नत शासन ज्ञान प्रकाशन बुद्धपती ।

छद्द दोहा आचलीबंध ।

विद्युनमालीमेरके दच्छिन दिश सुखकार ।

भरतीतजिनपतिजजों ध्यावों पर अविकार ।

भविहो जिनगुनगावो भावशोजीपदमचंद पद्माकरें श्रीरतनांगअनूप

नमहि अजोग जपो सदा सरवारथ सिव भूप । भवि हो० ॥२॥

करम कृपण कृपनाथैहँ श्री हरिचंद दयाल ।  
 जैति गुणाधिप सुगुन निध जै परत्रिक गुवमाल ॥ भविहो० ॥  
 ब्रह्मनाथ आनदमै नमों सुनिन्द जिनद ।  
 दीपक जग दीपक भए राज ऋषी सुख कंद । भविहो० ॥  
 धौ विशाख अभिलाष मम आनंदित जित कर्म ।  
 रवि स्वामी शिवमग अखै शोमदत्त निरभर्म । भविहो० ॥५॥  
 जै स्वामी जै देतु हैं मोक्षनाथ सुख हेत ।  
 अग्रभाव बुधि दीजिये धनुष अग सुधि लेत । भविहो० ॥६॥  
 मुक्तनाथ शिवसाथ हैं रोमांचक अधचूर ।  
 जैति प्रसिद्ध सुसिद्धकों श्री जिनेश सुख पूर । भविहो० ॥७॥  
 गरभागम पट मासलौ नवथित गरभ मझार ।  
 इंद रतन वरषा करी दिन त्रिवार मनि धार । भविहो० ॥८॥  
 जनमत सुरगिर न्होन करि निज नियोग विसतार ।  
 पिता शौंपि जिनसेवकों राखे सुर सु कुमार । भविहो० ॥९॥

भोग भोगि तज राजकौ जोग धरे अविहार ।  
 त्रैसट सिद्ध लहे तवे मौन सहित त्रतधार । भविहो० ॥१०॥  
 घाति घाति केवल लयो लोकालोक प्रकाश ।  
 समवशरन रचना वनी इन्द्र भर शतदाश । भविहो० ॥११॥  
 फिर अघाति चक्रचूरिके मोक्ष भए जिनचद ।  
 गुन अनत इकरूप है बंदत भवि नित “बृंद” । भविहो० ॥१२॥

वत्ता--जै श्रीजिनस्वामी त्रिभुवननामी गुनअभिरामी शिवधामी ।

तव पादनमामी हृदय धरामी पाप नशामी सुखपामी ।

ॐ ह्रीं त्रिभुमालीमेरुभरतभाविचतुर्विजिन्ग्यो धूं निर्धामि ॥७॥

अथाशीर्वाद-जोगीगसा छद—

पुष्करार्द्ध गिर त्रिभुतमाली पच्छिम माहि विगजै ।

तास भरत तित तीत जिनेसुर आनंदकारी छवजै ॥

तिनपद जो भवि साजि समाजनि पूजत भगत धराई ।

सोसुर नरसुख भोगि सकल विधि अनुक्रम शिवपुर जाई ॥

इति श्री विद्युन्मालीमेरुभरतातीतपूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुभरतत्राविजिनं पूजा प्रारभ्यते ।

छंद मदाविलिप्त कपोल ।

विद्युतमाली मेरु दीप पुष्कर मह छाजत ।

तासु भरत के माहि भविष्यत जिनवर राजत ॥  
तिनको थारो इहां जुगलपद पूजन कारन ।

आय प्रभु इत अवे सकल दुखदद निवारन ॥

ॐ हीं विद्युन्मालीभरतभापित्तुर्विशतिजिनसमूह-अत्रायतर अत्रतर संवी-  
पद आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठ स्थापन अत्रमम सन्निहितो भवभवपद स्वाहाः।

अथाष्टकम् ।

छंद रूपक कविता-

हिमवन गिरगत गंगाजलवर कंचनभारी भरकर लाय ।

मनवचतन पुलकित नित पूजत जनमजरासृत रोग पलाय ॥  
 विद्युत्माली मेरु भरतके भावी जिनवरजग सुखदाय ।  
 पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वंदत जसु पाय ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।

वावनचंदन कदलीनंदन केसरसंग सुगंध घसाय ।

भवतप हरन चरन जिनवरके पूजत ही भवताप पलाय । वि०

ॐ ही त्रियुन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदन निर्वपामि ॥२॥

सेतशालि शुभ शशिसग दमकत गमकत वास नैनसुखदाय ।

पुंजथरत दुखदंददहरत आनंदभरत अनुपम सुखदाय । वि०

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ॥३॥

कमल केतुकी वेलचमेली सुमनसुमन समसुमन सुभाय ।

सुमनमथमदमंथनके कारण सेवो मनमथमथनजिनाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यःपुष्पं निर्वणामि ॥४॥

नव्य गव्य मनमोदन मोदक खाजे ताजे लुपित उपाय ।

छुथरोग निस्वारन कारन पूजत हों पदमंगल गाय वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वणामि ॥५॥

जगमग जोत होत दीपक की तासों आरति करी मुजाय ।

प्रभुतन माहि तास दुति दरशत मानों ध्यानकनी सरसाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वणामि ॥६॥

धूप अनूप उखेवत हों प्रभु तुम ढिग वात होत्र में डाय ।

ध्यान अगनि में करम जेरें हूँ धूम धूम यह तास उड़ाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो द्रुपं निर्वणामि ॥७॥

आम जाम अभिगम सुफल कलवर्जित पक्व मधुर मनलाय ।

तासों अरचत तुम पदपंकज विघनसघन ततखिन नशिजाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥  
 जल चंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अर्घ्य वनाय ।  
 पूजो चरन करन सुखसंपत् तारन तरन जगत वरदाय ॥  
 विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवर जग सुखदाय ।  
 पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वदत जस पाय ॥  
 विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

मोतीदास छंद--

प्रभाव कौर सुराजु आय । प्रभावकदेव, नमो शिरनाय ।  
 सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्तं जजो यरिभ्यान ।

ॐ ह्रीं प्रभावकाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

नमो नरदेव उमंग समेत । नमो विनतेन्द्र जिनेन्द्र सुचेत । सु०  
 ॐ ह्रीं विनतेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

विभावसुभाव विभेदन हार । सुभावकदेव नमो अविकार । सु०

ॐ ह्रीं सुभावकाय अर्घं निर्दिशामि ॥३॥

दिनिंदसमान प्रकाश शरीर । नमो नित श्रीदिनकार सुधीर । सु०

ॐ ह्रीं दिनकराय अर्घं निर्दिशामि ॥४॥

अनंग विकार निवारन देव । सदा जय अंग सुतेज अर्धेव । सु०

ॐ ह्रीं अनगतेजाय अर्घं निर्दिशामि ॥५॥

सुभव्यनिकों धनधान्य करंत । नमों धनदत्त जिनेश महंत । सु०

ॐ ह्रीं धनदत्ताय अर्घं निर्दिशामि ॥६॥

सुप्रख कर्म विपाक विनीत । जिनेसुर पौरव हूं निरभीत । सु०

ॐ ह्रीं पौरवाय अर्घं निर्दिशामि ॥७॥

सदा समदिष्टिय सेवत पाय । सुखाकर श्रीजिनदत्त जिनाय । सु०

ॐ ह्रीं जिनदत्ताय अर्घं निर्दिशामि ॥८॥

चंद्रं धनघातियकर्म ह्वनंत । त्रिलोकहितू प्रसु पार्श्वमहंत । सु०



ॐ ही पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

गनांबुधि श्रीसुनिसिन्धु अगाथाजपे नितचित्त पुनीतम साध सु०

ॐ ही मुनिसिंधवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

सु अस्त रु वस्त प्रशस्त वताय । नमो कमलाधर अस्तक भाय ।सु०

ॐ ही अस्तकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

भवोदधि तारनकों समश्रथ । सुरेशनेमं भवनीकहि मश्रथं ।

सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्त जजो धरि ध्यान ॥

ॐ हीं भवनीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद सूत्र ।

नृपनाथ नृपकुल पाल । पूजो सदा गुनमाल ।

पञ्चम सुराचल तथ्य । भावी भरत समश्रथ ॥

ॐ हीं नृपनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

नारायनाय जिनेय । ध्यावो नारायणध्येय । पञ्चम०

ॐ ही नारायणाय अर्घं निर्वापामि ॥१४॥  
 प्रशमोक प्रशम प्रदाय । पूजों सुजश गुनगाय । पञ्चम०  
 ॐ हीं प्रशमौकसे अर्घं निर्वापामि ॥१५॥  
 भूपति भजै पदकंज । सुपति भजों भेभंज । पञ्चम०  
 ॐ ही भूपत्येऽर्घं निर्वापामि ॥१६॥  
 केवल सुदृष्ट विकाश । पूजों सुदृष्ट हुलाश । पंचम०  
 ॐ ही सुदृष्टये अर्घं निर्वापामि ॥१७॥  
 भवभ्रंति भीत अतीत । भवभीरु जजि जगमीत । पंचम०  
 ॐ हीं भवभीरवाय अर्घं निर्वापामि ॥१८॥  
 आनंद कंद जिनंद । नंदन जजों सुख कंद । पंचम०  
 ॐ हीं नंदनाय अर्घं निर्वापामि ॥१९॥  
 जै शुद्ध शुद्ध अशुद्ध । भार्गव जजों जुत श्रि । पंचम०  
 ॐ हीं भार्गवाय अर्घं निर्वापामि ॥२०॥

वासव सदा जलु भक्त । पूजों सु वासव व्यक्त ।पंचम०

ॐ ही वासवेर्ष्यं निर्वपामि ॥२१॥

वस विश्व जास वसंत । पर वास जिनहि जजंत ।पंचम०

ॐ हीं परवासवे अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

वनवसत नाशि उपाय । वनवासि साध अराध ।पंचम०

ॐ हीं वनवासिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

भरतेश कमला करन । पूजों सकल जन सन ।

पंचम सुराचल तथ्य । भावी भरत समरथ्य ।

ॐ हीं भरतेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

रथोद्धता छंद—

पूर्ण अर्घ्य यह अग्र धारिहो । ध्याय गाय जश पाप टारिहों ।

पुष्करार्घ्य गिर पंचमें सही । भर्त भावि जिन पूजिहों यही ॥

ॐ हीं पुष्करार्घ्यद्वीपत्रिद्युन्मालीमेरुभरतभाविजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि

अथ जयमाला ।

धृता-जे शिवमगमंडन कलुपविहंडन कृतत्रहमंडन शर्म अती  
दाखिद्रुमखंडन जै भवहंडन हरनप्रचंडन कर्मगती ॥

छंद नमालिनी तामरस चंडी ।

जै प्रभाष शिवराव नमस्ते । विनतेंद्रं जुगपाय नमस्ते ।  
जै सुभाविक दयाल नमस्ते । श्री दिनकर गुनमाल नमस्ते ॥१॥  
अगतेज जसपुंज नमस्ते । धनदत्त सुखसुज नमस्ते ।  
पीरव पूरन शर्म नमस्ते । जै जिनदत्त सु पमं नमस्ते ॥३॥  
पार्श्वनाथ शिवसाथ नमस्ते । सुनिसिधव मम नाथ नमस्ते ।  
अस्तिक जिनगुनवत नमस्ते । श्रीभवनीक महंत नमस्ते ॥४॥  
श्री दृपनाथ सुनीश नमस्ते । नारायण जगदीश नमस्ते ।  
प्रशमोकश जठाराश नमस्ते । भूपत यिमलविलाश नमस्ते ॥५॥  
जै सुदिष्ट जग इष्ट नमस्ते । भवभीखव गुन मिष्ट नमस्ते ।  
नंदन आनंद कंद नमस्ते । भागीव जिन निरकंद नमस्ते ॥६॥

जे सुवासव पुनीत नमस्ते । परवासक जगमीत नमस्ते ।  
 श्री वनवास मुनिद नमस्ते । जे भरतेश जिनद नमस्ते ॥७॥  
 पुष्कर पंचम मेर नमस्ते । भरत भविष्यत हेर नमस्ते ।  
 चौवीशों जिनराय नमस्ते । गुन अनत समुदाय नमस्ते ॥८॥  
 पंच कल्याणक राय नमस्ते । शिव मारग दरशाथ नमस्ते ।  
 गनधर पूजत पाय नमस्ते । “दुंदावन” शिरनाय नमस्ते ॥९॥  
 वत्सा-जे जेशवंतं जिनभगवंतं सुगुन अनंतं शुद्ध मते ।  
 नित ध्यावत संतं जेति महंतं लब्धि लेशंतं बुद्धपंतं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कार्धद्वीपवियुन्मालीमेरुभरतभावीजिनेभ्यो महाधर्मनिर्वपामि ।

अथाशीर्वाद-गीता छंद—

वसु दश सुंदर साज जो जिनराज वरन जजै नरा ।  
 पुष्कर सु पंचम मेरु भरत भविष्य श्रीमजिनवरा ॥  
 सो सकल पुत्र सुमित्र सपत लहत सार समाज कौ ।

अनुक्रम वरे शिव पद्म गमनी भविक जन हितकाजकीं ॥

इति श्री भरतपञ्चमाचञ्चसंबंधीभाषित्तुर्विगति प्रजा समाप्ता ।

अथ पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीऐरावत  
वर्तमान २४ पूजा ।

दोहा-विद्युन्माली मेरुके ऐरावत छित माहि ।

धरतमान चौवीश जित थापों इत प्रभु आहि ॥

ॐ ह्रीं पचमानैरावतर्तमानचतुर्विगतिजिन अत्रावतर अमतर सर्वोपद्  
आहाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम मन्निहितो भव भव वपद् स्वाहा

अथाष्टकं ।

छद चौबोल-

छोरीदधि सम उजल जल शुभ कनक कटोरी माहि भरे ।

जनम जरामृत नाश करनकों श्रीजिन सनमुख धार करे ॥

पुष्करार्थं गिर विद्युत्तमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।  
 वरतमान चौवीश जिनेसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।  
 केशर चंदन दाह निकंदन कदली नंदन गंध भरे ।

जलसगधसि लसि मसिसम समकर पूजत भवआताप हरे ।पुं  
 ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो गध निर्वपामि ।

तंडुलसेत निशाकर वारिजं छीर छटा हिम हीरहरे ।  
 कंचनथार विषे तसु पुंज सु पुंजत ही दुख दोष टरे । पुं

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तंदुल निर्वपामि ।  
 कामवली प्रतिकै सबके सब रुद्रनिके सब जेर करे ।  
 तासु विनासनि जानि तुम्हें प्रसु प्रसु पूजत फूल सुगंध भरे । पुं

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्य पुष्प निर्वपामि ।  
 रोग छुधा जंगजलुनिकों नित जेर करें छिन नाहि टरे ।

तासु विनाशन जानि तुमें जिन पूजहु नेवज व्याधि हरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजितेभ्यः फलं निर्वपामि ।

मोह महातम ह्यय रथ्यो जग नाहि हिताहित दिष्ट परे ।

सो तुम नाशि प्रकाश क्रियो शिव दीप चद्रावत भर्म हरोपु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जितेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

काल अनाद वितीत भयौ संग कर्मनिके दुख भूरि भरे ।

तुम द्विग धूप अनूप उखेळं ज्यौं वसु कूर प्रचूर जरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजितुभ्यो धूपं निर्वपामि ।

ज्ञान अतिद्रिय शर्म अनाकुल आतम परम सुधर्म धरे ।

सो प्रगटो मम हे जिन स्वामिय सेवतु हो फलथार भरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जितेभ्यः फलं निर्वपामि ।

जलचंदन तंदुल प्रशून चरु दीप धूप फल अर्घ करे ।



नाचि राचि शिरनाय समरचत भव भवके सववापहरे ।  
 पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ सेत धरे ।  
 वरतमान चौवीश जिनेसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥२४॥  
 ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनभ्योऽर्थं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्ध ।

चौपाई छंद--

गंग घटासम अंग विशुद्ध । गांगेयक वंदत वर शुद्ध ।  
 पुष्कर पंचम मेरु लसंत । ऐरावत जिन संत जजंत ॥  
 ॐ ह्रीं गांगेयकाय अर्थं निर्वपामि ॥१॥  
 मल्लवास जसरास पुनीत । मुक्तमुक्त दानी जगभीत । पु०

ॐ ह्रीं मल्लवासे अर्थं निर्वपामि ॥२॥

भीम जिनंद भीम भैहत । मुखकारी जे जे अरिहन्त । पु०  
 ॐ ह्रीं भीमाय अर्थं निर्वपामि ॥३॥

दयानाथ सेवंत विदग्ध । स्तनरास करि दारिद्र्य । पु०।

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीसुभद्र दायक नित भद्र । भद्रभाव जुत सुगुन समुद्र । पु०

ॐ ह्रीं भद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

स्वामीनाम नमों जिनराय । ध्वजा चिन्ह जह बहुत मुहाय । पु०

ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

हनिक नामजिन गुनमनिमाल । द्वादशसभा सहित जगपाल । पु०

ॐ ह्रीं हनिकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

नंदघोष जिन जगजन पोष । चतुरानन राजें निरदोष । पु०

ॐ ह्रीं नंदघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

रूपवीज श्रीजिनगुन खान । कोटि भानु हुति देखि लजान पु०।

ॐ ह्रीं रूपवीजाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

वज्रनाभ वज्राधिप सेव । नटसाला नाचें नट देव । पु०

ॐ ह्रीं वज्रनाभाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीसंतोष तोषाद् पोष । मदिर पंक्तिरुचिर चित चोप । पु०

ॐ ह्रीं संतोषाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

श्रीसुधर्म जिन परम दयाल । सोहत हे देवद्रुम माल । पु०

ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

श्रीफनीस पद फनपति ध्यात । पुष्पवाटि फल फूल सुहात ।

ॐ ह्रीं फनीश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

वीरसेन जश किन्नर सार । गावतु हैं नानाप्रकार । पु०

ॐ ह्रीं वीरचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

मेधानीक नभों जिनचंद्र । स्वच्छ छवी ह्याजत मुखकंद पु० ।

ॐ ह्रीं मेधानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

स्वच्छनाथ गुन स्वच्छ अनंत । सुर जश गावत ध्यावतसंत  
पुष्कर पंचम मेर लसत । ऐरावत जिन संत जंतत ।

ॐ ह्रीं स्वच्छनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

दोहा-कोप छय करि कोप छे भापत सबहित वैन ।

नग पंचम ऐशवते वरतमान जजि चैन ॥१७॥

ॐ ह्रीं कोपछयाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जयति अकामक कामकर समवसरन थित लेन । नगव्वरा

ॐ ह्रीं अकामकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

धरमधाम अभिराम नमि गंध कुटी छवि देन । नगव्वर ।

ॐ ह्रीं धर्मधामाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

सुक्तेसन वंदत विद्युथ वन उपवन जह ऐन । नगव्वर ।

ॐ ह्रीं सुक्तेसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

क्षेम करनं छेमंग जिन साल फूल सुखदाय ॥

गिर पचम ऐशवते वरतमान पद ध्याय ।

ॐ ह्रीं क्षेमकराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

दयानाथ आनंद घन मृगराजा सनसीन ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत अमलीन ॥

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

कीर्तपाय जिनराय जजि प्रश्नोतर करतार ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखकार ॥

ॐ ह्रीं कीर्तपायजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

शुभकर जिन शुभ करत नित मंगल नित नौदाय ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखदाय ॥२४॥

ॐ ह्रीं शुभकराय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

मालिनी छद्-जल फल सब साजे बाजते सार वाजे ।

गिर पनम विराजेरावते वर्त ताजे ॥

चटु जुग जिनराजे पंच कल्यान साजे ।

पद जजि महराजे सर्वे कल्याण पाजे ॥

ॐ हीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विगतिजिनेभ्यः पूर्णाधिं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

षवा-जै जिनगुनमालं विरद विसालं सुरनुतभालं सुकुमालं ।

जै कवि कुलभालं अरिपस्त्रिजालं जैति कृपालं शिवचालं ॥

पद्मही वंद—

जै गगदेव शिवसंग सार । जै मल्लवास मदमल्ल डार ।

जै भीम भीम भव हरन देव । जै जैति दयाधिक गुन अछेब ॥२॥

जै जैति भद्र भद्रेश कर्ण । स्वामी जिनवर भवभीत हर्ण ॥

जै हनक हरण मनमल समस्त । जै नंदघोष भापत सुवस्त ॥३॥

जै रूपवीज वीरज उदार । जै वज्रनाभ भवसिंधुतार ॥

संतोष जैति दुख दोष चूर । जै जिन सुधर्म जिनधर्म पूर ॥४॥

जै जिन फनीश फनपति नमत । जै वीर चंद जिनगुन अनंत ।

मेथानिक मेधा नमत पाय । जै स्वच्छनाथ शिव मग यताय ॥५॥



चौविस जिन तह वरतमान जो पूजई ।

सो भवि सब सुख पाय मुकत पद कूजई ॥

इति श्रीपंचमाचलैरात्रते वर्तमानचतुर्विंशति पूजा समाप्ता ।

अथैरावतातीतचतुर्विंशति जिन पूजा ।

तोटक छंद-

गिर पंचम पुष्कर दीप तनों । अयावततीत जिनेश भनों ।

चववीस सुथापतु हों इतही प्रभु आय करो भविके हितही ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरात्रतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्रात्रतरअत्रतसवौपद् आहानन ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरात्रतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्रममसनिहितो भयभयपद्स्वाहा ।

अथाष्टकं ।

लावनी-गही है नाथ शरन तेरी ।



भव पाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ लुरित भेरी । गही०  
पुष्कर पंचम भेर विराजित ऐरावत हेरी ।

तीत जिनेसुर पद परिपूजन मिटत जगत फेरी । ग० टेंक ।  
छीरोदधि सम नीर सीर भरि कनक भुंगमेरी ।

धार करत तुम चरन कमल तर सकल कलुष छेरी । ग० ।  
ॐ हीं पंचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

वावन चंदन कदली नंदन जल संघ घसि लेरी ।

पूजत चरन जुगल करुनानिध भवतप चूरी ॥ गही० ॥

ॐ हीं पंचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ।

देवजीर सुखदास वास दुतिरास तंडुलेरी ।

पंज धरत दुख कुंज हरत जिनपद सु पूजतेरी । गही० ।

ॐ हीं पंचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

पारजात मंदार सुमन संतान जाति केरी ।

चरचौ चरन हरन मनमथ मद शुद्ध शील देरी । गही०

ॐ ही पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुप निर्वपामि ।

छुधा रोग निरवार निराकुल पद तुमने लेरी ।

नेवज साजि जजौ जगनायक हेरो व्याध मेरी । गही०

ॐ ही पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चक्रं निर्वपामि ।

केवल भान प्रकाश प्रभू तुम सच परगासेरी ।

दीपक सौ आरती उतारौं निज प्रकाश देरी । गही०

ॐ ही पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।

दुष्ट अष्ट तुम नासि पुष्ट पद माहि थिर भयेरी ।

हम पूजें दशगंध धूपसौं कूर अरि जेरी ॥ गही०

ॐ ही पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

विधन सधन वन ध्यान अगनिसौं तुम परजालेरी ।

हम प्राशुक फलसों पद पूजै व्रांछितार्थ देरी । गही०

ॐ ही पंचमाचैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥

लुम अनंत गुन लहे अनूपम अमल अचल हेरी ।

हम पूजै पद अरघ थार भर भिद्यो जगत फेरी । गही हैनाथ ।

भवपाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी ।

पुष्कर पंचम मंरु विराजत ऐरावत हेरी ।

तीत जिनेसुर पद परिपूजत मिटत जगत फेरी । गही है ।

ॐ ही पचमाचैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घ निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

हरिणी छद-

भवातप शांत करंत सदा । नमों उपशांति प्रशांति प्रदा ।

सु पुष्कर पंचममेर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥१॥

ॐ ही उपशातिजिनराय अर्घ निर्वपामि ॥१॥

शरीर अनूपम सोहत है । सो फल्यु जगजन मोहन है । सु० ।

ॐ ही फाल्युजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नमों पुरवास सु आस भरे । जिनेश अशेष कलेश हरे । सु० ।

ॐ ह्रीं पुत्राशाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

त्रिलोक सुहावन रूप लसै । नमों जिन सुन्दर पाप नसै । सु० ।

ॐ ही सुदराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धरे गुन गौरव गौरवता । नमों जिन गौरव गौरवता । सु० ।

ॐ ही गौरवाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

कषाय सवे चकचूर किया । त्रिविक्रम आनंद पूरि दिया । सु० ।

ॐ ही त्रिविक्रमाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

जुशेष गयंद सृगिद सम । नमों नरसिंघ कुकर्म दमं । सु० ॥

ॐ ही नरसिंघाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

कहों विधि हास रतादि हनें । नमों मृगवासव सार पने ।

सु पुष्कर पंचमेपर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥

ॐ ही मृगवासवे ऽर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

छंद प्रियवदा—

पुरुषवेद निखार कीन है । परम शोभ जिन सो प्रवीन है ।

त्रितिय दीप गिरि पंचमैं सही । जजत तीत अयरावते यही ॥

ॐ ही शोभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

सुमल लोभ जिह्व सूक्ष्म नासियो । जिन सुधाव सुवोध भासियो ॥ त्रि०

ॐ ही शुद्धावराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१०॥

दुखद पंचविधि नाद नासियो । जिन अपाप सवस्तु भासियो ॥ त्रि०

ॐ ही अपापजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥११॥

दरशनावरन अंत कीन है । जिन विवाध नमते प्रवीन हे त्रि०

ॐ ही विवाधाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

मति श्रुतावरन आदि जे कहा । हरन संधिक जिने शते महा ।

त्रितिय दीप गिर पंचमं सही । जजत तीत अयरावते यही ।

ॐ ह्रीं सधिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

हेंद रथोद्धता—

विधन पंचजिन निधनकीन हें । मान थात्र जिनसों अखीन हें ।

पुण्कार्थं गिर पंचमं सही । तीत पूजत यरावते मही ॥

ॐ ह्रीं माघात्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

शुक्लध्यान दुतिवत शुद्ध हें । अथतेज जिनसों विशुद्ध हें । पु०

ॐ ह्रीं अश्वतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

पुद्गलीक गुनतें सु जे जुतं । सोय देदवर विद्यया जुतं । पु० ।

ॐ ह्रीं विद्याधराय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

बंध आधि तन भेद थे जिते । सो सुलोचन हने सहीतिते पु०

ॐ ह्रीं सुलोचनाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

सर्वं संहननसों वितीत हें । मौनकं निधि नमों सुमीत हें पु०

ॐ ह्रीं मौननिधाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

पुंडरीक जिनकों नमों सदा । छः प्रकार परजाप्त सों जुदा पु०

ॐ ह्रीं पुंडरीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

जैति चित्रगण मित्रजीय के । रक्षपाल पटकाय ह्रीय के पु०

ॐ ह्रीं चित्रगणाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

छद् दुत्तपा--

त्रिविध जोग जिनमें चकचूर । गुन समुद्र मनि इंद्रजु प्रेर ।

पुहकरार्ध गिर पंचम नामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं मुनिद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

गुननिधान परघात दला है । सत्र पूज निज सर्व कला है पु०

ॐ ह्रीं सर्वकलाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

सकल भूखत्रिष रोग निवासे । जयनि भूरिश्रवने सुखरासे पु०

ॐ ह्रीं भूरिश्रवाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

परमपुन्य जुतकाय अष्टुपं । जय पुनंग जिनवर जसरूपं ।  
 पुहकराद्धे गिर पंचमनामी । जजहु तीत अथरावत स्वामी २४  
 ॐ ही पुणांगाय अर्थ निर्वपामि ॥२४॥

मुसुपी छद-

पुहकर पंचमंभर गनों । तह ऐगवत खेत भनों ।  
 जिनवर तीत जजामि सदा । कर धर पूरन अर्थ अदा  
 ॐ ही पचमाचंखरावतातीतचतुर्भिगतिजिनेभ्यः पूर्णार्थं निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

धचा-जे जिनजगवंदित जन आनंदित जैति अमंदित मोनत्रती  
 सम दमजुते राजत सत्र सुख साजत भवभै भाजत हे सुअती

छद नयमालिनी तामरस चढी-

उपशांतिक मति मडित जै जै । फलगू जिन दुल्ल खडित जै जै ।  
 श्री पूर्वास अखंडित जै जै । सुन्दर जिन भ्रम दंडित जै जै ॥२॥



गौरिक हरिहर वदित जै जै । त्रीविक्रम सु अमदित जै जै ।  
 नरसिधेस सु छंदित जै जै । मृगवस जगदानंदित जै जै ॥३॥  
 सोमेशुर सुखदायक जै जै । शुद्धाबर सब लायक जै जै ।  
 श्री अपाप गुन ह्यायक जै जै । जिन विवाध शिवनायक जै जै ।४।  
 सधिक भवदधि तारन जै जै । मांधात्रे मद मारन जै जै ।  
 अश्वतेज जगटारन जै जै । विद्याधर उद्धारन जै जै ॥५॥  
 श्री सुलोचन प्रकाशक जै जै । मौनिधी वृत वासव जै जै ।  
 पुंडरीक जसरासक जै जै । चित्रगुनी गुनरासक जै जै ॥६॥  
 श्रीसुनिरिंद महंत जै जै । सर्वकला भगवंतं जै जै ।  
 मूरिश्रव भवअंतं जै जै । जिन पुण्यांग अनंतं जै जै ॥७॥  
 पुष्कर पचम गिरवर जै जै । तीतरावत जिनवर जै जै ।  
 वदत सुरनर सुनिवर जै जै । अमल अचल शिवतिथ वर जै जै ८  
 दास सदा यह जाचतु जै जै । होहु भगत नित शांचतु जै जै ।  
 सुर सुरेश मनरांचतु जै जै । सुजश गाय इमि नाचतु जै जै ।९।

पग नूपुर छवि छाजतु है है । मांदल द्विमि द्विमि बाजत है है ।  
 चंग उपग अवाजत है है । श्रुगत श्रुगत गत शाजत है है ॥१०॥  
 साग्रदि सांरंगी सुर बाजत है है । कटककिनिनिविराजत है है  
 द्रुति लखि रवि शसि लाजत है है । भगत करत अय भाजत है है ॥११॥  
 मिथ्यामति मल मजन है है । विघनसमूह विंगजन है है ।  
 वृन्दावन" मन रंजन है है । है जिन रवि भविकंजन है है ॥१२॥  
 धचा-है धरमप्रकाशक भूमतमनाशक शिवमगभासक ज्ञानपते

दारिद्र्य द्रुमच्छेदक हैति अखेदक वेद विवेदक वेदमते ॥१३॥

ॐ ही पचमाचलरावततीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्थ निर्वपामि ॥

चौबोल उद ।

आठों दसव मिलाय गाय गुन जो भविजन जिनराज जैजै ।  
 पुष्करार्थ गिर विद्युतमाली ऐरावत में तीत सजै ।  
 सो लहि पुत्र मित्र सुख संपति भोग मनोग समस्त विजै ।

अनुक्रम करम नासि करि भवि वह मुकत धाम में राज रजै ।

अथाशीर्वादः—

इति पंचमाचलैरावततीतचतुर्विंशति पूजा समाप्ता ।

अथ पंचमाचलैरावतभावि २४ पूजा प्रारभ्यते ।

तोटक छंद—

गिर पंचम को ऐरावत है । जिन भाविय मो मन भावत है ।  
जिहि ध्यावत आनद पावत है तिहि थापत पूज स्वावत है ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर सनौपट् ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वपद्

अथाष्टकं ।

चालनहीधराष्टक भापा दानतरायजी कृतकी तथा होली गर्भाजादि अनेक चालमे

उज्जल जल शीतल लाय हाटक भुंग भरा ।

सुम चरनन देत चढ़ाय भेटत जनम जरा ॥

गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजत धरि ध्यानो ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥

शुभ चदन कंदन दंड कदलीनंद लिया ।

जलसों वसि पूजि जिनंद भवतप दूर किया । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो गंधं निर्वपामि ।

सुकताफल हिम हरि हीर दमक गमक धारी ।

धरि तंडुल मंडुल वीर दारिद दुख हारी । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुल निर्वपामि ॥

शुचि सुमन सुभन सम आन सुमन सुमन नीकि ।

करि मदन कंदन पनवान पूजत पदजीकि । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

रस रासत नेवज सार कंचन थार भरा ।

तुमकों अरपत अविकार रोग समूह हरा । गि० भा० ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥

तम भंजन-दीप संवार आरति कीन्ह सही ।

मम तिमर मोह निरवार आरत मेंट यही । गि० भा० ।

ॐ हीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥

कृष्णागर अगर कपूर धूप उखेवत हौं ।

सव जरत करम मम कूर तुम पद सेवत हौं । गि० भा० ।

ॐ हीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥

रित फल कलवर्जित लाय सुवरन थार भरा ।

तुम पूजत विघन नशाय वांछित लाभ करा । गि० भा० ।

ॐ हीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं निर्वपामि ॥

वसु दरव सवार पवित्र अरघ सुहाय लिया

पद सेवों हे जगमित्र दीजे सुकत प्रिया ॥  
गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजों धरि ध्यानो ॥  
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभावि चतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घं निर्वषामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ्ये ।

छंद समुद्रिका मात्रा १४ ।

अमलगुन अदोष में गनो । परम धरम कारने मनो ।  
गिर पनमयागवतें जजों । जिन भवतव औंनंदें सजों ॥

ॐ ह्रीं अदोषाय अर्घं निर्वषामि ॥१॥ .

छंद सुमुखी मात्रा १४

वृषभ जिनेश कलेश हरें । जिन वृषको उपदेश करै ॥  
पुहकर पंचम मेर जजों । भवतव उत्तर खेत सजों ॥

ॐ ह्रीं वृषभाय अर्घं निर्वषामि ॥२॥

छंद सूर मात्रा १२—

जिनदेव विनायानंद । आनंद अंबुधि चंद्र ।  
गिर पंचमैरावत । भावी भजे भौ तर्त ॥ ३ ॥

ॐ ही त्रिनयानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

छंद लोलतरंग मात्रा १६—

श्रीमुनि भारत आतमज्ञानी । आतम की अनुभूति धरनी ।  
पंचमैर जजों सिर नाई । भविय देव यरावत राई ॥ ४ ॥

ॐ ही मुनिभारताय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

छंद सारस्वती मात्रा १४—

इंद्रक इंद्र फनिंद्र नमे । आतम आँनंद कंद पमें ।  
पुष्कर पंचम मेर सजों । भवियरावत देव जजों ॥५॥

ॐ ही इंद्रकाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

छंद इन्द्रवज्रा मात्रा १८ ।

चंद्राननं चंद्र सुकेत स्वामी । आँनद वाराणिधि वृद्धनामी ।

एरावते भावित नाथ पूजों । श्रीपुष्करे पश्चिम मेर दूजों ॥६॥  
 ॐ ह्रीं चंद्रकेताय अर्घ्यं निर्वयामि ॥६॥

छंद उपेन्द्रवज्रा माना १५

प्रभाकरांति अनन्त धारी । नमों ध्वजादित्य अनेक तारी ।  
 सु पुष्करार्द्धी परमेर सौहे । भविष्येतेरावत चित्तमोहे ॥७॥  
 ॐ ह्रीं ध्वजादित्याय अर्घ्यं निर्वयामि ॥७॥

छंद इंद्रवगा मात्रा १८ ।

सु वस्तुकों एकहि काल जनिहीं । सु वस्तुवोधं जिन धारिथ्यानहीं  
 स पुष्करार्द्धी परमेर सौहे । भविष्येतेरावत चित्त मौहे ॥८॥  
 ॐ ह्रीं वस्तुवोधकाय अर्घ्यं निर्वयामि ॥८॥  
 छंद हरिनी मात्रा १५ ।

नमों नित मुक्तगती जिनकों । छुएथ नरेथ नमै तिनकों ।  
 सु विद्युतमालिय मेरु जजों । भविष्य यरावत खेत सजों ॥९॥



ॐ ह्रीं मुक्तगतये ऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

छद्द वसततिलका वर्ण १४ ।

श्रीधर्मवोधकप्रवोधकभव्यप्रानीर्ऑनदंक्रदनिजआतमरूप ध्यानी  
श्रीपुष्करार्धं मह पश्चिममेरजानों। ऐरावतें जजत भवितधारि ध्यानों

ॐ ह्रीं धर्मप्रवोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद आर्यां सर्वं मात्रा ६० ।

श्रीदेवांग जिनेशं, नमं सदा जाहि सर्वं देवेशं ।

पुष्कर पंच नगेशं, ऐरावत भावि संजजैते ॥

ॐ ह्रीं देवाङ्गाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

छद्द प्रियवद्वा वर्ण १२ —

कलुषदारन उदार हैं वली । जिन मरीच अरि मीचकों दली ।

पुष्करार्धं गिर पंचमों रजै । जिन भविष्य अयरावतें जजै ।

ॐ ह्रीं मारीचाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद भुजंगप्रयात वर्ण ? २-

सर्वे जीवके नाथ हैं जीवनाथं । दयार्थर्म दाता सदा मुक्तसाथं ।  
जर्जो पंचमे भ्रूते भावनीकं । कृपासिन्धु ऐरावते भावनीकं ॥

ॐ ही जीवनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छंदमोत्तदिाम वर्ण ? २

जसोधर देव महा जसरास । सुरेश नरेश खगेसुर दास ।  
शु पुष्कर पंचमैरु लसंत । जर्जो अयरावत भावित संत ॥

ॐ ही जयोधराय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छंद लक्ष्मीधरा वर्ण ? २

गौतमनाथको गौतमेशं भजे । जास आराधते सौख्यसाता सजे ॥  
पुष्करार्द्धीचले पंचमैरावते । भावि पूजे सर्वे शांति को पावते ॥

ॐ ही गौतमाय अर्घं निर्वपामि १५॥

छंद द्रुतिविलवित तथा सुन्दरी-

विशद बुद्ध धरं मुनि शुद्धजी । सुजनको नितदायक रिद्धजी ॥

जजत पुष्कर पंचम मेरके जिन भविष्य यरावत हेर के ॥

ॐ ही मुनिसुद्धाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

छद द्रुतपा वर्ण १२-

चिद विलास बुधि वंदत जाकों जिन प्रबोधक नमों पद ताको ।  
पुहकरार्ध गिर पंचम सेवों । जिन भविष्य अइरावत वेवों ॥

ॐ ही प्रबोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

छद शिखरनी वर्ण १७-

सदानीकं स्वामी सकल सुख संपत्ति करता ।

सदाज्ञानी ध्यानी जगत जनके बलेश हरता ॥

जजों विद्युन्माली विशद गिरकेरावत विषें ।

कृपाधारी भावी अमलगुन कारी शिव दिखें ॥

ॐ ही सदानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

छद प्रमिताक्षरा वर्ण ॥१२॥-

जिनराज चारित सुनाथ महा । गहि शुद्ध चारित कलंक दहा ।

गिर पंचमं सु अयरावत है । भवतव्य सेय सुख पावत है ॥

ॐ ह्रीं चारित्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

छंद द्रुतिमध्यक प्रथम त्रितियचरन प्रस्तार ॥१॥॥॥ अर द्वितिय

चतुर्थपाद ॥॥॥॥ या भाति मात्रा १६ सर्वत्र यथा-

आनंद अंबुधि चंद समाना । अमल सदानंद श्री भगवाना ।

पंचम मेर ऐरावत ध्यावों । भवतव सेवत ह्रीं सुख पावों ।

ॐ ह्रीं सदानन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

छंद प्रमानिका वर्ण ८

वेदार्थनाथ ध्याइयै सदैव शीस नाइयै ।

गिरिंद पंच भावनों जजोत्तर सु पावनों ॥

ॐ ह्रीं वेदार्थकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

छंद नाराच वरन ॥१६॥

निजातमीक लाभ परम धर्म शर्म देत है ।

सुधासुनीक देवजी भवाब्धि माहि सेत हैं ॥  
सु पंचमाचले पुनीत उत्तरें सुखेत हैं ।

जजामि भावनीक जो सुबोधको निकेत है ॥  
ॐ ही सुधानीकाय अर्घ्य निर्वपामि ॥२२॥

छद चामर वर्ण ॥ १६॥

जोति मूर्त देवकों त्रिलोक धोक देत है ।  
शोक थोक नाशके प्रमोदकों लुहेत है ।  
पंचमाचलें सु उत्तरें पुनीत जानिये ॥

भावनीक देव पूजिगीत नृत्य ठानिये ॥  
ॐ ही जोतिमूर्तयेऽर्घ्य निर्वपामि ॥२३॥

छद रथोद्धता-वर्ण ११

श्री सुरार्ध सुर सर्व ध्यावहीं । जासके न गुन पार पावहीं ।  
पंचमाचल यगावतें महा । भावतव्य पर शर्णा में गहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं सुराघाय अर्थे निर्वणामि ॥२५॥

ॐ द पादुकी लध्वत मात्रा १६

लखि पुष्करार्थं मह अपर मेर । अयगवत जिन भवतव्य हेर ।  
पर पूजों तिनकों अरघ धार । संसारऽसातें तार तार ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलरावतभायिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महाघं निर्वणामि ॥

अथ जयमाला ।

यत्ता ॐ द मात्रा ६४

जेजै गुनछायक विघन विनायक दास सहायक जगनायक ।  
धरि वरबुधिसायक अरिगन घायक सिवसुखदायक सवलायक ।

ॐ द नोटक-

सब दोष अदोष जुचुरत हैं । वृषभेश वृषामृत पूरत हैं ।  
विनयानंद आनंद सूरत हैं । सुनि भारत भौ भय दूरत हैं ॥१॥  
जिन इंद्रक इंद्रनि बंदित हैं । शसिकंत जगत आनदित हैं ।  
धुज आदित जोति अमदित हैं । जिन वस्तु विबोच सुछंदित हैं २

जिन मुक्तगती भवभंजन हैं । जिन परम सुधर्म निरजन हैं ।  
 नित देव सुअग अनजन है । जिन मारिच मीचहि गंजन हैं ॥३॥  
 जिय नाथ अनाथहि रक्षत हैं । सब वस्तु जशोधर वक्षत हैं ।  
 जिन गौतम श्यो मग गक्षत हैं । मुनि शुद्ध प्रबुद्ध प्रतक्षत हैं ४  
 सुखसार प्रबोध उमडित है । भविकार सदानिक पडित हैं ।  
 जिन चारि चारु अखडित है । जु सदानंद आनंद मडित हैं ५  
 सु वेदार्थक वेद विवोधन हैं । जु सुधानिक आतम सोधन हैं ।  
 जिन जोति सुमूर्त तपोधन हैं । जु सुरार्थि जगजन बोधन हैं ॥६॥  
 पनमों अथरावत भाविय है । नमते सब आनंद पाविय हैं ।  
 तुम ही भगवंत अनंत गुनी । तुमरो यश मैं निज औन सुनी ७  
 शरना चरना रज आय गही । मम वडित सिद्ध करो सबही ।  
 तुव भक्ति सदा मन माहि वसौ । उरते दुख दोष कलंक नसो ८  
 तुव आगम में चित नित रमों नित संगति साधरमीय पमो ।  
 नित ही अनुभौ रस पान करों । नित सजम पूजन दान करों ९

रतनत्रय भाव सुभाष मिलौ । मल राग रु दोष कपाय डिलौ ।  
 भव भौ यह जोग मिलो तबलों । शिव नारि धरो प्रभुजो तबलों?०  
 नित मगल होहु प्रमोद मई । घर सपति सार मिलो नितई ।  
 सब विघ्नसमूह विनाश करो । निज दामनिरे सब आस भरो? ?  
 जगमें सुखसागर नृरि भरो । निज धर्म उदोत सदैव करो ।  
 मन वांछित कारज सिद्ध करो । जन "बृद्ध" तनें घर सिद्ध भरो? ?  
 घचा-जे केवल दिनकरतिभिरमोहहर मोखडगर पराकाश करो ।  
 "बृंदावन" वंदत पापनिंकंदत दीजे आनंद कंदवरा ॥

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभात्रिचतुर्विगिनिजिनेभ्यो महाधनिर्विषामि ।

दोहा-जो पूजे मनलायपद भावी जिज चौवीश ।  
 ऐरावत पंचम तनों सो ह्वे सुकत शतीश ॥

इत्याशर्वाद् ।

इति श्रीपुष्कार्धद्वीपे ऐरावतक्षेत्रचौवीशीपूजा समाप्ता ।



## अथ समुच्चय पूर्णार्घ ।

छंद माधवी सवैया वर्ण २४

जल चंदन तडुल पुष्प लसै चरु दीप सुधूप फलोव गहा ।  
 सब उत्तमसौं अति उत्तम है तिनको सजि अर्घ सुथाल लहा  
 गत आगत वरतत जे दशहू थल तरिथनाथ दयाल कहा ।  
 तिहि पूजत पूरन अर्घ लिये प्रसु देहु हमें शिव धाम महा ॥

ॐ ह्रीं ढाई ढाई द्वीपके दशक्षेत्रसंवधी गतागतवर्ततजिनेभ्यो ऽर्घपूर्णार्घं निर्वपामि  
 अथ आशीर्वाद—

कवित्त छंद मात्रा ३१

सातसतक अरु तीस वीस जगदीश जजै जो भवि मनलाय  
 ताके पुन्यतनी अति महिमा को कवि कहै वचन दर्शाय ॥  
 मुकत महल को नीब दियो तिन इंद्र सरा है तसु जश गाय ।  
 शक्र चक्र अहमिंद्र तीर्थपति पदलहि सुखसौं शिवपुर जाय ॥

इत्यार्थार्थावद ।

इति श्रीतीसचौत्रीसीपूजा वृंदावन अग्रवाल गोयलगोत्री कृत संपूर्णा ।

प्रथम सूत्रात्तरामिदं पुरस्कृतं लिखित्त ग्रन्थकारेण निजपरोपकार  
भाषा होने का कारण, तथा देश नगर शेखी के नामीजन

तथा सहाई तथा कर्ता नाम  
कुल वर्णन ।

दोहा छंद-एक सैं काशी विषैं भयो संसकृत पाठ ।

काशीनाथ कराइयो वन्यो अनूपम ठाठ ॥१॥

तवसैं यह अमिलाप थी भाषा होय मनोग ।

अवै मिल्यो सब जोग तब भयो सुधारस भोग ॥२॥

मनहरन ३ ?

काशीजी में काशीनाथ मूलचंदनंतराम,

नन्हूजी गुलाबचंद प्रेरक प्रमानिये ।

तहाँ धर्मचंदनंद शिष्य सुखलालजी को,  
 बृंदावन अत्रवाल गौयलगोती ठानिये ॥  
 ताने रचे पाठ निज पर परमारथ को

सज्जन सो इहां यह वीनती वखानिये-॥  
 हीनाधिकशोधि शुद्ध कीजिये प्रमोद धारि  
 बालबुद्ध जानिकें दयाल भाव आनिये ॥

दोहा-दरव तत्त्व गुनकेवलसु सम्मत विक्रमवान ।

माह धवल पांचै नवल पूरन परम निधान ॥ १ ॥

जो पूजै इस पाठसों श्रीजिन पद लवलाय ।

मंगल मोद अनेक सुख सो भवि बहु विधिपाय ॥२॥

जिन पूजा फलको सकल को विधि कहै बनाय ।

एक दरवसों पूजिके बहुजन सुरपुर पाय ॥ ३ ॥

तातें पूजो देख अरु भाव सहित जिनराय ।  
 जातें हे भवि तुम लहो सुर सुख शिवपुर राय ॥ ४ ॥  
 जवलों रवि शशि गगनमें उदै अमंद धराय ।  
 तवलों यह रचना रहौ निरमल जश सुखदाय ॥  
 जिनवानी रचना रचत जो कछु सुख उपजाय ।  
 सो सुख जाँनै केवली के जाँनै कविराय ॥  
 जे वंतौ जिनराज जो पंच कल्यानक पाय ।  
 सो इत नितमंगल करो मन वृंदांछित पददाय ॥

इति श्री तीरथचौबीसी धृजा भाषा होने का कारन करता देश कुल सैली  
 सहाई फल मंगल संपूर्ण वरनन समाप्तम् ।

शिव भूयात् ।



जजन प्रियत विनशाय, विजयैगवत संत जिन ॥६॥

ॐ श्रीं नमः ॐ श्रीं निर्वाणाय ।

पद्माकर जिनराय पद्माकर तनुदास चर ।

पूजन भिपति पत्न्याय, विजयैगवत संतजिन ॥७॥

ॐ श्रीं पद्माकराय ॐ श्रीं निर्वाणाय ।

उदयनंद जिनराय, आनंद मिंधु वदावही ।

त्रजलें दुगिन नशाय, विजयैगवत संत जिन ॥८॥

ॐ श्रीं उदयनगर ॐ श्रीं निर्वाणाय ।

दरम इंदु जिनराय, दरम इंदुसम दुति धरे ।

पूजन दोगिंदु जाय, विजयैगवत संत जिन ॥९॥

ॐ श्रीं दोगिंदु ॐ श्रीं निर्वाणाय ।

श्रीगणेश शिवराय, भजन मिळत चिंतित अग्य ।

पूजत वांछित दाय विजयैरावत संत जिन ॥१०॥

ॐ ही कृपालाय अर्घं निर्वपामि ।

लोकालोक लखाय, प्रोष्ठिल केवलज्ञान में ।

जजत जगत सुखदाय, विजयैरावत संत जिन ॥११॥

ॐ ही प्रोष्ठिलायार्घं निर्वपामि ।

प्रगट सिद्ध पददाय, सिद्धेसुर सिवतिय रमन ।

पूजत गनफन पाय, विजयैरावत संतजिन ॥१२॥

ॐ ही सिद्धेसुराय अर्घं निर्वपामि ।

वचपियूष सरशाय अमृत इंदु जिनराय तें ।

जजत परम पद, पाय विजयैरावत संत जिन ॥१३॥

ॐ ही अमृतइंदुजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

स्वामिनाथ जिनराय सुगत देत शिव हेत नित ।

पूजन मनवचक्राय, विजयैरावत मंत्र जिन ॥१४॥

ॐ श्री ग्याणिने नमो निरालि ।

भेनिन्त्रांग जगराय शिवसाधन हेतु हे ।

पूजन वाञ्छित दाय विजयैरावत संत जिन ॥१५॥

ॐ श्री भेनिन्त्राय नमो निरालि ।

सव आय नुभदाय, श्री भगवाथ सुगुननिध ।

पूजन ह्रीं शिगनाय विजयैरावत मंत्र जिन ॥१६॥

ॐ श्री शरैराय नमो निरालि ।

आनन्द धन रागाय भेधनंद जिन विजय धुत्र ।

पूजन भजन भवभाय विजयैरावत मंत्र जिन ॥१७॥

ॐ श्री भेधेराय नमो निरालि ।

संदर्भेज जिनगय शैशाल्योचि आनंद धर ।

पूजन पाण पत्न्याय विजयैरावत मंत्र जिन ॥१८॥

ॐ श्री भवेराय नमो निरालि ।

हरिहर प्रीत उपाय हरि जिन पदपंकज जजत ।  
पूजत विघन विलाय विजयैरावत संत जिन ॥११॥

ॐ ह्रीं हरिजिनाय अर्घं निर्वपामि ।

जै अधिष्ट जिनराय शिष्ट इष्ट दातार वर ।  
पूजत अरघ चढाय विजयैरावत संत जिन ॥२०॥

ॐ ह्रीं अधिष्ठाय अर्घं निर्वपामि ।

शांतिक सब सुखदाय जोगारूढ निपुनमती ।  
जजौं जुगल तमुपाय विजयैरावत संत जिन ॥२१॥

ॐ ह्रीं शांतिकाय अर्घं निर्वपामि ।

आनंद संपति दाय नंद स्वामि भवि वृंदकों ।  
पूजत पाप पलाय विजयैरावत संत जिन ॥२२॥

ॐ ह्रीं नंदस्वामिने अर्घं निर्वपामि ।



त्रिभुवनपति थिरनाथ कुंद पार्श्व नित सेवहीं ।  
जजन चगन उमगाय विजयेरावत संत जिन ॥ २३ ॥

ॐ ह्रीं इंद्राक्षरं अं नित्तामि ।

रुचि लर अधिक उपाय, देव विगंचनकों भजों ।  
वियन हसन सुगदाय, विजयेरावत संत जिन ॥२४॥  
ॐ ह्रीं विगंचनाय अं नित्तामि ।

मो योगदासकुंद—

सजे बलुदर्व पुनीनगुनीन । वजे मव माज सुनीन सुनीन ।  
जजों उर आनंद पायसुपाय । विजेगिर उत्तर भायसुथाय ॥२५॥

ॐ ह्रीं त्रिं इर्गगाएरमानतुंमिनिचिन्मयः त्वांभे ।

अय जयमात्र ।

इंद्राक्षर ( नाय ३२ )

जेजे जिनेश अतुपाम दिनेश भूगतम निवेश नाग्रन अंजोर ।

सेवत सुरेश वेवत गनेश महिमा महेश कारन कलेश ॥  
 गुन अबुल भेश मुनि भजत शेश शिवबल्लभेश हरि अरि प्रवेश ।  
 हम शरन देश आये जगेश-भवसिंधुते समुद्धर रमेश ॥१॥

चौपाई छंद—

जै जिनराय अपशिचम स्वामी । पुष्पदत जैजै शिवगामी ॥  
 जै अरिहंत सत जन ध्यावै । देव सु चारित चित हरषावै ॥२॥  
 सिद्धानद सुब्बंद जिनिंदा । जैजै नंदग आनंद कंदा ॥  
 जै पदमेश परमपद दाता । उदै नंद जै जगविख्याता ॥३॥  
 जै रुक्मेडु इंडु दुतिधारी । जै कृपाल करुना विस्तारी ॥  
 प्रेष्ठिलदेव परम वैरागी । जै सिद्धेश्वर शमता पागी ॥४॥  
 अमृतदेव ज्ञानामृत पूरे । जै स्वामी जिहि भव भे चूरे ॥  
 भेनिलांग अनंग मद गंजन । जै सरवारथ जन मन रंजन ॥५॥  
 मेघनंद आनंद जल पूरन । नंदकेश जिन भ्रमतम चूरन ।  
 जै हरि देव जजत हरि पाद । जै अधिष्ठ जिन कृतमरजाद ॥६॥

जैसी शान्ति कहां है। नंद म्यामी मम विपत्त श्रेया ॥  
 हृद पार्श्व जस शशि समलोकं । देव विरोचन मोचन जोरं ॥७॥  
 ए नउवीश ईश सुखसागर । वरनमान जस जगत उजागर ॥  
 सुविस्त सुखर हिसर नागर । गावा जस नाचत रमसागर ॥८॥  
 द्विम द्विम द्विम मांझ जौं । उम उम उम नुंकि पण छाजौं ।  
 हृदकिंकिनी हिननिनिनिकुंडी । पण नूपुर शिननिनिनिनि गुंजो ॥६॥  
 पद पद पद पादत पुनि है है । धुंगुन भुगत गत भेई धेई सो है ॥  
 दद दद भर पद नाद नदंनं । मधु मधु सुर सुजस रदंनं ॥१०॥  
 दन समाज गुन भगत करूं है । भर वर जनि कउं क है है ॥  
 उम उंदन पद गुन हर जोरी । दरो प्रनु भर वागा मोंरी ॥११॥  
 ए न उंजै गुनगुंनं वल्ल गुंंधर भजन गुंंधर भगतभरा ।

हम जनत गुंंधर मम उरंधर भमतमंदर भानुरग । त

भुजंगप्रयात छंद ।

जजै उत्तरावतें वर्तमानं । विजै मेरुके जे सुधी बुद्धिवानं ।  
लहै ते इहां सौख्य इन्द्रिजनीत । अतिंद्रि लहै फेरि होंनि निचीतं ।

इत्याशीर्वादः ।

इति श्रीविजैमेरुऐरावतवर्तमान चौबीशीपूजा समाप्ता ।

अथ विजैमेरुऐरावतातीत पूजा विख्यते ।

स्थापना छंद नंदि श्वराष्टक भाषाका--

गिरि विजय सुर उत्तर सार ऐरावत सो है ।  
तित तीत जिनेश उदार सुरनर मन मोहै ॥  
थापौं उर प्रीत लगाय पूजन हेत सही ।

प्रभु आपु विराजा आय दायक मुक्तिमही ॥३॥

ॐ ही धातुकी द्वीप विजयमेरु ऐरावतातीत जिन-अत्रावतर अबतर संमौ-  
पद् आह्वाननं ।

ॐ श्रीं पापुक्षीं गीरिजियमेरुगैरासतीनजिन । अत्र िष्टिनिष्ठुः ३ः स्थापनं  
 ॐ श्रीं पापुक्षीं गीरिजियमेरुगैरासतीनजिन अत्र मन मखिरिनी भव  
 वा एत स्थाप ।

### अथाष्टक ।

वेदंष्टक नाम ३२ ।

सुरस्रितिवार प्राशुक अपार भरि हेम भार धारा निकार ।  
 ह जग अथार जिनवर उधार सुधिल्ल सवार मल करम टार ॥  
 गिग विजे थार उत्तर सिंगार नित तीत चारि अरु वीस तार ।  
 पुत्रों निहार प्रभु मो अवार मंसार मार्गें तार तार ॥

ॐ श्रीं पापुक्षीं गीरिजियमेरुगैरासतीनजिन अत्र विद्यामि ।

कर पूरमार शीनिल निहार चन्दन उदार धमिलिन मार ।  
 पूत्रों प्रचार जिनैगुन अगार भवनाप टार सुगद् अपार ॥ गि०

ॐ श्रीं पापुक्षीं गीरिजियमेरुगैरासतीनजिन अत्र चंदन ।

अवन पिल्ल ईतन प्रतन अभिलिन अत्र गुणायकार ।

तसु पुंजरक्ष सुंखभुजस्वक्ष कलिकुंजनक्ष शिवगक्षसार ॥ गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुएरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंदुल ।

यह मदनशूल सब जगतभूल कारक अकूल तुमकिय निमूल ।  
ताते सुफूल धरिहों अधूल प्रभुदे अतूल शुभ शीलभूल ॥ गि०

ॐ हों धातुकीद्वीपविजैमेरुएरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्प ।

खाजे रसाल मोदक विशाल भरि कनक थाल प्राशुक मुहाल ।  
सो हेदयाल तुमनिकट हाल धरि नमतभाल आकुलनिकाल गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुएरावतातीत चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैबेध निर्वपामि  
दाहक अमंद दीपत सुछंद सो जजि जिनिंद जगवंद चंद ।

भ्रमतमनिकंद केवलदिनंद प्रगटे अफंद सुखवंद नंद ॥ गि०

ॐ ही धातुकीद्वीपविजैमेरुएरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप ।

दशगंध आन सौरभ अमान खेवत प्रमान वसुकर्म हान ।  
दिशिदिशि उड़ान मनु मेघजान निरततसयान केकीसुजान ॥ गि०

१० श्री धारुधीश्वरसिद्धिलोकगणपतीचतुर्गिनिजिनेभ्यो वृषं निर्दिशामि ।

फलपुरुमिष्ट मवशिष्ट इष्ट मेलि वशिष्ट पूजो जगिष्ट ।

हनि अष्टदष्ट शिव दे सुपुष्ट हेविष्टद शिष्ट दायक अभिष्टागिण

अं ई धारुधीश्वरसिद्धिलोकगणपतीचतुर्गिनिजिनेभ्यः कृष्ट निर्दिशामि ।

जलकल मिलाय वसु अंगनाय वाजनवजाय सुख मुजगगाय ।

भद्र श्रीजिनाय मनवचनकाय वंदितल्लहाय भवभय तशाय ।

गिरी विजयथाग उचा सिंगाग नितर्नात चाग्रु वीसमार ॥

पजो निहाग प्रभुमो अवार संमारड्ढार्गे तार तार ॥

११ श्री धारुधीश्वरसिद्धिलोकगणपतीचतुर्गिनिजिनेभ्यो वृषं निर्दिशामि

अथ प्रत्येकार्ये ।

वडाभरी नारा १२

रामकडोम महागिरी ज्ञानो । भद्रक वज्र वज्रजिन मानो ।

दत्तिय दीप गिरीपिजय सुदत्तोपेण्णयन अनीत जिन पूजो ॥१॥

ॐ ह्रीं वज्राय अर्घं निर्वपामि ।

उदय विशुद्ध सदा जिन धारोऽउदयदत्ता जिनवर अविकारे ॥दु०ए०

ॐ ह्रीं उदयदत्ताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सुरवीरवर सूर्यं जिनेन्द्रा । भज्जो भविक मोदनगन चन्द्रा । दु०ए०

ॐ ह्रीं सूर्याय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

पुरुषोत्तम नित सेवत जाको । पुरषोत्तम जिनसदनसुधाको ॥दु०ए०

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

भविकवृद्धको शरन सहार्इ । शरणस्वामि त्रिभुवनके रार्इ ॥दु० ए०

ॐ ह्रीं शरणाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

भवि समोध दायक शिवधामं । श्री अवबोध करो परनामं ॥दू०ए०

ॐ ह्रीं अवबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

परम पराक्रम क्रांति धैर्या । निर्घटकजिन विपति हरैया ॥दू०ए०

ॐ ह्रीं निर्घटकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥



अगम पराक्रम जोमं मोहो । सो विक्रमजिन जनमन मोहोदु०णे

ॐ श्री विरुभाय नमः निर्माणि ॥२॥

हरिहर इंद चंद्र पद वंदे । मो हरिंद केवल अभिनंदे ॥ दु०णे०

ॐ श्री हरिंदाय नमः निर्माणि ॥१॥

भनि शिवाथ पंथी पायेंयं । पत्रिगिजिन मुनिगन येयांदु०णे०

ॐ श्री परंजियाय नमः निर्माणि ॥१०॥

भविजनको पद दे निग्यानं । जिन निखान मूर भगवानंदु०णे०

ॐ श्री नितांगुये नमः निर्माणि ॥११॥

दोनों थरमबुगथर स्वामी । थरमंहेन पद परम नमामी ॥ दु०णे०

ॐ श्री परंजियाय नमः निर्माणि ॥१२॥

चतुगनन चंद्रोद चवान । देव चतुमुल मंशय माने ॥ दु०णे०

ॐ श्री चतुंगुयार नमः निर्माणि ॥१३॥

इंद नरिंद चंद्र पद वंदे । मुहुनइंद जन बुंद अनंदे ॥ दु०णे०

ॐ ही सुकृतेंद्राय अर्घं निर्वणामि ॥१४॥

श्रुति अंबुच्छि भविजन श्रुतिद्वारे दिव श्रुतंबुधि अंबुधि तारे ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही श्रुताद्युधाय अर्घं निर्वणामि ॥१५॥

आदितसम तन विमल दिपै है विमलादितजिन करम खिपै है ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही विमलादित्याय अर्घं निर्वणामि ॥१६॥

देव देवपति नमत अनेकं दिवेद्वजिन नमों चिदेकं ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही देवदेवाय अर्घं निर्वणामि ॥१७॥

धरनी धर धरनेंद्र सुरेंद्रं । सेवत नित धरनेंद्र जिनेंद्रं ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही धरनेंद्राय अर्घं निर्वणामि ॥१८॥

भविजन भव जलतें उच्छारे । तीरथ नाथ नमों अविकारे ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही तीर्थनाथाय अर्घं निर्वणामि ॥१९॥

परमानंद निरंतर भोगी । उदयानंद शुद्ध उपयोगी ॥ दु० ऐ० ॥

ॐ ही उदयानंदाय अर्घं निर्वणामि ॥२०॥

समाग्य पद मिद्ध प्रदाना । तस्मात्थ जिन त्रिभुवन ताता ॥६०॥

ॐ श्रीं सर्वार्थाय नमो नित्यं ॥२१॥

धर्मिक कह धनधान्य बढावैधार्भि रुजिन जन मुक्त बढावै ॥६०॥

ॐ श्रीं धर्मिण्यार नमो नित्यं ॥२२॥

गग क्षेत्रे क भवि शिर नोपे । क्षेत्रभ्यामि सो प्रीत बढावै ॥६०॥

ॐ श्रीं क्षेत्रभ्यामि नमो नित्यं ॥२३॥

इंद्र चंद्र दिन इंद्र भेद्र है । जिन दृग्चिंद्र सुभोय सजे है ।  
 इतियत्री गिरि विजय सृष्टी । ऐंगवत अतीत जिन पूजे ॥

ॐ श्रीं विजय नमो नित्यं ॥२४॥

इन्द्र-पुंगव अमव वनाय वर पूत्रो उग्रर ध्यान ।

विजयेगवन तीत जिन नमो जेरि दुग पान ॥२४॥

ॐ श्रीं विजयेगवत नमो नित्यं ॥२५॥

अथ जयमाला ।

ध्यानंद छंद ।

अविचल थल जुक्ता, शिवसुख भुक्ता, उक्तिनिरुक्ता, मुक्तिधरा ।  
भूमतम शतखंडा, आनंद मंडा, जै जै जै शिव रमनि वरा ॥१॥

कामिनी मोहन छंद-

जयति वज्रेश वज्रेश पूजत चरन ।

जय उदय दत्त सुख उदय भविजन करन ॥

जयति जिनसूर्य भविजलज के सूर है-

जयति पुरुषोत्तमं ज्ञानरस पूर है ॥२॥

शरन स्वामी त्रिजगजीव को शरन हैं ।

देव अबबोध बुधि विसद विस्तार हैं ॥

जयति विक्रम करम शत्रु तुम चूरियौ ।

जयति निरघंट तुम सामरस पूरियौ ॥३॥

जजत हरिहृद हरिहृद पद आइकैं ।

भजन परधरितद्धि विद्युभगन ध्यायके ॥  
 देव निरयान निरयान निज दासकी ।

रसके देव जिन परि भवि आसकी ॥४॥  
 चतुरमुन देव नित चतुर मुग सेवते ।

सकृत जिनराज गुन सकृत जन सेवते ॥  
 देव कृतिमिगु भविसिंधुने तासकी ।

रिसय आदिग्य मग मुकृत विम्वारकी ॥५॥  
 देव प्रसकी चतुरंगेर मूर सेवते ।

देव धरनेट गुन मुमुन मन सेवते ॥  
 नाथ दोरग जगत जालने कारियो ।

उदय आनंद पानंद मेकि रात्रियो ॥६॥  
 जगति मर्यागे मर्यागेर दाभार ली ।

धार्मिकं देव जिन भगम आधार ली ॥  
 देव मर्यागे मुकृत ऐत्र दागक मदा ।

देव हरिचंद्र पद शरन हमने गहा ॥७॥  
ए चतुर बीस जगदीश नित बंदिये ।

विजय ऐरावतें तीन अभिनंदिये ॥

तरन तारन हरनें करम जगजन्त के ।

गुन अमल अचल अनुपम लसै संतके ॥८॥

ज्ञान द्विग शर्म वीरज विशद लसत है ।

सो परमदेव मो मन सदा वसत है ॥

अरज कर जोरि जुग करहुँ सुन लीजिये ।

धरम के नदकौँ परम सुख दीजिये ॥९॥

गता-जैजै करुनाकर मोह तिमरहर ज्ञानदिवाकर उद्दयकरा ।

संशयतम भंजन मुनिमन कंजन रंजन जै जै विघन हरा ।

अथाशीर्वादः । चाँबले छद ।

जो पूजे जिनराय पाय जुग दरव भाव विधि मोदधरे ।

धातु दीप गिरि विजयैरावत तीत जगत जन भीत हरे ॥

सो पति धन धान्य पुत्र प्रिय मित्र कलत्र प्रथीन वरे ।  
 सुगति होय नक्षपति हकें भगवत्क भवि मुक्त वरे ॥  
 श्री धारुणेश्वरिणोत्प्रेमभक्तार्त्तात्पुत्रिनिपुत्र ममान्ना ।

--- ११११११११ ---

अथ जावीचनुविशानिजिन पूजा प्रारब्धते  
 नंदीश्वरपूज ही चाल ।

वर धालुकी दीप विद्याल ध्रुव मेरु कला ।  
 निने परावन सुरमाल गोभा देत महा ।

नहै भार्गव जिन चैर्दीज मत्र विधि ल्याक हो ।  
 धारुणु ही मो जगदीश दाम महायक हो ॥

\* ही विस्वरूपा भार्गवित्त परातर वक्तु रंगोद अश्वमेध ।  
 \* ही विस्वरूपा न गीतिन न विस्वित्त इ इ अत्त ।  
 \* ही विस्वरूपाकर्त्तव्य अश्वमेधवित्तियो भा पर एदरमम ।

अथाष्टकं ।

चाल सुन्दरी छन्द ।

परम पावन वारि सुधारिणे । जजत हौं मलकर्म निवारिण्यै ।  
दुतिय दीप विजै अइरावते । जिन भविष्यजजौं मनभावते ॥

ॐ ही विजयैरावतभावीजिनेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

कदलिनंदन चंदन लेइयै । जजतु हौं भवताप उछेइयै ।हु०।

ॐ ही विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदन ।

सुरभि तंतुल मंतुल लाइयै । निकटधारि अखे पद पाइये ॥हु०॥

ॐ ही विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो तंतुलं निर्वपामि ।

समरशूल निमूलन कारने । सुभग फूल धरो मददारने ॥ हु०

ॐ ही विजयैरावतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

चरुशाल मनोहर लैधरो । सकल आकुलकलमपकों हरो ।

दुतिय दीप विजैऐरावते । जिन भविष्य जजौं मनभावते ॥



ॐ श्री विजयगतभारतीयगणितत्रिनैः चक्र निरंतामि ।

तिभिर्नाशरु दीपक भारती कृत ह्ये प्रभु सन्मुख आसीत् ॥ दु०

ॐ श्री विजयगतभारतीयगणितत्रिनैः दीप निरंतामि ।

अगर आदि दशंग सुधूपत्री । हवत कर्म जे सु विरूपत्री ॥ दु०

ॐ श्री विजयगतभारतीयगणितत्रिनैः ए निरंतामि ।

फल सु पक मनोग रमाल ह्ये । जजन वाञ्छित देत विशाल ह्ये ॥ दु० ।

ॐ श्री विजयगतभारतीयगणित त्रिनैः कच निरंतामि ।

जल फलादिकमौ मजि अर्थ हे । जजन आनंद होत अनर्थ हे ॥

दुनिय दीप विजे एगवने । जिन भविष्य जजो मन भावत ॥

ॐ श्री विजयगतभारतीयगणितत्रिनैः गेदा निरंतामि ।

अथ प्रत्येकार्थे ।

जेजयति एव ।

वीर जिनगत आन शोभं, गग विर्वात निन्दे नित शोकं ।

धातु वज्रै गिरि उत्तर जाई । भवियदेव जज्ञौ शिरनाई ॥

ॐ ही वीरनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

देव विजै अरि जीत विराजै । सुंदर श्री उर अंतर छाजै ॥ धा०

ॐ ही विजयाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

सत्यप्रभु बच सत्य वखानै । सत्य प्रभाजुत भौतम भानै ॥ धा०

ॐ ही सत्यप्रभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

विष्टर जासु मृगेंद्र लसै है । देव मृगेन्द्र कुकर्म नशै है ॥ धा०

ॐ ही मृगेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

चिंतित लाभ सुदेत जिनिदा । देव सुचिंतमनी सुखकदा ॥ धा०

ॐ ही चिंतामणिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोक समूह विनाश करै हैं । आनंद थोक अशोक भरै हैं ॥ धा०

ॐ ही अशोकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

कर्म गयंग मृगेन्द्र समानं । सो द्विमृगेंद्र नमो भगवानं ॥ धा०

ॐ श्री लिंगेश्वर्य नमो निरुत्तमि ॥७॥

नष्ट स्त्रियो अरि अष्ट प्रकाश । श्री उपवाजिक परम उदारग ॥४०॥

ॐ श्री उपाधिपुत्र्य नमो निरुत्तमि ॥८॥

चद्रसमान सु आनन सो हें । पद्मसुन्दर जगज्जन मो हे ॥४१॥

ॐ श्री पद्मेश्वर्य नमो निरुत्तमि ॥९॥

भगवत्क मोदनि इंदु समान । बोधक इंदु नमो धरि ध्यान ॥४२॥

ॐ श्री योगेश्वर्य नमो निरुत्तमि ॥१०॥

उर योगेश्वर्य-

चिन्ता उन्मूलको हें पाला । चिन्ता हिम श्री त्रिनगुलमाला ।

धानु त्रिनेत्रे निरि उचर आर्ड । भाविशेद्वज जत्रो जिगनाई ॥११॥

ॐ श्री त्रिनेत्रेश्वर्य नमो निरुत्तमि ॥११॥

माहम उर उन्मादधर हें । उन्मादक त्रिन मुक्त्तवरे हें ॥ धानु त्रिनेत्रे

ॐ श्री उन्मादकेश्वर्य नमो निरुत्तमि ॥१२॥

शिव सुख सहित अपासिक देवा । चतुनिकाय करें सुरसेवा ॥ धा०

ॐ ही अपासकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

करम ज्वाल कैंहे मेघसमाना । जै जलदेव जगत मनमाना ॥ धा०

ॐ ही जलदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

अरिको धातन जाकौं लागै । नारिकदेव भजै भय भागै ॥ धा०

ॐ ही नारिकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

शांति सुधारस मेघ जिनिंदा । जै अनिंद्य जिन आनंदकंदा । धा०

ॐ ही अनिंदाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

नाग इंद्र आदिक सुर सेवै । नाग इंद्र जिन भेटि कुंटवै ॥ धा०

ॐ ही नागेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

नीलोत्पल सम श्याम विराजै । नीलोत्पल जिन समता साजै ॥ धा०

ॐ ही नीलोत्पलाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

मेरु समान अकंप सरुपं । अप्रकंप करुणा रस कूपं ॥ धा०

ॐ श्री आरुणाय अर्घ्यं निर्वाणाय ॥१६॥

हितं कारजं मे पूरुत स्वामी । नमो पुणेहितं जिन शिवगामी ॥धा०

ॐ श्रीं पुणेस्त्रियाय अर्घ्यं निर्वाणाय ॥२०॥

पापतापं भव भेदं न हरे । भिदकनाय नमो अनिकारे ॥धा०

ॐ श्रीं भिदरूपाय अर्घ्यं निर्वाणाय ॥२१॥

सदा भगवते पासं विगते । पार्थनाय भजते भयं भाजे ॥धा०

ॐ श्रीं पार्थनायाय अर्घ्यं निर्वाणाय ॥२२॥

वचं प्रवृत्तं तज्जनिर्वचं स्वामी । दिव्यं ध्यानं उपदेशकं नामी ॥धा०

ॐ श्रीं दिव्यध्यानं अर्घ्यं निर्वाणाय ॥२३॥

गेषु दोषं न जि मग प्रकरो । नाय विशेषं मोक्षं सुखं गते ॥

धातुं विजे गिरि उत ग जाई । भानियं देव जज्ञो शिगनाई ॥२४॥

ॐ श्रीं शिगनायाय अर्घ्यं निर्वाणाय ॥२४॥

ॐ श्रीं—आठ दरपके अग्रमो पज्ञो वगन जिनेश ।

विजयैरावत भावि तव नाशत सकल कलेश ॥

ॐ ह्रीं विजयैरावतभावीचतुर्विंशति जिनैभ्यो घूर्णार्थं निर्वपामि ।

अथ जयमालं ।

घटा—परपरनति चूरन समता पूरन जै जिनराज अनंतयुनी ।  
नित सुरजश जंपत अंत कुंकंपत सेवत संपत होत धनी ॥१॥

चौपाइ छंद ।

वीर जिनेश नमै धरि धीरं । विजै देत नित विजै गहीरं ॥  
सत्य पद्म जिन सत्य प्रभावी । सदा मृगेंद्र सुरेंद्र जजावी ॥२॥  
चिन्तामनि चितचिंतित पूरै । सदा अशोक शोक चक चूरै ॥  
मृगपति सदा नमैं द्रुमृगेंद्रं । उपवाशिक जै जैति जिनेंद्रं ॥३॥  
पद्मचंद्र सुनि कैरव चदा । बोधकेंद्रु भवि कमल दिनदा ॥  
शिताहिम मम आरति नाशै । उत्साहक उत्साह प्रकाशै ॥४॥  
हे अपाशि जिन हरि भवपाशी । सदा देवजल जिनअधिनाशी ॥  
नारक गति नारक जिन भंजै । जगत पूज अनिद मनरंजै ॥५॥

नाग इव नागिदृशि श्वार्थं । नीलोत्पलज्जिन ह्रुति दरजाद्यं ॥  
 अमरकंप एव देव अकृपां । शिव ज्जिन द्विधे पुंगेच्छित्त जंपो ॥६॥  
 भेदक कर्म भजो जिन भिदक । पार्थनाथ जिन मन आनदक ॥  
 निर्दोषा गुनचनन अंगोचर । श्रोत्रिरोप शिव पांग करेचर ॥७॥  
 ए नार्योश भविज्जिन स्वामी । चित्तनमक गेगयन नामी ॥  
 गनचर असनि यान धर श्वार्थं । गुनसमागको पार न पाद्यं ॥८॥  
 जिनमो अग्न कर्षो कर जोगी । हरो प्रभ भयवाया सोरी ॥  
 आठ कर्म मोदि धेरि रंहे हे । इन मग हु म अनंत मटे के ॥९॥  
 सो तुल दृशि कुरो जिन स्वामी । वारधार पदपदम ननामी ॥  
 पत्नी अग्न शिष न शारी । पृथ्वाचनको सपदशि तागे ॥१०॥  
 स्वा-जै जै जिनमानं, भूयतमहानं, भविरुमलानं, मोदकरं ।

शिवमग परमात्मक, जै जमनात्मक, केवल्योय अगाधयशो ॥ नगरो  
 गा ॥ १४८ ॥ १४८ ॥

भविज्जिन गेगयन यान । भिन्न गिरिके सु जज्ञे श्रि च्यान ।

मिले मनबंधित आनंद ताहि । अनुक्रम सौ शिवधाम लहाहि ॥

इत्याशीर्वादः

इति श्रीविजैरुण्डेरावतभावीचौबीशीपूजा समाप्ता ।

—\* ० #—

अथ श्रीधातुकीदीप अचलमेरु संबंधी पूजा ।

( प्रथम चारि विदेहनिके चारि विरहमान पूजा प्रारभ्ये )

दुतदिलवित तथ्य सुन्दरी छंद ।

दुतिय दीप सुधातुकि सोहनौ, अचलमेरु तथा मनमोहनौ ।  
तसु विदेहनिमं जिन चार हूं, तिनहिं थापत आपत टार हूं ॥

ॐ ही अचलमेरुविदेहसुस्थितविहरमानजिन खरप्रभ-विशालकीर्ति वज्रधर  
चंद्रानन अत्रावतर अवतर सवौपटू आहाननं ।

ॐ ही अचलमेरुविदेहसंस्थितविहरमानजिन मूरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र धर  
चंद्रानन अत्र तिष्ठ ठ.डः स्थापन ।



ॐ श्रीं चरयेन्कीर्तिः श्रमिणापिग्याल नि गुरुगम विद्यायर्कीर्ति रत्नार  
चंशानन । न मम तन्निश्चिनां भव भव इत् स्यात्तः ।

अथाष्टकं चाल टप्पा श्री ।

प्रभु पूजो हो चरना । त्रितिय मेरु सुविदिह मे ॥ प्रभू ॥ । टिका ॥  
उज्ज्वल जल भरि कनक भृगोमं धाग मनमुल करना ।  
जनम गमन मल धोय लुरित भव, सागर पार उतना ।  
प्रभू पूजो हो चरना । त्रुनिय मेरु सुविदिह मे ॥ प्रभू पूजोहो ॥

ॐ श्रीं चरयेन्कीर्तिः श्रमिणापिग्याल नि गुरुगम-विद्याय-  
र्कीर्ति रत्नार चंशानन । न मम तन्निश्चिनां भव भव इत् स्यात्तः ।

रत्नार चंदन केदली नंदन कुंकुम धमिकर धरना ।

जगत त्रिनेत्रु चरन कमल जुग भवताप पण्डितना ॥ प्रभू ॥

ॐ श्रीं चरयेन्कीर्तिः श्रमिणापिग्याल नि गुरुगम-विद्याय-  
र्कीर्ति रत्नार चंशानन । न मम तन्निश्चिनां भव भव इत् स्यात्तः ।

ॐ श्रीं चरयेन्कीर्तिः श्रमिणापिग्याल नि गुरुगम-विद्याय-  
र्कीर्ति रत्नार चंशानन । न मम तन्निश्चिनां भव भव इत् स्यात्तः ।

तंदुल अमल निशाकर से शुभ सुवन थारी भना ।

पुंज धरत जिनराज चरन द्विग तुरंत अखे सुख वरना ॥ प्रभू ॥

ॐ ही अचलमेश्विदेहसंस्थितविहरमान जिन स्रप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-  
धर चद्राननाय तदुलं निर्मपामि ।

कमल केतुकी वेलि चमेली सुमन सुमन सम वरना ।

समरशूल निरमूल करनकों जजों जगत गुरु चरना ॥ प्रभु ॥

ॐ ही अचलमेश्विदेहसंस्थितविहरमान जिन स्रप्रभ-विशाल कीर्ति वज्र-  
धर चद्राननाय पुंजं निर्मपामि ।

नव्य गव्य पकवान विविध मनमोदन मोदक करना ।

अंजुलि मंजुलि जोर जजन पद क्षुधारोग निखरना ॥ प्रभु ॥

ॐ ही अचलमेश्विदेहसंस्थितविहरमान जिन स्रप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-  
धर चद्राननाय चरं निर्मपामि ।

दीपक जोत उद्योत होत तम खेत धूम विनु धरना ।

नामो जजन जगनिरवि तुमपद तिमिर मोह खेकना ॥ प्रभु ॥

ॐ श्री अत्यन्तद्विभक्तियोगिहरमानसिन मन्मथ विद्याकर्त्री यत्-  
पद चद्रानाथ दीप निर्णामि ।

धूप द्योग सुगंधित लेक सैवत सनमुल करना ।

आठकाठ अरिष्टु जेरं मो धूप घम विभनना ॥ प्रभु ॥

ॐ श्री अत्यन्तद्विभक्तियोगिहरमान जिन मन्मथ-विद्याकर्त्री यत्-  
पद चद्रानाथ धूप निर्णामि ।

आम्र काष्ठक अनार मार कलु भार ललित शुचि वरना ।

तासो जजन विघन परि हरिकानुति मुकतफल धरना ॥ प्रभु ॥

ॐ श्री अत्यन्तद्विभक्तियोगिहरमान जिन मन्मथ-विद्याकर्त्री यत्-  
पद चद्रानाथ क निर्णामि ।

अत्यन्त मरुत भिलाय मनोहर आय कृत गुन वरना ।

पुजित चान तुगल जिनमर्के पुजन वंदित करना ॥

प्रभु पूजों हो चरना, तृतीय मरुसों विदेहे में । प्रभू पूजोहो०॥

ॐ ही अचलमेखविदेहस्थितचिहरमान जिन खरप्रभ-विशालकीर्ति वज्र-  
धर चंद्रानमाय अर्थ निर्वणामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

चाल नंदीश्वराष्टक की

सूरप्रभ मूरज चिन्ह शिवमगं दशार्धें ।

भद्रार्तें जनम जु लिन्ह विजयपुरी गावें ॥

नृप नागराज महाराज सीतोत्तर जानो ।

तृतियाचल अचल समान पूजत सुखमानो ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपश्चिप्रमेख्यदस्रडमंडलमडितविदेहक्षेत्रस्य चक्रवर्त्यादि  
सेवित समवशरणादिविभूतिसयुक्त श्रीखुरप्रभाय अर्ध ।

सीता दिग दक्खिन मान अचलाचल सोहैं ।

सुविशाल कीर्त भगवान चंद्र चिहन मोहैं ।

नर पुंडरीक पुर जान गय विजापति हं ।

विजया जननी सुखलान पूजत जापति हं ॥

१० श्री धारणीय पदिसमंगीताद्विजे पदमप्रसंगमडितचक्रात्वादि  
नेत्रमनमसाध्यादिभिर्धियागमानरिपारुर्हर्षिने अर्प ॥२॥

जिन वरू धैर्य महेश शंख निहन रजि ।

मीनोदा दक्षिन देश अचलाचल छोजे ॥

नगरीय छुशीमा मानु मरसति मनमो हं ।

पदमारय नृप मम आनु पूजत सुग हो हे ॥

११ श्री धारणीय पदिसमंगीताद्विजे पदमप्रसंगमडितचक्रात्वादि  
नेत्रमनमसाध्यादिभिर्धियागमानरिपारुर्हर्षिने अर्प ॥३॥

चंद्रानन आनन चंद्र वृषभ रुजा धरि ।

पदमावति मान अमंद अचलाचल भारी ॥

सीतोदा उत्तर धाम पुंडरीक नीमं ।

बल्मीक पिता अभिराम पदमावति जी में ।

ॐ हीं धातुकीद्वीपअंचलमेरुसीतोदाउत्तरभागे पद्मखंडमंडलमण्डितचक्रूरर्यादि-  
सेव्यमानसमवशरणादिशोभाविराजमानविहरमानश्रीचंद्राननाय अर्घ्य॥४॥

चद्रुसंग सहित वृषभाप, करत विहार सही ।

गनधर सेवत अभिलाष, पावत मोप मही ॥

पद पूरन अरघ चढ़ाय सेवंत हौं स्वामी ।

मोहि आतमज्ञान बढ़ाय कीजे शिवगामी ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपअचलमेरुविदेहस्थितविहरमानजिन सुरप्रभ विशाल  
कीर्ति कज्रधर चद्राननाय पूर्णार्घ्य ॥

अथ जैमालं ॥

धत्ता-जै चारि जिनंदा आनंदकंदा विहरभानं दुखदंद हरा

समवश्रुत स्वामी त्रिभुवन नामी विश्रामी सुविदेह वरा ।

नमो जित सूर प्रभु अभिगम । जगज्जम कंजनिशो दिनव्यामि ।  
 पिशाक सुकीर्णत नग सरवज । शनैश्च जपे गुन गावनतज ॥३॥  
 मग जग पय चरेण जिनेश । कुरुर्म कल्याण्य वप्र समेश ।  
 जपो गिनचंद्र मु आनंद कंद । सुमध्यकमोद प्रमोदन चंद्र ॥ ३ ॥  
 ममरश्चत गजेंत गजन एव । रिवृत अनूप लजे स्वयमेव ॥  
 सुरेश मदा पद मेयत आन । गनेश करे जह तत्त यत्नान ॥५॥  
 नरेण अगोप नमो कर्णजोर । अनेक सुषय्य सुने पुनि मार ।  
 अनादि मित्यात मिशय नुंनत । अदे केर करंज जान अनंत ॥५॥  
 कंठ रूत श्रावकको गति सुष्ट । लजे सुरमंपति पूरन पुष्ट ॥  
 कंठ सुरखंडर भक्ति करंत । यजारात गाज समाज अमृत ॥६॥  
 नये रेड मार बयाप पुनीत । यजे पग नृप अदनुत गंत ॥  
 शानांशमंमनं शानजोर । रेरे पट्टति किनि किनिमिनि शोर ॥७॥  
 मया मयया अमया धितया । मने गत धंगत धंगत पट्टदाय ॥

द्विम द्विमि द्विमिनाद करै मिरदंग । सुरान्बितचग ढपंग अमग ॥८॥  
 तननतान महानभनंत । इनादि समाज सजत महंत ॥  
 समौश्रुत माहि वन्यौ सुख साज । वनै नहि भाषत सो सप्र आज ६  
 हमें यह आश लगी जगदीश । मिलै कव दर्शन हे गुनईश ।  
 बुलाय समीप सुनौ तुम वैन । लहाँ निज आतम ज्ञान सुचैन १०  
 घचा-जै जै गुन छायाक त्रिभुवननायक विघनविनायक बोधमहा  
 बंदतगननायक नितसुखदायक अव सत्र लायक-शरणगहा

ॐ ह्रीं अचजमेरुविदेहस्थितविहरमानजिनंद्रेभ्यो महार्धनिर्वणामी ।

कवित—

सूप्रभ सु विशालकीर्त जिन वज्र धरेश अगम गुनधाम ।  
 चंद्रानन ये चार तीर्थपति अचल विदेहनि में विसराम ॥  
 कबहुक करहिं विहार कवहुं थित समवशस्त शोभित अभिराम  
 तिनहिं जजत मनवंछित सुषलहि सुकत होहि तिहि करो प्रनाम



गालि अगंडिन उज्जली हो, शशिसम हुति दमकाय ।

पुंज धरत तुम चरन द्विग हो, देहु अघेपद गय ॥ सदा ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

बेल चमेली केनकी हो, सुमन सुमन समलाय ।

ताते तुम पद पूजने हो, समर शूल नशिजाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वाजे ताजे साजके हो, मोहन मोदक लाय ।

नामों तुम पद पूजने हो, श्रुयांगेग नशि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

दीपगजोति सुहायनी हो जगमगात सुरदाय ।

नासों आर्षी कगत ही हो, तिमिर मोह निशि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कृष्णागर आदिक दशों हों, गंध सुगंधित लाय ।

धूप उखेवों चरन ढिग हो, अष्ट करम जरि जाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्ब्रषामि ॥७॥

मधुर रसल्लि पावने हो, श्रीफल सुंदर लाय ।

तासों तुम पूजा करत हो सुकत महाफल पाय ॥ सदा० ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्ब्रषामि ॥८॥

जल चंदन को आदि दे हों आठों दसव मिलाय ।

सो ले तुम आगे धरों हों संकट कोट नशाय ॥

सदा श्रीजिनवरका, पूजा करों सुखदाय ।

अचलमेरु दच्छिन दिशा हो भरतक्षेत्र दशाय ।

वर्तमान चौबीस जिनको पूजत सुरपत पाय ॥सदा श्रीजिन०

ॐ ह्री अचलमेरुभरतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्ब्रषामि ॥

अथ प्रत्येकार्थे ।

श्रीगार्डे ३८—

जगदानन्द कन्द सुख वृन्दा । विश्वचन्द्र जिन आनन चन्द्रा ॥

अचल मेरु भारत सुखद्वार्डे । वरतमान पूजो जय गार्डे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो निरंतायि ॥१॥

मकल धरा भारग परगार्जे । कपिल त्रैव शमला सुख गार्जे ।

अचल मेरु भाग सुखद्वार्डे । वरतमान पूजो जय गार्डे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो निरंतायि ॥२॥

वृषदागरु वृषभेन्दु स्वामी । सुभग शील संजुत शिवगामी । अ०

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो निरंतायि ॥३॥

आनमजोनि माहिसव व्यापा प्रियदग्धन जिन विगतकल्याण ०

ॐ ह्रीं शिखन्दाय नमो निरंतायि ॥४॥

विषय अंग अतंग मदगंजन । ध्यावो भविकु मोद मन रंजन अ०

चारित रुचिर पात्र अभिरामी । चारित नाथ जिनेस नमामी । अ०

ॐ ही चारित्राय अर्थं निर्वपामि ॥६॥

शुभदमशुभसहित नितराजै । प्रशमस्वामि जमजीति विराजै । अ०

ॐ ही प्रशमस्वामिने अर्थं निर्वपामि ॥७॥

प्रमादित्य पद तिहुं जग वंदै । आदृत प्रभा जीति आनंदै । अ०

ॐ ही प्रमादित्याय अर्थं निर्वपामि ॥८॥

उद् पाइता मात्रा ? ४ ।

जिन मुजकेश पद ध्यावो । मन वांछित आनंद पावो ।

तृतियाचल भारत माहीं । पद पूजो वरतलु आहीं ॥९॥

ॐ हीं मुंजकेशाय अर्थं निर्वपामि ॥९॥

तपसों तन दीपत जाको । जिन पीतवास कहि ताको । तृ० ॥

ॐ हीं पीतवासाय अर्थं निर्वपामि ॥१०॥

नर ईश सुभासु द्वयं । नमने तु सुगन्धिप शशिं ॥ तृतीया ॥

ॐ श्री सुभासु द्वयं नित्यं ॥ ३३ ॥

दृश्या सुदया करि भोनों । जिन दयानाथ अमर्त्तनों ॥ तृ० ॥

ॐ श्री दयानाथ करि नित्यं ॥ ३४ ॥

तु महम्मदगि मम काया । सु महम्मदगि जिनगया ॥ तृ० ॥

ॐ श्री महम्मदगि मम नित्यं ॥ ३५ ॥

वसुधै कथं च भृगिंद । जिन भिंदनाम तु त्रिभिंदं ॥ तृ० ॥

ॐ श्री भिंदनाम तु नित्यं ॥ ३६ ॥

हर पैगमन हर मोदि । जिन भवमो मन मोदि ॥ तृतीया ॥

ॐ श्री भवमो मन नित्यं ॥ ३७ ॥

जिन मरु जगो मुनिगजा । जिनके अर्थिन मत्र हाजा ॥ तृ० ॥

ॐ श्री मुनिगजा जगो नित्यं ॥ ३८ ॥

नमरश्चन लब्धी धरि । श्रीमाल भवोदनि नरि ॥ तृतीया ॥

ॐ हीं श्रीमालाय अर्घं निर्वापामि ॥१७॥  
तिहुँ जोग हने सु अजोगी । निज जोगे सुधारस भोगी ॥तृ॥

ॐ हीं अयोगाय अर्घं निर्वापामि ॥१८॥  
सु अजोगनाथ पद सेवो । सव जोग समग्री लेवो ॥तृतीया०॥

ॐ हीं अजोगनाथाय अर्घं निर्वापामि ॥१९॥  
करिकों हरि जेम विदारें । तिमि काम रिपु मद मोरें ॥तृ०॥

ॐ हीं कामरिपुवे अर्घं निर्वापामि ॥२०॥  
सव दंभारंभ हरे हैं । शिव हेतारंभ करै हें ॥तृतीयाचल०॥

ॐ हीं आरभाय अर्घं निर्वापामि ॥२१॥  
जिन धर्मचक्र रथ नेमं । जिन नेम करै सव खेमं ॥तृतीया०॥

ॐ हीं नेमिनाथाय अर्घं निर्वापामि ॥२२॥  
तिहुँ ज्ञान गर्भतें धारी । जिन गर्भ ज्ञान अविकारी ॥तृतीया०॥

ॐ हीं गर्भनाथाय अर्घं निर्वापामि ॥२३॥

भावस्य चाप्यहं कूल जन्म वेदि । भवस्य समसगति रहस्य मोदि ॥  
 सत्यस्य तुम भागन नरनधोप । भावस्य अनुभव विफलानिरोप ॥  
 सत्यस्य तावित अत्र शीलदान । भवस्य तुम सगति मिलो मश्रन ॥०  
 सत्यस्य भावस्य संग शोप । स्वभावस्य सारि जुल सनजोग ।  
 सत्य ज्ञान श्रीसो श्रीदयाल । हरि विान करो मगद रजा ॥२॥

"स्वैत्रै हरिनाथन मोहनपानहन सकल भव्यजन नोपपत्त ।  
 वेदन 'ब्रह्मपन' श्रीन यो मन हो जिन संगति सदन भग ॥

"श्री गणेशाय नमः । श्रीमान् गुरुः । विद्वान् श्री गुरुः । श्री गुरुः ।

श्री गुरुः । श्री गुरुः । श्री गुरुः । श्री गुरुः । श्री गुरुः ।

श्री गुरुः । श्री गुरुः । श्री गुरुः । श्री गुरुः । श्री गुरुः ।

श्री गुरुः ।

श्री गुरुः । श्री गुरुः । श्री गुरुः । श्री गुरुः । श्री गुरुः ।

अथाचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिपूजा प्रारभ्यते ।

तोटकच्छद-

तृतीयाचल भारतभूत जिनं । चौवीश महामुख सिंधु गिनं ।

तिहु थापतु हौं इत जोरिकरं । प्रभु आय विराजहु पापहरं ॥

ॐ ह्रीं अचलभरतातीतजिन-अत्रात्रर अत्रर संवौपद् आत्तनर्न स्वाहाः ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठाडः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतातीतजिन-अत्र मसे संनिहितो भवभव धपद् स्वाहाः ।

चाल प्रभू पूजैरे भाई ।

लुम पद पूजौं शिरनाई । जासौं पातक जात पलाई ।

अचलमेरु दक्षिण दिशा ही भरततीत जिनराई ॥ तुम०।टेक॥

हिमवन गिरिगत गंगाजल वर, सुवरन भृंग भराई ।

तासौं पूजत चरन कमल जुग, वृथा रोग भिदि जाई । तुमपद० ॥



ॐ श्रीं सत्यमेव जयते ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥

सर्वज्ञानं चंदनं चाननं चंद्रमं चंद्रमं चंद्रमं ॥

नियतं तपः नियमानं कानं पूजो पदं पुनगाडि ॥ तुमपदं ॥

ॐ श्रीं सत्यमेव जयते ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥

नेदुल आलविजान्द नोति तुम गमक दगक दग्याडि ।

पुंज भगन नुम चमन रमल दिग लहन अगेरद गंई ॥ नुम० ॥

ॐ श्रीं सत्यमेव जयते ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ ॥

नमन तुमन तम तुमन थार मर तुमन नमन तुमद्रडि ।

नोदं नुमपद पदम जतो त्रिभि ममगुल नजिजोडि ॥ नुम० ।

ॐ श्रीं सत्यमेव जयते ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥

ननु गडग मनमोदुन मोद्रक नचि नोत्रे नोडि ।

मो पुन निपद थो त्रिनननक देद निगकुलाडि । नुम० ॥

ॐ ही अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥  
 वृत पूरित अथवा कपूरमनि दीपक जोति लगाई ।

आरति करत हरत सब आरत आतम जोति जगाई ॥ तुमपद० ॥  
 ॐ ही अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन देवदारु सब लाई ।  
 धूप उखेवतु हों तुम आगे ज्यों वसुकरम जराई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ही अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्य धूपं निर्वपामि ॥७॥

आम्रकाम्रक अनार सार फल प्राशुक पक्क धराई ।  
 पूजौं तुम पदप्रीत लाइकेँ ज्यों वांछित पदथाई ॥ तुमपद० ॥

ॐ ही अचलमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फल निर्वपामि ॥८॥

जल फल सकल मिलाय मनोहर अरघ कियो उमगाई ।  
 नाचिराचि शिरनाई समरचौं ज्यों अनर्घ पदपाई ।

तुम पद पुरी शिखाई तामों पातक जान पलाई ।  
अपलंगक दक्षिण दिशा हो, भगनीन जिनगई । तुमपदपुत्रों०  
ॐ श्रीं पातकसखागीपतुशिविकेः सो अरे निरोगसि ।

अथ प्रत्येकार्थे ।

ॐ श्रीं गणेश—

शुभेय धें शृंगार जानन वन्दु मेवे ।

तुनियचल भागन धार तीन जजाभि अवे ॥२॥  
ॐ श्रीं गणेश श्रीं निरोगसि ।

प्रिय भित्र मरुळ जगणीन त्रिभयनकों प्यारे ।

तुनियचल भगन अनीत पूजन भवनेरे ॥३॥  
ॐ श्रीं गणेश श्रीं निरोगसि ।

सिन शानिनाथ जिनगण शानि कें मवही ।

तृतियाचल भरत जिनाय तीत जजौं अबही ॥३॥

ॐ ही शान्तिनाथाय अर्घं निर्वणामि ।

जिन सुमति सुमति दरशाय सुमतिनकों प्यारे ॥

तृतियाचल भारत ध्याय तीत जजौं सारे ॥४॥

ॐ ही सुमतिनाथाय अर्घं निर्वणामि ।

मनमथ मद मंथनहार आदि जिनेश कहा ।

तृतियाचल भरत उदार भूत जजामि महा ॥५॥

ॐ ही आदिजिनाय अर्घं विर्वणामि ।

अतिव्यक्त जगोत्तम रीत तीरथ व्यक्त करे ।

तृतियाचल भारततीत पूजत पाप टरे ॥६॥

ॐ ही अतिव्यक्ताय अर्घं निर्वणामि ।

जिन कलासेन भगवान सकल कलाधारी ।

गिर अचल भगत गनवान पुत्रन नरनारी ॥७॥

ॐ श्री कृष्णाय नमो नित्यम् ।

जिन कर्म पर्य भग देव अघमद चरि दयो ।

तुनियाचल भगत जु भव नीन पुनीन भयो ॥८॥

ॐ श्री कृष्णाय नमो नित्यम् ।

मुनिनायक गुरु प्रबुद्ध सिद्ध रु गिद्ध करे ।

तुनियाचल भगत सगुल नीन जजाभि वेरे ॥९॥

ॐ श्री कृष्णाय नमो नित्यम् ।

भग भान प्रबुद्ध निर्गुल देव प्रबुद्ध क्रिया ।

तुनियाचल भगत असुन नीन भर्गापि दिया ॥१०॥

ॐ श्री कृष्णाय नमो नित्यम् ।

सोपम धरे निज धरे सोपमैभुज भजे ।

तृतियाचल भारत परम तीत जिनेश जजै ॥११॥  
 ॐ ही सौधर्माय अर्थ निर्वपामि ।

तमभानन आनन सार देव तमोदीपं ।

तृतियाचल भरत अघार तीत जजामीपं ॥१२॥

ॐ ही तमोदीप्ताय अर्थ निर्वपामि ।

जिन वज्र भजै वज्रेश वज्र शरीर धरै ।

तृतियाचल भरत महेश तीत जजामि वरै ॥१३॥

ॐ ही वजाय अर्थ निर्वपामि ।

सुप्रवृद्धनाथ जिन स्वामि सेवत शुद्धमती ।

तृतियाचल भरत जजामि तीत अभीत जती ॥१४॥

ॐ ही प्रवृद्धनाथाय अर्थ निर्वपामि ।

निराबंध प्रबंध जिनंद कीर्त प्रबंध कहा ।

तृनियानल भग्न सुद्वंद्वं नति त्रज्जाणि मदा ॥१२४॥

ॐ श्रीं तस्याय धर्मं निंत्ताणि ।

कवलं सुविभान् अनीतिं गतिं पंकज पोथ्ये ।

तृनियानल भग्न अनीतिं पूजत दुल्ल मोर्गे ॥१२५॥

ॐ श्रीं तस्याय धर्मं निंत्ताणि ।

जिन सुमुप भविक आनंदं त्रायकं गुणगावों ।

तृनियानल भग्न सुद्वंद्वं नीतिं त्रज्जों यावों ॥१२६॥

ॐ श्रीं गुणगाय धर्मं निंत्ताणि ।

पन्थोगम देयं पुनीतिं उपमा नीतिं मदी ।

तृनियानल भग्न अनीतिं पूजत त्तान मदी ॥१२७॥

ॐ श्रीं तस्याय धर्मं निंत्ताणि ।

सोपादि पर्वीज विनाश एति त्रकोण त्रिनं ।

तृतियाचल भरत जजास तीत निचीत गिनं ॥१९॥

ॐ हीं अकोपाय अर्घं निर्वपामि ।

जिन निष्ठित देव उदार पूजत इष्ट मिलें ।

गज भरत तृतिय गिरि सार संकट कोट टले ॥२०॥

ॐ हीं निष्ठिताय अर्घं निर्वपामि ।

मृगनाभि शरीर सुगंध पावन सुखकरि ।

तृतियाचल भरत अबंध तीत जजों भारी ॥२१॥

ॐ हीं मृगनाभये अर्घं निर्वपामि ।

देवेन्द्र जिनेंद्र मुनेंद्र इंद्र भजे सारे ।

तृतियाचल भरत महेन्द्र तीत जजों ध्यारे ॥२२॥

ॐ हीं देवेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ।

मुनिवृंद पदस्थित देव सेवत गुनगाई ।

तृतियाचल भारत एव तीत जजों भाई ॥२३॥



ॐ ई परमिषाग परं नित्तिमि ।

श्रियानाथ नमो धरि प्रीन दायक सुनकपत्नी ।

नृनियाचल भग्नार्त्तन पूजन शगे ल्ही ॥२४॥

ॐ ई शिवधार गे निर्मासि ।

देव-गान अत्र मन्त्रोय के नमो नग्न धरि प्रीन ।

अचल भान गन जगनपनि हग्न विद्यन जइरीन ॥

ॐ ई पावकेधरार्त्तापःशिविभिलेन एतंभे विरत्तमि ।

एव जेलाक ।

ॐ ई जिन गुननागर मुजन उजागर निननत्तागर सेवकरे ।

जे जग उद्गाःक नमदभित्ताक भयिक "बुंद" नुव प्रान्तरै ॥

ॐ ई ए-  
ॐ ई ए-

दपरगत गोपुपंज नग । शिवनाथ परै शिव गुल ॥४॥

शिवशक्ति मन्त्रानि समिद परै । सुमनेदा भंशय कृपुदि री ॥५॥

जिन आदि अनादि विवाद हैं । अतिव्यक्त चिदात्मव्यक्त करें।  
 प्रणामामि कलाधर सेन जिन । जित कर्म जिनं अमलीन गिनं ॥३॥  
 भवि बोधक देव प्रबुद्ध सही । परिवृत्त करै भवि मुक्तमही ।  
 सब धर्म निजात्म धर्म धरै । तम दीपित कर्म कलंक हरे ॥४॥  
 प्रभुवज्र सबै टुल चूर करै । सुप्रबुद्ध महारिपु कुद्ध हरे ।  
 निरवध प्रवध प्रनाम करो । सुअतीत जपों भवसिधु तरौ ॥५॥  
 सुसुलेश महेश दयाधर हैं । सुपलोपम मोह विथाहर है ।  
 विनुकोप अकोप सु शत्रुहरै । जिन निष्ठित इष्टित पुष्टकरै ॥६॥  
 मृगनाभ अनंत गुनाकर हैं । नित देव सुइंद सुधाधर हैं ।  
 अति लच पदस्थ पदस्थ करै । शिवनाथ प्रमोद प्रसस्त भरै ॥७॥  
 चउवीश धेई जगदीश महा । तृतियाचल भारततीत कहा ॥  
 गुनसार अनत धरै नित हैं । द्रगज्ञान सुवीरज सजुत हैं ॥८॥  
 सुख सूत्रम ना लघुना गुरुता । अवगाह अवाध सदा पुरता ॥  
 निररूप सरूप चिदात्म हैं । भवव्याधि व्यतीत शुचात्म हैं ॥९॥

पर धातम ज्ञोति प्रसाजन्तुं है । असमाह सुपासद माजानुं है ॥  
 निराश्रीन अश्रीन अश्रीम सेर । असलीन अश्रीन अश्रीन भये ॥  
 अश्रमं अमन अश्रप अकले । असद अशद अदल अतदं ।  
 इत अशद अनेन परं पुनं है । नित नितनु नित मशामुन है ॥१३॥  
 तुमसो कज्जर शशो वितयो । मासागर सो शिवास पयो ।  
 नित आतम जोगि उशेन तम । दुपदशरिद पित्त मसूत्रररो ॥१४॥  
 अ-ज्ञे जे नितम्यापी शिवपुगापी मुखजनापी देवमहा ।

"वृद्धाविव" वाचन शीम नवावन योद्धिन अथे प्रनच्छ लक्ष्मी  
 है । गणकमश्रीनपरीतिनि-ये धर्म ।

अ-ज्ञे जे अश्रम अश्रीन अश्रीन भगवतिन जे जे सुगगी ।  
 दस भार विधि गहिन सु ते नर है वदभागी ।  
 वद भार सुय धनधान्य मकल मनवदित्त पाई ।  
 सुगनि होई पुनोन चक्रगनि हे शिव गदि ॥

इत्याशीर्वादः ।

इतिथी अचलभरतातीतचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता ।

**अथाचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशति जिन पूजा ।**

अडिल उद् ।

दुतिय दीप सुविशाल धतुकी सोहनों ।

पश्चिम अचल सुमेरु भरतमन मोहनों ।

होनहार चौवीथ जिनेसुर सारजी ।

थापो पूजन हेत प्रभू सुपधारजी ॥

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्राप्रतर अत्रतर संवीपद् आद्धानन ।

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ टःठः स्थापनं ।

ॐ ह्री अचलमेरुभरतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भवभव वपद् स्वाहा ।

त्रिमंगी अपनाशक छद् ।

**हिमवनगत गंगा जलभरि भृगा सुचि सरवंगा सुखकारी ।**

सुम पदतः स्वामी धार दृगमी तृगा नसासि अतिभारि ॥  
 गिरि अचल्यविगते अति छविच्छाजे भक्तममाजे सुपमजे ।  
 तिन भासियेदेवं चवविज एवं कृतपद मेवं दृव भाजे ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥

वसि वासनपदन कदली नंदन द्वाहनिकद जीनवं ।

करि तृगापददंन हे जिनपदन हरि भवकंदन भवकं गि० नि०

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥

सदृश मुनि मतिन जगि छविगदित पुंचउमडित मनद्वगि ।

सुगदगिन चोदित ग्रनगनमडिनयगिउनिअडिन हितयगिगिगि

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ ॥

सगाल नगावन सुम प्रभु पावन जील वद्वधन जनिमद्व ।

धर दल्यदुहावन दिगमन भावन चगनचयवन आनिगद्व ॥ गि०

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥  
 पटरम करिजित धुधाविभंजिन चरु दुखगजित मृदुसो हे ।  
 तुमपद पूजत जगजशकूजत शिववर हूजत मन मोहे । गि०ति०  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैऋद्य निर्वपामी ॥५॥  
 दीपगतमखडन दुतिदिगमडन सत्रव्रह्ममंडन मोदकरा ।  
 सो तुम दिगवारों श्रुति विस्तारों भूमतमटारों बोधकरा ॥ गि०ति०  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो द्वीप निर्वपामि ॥६॥  
 दशगंध बनाईं तुम दिगलाईं हे जिनराईं जशगाईं ।  
 खेवों उमगाईं हरप बड़ाईं करम जराईं शिबुगाईं ॥ गि०ति०  
 ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो द्रुपं निर्वपामि ॥७॥  
 फल पक्वमुहावन मनललचावन विघननशावन लै आयौ ।  
 तुम पदतर धारत दारिद्रहारित सुखविसतारत उभगायौ ॥ गि०ति०

ॐ श्री अचलेश्वरभगवांशुशिरानिजिनंभ्यः कृत् निर्वाणाय ॥८॥  
जलकृत मरमाजे राजनवाजे विविध ममाजे जुतराजे ।

तुम मेवनरुजे हे महागजे भगतकाजे शिवपाजे ॥

शिरि अचल विगजे अति छवि छाजे भारतममाजे मुलमाजे ।

भित भाविसंभं चवविज पयं कृतपद मेवं दुलभाजे ॥

ॐ श्री सत्यव्यासार्जुनार्जुनशिरानिजिनंभ्योऽं निर्वाणाय ॥९॥

अथ प्रत्येकाये ।

शंकरभक्त्येश जिनराय, कारकाणि केश हे मकल ।

इच्छिन शिवपद दाय, अचल भानभार्थी जजो ॥१॥

ॐ श्री मरुतेस्तुत दो निर्वाणाय ।

चक्रदहन जिनदेव, भाविक चक्र शक्र मज्जा ।

शक्रनरु रुति भय, अचल भान भार्थी चजो ॥२॥

ॐ हीं चक्रहस्ताय अर्घं निर्वपामि ।

बहुनृप सेवते पाथ, द्वेष रहित कृतनाथ जिन ।

मोपर होहु सहाय, अचल भरत भावी जजों ॥३॥

ॐ हीं कृतनाथाय अर्घं निर्वपामि ।

पद्मेसुग जिनचंद्र चंद्रवदन छवि देत नित ।

हरत सकल दुखदद अचल भरत भावी जजों ॥४॥

ॐ हीं परमेश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

गनहर मूरत जास, देवसु मूरत जगत हित ।

जस कीरतकी राश अचल भरत भावी जजों ॥५॥

ॐ हीं सुभृते अर्घं निर्वपामि ॥५॥

मुक्तकान्त जिन स्याम, मुक्त रमनिवर मुक्त कर ।

नमों क्रांति सुखधाम, अचल भरत भावी जजों ॥६॥



ॐ ह्रीं मुक्तिरान्ताय अर्धं निर्वपामि ॥६॥

केशसमूह उपाग. व्रतधोरं निःकेश जिन ।

सो मो पतित उधार, अचल भक्त भावी जजों ॥७॥

ॐ ह्रीं निःकेशाय अर्धं निर्वपामि ।

देव प्रशस्तिक सार, देत प्रशस्त महान सुख ।

मम दुखदं निवार, अचल भक्त भावी जजों ॥८॥

ॐ ह्रीं प्रशस्तिरूप अर्धं निर्वपामि ।

निराहार जिनसार कमलाहार वितीत नित ।

सो मम विघ्न निवार, अचल भक्त भावी जजों ॥९॥

ॐ ह्रीं निराहाराय अर्धं निर्वपामि ।

भजों अमूरत देव विमल शान्ति चिद्रूपवन ।

कस्त शर्चापति सेव. अचल भक्त भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं अमृतया अर्घं निरिषामि ।

चार वरग नित जाहि सेधित सो द्विजराज जिन ।

नमों जोरकर ताहि अचल भरत भावी जजों ॥१०॥

ॐ ह्रीं द्विजनाथाय अर्घं निरिषामि ।

श्रेयनाथ भगवान्, श्रेयकरै पातक हरं ।

देत सकल सुखखान अचल भरत भावी जजों ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रेयनाथाय अर्घं निरिषामि ।

छंदनाराच ।

रुजादि दोष नाथिकें निजात्म शुद्ध भाशियो ।

प्रबोधि भव्य वृंदकों अरुज्जकर्म नाशियो ॥

नमामि पाद पंकजं सुंद्रं जासकों भजें ।

तृतीय मेरु भारते भविष्यतं जिनं जजें ॥१३॥

ॐ ही अरुजाय अर्थ निर्वणामि ।

समस्त देव सेवही सदैव देवनाथकों ।

भवाब्धि हूवते गहो जिनेश वेंगि हाथकों । न०तृ० ॥१४॥

ॐ ही देवनाथाय अर्थ निर्वणामि ।

समस्त दीनपै दया धरं दयाधिके जिन ।

निजातम स्वभाव में विगजने सदा तिनं । न०तृ० ॥१५॥

ॐ ही दयाधिकाय अर्थ निर्वणामि ।

सुपुण्यनाथ नायकं सुप्रमं धर्म दायकं ।

सु पुण्यत्राप दायकं प्रशस्तशील लायकं । न०तृ० ॥१६॥

ॐ ही पुण्यनाथाय अर्थ निर्वणामि ।

नरेश ओ सुरेश वृंद जाहि नित्य भेवही ।

नेगनाथ देवमो भवाब्धि नाव भवही न०तृ० ॥१७॥

ॐ ह्रीं नरेशाय अर्घं निर्णयामि ।

समस्त जीवोंपे दया धरौं सदा विराजहीं ।

प्रती सुसूतकों भजें अशेष क्लेश भाजहीं ॥ न० तृ० ॥ १८८ ॥

ॐ ह्रीं प्रतिभूताय अर्घं निर्णयामि ।

दिविंद भाव निंदचंद वितरेंद ध्यावही ।

सुनाग इंद्र देव सेवते सुशर्म पावही । न० तृ० ॥ १८९ ॥

ॐ ह्रीं नागेशाय अर्घं निर्णयामि ।

महा तपोदिके धनी तपोधिकं अरावही ।

नमों सदा तिन्हें समस्त परम शर्म सावही । न० तृ० ॥ १९० ॥

ॐ ह्रीं तपोधिकाय अर्घं निर्णयामि ।

दशोदिशा विषे सुव्याप्त कीर्त जास हे रह्यौ ।

दशाननाख्य देव सेवते सुवोधको गह्यौ । न० तृ० ॥ १९१ ॥

ॐ हीं दशाननाय अर्धं निर्वापामि ।

उभै प्रकारको तपादि तासके धनी सही ।

अरण्यनाथको नमामि देत मुक्तकी मही । न०तु०॥२२॥

ॐ हीं अरण्यनाथाय अर्धं निर्वापामि ।

अनंगके दशों अनीनकों विनाश कीन ह ।

दशा सुनीक्कों नमों सदैव सो प्रवीन ह । न०तु०॥२३॥

ॐ हीं दशानीकाय अर्धं निर्वापामि ।

सदा अछोभ राजही पुनीत भाव साजही ।

जिनेंद्र शालिकं भजें दग्दि दुख भाजही ।

नमामि पादपंकजं सुंद्र जासकों भजें ।

तृतीयमेरु भास्ते भविष्यतं जिन जज्ञे ॥२२॥

ॐ हीं शान्तिराय कर्धं निर्वापामि ।

स्थोद्धता-अष्टद्रव्य सच द्वाजिकें वरं, नाचिराच गुनगायहीधरं ।  
 वृजिहो अचल भारते महा, होनहार चवगीश जे कहा ॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभावीचतुर्विंशतिविन्नेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ।

अथं जयमाला ।

घटा-जै जिन कलपटुम दयावेलि तुम सुमन सुजसगम कंतवरा ।  
 फल शिवसुरमंडित विपति विहंडित वांछितार्थपद पुष्टकरा ॥

पाद्री छंद—

जै रक्तकेश आनंद भेश । जै चक्रहस्त चुत शक्रशेष ॥  
 कुतनाथ कुतारथ करत भव । परमसुर पूरत ज्ञान सब ॥१॥  
 जय देव सु मूरत मदनभग । जय सुकतकांत शिवकांत संग ॥  
 निकेश केश तजि व्रतधराय । जय जय प्रशस्तपद परमदाय ॥३॥  
 जय निराहार अचिकार बुद्ध । जय जय अमूर्त जिन सुगुन शुद्ध  
 द्विजनाथ मोहि दुखंत निकार । श्रेयो गति मो दै श्रेयसार ॥४॥

जय अरुज हरो मम रोग एव । जय दयानाथ सुधि धेनि लेन ॥  
 प्रणमामि दयाधिक दयाधीश । जे पुष्पनाथ गुननिधि जर्गीश ॥२॥  
 नरनाथ नमं नरनाथ पाय । प्रतिभूत गहन गुनगन जिनाय ॥  
 नागेंद्र देव नागेंद्रराज । नित देव तपोनिध सुखसमाज ॥३॥  
 जय जैति वज्रानन सुजशराज । आरण्यरुक्ते सुर असुर दाम ॥  
 नित नमो द्जानिक निगुन देव । शाब्धिक जिनवर पद करो मंत्र ॥  
 ए धातुर्दीप गिरि अचल नाम । नित भक्त भविष्यत सुगुन धाम  
 मुनिमडल नित चित धरत ध्यान । मुरनग्वगपजत चरन आना ॥८॥  
 ये तारन तरन दरन क्लेश । निरदोष मोनपोषक महेश ।  
 त्रिभुवन जनमन परज दिनद । सुगसागर बरुन मदग चंद्र ॥९॥  
 "वृंदावन" मंत्रत जुगलपाप । जिमि विचनमनन तनछिन चित्ताग ।  
 अय जगन गरी प्रभु प्रीत राग । भवसागरतें मोक्षां निहार ॥१०॥  
 "जैजे जिननाथक मधविधियायक द्वायकभाव अनंतपती  
 भवतापनशायक शानि बदायक तुम गुन नित चित जपत जती

ॐ ह्रीं अचलमेरुभरतभायीचतुर्विंशतिजिनेभ्यो मद्याद्यै निर्देष्टामि ।  
 आद्या छ०—जो पूजे मनलाई, तृनियाचल भारतेश सुखदाई ।  
 भायी त्रिभुवनराई, सो पवि मुक्त मुक्तकराई ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति अचलमेरुभरतभायीचतुर्विंशतिजिनपूजा सप्तर्णा ।

**अथाचलमेरुऐरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन पूजा ।**

रोडक उद—

दुतियदीप अभिराम अचल पश्चिम छवि छजे ।

ताकी उत्तर माहि क्षेत्र ऐवरावत गजे ॥

वरतमान चौवीश तहां त्रिभुवन के नायक ।

थापतु हों करजोर इहां आयो वरदायक ॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रायतरअवतर संशोपद् आढाननं



ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ. स्थापन ।  
 ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिन—अत्र मम मन्निहितो धरा  
 धरा मद् स्वाहा ।

( चाल फेडग नारण धानतराहन पूजा ताके अष्टकी )

सकल सुखदान, पूजो चरनकमल अमलान । सकल सुख० ।  
 अचलाचल ऐगवतथान, वरतमान जनकंजन भान । स० टिक॥  
 मुनिमनमम जल्लउज्वल आन, धारकत मन्मुखदुखहान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिनेभ्यो नमः निर्गामि ॥१॥

चदन केरलिनंदनमान, घसि लशि शशिसुस ममतादान । म० ।

ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिनेभ्यश्च नमः निर्गामि ॥२॥

तंदुलमंदुल उज्वल भान, पुत्रविगुंजन शिवपददान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरातर्पमानचतुर्विधितिजिनेभ्यो नमः निर्गामि ॥३॥

सुपन मल्ल अलि गुंजन आन, धरत हगन उर मदन वितान । म०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुण्यं निर्वपामि ॥४॥  
नेवज तुरितपुरितरसथान, जजतभजत आकुल कलकान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

दीपक जोत दिपत दुतिथान, जजततुरित उरतिमिरनसान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

अगरदहतवसुकुसुम दहान धूम धूम यह तास उडान । स०अ०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

फलकलदलनचलन शिवथान, तुमढिगथारत विवनविलान । स०

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

जलफलसकल विमलशुभ आन, अरघजजत करि अनुभौ पान ।

सकल सुखदान, पूजों चरन कमल अमलान । सकलसुख०

अचलाचल ऐरावत थान, वरतमान जनकंजन भान । स०॥

ॐ ह्रीं अचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९०॥

अथ प्रत्येकार्थ ।

नौषाई उट—

माथित नाम जिनेश नमामी । जिनको व्यावत हं शिवगामी ॥  
 धातु अचल गेरावत यानो । वरतमान पूजो वरि यानो ॥१॥

ॐ नो माथिताय नमं निर्वायि ॥१॥

जिनस्वामी त्रिभुवन आधार । सेवत संव चार परकार ॥धा० व०  
 ॐ श्री जिनन्वायिनेऽं निर्वायि ॥२॥

ममितिंद्रिय जिनद मितिंद्रिय । नमित इंद्रजे अनिइंद्रिय ॥धा० व०  
 ॐ श्री म्मिमितिंद्राय नमं निर्वायि ॥३॥

अन्यानंद जिनदभिमगम । अनंदमदिर शिवपुग्धाम । धा० व०  
 ॐ श्री न्यानन्दाय नमं निर्वायि ॥४॥

पुष्टुपकोत्पुष्टकजिन इश । कुण्डिन कमलनयननिजिदीश । धा० व०  
 ॐ श्री पुष्टुपकोत्पुष्टकाय नमं निर्वायि ॥५॥

त्रिभुवन मंडनमंडन सहा । मुंडक नाम नमो निरमल्ल । धा० व०

ॐ ह्रीं मुडकाय अर्घं निर्वापामि ॥६॥

प्रहतहते कंदर्प प्रचंड । सेवत सुरनरनाग रमंड । धा० व० ।

ॐ ह्रीं महताय अर्घं निर्वापामि ॥७॥

मदनसिंघ प्रणमो करजोर । वेगि प्रभु भवसंकल तोर । धा० व०

ॐ ह्रीं मदनसिंघाय अर्घं निर्वापामि ॥८॥

इंद्र समूह नमै पदकंज । हसमिंद्र जिन भो भै भंज । धा० व०

ॐ ह्रीं हंसमिंद्राय अर्घं निर्वापामि ॥९॥

इंद्रचंद्र दिग सेवत पाय । चंद्र पार्थजिन गुनसमुदाय । धा० व०

ॐ ह्रीं चंद्रगर्वाय अर्घं निर्वापामि ॥१०॥

भाविकअब्जवोधकजिमभान । अब्जवोधजिन सुगुननिधान । धा०

ॐ ह्रीं अब्जवोधाय अर्घं निर्वापामि ॥११॥

जिनको रूप मन्त्रि द्रश्यात । जिनवल्लभसो जगविर्यात । था०  
 ॐ श्री जिनवल्लभाय अर्थ निर्वाणाय ॥१३॥

ॐ श्री गौतमाय ।

विभ्रूति अनूप लगे जुगजास । विभ्रूत जिनेश नमो सुखराश ।

तृतीय गुराचल उत्तर यान । जज्ञो ऐश्वर्य वर्तसु मान ॥१३॥  
 ॐ श्री विभ्रूताय अर्थ निर्वाणाय ।

कृच्छ्राजिनेश सुखामृतकुंड नमो जिनको नित वासवकुंड ॥ तृ०  
 ॐ श्री कृच्छ्राय अर्थ निर्वाणाय ॥१४॥

सुवर्ण शरीर लोम सुखदाय । सुवर्णशरीर नमो जिनराय ॥ तृ०  
 ॐ श्री सुवर्णशरीराय अर्थ निर्वाणाय ॥१५॥

महा जगोम जयवंत मरूप । नमो हरिवाम सुधागम कर ॥ तृ०  
 ॐ श्री हरिवामाय अर्थ निर्वाणाय ॥१६॥

नमैन्नित प्रीतधरं भवि जाहि । नमो प्रियमित्र धगे उर ताहि । तृ० ।

ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१७॥

निजातम धर्म समस्त धरेय । सुधर्म जिनेसुर कर्म हेरेय । तृ० ।

ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१८॥

प्रिया रतनेश जिनेश नमाम । रमाशिव संग क्रियौ विसराम । तृ० ।

ॐ ह्रीं प्रियारत्नाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१९॥

सैवसुर आनंद धारि नमंत । सुनादित नाथ नमो भगवंत । तृ० ।

ॐ ह्रीं नंदनाथाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥२०॥

अखड पदस्त लियौ जिनगज । नमो अमुनीक सैव सुखसाजा । तृ० ।

ॐ ह्रीं अथानीकाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥२१॥

सुपर्व जिनेशानि गर्व लशेय । सदा समद्रिष्टिय चित्तधरेय । तृ० ।

ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥२२॥

तततततन अततन चित्तताई । मननननननन फिरि किल्लडाई ॥ १० ॥  
 शमशमशमशमशमप्रसक्तनी । दमदमदमदमदमदमदसक्तनी ॥  
 भगतभार उर अतुल धरे है । सकलकला नृत प्रगट करेहं ॥ ११ ॥  
 निजभय सकलसफल तः करही भगति प्रसाद करमदल मलनी ॥  
 धन्यदेव तुम त्रिसुवन तापन । अशाग्न शान जगत उद्भाग्न ॥ १२ ॥  
 सोपे कृपाकरो जगनायक । देहू सोपसुख अविचल दायक ।  
 वसो मदा उर अंतर सोरे । "तृन्दावन" यदत कर जोरे ॥ १३ ॥  
 धात-जे जे शिवमंडन भवशत खंडन इद्रिनिंदन शुद्धमती ।  
 तृतिथे गेगवत सुगपति ध्यात वगतमान जिन बुद्धपती ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शोभा-जो पूजे मनलाय वगतमान जिनराजपद !

तृतीयैगवत ध्याग भो मंत्र सुख लहि शिवधरे ॥

इत्यादी मंत्र ।

श्री श्री नचयेकेशोरो त्तमान पुना ममागा ।

अथाचलमेरु ऐरावतेऽतीत जिन पूजा प्रारभ्यते ।

स्थापना—(चाल नदी-धराएक की)

दुतिदीप अचल गिराज ऐरावत जानों ।

तित तीत नमों जिनराय चौविश युति ठानों ॥

थापों त्रिविधा करजोर हे त्रिभुवन स्वामी ।

इत आय हरो दुःख धोर कीजे शिवगामी ॥

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्रावतरअवतर सर्वौपट् आदानन

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठांडः स्थापनं ।

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुऐरावतातीजिनअत्रममसन्निहितोभवभवपट्स्वाहा

अथाएक—(पञ्च पूजारे भाई)

नित पूजारे भाई मुक्ततमन जिनराजकौ नित० ।

अचलमेरु उत्तर ऐरावततीत सकल सुखदाई ।



सुरसुरेश पद पूजत जाके तनमन प्रीत उपाई । नि० ॥ टिक ॥

मोहमहामल भोग प्रभु तुम ह्यायक समकत पाई ।

जान्हवीय जलमों हम पूजें । ह्यायक सम्यक दाई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्नीह्रीपाचयमेग्रेगतातीनजिनेभ्यो जल निर्वापामि ॥ १ ॥

ज्ञाना वरनी नाथ प्रभु तुम ज्ञान अनंत उपाई ।

चंद्रन सो पद पूजों जातें ज्ञान अनंत लहई ॥ नि० अ० ॥

ॐ ह्रीं धातुर्नीह्रीपाचयमेग्रेगतातीनजिनेभ्यो सुगंधं निर्वापामि ॥ २ ॥

दृश आवसन नशिनाथ तुम दृश अनंत जगाई ।

तदुल अमल लेय पद पूजों ज्यों अनंत द्विग थाई ॥ नि० अ०

ॐ ह्रीं धातुर्नीह्रीपाचयमेग्रेगतातीनजिनेभ्योऽन्नं निर्वापामि ॥ ३ ॥

अंतगय अरि चरु प्रभु, तुम बल अनंत उपजाई ।

कृल भोगं तुम चरन कमल द्विग ब्यौ अनंत प्रभुताई ॥ नि० अ०

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीतजिनेभ्यः पुणं निर्वपामि ॥४॥

धुधविदनी नाशि लियौ तुम निरुआकुल ठकुराई ।

चरु चढाय पूजों पदपकज ज्यौं अत्राध पदपाई ॥नि०अचल०

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीतजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वपामि ॥५॥

आयुकरम अवगाहन गुन मम रोकि रह्यो जिनराई ।

दीप चढाय जजों प्रभु तुमको जिमि सों गुन उदय कराई ॥नि०

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीतजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

नाम करम सूछिम गुन ढकिकें जग बहु नाच नचाई ।

धूप दहों तुम चरनन आगे सो गुन प्रकट कराई ॥नि०अ०॥

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीतजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥७॥

गोत अगुरुलघु गुन मम रोक्यौ बहु विधि जग भरमाई ।

फलसों पूजत यह फल पावों अजर अमर ठकुराई ॥नि०अ०॥

ॐ ही धातुकीद्वीपाचलमेरुएरावतातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

जल फल सकल ललित लेकर में भगत भाव उमगाई ।  
 जजत तुम त्रिभुवन के नायक मनवांछित सुखपाई ॥  
 नित पूजारे भाई, मुकल रमनि जिनराजकों । नित पूजो रे०  
 अचलमेरु उत्तर ऐगवत तीत सकल सुखदाई ॥

सु सुशेष पद पूजत जाके तनमन प्रीत लगाई ॥ नित पू० ।  
 ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ८ ॥

अथ प्रत्येकार्थ ।

शेखा—सुगिरि सम गुरु जगतगुरु श्रीशेखर जिनराय ।

अचलैरावन तीत पद पूजों मन वचकाय ॥१॥

ॐ ॥ सुमेरुदेव्यं निर्गमि ।

जिनकृत जिनकृत मोद जग मुकत रमनिपति त्राय ॥ अ०

ॐ श्री विष्णुनाथ जयं निर्गमि ॥२॥

कैटभनाथ जपों सदा मनवांछित उपजाय ॥ अचलै०॥३॥

ॐ ही कैटभनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥३॥

श्री प्रशस्त जिनचंद्र कों पूजत पाप पलाय ॥ अचलै०॥४॥

ॐ ही प्रशस्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥४॥

निरद्वै जिन अरि दमन क्रिय दया धुरंधरं राय ॥ अचलै०॥५॥

ॐ ही निर्दयाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥५॥

निजकुल कमल दिनंद हैं श्रीकुलकर जिनराय ॥ अ० ॥६॥

ॐ ही कुलकराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥६॥

वर्धमान गुन वृद्धजुत उदय अपूर्व पाय ॥ अचलै० ॥७॥

ॐ ही वर्द्धमानाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥७॥

अमृत इंद्र गुनवृंद प्रभु अमृत इंद्र पदपाय ॥ अचलै० ॥८॥

ॐ ही अमृतदेवे अर्घ्यं निर्वपामि ॥८॥

संख्यानंद जिनंद नित आनंद अमित कराय ॥ अच०॥९॥

ॐ ह्रीं मर्यानंदाय अर्थं निर्वाणामि ॥०॥

कल्पद्रुम सम देत सुख कल्पप्रकृत जिनराय ॥ अच० ॥१०॥

ॐ ह्रीं कल्पद्रुमाय अर्थं निर्वाणामि ॥१०॥

मेवत हरि नित तासको श्रीहरिनाय जिनराय ॥ अच० ॥१३॥

ॐ ह्रीं हरिनाथाय अर्थं निर्वाणामि ॥१३॥

बहु स्वामी त्रिभुवन तिलक मेवत त्रिभुवन पाय ॥ अ० ॥१३॥

ॐ ह्रीं बहुस्वामिने अर्थं निर्वाणामि ॥१३॥

उद मारुवत प्रन्नार ५॥५॥५॥५ भात वर्णं १०

भद्र जिनेसु भद्र भेरं । आनंद अत्रुधि वृद्ध करे ।

भेम्बृतीय ऐरावत हे । तीन जेजे सुख पावत हे ॥१४॥

ॐ ह्रीं पद्मेराय अर्थं निर्वाणामि ॥१४॥

श्रीप्रविषात जिनेश वरा कर्म कुलाचल भेद रुग ॥ भे०ती

ॐ नं प्रतिपानाय अर्थं निर्वाणामि ॥१५॥

पूरन ब्रह्म विचार जती । ब्रह्म सुचारिणि शुद्धमती ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचारिनाय अर्थं निर्वपामि ॥ १६ ॥

मुक्तसती जुत केलि करै । नाथ वियोखित दुःख है ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं वियोपिताय अर्थं निर्वपामि ॥ १७ ॥

शाक्षियरूप त्रिलोक लखै । नाथ अशाक्षिक शर्म चखै ॥ मे०

ॐ ह्रीं अशाक्षिकाय अर्थं निर्वपामि ॥ १८ ॥

चारित सैन प्रनाम करौं ज्यौं जिन चारित भार धरा ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं चारित्रसेनाय अर्थं निर्वपामि ॥ १९ ॥

जो परणामिक भाव यहै सो परणामिक देव कहै ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं परिणामिकाय अर्थं निर्वपामि ॥ २० ॥

शाश्वत आनंद देत हमें शाश्वतनाथ कलंक दमें ॥ मे०ती० ॥

ॐ ह्रीं शाश्वतनाथाय अर्थं निर्वपामि ॥ २१ ॥

श्रीनिधिनाथ प्रनाम करौं ज्यौं निधि सार सुधाम भरो ॥ मे०

ॐ श्रीं निगिनाथाय अर्पे निर्यामि ॥२०॥

कौशिकनाथ दयाल महा दारिद्रि दुःखस्य कुकर्म दहा ॥ भे०ती०

ॐ श्रीं कौशिकनाथ अर्पे निर्यामि ॥२१॥

श्रीधरमेश जिनेश नमो आनन्दकंद समस्त पमो ।

भैरवृतीय पंगवत हे तीत जैजे सुखपावत हे ॥२४॥

ॐ श्रीं धर्मेश्वराय अर्पे निर्यामि ॥२४॥

मोतीमान छंद ।

वृत्तिय सुगच्छ उत्तर जान । अतीत जिनेश महागुनगवान ।

जजो पद पूरण अर्थ चहाय । कलेश अज्ञेप सर्वे नशिजाय ॥

ॐ श्रीं धारुकीतीगान्धर्वेश्वरायतलजिनग्यो प्रणोये निर्यामि ।

जयमान्ये ।

प०॥ जैजे करुनाथन श्रीचर वानलन भैवकजन आनंद कर ॥

जैजे जयदायक मत्र विधित्तायक कर्मकलंक अशेष हरा ॥२॥

जै जै सुमेरू थिर मेरु जेम । जै जै कृत जिनकृत सुकृत छेम ।  
 जै कैटभ अघकानन हुताश । जै जै प्रशस्त भवि भरत आश ॥२॥  
 जै निर्दय जिन जुग दयार्हिश । जै जै कुलकर नुत सकल ईश ॥  
 जै वर्द्धमान गुन वृद्ध सुष्ट । जै अभित्तिद्रिय आनंद पुष्ट ॥३॥  
 जै सख्यानंद अनंत ज्ञान । जै कल्पकृत कृत सुख निधान ॥  
 हरिसेवत नित हरिनाथ देवा बहुस्वामि सकल सुर करतसेव ॥४॥  
 जै भार्गव भवतप दमन सूर । जै भद्रदेव भवि भद्रपूर ॥  
 प्रधिपातन जिन दारिद्र हर्ण । जिन ब्रह्मचारि चारित्र भर्ण ॥५॥  
 जै जैति वियोषित शिव रमेश । जै जैति अशाक्षिक भवतरेश ॥  
 जै चारितसेन दयाल धीर । परिनामक जिनवर हरत पीर ॥६॥  
 शाश्वतजिन शाश्वत थान देत । निधिनाथ निधान करत निकेत ॥  
 कौशिक जिन कौशिकराज देहि । धरमेश तुरित भवतार देहि ॥७॥  
 ए भूत चतुरविशति जिनेश । गिरि अचलैरावत सुगुन भेश ॥



गन्धर मुनिभ्यावत सुजयराश। सुर असुर जासके भये दाजा ॥८॥  
 नर विद्याभर सेवत त्रिकाल। गुन गावत नाचत चरत भाल ॥  
 किन्नर नारद तुवर अवस्थ। दा हा हृ हृ विश्वासुवस्थ ॥०॥  
 एनाचत धेउ थेउ उमंग। लय तान मान गावत सुरंग ॥  
 तमलां अम्लां त्रिमि त्रिमि मृदंग। संनाग्रदि माग्रादि सारगिसग?०  
 पगनूपुर अननन अनननाय। कर्दकि त्रिमि किनिनिनिनि सुगाय  
 करनाल लाल करमे लसंत। किरिकिरि शुकि शुकि भावगि रचन?०  
 रसगम प्रगट लुन करत भक्त। पावत समाज सम्यक्त्त व्यक्त ॥  
 हम तुम पद चदन चार चार। वृष चंदनद भवि "चूद" तार ॥२॥  
 वसा-जे जे जगंजन भूषतम भंजन भविकंजन जिनगजवग।  
 नित मुनिजनबंधन पाप निकंदत पावत आतम ज्ञानवरा ॥  
 ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गान्धी ३३-तृतीय अचलमेरु इन्दौरगावते है।  
 नित अतिन जिनसंमध्य कृ भायते है ॥

२१०

तिन पद जुगसारं जो जलै प्रीतलाई ।

सुरनर सुससार भोगि सो सुक्ति जाई ॥

इत्याशीर्वाद -

इत्ति श्रीअचलमेखेणरावतातीत चौवीसी पूजा संपूर्णा ।

अथ अचलमेखेणरावतभावीजिन पूजा प्रारब्धते

लक्ष्मीधरा उद ।

मेरु तीजोमहाशोभनीकं लसं । क्षेत्रेणरावते उत्तरे सो वसे ॥  
तासमें भावतव्यं जिनेसं कही । यापिहीं अत्र आवो प्रभूजीसही

ॐ ही अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्रावतर अमतर संवैपट् आदानन ।

ॐ ही अचलैरावतभाविचतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन ।

ॐ ही अचलैरावतभावीजिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वपट् स्वाहा ।

छद सारगी न्वनि सव गुरु वर्ण ।

गंगा भंगा पानी चंगा झारी धारी आनी है ।

धार तीनों ताकी दीनों तीनों तापं हानी हे ॥  
तीजो मेरं ताके हेरं ऐशवंतं राजें हें ।

भावी देवं कीजै सेवं जो आनंदे साजें हें ॥

ॐ ह्रीं धाड्विधीयाचयेरणरातभाविजिनेभ्यो जलं निर्णयामि ॥१॥

कुंभूमाद्यै गंधं सारं करपूगैघं ले आयो ।

अंबुत्कृष्टा वृषा सुष्टा दुष्टा तापं कूं घायो ॥ ती० भा० ॥

ॐ ह्रीं धातृरिद्धीयाचयेरणरातभाविजिनेभ्यश्चन्दन निर्णयामि ॥२॥

शाला ह्यला शुद्धं बुद्धं सुक्ता के से शुक्ता हें ।

सो ले साग पुंजे वाग भो भे सो हो सुक्ता हें ॥ ती० भा०

ॐ ह्रीं धातृरिद्धीयाचयेरणरातभाविजिनेभ्यो अल निर्णयामि ॥३॥

नेना वाना कौ आमोदे गेमे कूले आना हे ।

१ अल वग वृषु । २ स्य ३ जल मे अर्च्यो वग ।

तासों स्वामी सेवों आमी कामों वाना हाना है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुकिद्वीपाचलमेरुरावतभाविजिनेभ्य पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

फेनी श्रेनी खाने ताने साजे मिष्टा पुष्टा है ।

सो लै थारी आगे थारी वाधा नष्टा दुष्टा है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुकिद्वीपाचलमेरुरावतभाविजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥५॥

वी को दीयौँ ऐसो लीयो जासौँ भाँतँ नाशा है ।

तासों पूँजै ऐसो हूँजै तीनों लोकं भाशा है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुकिद्वीपाचलमेरुरावतभाविजिनेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

गंधा धारं धूपोदारं सेवों वन्ही माही है ।

कूरं कर्म होवे चूरं धूमा घूमोडाही है ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुकिद्वीपाचलमेरुरावतभाविजिनेभ्यो घूप निर्वपामि ॥७॥

पुंगी नारंगी जंबीरा एला केला लाए हैं ।

तासो सेवो आपा वेवो साता "वृद्धो" पाये हें ॥ ती० भा० ॥

ॐ ही धातुनिटीपाचल्येःप्लुगानभाविजिनेभ्यः कलं निर्वयापि ॥८॥

आडों द्रव्यो सेनी पूजो आच्छे वाजे वाजे हे ।

नाचो राचो शणो आवो मोक्ष स्थानं पाजे हें ।

तीजो भेर ताके हेरं एगवेंत राजे हें ।

भावी देवा कीजे मेवा सो आनंदे साजे हें ॥

ॐ ही धातुनिटीपाचल्येःप्लुगानभाविजिनेभ्यो ऽर्धं निर्वयापि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्थ ।

लीलवंग उद—

श्री गवि इंद्र जिनंद नमाभी । श्वेदविवर्द्धित अर्जित स्वामी ।  
 गेरु तृतीय एगवत यानो । भाविय देव जजो धरिध्वानो ॥१॥  
 ॐ ही गवित्येऽर्धं निर्वयापि ॥१॥

निर्मल काय जसे सुखदाई । श्री सुकुमालक मोहि सहाई । में०

ॐ ही सुकुमालिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

प्रश्रितवंत नमो भगवता । क्षीर समान सुस्त धरंता । में० भा०

ॐ ही प्रश्रितवन्तैर्ध्वं निर्वपामि ॥३॥

श्रीकुलरत्न जिनेसुर मानो । चारिउ थान समान प्रमानो में०॥४॥

ॐ ही कुलरत्नाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धर्म जिनेसुर आनंदकारी । आदि शरीर लैसे अविकारी में०॥५॥

ॐ हां धर्मनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

शोभ जिनेंद अमंद प्रतापी । सुंदररूप सुधारस वापी । में०॥६॥

ॐ ही शोभजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

श्रीवसुदेव जिनिद नमाभी । सौरभकाय धेरं अभिरामी में०॥७॥

ॐ ही वसुदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

श्रीअभिनंदन आनंददाता । साष्ट सहस्र सुलक्षणगता में० ॥८॥

ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्थं निर्यामि ॥८॥

श्रीसखेश नमो वरज्ञानी । अप्रमितं बलजामुबलानीमिं॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वनायाय अर्थं निर्यामि ॥९॥

नेन महाप्रिय हे हितकरि । नाथ मुदिष्ट नमो भवतगि॥मि०॥१०॥

ॐ ह्रीं मुदिष्टनायाय अर्थं निर्यामि ॥१०॥

उद तोटक—

जसु अर्थं सुमागथवेन खिरे । जिन शिष्ट नमो भवसिंधुतिरे ॥  
तृतीयानलको गेगवत हे । भवतद्य जेजे मुखपावत हे ॥११॥

ॐ ह्रीं त्रिव्यजिनाय अर्थं निर्यामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन थन्यतेन परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुयन्वार अर्थं निर्यामि ॥१२॥

फानफुल सर्व गितुके निर्वणे । जह शोमशयी प्रभुजी हुकजे ॥तृ०

ॐ ह्रीं शोमचटाप अर्थं निर्यामि ॥१३॥

हितदर्पनतुल्य प्रकाश धरै । जहँ क्षेत्र अधीश निवास करै ॥ तू०

ॐ ही क्षेत्राधीशाय अर्घ्यं निर्वाणामि ॥ १३ ॥

नित आनंद अंबुधि वृद्ध करै । सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरे ॥ तू०

ॐ ही सदंतिकाय अर्घ्यं निर्वाणामि ॥ १५ ॥

अनुकूल वयार पुनीत वहै । जहँ श्रीजिनराज जयंत अहै ॥ तू०

ॐ ही जयताय अर्घ्यं निर्वाणामि ॥ १६ ॥

तृण कटक धूलि विनाशित है । जिनराज तमोरिपु मोचित है ॥ तू०

ॐ ही तमोरिपुवेऽर्घ्यं निर्वाणामि ॥ १७ ॥

जलगध समेत पुनीत परै । जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥ तू०

ॐ ही निर्मलाय अर्घ्यं निर्वाणामि ॥ १८ ॥

नभमें कनकंजन पै चलही । कृत पापस विघ्न सबै दलही ॥ तू०

ॐ ही कृतपापार्थाय अर्घ्यं निर्वाणामि ॥ १९ ॥

फलभार सबैथल धान्य नये । जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥ तू०



ॐ ह्रीं अभिनन्दाय अर्घ्यं निर्घामि ॥८॥

श्रीसखेश नमो वरज्ञानी । अप्रमितं बलं जामुखखानीमिं॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वनायाय अर्घ्यं निर्घामि ॥९॥

जैन महाप्रियं है हितकरी । नाथमुद्रिष्ट नमो भवतरीमिं॥१०॥

ॐ ह्रीं मुद्रिष्टनाथाय अर्घ्यं निर्घामि ॥१०॥

छंद तोटक—

जसु अर्थ सुमागधवेन खिरि । जिन शिष्ट नमो भवसिंधुतिरे ॥

वृत्तियाचलको ऐरावत है । भवतव्य जजें सुखपावत है ॥११॥

ॐ ह्रीं शिष्टजिनाय अर्घ्यं निर्घामि ॥११॥

जगजीव परस्परमित्र भये । जिन धन्यतने परभाव लये ॥ तृ०

ॐ ह्रीं सुधन्याय अर्घ्यं निर्घामि ॥१२॥

फलफूल सर्वै रितुके निवसे । जह शोमशशी प्रभुजी हुलये ॥तृ०

ॐ ह्रीं शोमचंद्राय अर्घ्यं निर्घामि ॥१३॥

छितदर्पनतुल्य प्रकाश धरेँ । जहँ क्षेत्र अर्थाश निवास करै ॥तु०

ॐ ही क्षेत्राधीशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

नित आनंद अंबुधि वृद्ध करै । सु सदंतिकनाथ दरिद्र हरे ॥तु०

ॐ ही सदंतिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

अतुकूल वयार पुनीत वहै । जहँ श्रीजिनराज जयंत अहै ॥तु०

ॐ ही जयताय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

तृण कटक धूलि विनाशित हे । जिनराज तमोरिपु मोचित है ॥तु०

ॐ ही तमोरिपवेऽर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जलगंध समेत पुनीत परै । जिन निर्मल सो मम पाप हरै ॥तु०

ॐ ही निर्मलाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

नभमें कनकंजन पै चलही । कृत पारस विघ्न सबै दलही ॥तु०

ॐ ही कृतपारसाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

फलभार सबैथल धान्य नये । जिनबोधसुलाभप्रभाव भये ॥तु०

ॐ ह्रीं गोधराभाय अर्घं निर्मायामि ॥२०॥

नमनिर्मल ओं दिगसुन्दर हे । बहुनद नमंत पुंद्र हे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं गृहनदाय अर्घं निर्मायामि ॥२१॥

सुखेसत हें भविजीयनिकों । जिनद्रिष्ट सुधावत्र पीवनकों । तृ०

ॐ ह्रीं दिष्टस्वामिने अर्घं निर्मायामि ॥२२॥

वृषचक्र धोर अरिचक्र हें । जिन कुंकुम आभ सुवर्ण करें ॥ तृ०

ॐ ह्रीं कुकुमाभाय अर्घं निर्मायामि ॥२३॥

वसु मंगल द्रव्य पुनीत धरें । जिनवक्ष सुईश कलेश हरें ॥

तृतीयाचलको ऐरावत हे । भवतव्य जजें सुख पावत हे ॥

ॐ ह्रीं श्लेगाय अर्घं निर्मायामि ॥२४॥

यह पूरन अर्घ लियो करम में । पद पूजन हों प्रभुको घरमे ॥ तृ०

ॐ ह्रीं भारीचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं पूर्णार्घं निर्मायामि स्वाहा ।

जयमाला ।

ध्या-जै जै मंडित पून पंडित विघ्न विहंडित ज्ञानधरा ।  
सेवक प्रणरक्षक त्रिभुवन लक्षक लक्ष अमदित देतवरा ॥

( उद् तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी )

जै रवींद्र जिनद नमस्ते । सुकुमालिक जगचंद्र नमस्ते ॥  
प्रथीवंत महंत नमस्ते । जै कुलरत्न भवंत नमस्ते ॥ २ ॥  
धर्मनाथ कृत शर्म नमस्ते । शोमनाथ पद पर्म नमस्ते ॥  
वरुणनाथ दुग्दहरण नमस्ते । अभिनंदन सुचक्रन नमस्ते ॥ ३ ॥  
सर्वनाथ निग्दीप नमस्ते । जिन सुदिष्ट कृतसोव नमस्ते ।  
शिष्टनाथ कृत ऽष्ट नमस्ते । जै गुवन्य युनि मिष्ट नमस्ते ॥ ४ ॥  
शोमचंद्र निरुलंक नमस्ते । क्षेत्राधीश निशक नमस्ते ॥  
जै संदंतरु जिनेश नमस्ते । जै जयन वप भेश नमस्ते ॥५॥  
देव तमोरिषु पात्र नमस्ते । निर्मल जिन सुगदाय नमस्ते ॥  
जै कृतपारशनाथ नमस्ते । बांध लाभ शिव साथ नमस्ते ॥६॥

जै बहुनंद अमंद नमस्ते । द्विष्ट स्वामि सुखकंद नमस्ते ॥  
 कुंकुमाभ निरफद नमस्ते । जै वक्षेश अदंद नमस्ते ॥७॥  
 ए भाषी चौवीश नमस्ते । अचलैरायत धीश नमस्ते ॥  
 सेवन इंद समस्त नमस्ते । जानन जुगपत वस्तु नमस्ते ॥८॥  
 विघ्नमहीधर विज्जु नमस्ते । जै ऊरधिगति रिज्जु नमस्ते ॥  
 सुकृतिरमनि मह शिज्जु नमस्ते । त्रिसुवन आनंद क्रिज्जु नमस्ते  
 ध्यावत सज्जन सत नमस्ते । पावतु है भव अत नमस्ते ॥  
 गुन अनत अधिकार नमस्ते । तारन तरन उदार नमस्ते ॥१०॥  
 सकल कलेश निरवार नमस्ते । दारिद दुःख परिहार नमस्ते ॥  
 वांछित पद दातार नमस्ते । “बुंदावन” विस्तार नमस्ते ॥११॥

षष्ठा-जै जिननायक, विघ्नविनायक सवसुखदायक देववरा ।  
 हम शरनें आये शीशनवाये गुनगन गाये सेवकरा ॥१२॥

ॐ ही धातुकिंदीपाचलमेरुपरावतभाविजिनेभ्यो महार्घं निर्णयामि ।

अथाग्नीर्वीर्यः । गीताहंन्द्र—

जो दख अरु वरभाय सेती जैजे जिन चौवीशजी ।  
वर धातुदीप अचल सुषेरावते भावी ईशजी ॥

सो पुत्रमित्रकलत्र संपत सुख लहे नवनीतजी ।  
पुनिशक्र चक्रतनौ सुपद लहिहोइ सुकत निचीतजी ॥

इति श्रीअचलैराजतर्भागी चौवीशी पूजा संपूर्णा ।

वृत्तिगमेरु संबंधी पूजा संपूर्णा ।

अथ पुष्करार्ध्दीपमंदिरमेरुसंबंधीविरहमान  
जिनचारिपूजा प्रारभ्यते ।

छद्द अमृतच्चौन त्रिभगी पर ।

दमकततनसारं रविशशियारं अतिदुतिथारं मुखकारं ।  
भ्रमतम शतखंडन शिवमगमंडन कलुषविहंडन दुखदारं ॥

त्रितिदीप सुहेरं मंदमेरं पूरवेहरं श्रुति सज्जी ।

तित विहर सुमानं चहु भगवानं सुयुननियानं धुनिगज्जै॥१॥

गज्जत्र धुनि सज्जनसुनि रज्जनमन ।

सज्जम नम भज्जम गम मज्जज्जन नन ॥

चंचनरन सुंधावुभकरन सुसचस्समकत ।

ठःठः थपत सुज्जे जपत प्रभादंदमकत ॥२॥

ॐ ह्रीं मदिग्मेरुविदेहस्यपिहरमानजिन चंद्राहु-भुजगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वर  
अत्रातर अतर मयापद् आपाननं ।

ॐ ह्रीं मदिग्मेरुविदेहस्यपिहरमानजिन चंद्राहु-भुजगप्रभ-ईश्वर-नमीश्वर  
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।

ॐ ह्रीं मदिग्मेरुविदेहस्यपिहरमानजिन चंद्राहु भुजगप्रभ ईश्वरनमीश्वर  
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहाः ।

## अथाष्टकं ।

प्रमिताक्षरा उद—

जल भृग माहि भिर धार करों । पदपूजि नाथ दुखदोपहरों ।  
त्रिति द्वीपमंदिर विदेहनिमें । जिनचार सार जजि गेहनिमें ॥  
ॐ ही चंद्रवाहु-भुजंगप्रभ ईश्वर-नमीश्वरेश्वरो-जन्ममृत्युविनाशाय जलं ॥१॥

वरगंध चंदन कपूर घशै । जिनराज पूजि भवताप नशै ॥त्रि०  
ॐ ही चंद्रवाहु-सुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेश्वरो सत्सारातापनाशाय गंव ॥२॥

शुभशालि मुक्त मनु शुक्त समंतसुपुंज शुंज भवदुःख गमं ॥त्रि०  
ॐ ही चंद्रवाहु-मुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेश्वरो अक्षयपदप्राप्तये अक्षत ॥३॥

निरदोष फूल सुख मूल महा । तुव अग्रधारि सरशूल दहा ॥त्रि०  
ॐ ही चंद्रवाहु-सुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेश्वर्य कामनाशाय पुष्पं ॥४॥

रसपूर सारचरु भूरिकरा । जजते शुधादि अरिहूर हरा ॥ त्रि०  
ॐ ही चंद्रवाहु-सुजंगप्रभ-ईश्वरनमीश्वरेश्वरो नैवेद्यं निर्यपामि ॥५॥



मनि दीपजोत तम नाशतु है । पद सेवते सुगुन भासतु है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-सुजंगमभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो दीपं निर्वपामि ॥६॥

दशगंध खेयमन माचतु है । मनु धूमधूम मिशि नाचतु है ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-सुजंगमभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

रसमिष्ट शिष्ट फल सुष्ट धरो । जिनचंद्र वृंद सुखकंद वरो ॥ त्रि०

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-सुजंगमभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥

वसुद्रव्य सर्वं सजि अर्घकरो । पद पूजिसार शिवनारि वरो ॥

त्रिति दीप मंदिर विदेहनिभे । जिन चार सार जजि गेहनिभे ॥

ॐ ह्रीं चंद्रवाहु-सुजंगमभ-ईश्वरनमीश्वरेभ्यो अर्घं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

आर्घ्य छद-पुष्करमंदिर एवं, सीतोत्तर विहरमान जिनदेवं ।

श्रीचंद्रवाहु सेवं, समवशृत संस्थित वसूभेवं ॥१॥

रेणुकमाता ख्याता, तमों पिता देवनंद विल्याता ।  
नगर विनीतं जाना, जजों सदा पद्मअंक सुखदाता ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धीपे . मंदिरमेकवयिभीतोत्तरतटे पद्मसंमंडलमंडितचक्र  
वर्त्यादिसेव्यमानविहरमानजिन चंद्रबाहुस्वामिने उर्व ॥१॥

पुष्करमंदिर जानं सीता दच्छिन विदेहथित मानं ।

देव भुजंग प्रमानं, पूजों समवशृत भगवानं ॥२॥

महिमा माता जानों, पिता महाबल दयाल गुनवानों ।

लेच्छन चंद्र प्रमानों विजया नगरी त्रिलोकपति थानों ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धीपे मंदिरमेरु सीतादक्षिणतटे पद्मसंमंडलमंडितचक्र-  
वर्त्यादि सेव्यमान जिन भुजंगप्रभाय अर्थ ॥२॥

पुष्करमंदिर जोहै सीतोदा दक्षिणे सुमन मोहै ।

ईश्वर स्वामी सोहैं ताहि जजें सर्व संपदा होहैं ॥३॥

ज्वाला जतनी राजें. नगर मुमीमा अनूप ह्यवि द्वडि ।

गल्लेन जासुगजे, गवि पदमें चिन्ह कोटि गविलाजे ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पाद्वर्धपेगदिरमेस्मीतोदादशितडे पद्मडमडल्लमडित चक्र-  
र्यादिसेव्यमानविहरमानजिन इंदरनयाय नरे ॥३॥

पुष्कर मंदिर नामी, सीतोदा उत्तरेतु अभिगामी ।

श्रीनिमीथर स्वामी, समवशूनस्थित जजामि शिवगामी ॥१॥

सेना माता जाकी, पिता नमां वीरराण शुभ नाधी ।

वृपलच्छन पद्मा की, नगर अयोध्या प्रमोदपद माकी ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पाद्वर्धपेगदिरमेस्मीतोदायाउत्तरतडे पद्मडमडल्लमडित चक्र-  
वर्यादिसेव्यमानविहरमानजिन नमीडयराय अर्थ ॥४॥

सुदरी ङंद—

त्रितिय पुष्करदीप सुहावनो । प्रथम मंदिर मेरु तथा वनो ॥

तसु विदेहनिमें जिन चारहें । अजन होत भवोदधि पार हैं ॥

ॐ हीं तद्राहृमुजंगप्रहृङ्गनमीश्वरेभ्योऽर्थं पूर्णार्थं निर्देसाधि ।

अथ जयमाला ।

वरा—जेजे जगवंदन कलुगनिकंदन त्रिभुवनजन आनंद कग ।

जे केवलभानं भूपनमहानं भविकमलानं मोदभग ॥१॥

तोटक ७३—

जे भोजिन चंद सुवाटु महा । जे जेनि मुजंग प्रवंचा कहा ।

श्वर नाथ अनाथ त्रितू । नमि दुश्चर नाथ त्रिलोक पितू ॥२॥

धीपट्टि मंदर धेरु वसै । निचरो गुप्त जत्र विदेह वस ॥

शूत टादशा जोजन हैं । मयि सांमत यत्र प्रयोजन हैं ॥३॥

रस को हेई पान कर । वसु कर्मनि को धरि द्यान करै ॥

करै नहु भांति नटां । गुल गावन नावन भाल नहा ॥४॥

वतु हैं ममनं सननं । धुनि नृप दे अवन नवन ॥

फिनि गुंजत फिनननं । सुर लेव केई तनन तनन ॥५॥

केइ वारह भावन भावत हैं । अपनो गुन आपु लखावत हैं ॥  
 केइ चारित भार सम्हारत है । केइ कर्म ततच्छन जारत है ॥६॥  
 वह धन्य विदेह सुयान सही । शिव मारग नित्त चलै चितही ॥  
 जह आपु विहार पुनीत करै । चवसंघ लिये अघ सघ हरै ॥७॥  
 गनराज जहां धुनि झेलत हैं । भवि को सत्र सशय टेलत हैं ॥  
 रतनत्रय भवि उदोत करै । सुनिके भविजी शिवनारि वरै ॥८॥  
 हम जाचतु है तुमसों जिनजी । निज संनिधिओ विमती सुनजी ॥  
 तुव वैन सुधास पान करों । लखि रूप मैव दुखदद हरों ॥९॥  
 धरा—जैजे जिनदेवं सुरकृत सेवं सुगुनअच्छेवं शुद्धमती ।

शिवसपति दायक विघनविनायक जै जै जै चिद्रूपपती ॥  
 ॐ ह्रीं चद्रवाहु-भुजंगभ-ईश्वर-नमीश्वरेभ्यो महार्घ निर्वपामि ॥१०॥

वसंत तिलका—आशीर्वादः ।

श्रीपुष्करार्द्ध मह मंदिर मेरु काजै ।

ताकी विदेहनि विषे जिनराज राजे ॥  
 पूजे तिन्हें भविक जो बहु भक्ति लाई ।  
 सो सर्वसार सुखभुक्त सु मुक्त जाई ॥

इति मदराचलमेरुशिवाजमानविरहमानजिनपूजा समाप्ता ।

अथ पुष्कारर्द्धदीपमंदिरमेरुभरत  
 वर्तमानचौवीशीपूजा ।

छंद कुंडलिया—

मदरेरु विराजई पुष्कार पूव वोर  
 ताकी दखिछन में लसे भरत छेत्र शुभ ठोर ॥  
 भरत छेत्र शुभ ठोर तहां त्रिशुवन हितकारी ।  
 वरतमान चौथीश ईश पूजे नर नारी ॥

जिन्ह को गुन उर ध्याय मुदित मन जजत पुरंदर ।  
तिन्ह को थापों इहां जहां जिनवर को मंदर ॥

ॐ ही भरत वर्तमान जिन चतुर्विंशतिअत्रावतर अवतर सर्वौपद् आह्वाननं ।  
ॐ ही भरत वर्तमान चतुर्विंशति जिन अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।  
ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनअत्रमम सन्निहितो भवभव षपद्स्थाना ।

अथाष्टकं ।

( चाल जचताल आदि में )

भवसागर तांगेजी, दीन दयाल जिनेसुर जी । भव० ।  
पुष्करदीप शिखरमंदिर के दच्छिन भरत विराजै ।  
वरतमान चौबीश जिनेसुर पूजत भव भै भाजेजी ॥भौ०टिक॥  
गगाजल भरि कनक भृग में तन मन प्रीत उपायो ।  
धारा तीन करत पद आगे करम कलक हरायौ जी ॥ भव० ॥

ॐ ह्रीं भगवतर्त्तमानचतुर्भुविगिजिनममृहेभ्यो जल निर्गामि ॥१॥

केशर चंदन कदली नंदन दांढनिकंदन लायो ।

शिव तिग जिनवर सुम पद पूजत सब दुखदंद नशायौजी ॥ भौ० ॥

ॐ ह्रीं भगवतर्त्तमानचतुर्भुविगिजिनममृहेभ्यो गध निर्गामि ॥२॥

तंडुल मंडुल शोरभि मंडित अमल अखंड सोहायो ।

पुंज धगत दुखदद हगत सुखकंद भगत मगमायौजी ॥ भव० ॥

ॐ ह्रीं भगवतर्त्तमानचतुर्भुविगिजिनममृहेभ्यस्तदुलं निर्गामि ॥३॥

सुमन सुमन सम सुवरन थारी सुवरन थार भरायो ।

मनमथमदमथ नाथ लुम्हे लखि हाथ साथ शिरनायोजी भौ०

ॐ ह्रीं भगवतर्त्तमानचतुर्भुविगिजिनममृहेभ्यः पुण निर्गामि ॥४॥

धेवर वावर फेनी श्रेनी खाजे ताजे भायो ।

धुधारोग निखारन कारन मनमुख ले शिरनायोजी ॥ भौ० ॥



ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यश्चंद्रं निर्वपामि ॥५॥

जगमग जोति होत दश दिश में ऐसो दीप अनायो ।

तासो तुम पद पूजत संशय विभ्रममोह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योदीपं निर्वपामि ॥६॥

दशविध गंध पुनीतम लै करि खेवत शौरभि ह्यायौ ।

अष्ट करम मम दुष्ट जरत है धूम घूमसु उड़ायौजी ॥भौ०॥

ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

सुरस वरन रसना मन भावन पक्क सुफल उपगायौ ।

पूजत चरन कमल जिनवर के विघनसमूह नशायौजी ॥भौ०॥

ॐ ही भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनसमूहेभ्यः फल निर्वपामि ॥८॥

आठों द्रव मिलाय मनोहर हरष हरष गुनगायौ ।

पूजत चरन कमल जिनवर के शिवतरु वीज बुवायौ ।

भौ सागर तारो जी दीन दयाल सुरेसुरजी ॥भव॥  
 पुष्कर दीप शिखर मंदर के दखिछन भरत विराजे ।  
 वरतमान चौबीश जिनेसुर पूजत भौ भै भाजे जी भवसा० ॥  
 ॐ ह्रीं भरतवर्तमानचतुर्विंशतिजिन समूहेभ्योऽर्घं निर्वापामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ

पाईता छद—

शत आठ कोश सुभिछं । जिन जगन्नाथ क्रिय सुच्छं ।  
 गिरि मंदिर भरत सुहायौ । जजि वरतमान सुखपायो ॥१॥

ॐ ह्रीं जगन्नाथाय अर्घं निर्वापामि ॥१॥

नभ माहिचलै जिन स्वामी ।जिनदेव प्रभाश नमामी ।गि० २।

ॐ ह्रीं प्रभाशाय अर्घं निर्वापामि ॥२॥

नाहि जीव जहां वथ हो हे । जिन सूर स्वामि मम सो है । गि० ३

ॐ ही सूरस्वमिन्दर्धं निर्वपामि ॥३॥  
 नहि कवलाहार करै हूँ । भरतेश कलेश हरै हूँ ॥ गि० ४ ॥  
 ॐ ही भरतेशाय अर्धं निर्वपामि ॥४॥  
 उपसर्गं वितीत विराजै । जिन दीर्घानन छवि छाजै । गि० ५  
 ॐ ही दीर्घाननाय अर्धं निर्वपामि ॥५॥  
 चतुरानन मूगति दरसै । सुनिजात कीर्त सुख सरसै । गि० ६॥  
 ॐ ही विजातकीर्तयेऽर्धं निर्वपामि ॥६॥  
 सव विद्या के पति जानों । अवशानन सो पहिचानों । गि० ७  
 ॐ हा अनगाननाय अर्धं निर्वपामि ॥७॥  
 तन की न परै परछाई । सुप्रबोधन देव कहाही । गि० ८॥  
 ॐ ही प्रबोधनाय अर्धं निर्वपामि ॥८॥  
 द्विग में न निमेष लगे हूँ । सुतपोनिधि ज्ञान पैगै द्वै गि० ९  
 ॐ हा तपोनिधयेऽर्धं निर्वपामि ॥९॥

नखकेश वैढे नहि जाकी । जिन पावक नाम सुताको ॥ गि०

ॐ ही पापकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छद्म रथोद्धता—

शोक चूरन अशोक वृक्ष हे । सो जिनेश त्रिपुरेश इच्छेहें ।

पुंजकार्द्ध गिरि मंदरें सही । भर्तवर्तत जजामि हां यही ११

ॐ ही त्रिपुरेयाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

पुष्पवृष्टि नभतें जहां परै । शोगतेश सरशूल कों हरे ॥ पु०

ॐ ही शोगताय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

दिग्भवेन सुखसों जहां खिरै । श्रीयवास सुखराशकों भरे । पु०

ॐ हीं श्रीयसाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

चौर चौसठ सुरेश दारही । श्री मनोहर कलेश टारही ॥ पु० १५

ॐ मनोहराय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

सिंहपीठ पर जे विराजही । श्री जिनेश शुभकर्म छाजही ॥ पु०

ॐ ही शुभकर्मसाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

कायक्रांति कृतमंडला कृतं । इष्ट सेवक सुचित्त में धृतं ॥ पु०

ॐ ही इष्टसेवकाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

देवदुंदुभि अकाश में वज्रै । श्रीजिनेंद्र अमलेंद्र में भजै ॥ पु०

ॐ ही अमलेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

तीनछत्र तिहु रत्नसे लशै । धर्मवाश जिन त्रासकों नशै ॥ पु०

ॐ ही धर्मत्रासाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

छद्द मोतीदाम—

अनंत सुध्यायक ज्ञान महान । प्रशाद जिनेश धरें अमलान ।

सुमदर भारत दृच्छिन सेत । जजों जिन वर्तत है छविदेत ॥

ॐ ही प्रशादाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

अनंत अगाध लशै द्विग जास । प्रभामृग अंक भरै भविआश ॥ सु०

ॐ ही प्रभामृगांकाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

अनंत सुखामृत अदभुत कूप । नमों अकलंक निशंकसरूप ॥ सु० ।

ॐ हौं अकलंकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २१ ॥

अनंत अवाधित वीरज जास । नमों स्फटिकप्रभुकों शिवआस । सु०

ॐ हौं स्फटिकप्रभाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २२ ॥

छद् भुजंग द्रयात् ।

हनुं दोष अप्पादशौं मूलसेती । गनेंद्रं जिनेंद्रं नमों सुक्तहेती ।

जजौं मंदिराख्या चले भर्तं थानों गुणग्रामधारी प्रभूर्वर्तमानों ॥

ॐ ह्रीं गनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २३ ॥

चिदानंदकोध्यानधारे विराजें । नमों ध्यानस्वामी असह्यध्यान भजें

जजौं मंदिराख्याचले भर्तं थानों । गुणग्रामधारी प्रभूर्वर्तमानों ॥

ॐ हौं ध्यानजिनाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २४ ॥

लोलतरंग छंद—

पूरन अर्घ्य वनाय पुनीतं । पूजतु हौं सवही जिनमीतं ।

अडिल्ल छंद

जो पूजे चौबीस जिनेसुर देवजी ।  
 पुष्कर मंदर भरत विराजे घेवजी ॥  
 सो मनवांछित सार सख सुख पायजी ।  
 शक्र चक्र पद भोगि मुक्त पुर जायजी ॥

इत्यार्षीर्वादः ।

इतिपुष्करद्वीपभरतवरतमानचौबीशी पूजा समाप्ता ।

अथ मंदरमेरुभरतातीतचौबीशीपूजामाह

छंद माधवी सवैया सिंघावलोकन मुक्तपदग्रस्त यथा

मंदिर मेरु विराजतु है नित पुष्करद्वीप विपै अति सुंदर ।  
 सुंदर दच्छिन भर्त वसै तित तीत जिनेसुर धर्म धुरंधर ॥

धर्म धुरंधर सेवतु हे गुन वृंद सुध्यावत जाहि पुरंदर ।  
जाहि पुरंदर ध्यावतु ताहि सुथापहु पूजन को जिन मंदर ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्रावतरअपतर सर्वोपट्आद्धानन

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः३ः स्थापन ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिन अत्र मम संनिहितो भव भव अपद् स्वाहा ।

गीता छंद-

कलधौत वसन उतंग कुल गिरि गंग चंग सुवार है ।

भरि कनक झारी धार दारी जनम मरुन निवार है ॥

वर दीप पुष्कर मेरुमंदर पूर्व आति छवि ह्यजई ।

तसु भरततीत जिनेश पूजत सकल भौं भै भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल ।

वसमलय चंदन कदलिनंदन मुजलसंग वशात है ।

तुम चरन पुष्कर पूजते भवताप लुशति नशात है ॥वर०॥



ॐ ही मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ॥२॥  
 शित शाला द्रुति उजियाल हीर हिमाल ते आति सोहनों ।  
 तसु पुंज परम विद्युजते सुख भुंजते मनमोहनों ॥वर द्वीप०॥

ॐ ही मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ॥३॥  
 पुष्कर कदंब कुंड केतक सुमन सुमन समान है ।

लुव चरन पुष्कर पूजतें प्रभु नश्यत मनमथ वान है ॥वर०॥  
 ॐ ही मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥४॥

पकवान सुरस सवार सुवरन थार भर कर में लिया ।  
 तासों समरचत चरन जुग दुख दोष कों पानी दिया ॥वर०॥

ॐ ही मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

द्रुति दीप दिपत दिगंतरा ले सकल घटपट भास है ।

तासों उतास्त आर्ता जिनपर प्रबोध प्रकाश है ॥वरद्वीप०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वाणामि ॥६॥  
दशगंध खेय द्रुताय माही मोद उर धरि संत हे ।

वसु करम भरम जरंत ताको धूम घूम उडंत हे ॥वरद्वी०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वाणामि ॥७॥

ऋतु जनित फल कलरहित सुंदर पक्व मिष्ट मनोगता ।

तासों समरचत चरनजुग वांछित भविक सुख भोगला ॥व०॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वाणामि ॥८॥

जल फल विमल वसुदरव को शुभ अरध थार विपें करों ।

कर जोरि जुग तुम चरन चरचत तुरित भौसागर तरों ।

वर दीप पुष्कर मेरु मंदर पूर्व अति छवि छाजई ।

तसु भरत तीत जिनेस पूजत सकल भौ भे भाजई ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वाणामि ॥९॥

छंद तामस्स तथा नाराच ।

ती. चौ

२४६

तीर्थस्वामी सेइयै सदैव शर्म वेइयै,

कर्म भर्मनाशि शुद्ध परम धर्म लेइयै ॥  
सुपुष्करार्ध मंदराचले सुभर्त खेत है,

पूजिये अतीत देव सुक्त मुक्त देत है ॥१३॥  
ॐ ही तीर्थस्वामिने अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

धर्म धीश परम धर्मको प्रकाश कर्त है,

धर्मचंद नंदकौ पुनीत पुन्य भर्त है ॥पु०॥  
ॐ ही धर्माधीशाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१४॥

क्षमा धरी अधीश धारणेश सीस नावही,

पुनीत ध्यान धारिके अमीत शर्म पावही ॥पु०॥  
ॐ ही धरणेशाय अर्घ्य निर्वपामि ॥१३॥

प्रभाव जासु लोक में प्रसिद्धसिद्धदाय है,

नमों प्रभाव देव जो विशुद्धबुद्ध पाय है ॥पु०॥

ॐ ह्रीं प्रभावार्थं निर्णयामि ॥१६॥

अनादि देव ध्याइये निशंकितंग पाइये,

अनादि शुद्ध बुद्ध सिद्ध को उपाइये ॥पुष्करार्थ॥

ॐ ह्रीं अनादिदेवाय अर्थं निर्णयामि ॥१७॥

नमों अनादि सुप्रभं विषादवादवर्जितं,

निकाञ्छितंग दायकं कलंक संत तर्जितं ॥पुष्कारार्थ॥

ॐ ह्रीं अनादि प्रभेऽर्थं निर्णयामि ।?८॥

सर्व तीर्थनाथकूं संदेव माथ नाइये,

ग्लान भाव नासि शुद्धभावना लहाइये ॥पु०॥

ॐ ह्रीं सर्वतीर्थाय अर्थं निर्णयामि ॥१९॥

निरूपमाय श्रीजिनाय ऊपमा अतीत हैं ।

अमूढ़ भाव देत हैं कलेश सो वितीत हैं ॥५०॥

ॐ ह्रीं निरूपमाय अर्धं निर्वपामि ॥२०॥

कुमार मार वर्जितं सुभव्यवर्गं सर्जितं ।

सु सोपगूहनांग देत अब्द शब्द गर्जित ॥५०॥

ॐ ह्रीं कुमाराय अर्धं निर्वपामि ॥२१॥

विहार गेह देवने त्रिलोक वस्तुकों लखा,

सु धर्मसों डिगे तिनें सुधर्म में थिरा रखा ॥५०॥

ॐ ह्रीं विहारग्रहाय अर्धं निर्वपामि ॥२२॥

धारणे श्वरेशकों सुरेशवृंद बंदते,

वातसत्य अंग पाय पापकों निकंदते ॥५०॥

ॐ ह्रीं धारणेश्वराय अर्धं निर्वपामि ॥२३॥

विकाश देवने समस्त वस्तुकों विकाशियो,  
सुमार्ग की प्रभावना दिखाय पाप नाशियो ॥

सुपष्करार्द्ध मंदिराचले सुभर्त खेत है,  
सुपूजिये अतीत देव भुक्त मुक्त देत है ॥२४॥

ॐ ही विकाशाय अर्घ्यं निवपामि ॥२४॥

छंद सुंदरी तथा द्रतविलवित—

जल फलादि मिलाय मनोहरं । अरघ पून कीन सुभौहरं ।  
जजत पुष्करमंदिर भर्त है । जिन अतीत महासुख कर्त है ॥२५॥

अथ जयमालं ।

वत्ता-जै केवल चंदा उदय अमंदा आनंदकंदा निरदंदा ।  
कृतभक्तिक कर्मोदं परमप्रमोदं ज्ञानमहोदं सुखवृंदा ॥१॥

पढ़ई छद ।

जै मदनकदन मदनेंद्र देव, सूरति स्वामी कृत सुख स्वमेव ।  
 नीराग स्वामी चिनु रागदोष, जै जै प्रलवित जगत्तपोष ॥३॥  
 पृथ्वीपति मो भव उदधि तार, चारित निधि कुमति कलेश दार ।  
 अपराजित प्रभु पद परम देह, जै जै सुबोध सुधि वेग लेह ॥३॥  
 बुद्धेश करे कमला सुधाम, वैतालिक जिन पद को प्रनाम ।  
 जै जै त्रिसुष्ट वर इष्ट देत, सुनि बोधक जिन भवसिन्धु सेत ॥४॥  
 तीरथ स्वामी भेटत कलेश, जै धर्म शीश सेवत सुरेश ।  
 धरनेश नमत धरनेश शीश, प्रभवेश परमपावन जगीश ॥५॥  
 जै जै अनादजिन गुन समुद्र, जै जै अनादि प्रभ नमत रुद्र ।  
 जै सर्वतीर्थ त्रिसुवन पुनीत, निरूपम अनुपम गुन जगत मीत ॥६॥  
 श्रीजिनकुमार प्रत्यूह खंड, जै जै विहार ग्रह सुख डमंड ।  
 धरणेश्वर जगदाधार परम, जै जै विकासजुत परम शर्म ॥७॥  
 ए तीत जिनेसुर भरत थान, गिर मंदर पुष्करदीप जान ।

दशमे गुण सात प्रकृत विनाश, सातें त्रय नौ छतीस नाश ॥८॥

त्रेसट है केवल प्रपर ।

दशमेक द्वादशें सोल चूर, ऐ त्रेसट है केवला निधान ॥९॥

बौदहे बहतर तेर हान, सिव धान जैसे करुना चलाय ।

तुम गुन गावत सुर असुरराय, नाचत ताथेइ धेइ पग चलाय ।

द्विमि द्विमि धिधितवलां सुरजनाद, संसाग्रदि सारंगी सुरपुरतवाद् ।

पगनूपुर झननननननाय, कर्दकं किनि किनिनिनिनि सुहाय ॥११॥

बहु हाव भाव रसको बताय, तनननन साज सिष्ट ।

पट पटपट पाटह नाद मिष्ट, दुंदुभि शीनादिक साज सिष्ट ।

सजि साज भगततुव करत देव, निज जनम सफल करते सुमेव १२

तुम धन्य अमल गुनगन निधान, भवसागर तारन तारन जान ।

हम शरन गही मन वचन काय मन बांछित सुख द्यौहे जिनाय १३

घटा—जै जनप्रनरक्षक अरिअहितक्षक, वस्तुविवक्षक दक्षपर्ता ।

सेवत सुर जक्षक लासि शिवगच्छक जै गुन कक्षक स्वच्छमती

ॐ ही मद्रमेरुभरतातीतजिनसमृद्धेयो मर्षार्थ निर्वपामि ।



दोहा — पुष्कर मंदर भरत के, तीत जिनंद दयाल ।  
जो पूजे सो सकल सुख लहे भविक गुनमाल ॥

इत्याशीवादि ।

इति मंदिराचलभरततीत चौबीशीपूजा समाप्ता ।

ॐ

अथ भावी चौबीशी पूजा प्रारभ्यते ।

छंदचित्र पवर्तवध वाईसा ।

आय सही वे हेरे अति आरति इंद थुने तिहितें जु सया ।  
हो इत थापत मंदर के परतच्छ सु भर्त भविष्य तथा ॥  
भर्म विनाशक आतम भायक भव्यजीव कंहं शर्म दया ।  
आय सेव तिथु हो पमजी सु जीभव हो युति देसय आ ॥

ॐ हौं मंदरमेरुभर्त भात्री जिन अत्र अत्रतत अततत सौपट् अदानन

ॐ हौं मंदरमेरुभर्त भावी जिन अत्र तिष्ठत तिष्ठत त्रः त्रः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभर्तं भावी जिन अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वपद् स्वाहाः ।

आ	य	स	वे	ति	शु	ह्रीं	प	म	जी	सु
			ह	आ	ने	इ	र	मं	व	
				र	ति	त	त	वि	के	
					हि	था	छ	ना	हे	
						प	सु	श	श	
								म	क	आ
									मं	द
										या
			ह्रीं	अ	द	या	के	या	व्य	
				इं	इ	स	र	त	भ	
					ति	जु	द	प्य	क	
							ते	मं	वि	श
								त	म	आ
									ते	म
										त

सुदगी तथा द्रुतिविलंबित छंद—

सुर नदी जल उज्जल प्रावनो, त्रिविध कर्मकलंक नशावनो ।  
त्रितिय दीप सु मंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भावी जिन जन्य जरामृत्यु विनाशाय जल ।

कदलिनंदन चंदन सो घसै । जजत ही भगदंदनको नसै । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरतभावि जिन सत्सारापविनाशाय चद्रं निर्वापामि ॥२

विमल मंडुल तंदुल आनिये । धरत पुंज सवे दुख हानिये । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावी जिनभ्योऽक्षयप्रदाप्तये तदुल निर्वापामि ॥३॥

सुमन सौरभिरंग सोहावनो । जजत शूल समस्त नशावनो । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरुभरतभावि जिनेंद्रभ्यःपुण्य निर्वापामि ॥४॥

शशि सुधासम नेवज लै धरा, जजि पदांबुज रोग छुथा हरा । त्रि०

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यश्चंद्रं निर्वापामि ॥५॥

तमविनाशक दीपक जोत है, करत आरति ज्ञान उदोत है ॥ त्रि०

ॐ ही मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो दीप भिर्वापामि ॥६॥

अगर चंदन आदिक धूप है, जजत होत सुगंध अनूप है ॥ त्रि०

ॐ ही मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥७॥

रिति फलोत्तम पक्व रशाल है । जजत आनंद होत विशाल है त्रि०

ॐ ही मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्य. फलं निर्वपामि ॥८॥

जल फलादिक को सज अर्घ है, जजत पावत थान अनर्घ है ।

त्रितिय दीप सुमंदर जानिये, भरत भाविय पूजन ठानिये ॥

ॐ ही मंदरमेरु भरत भाविजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ

छद् नंदीधराष्टक की

क्षित क्षिमापती गुंनवृंद देव वसंत धुजं ।

गिर मंदर भरत सुछंद भविय देव पुजं ॥१॥

ॐ ही वसतध्वजाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

वृषमार्द्धिव गुणमनिमाल श्रीत्रिजयंत सही ।

गिर मंदर भरत विशाल भाविय सेवतही ॥२॥

ॐ ही त्रिजयताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

वृष आर्ज्व आर्जव एव श्रीस्त्रिस्थंभ कहा ।

जजि मंदिर भरत सुदेव भाविय नाथ महा ॥३॥

ॐ हीं स्त्रिस्थंभाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

वचसत्य रतनके खान खान परम ब्रह्म जिनं ।

गिर मंदर भरत सुथान भाविय सेय तिनं ॥४॥

ॐ हीं परमब्रह्माय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

जुग शौच धरमके मूलनाथ अवालीशं ।

जजिमंदर भरत अतूत भाविय नुतशीशं ॥५॥

ॐ हीं अयालीशाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

जुगसम दमजम जुत देव नाथ प्रवादिक है ।

जजिमंदर भरत लखेव भावियतादिक है ॥६॥

ॐ ह्रीं प्रवादिकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

दो विधि तपसागर चंद भुमानंद जिनं ।

गिर मंदर भरत अफंद भावि जजामि तिनं ॥७॥

ॐ ह्रीं भुमानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

जुगत्याग धरमके मूल त्रिनयन जिन जानों ।

गिर मंदर भरत अतूल भावित भजि ध्यानो ॥८॥

ॐ ह्रीं त्रिनयनाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

परिगहग्रह त्याग जिनेश श्रीविद्विष जती ।

गिर मंदर भरत भवेश पूजत शुद्धमती ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्विषाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

परमात्म प्रशंग महेश ब्रह्माचार धरा ।

गिर मंदर भरत जिनेश भाविय सेवकरा ॥१०॥

ॐ ही परमात्मप्रशंसाय अर्थ निर्वपामि ॥१०॥

भूमिंद्र चंद्र नागिंद्र भूमिंद्रेश जपें ।

गिर मंदर भरत गनिंद्र भात्रिय पाप खपें ॥११॥

ॐ ही भूमिंद्राय अर्थ निर्वपामि ॥११॥

गोपाल लंगली सेय गोस्वामि हि सदा ।

गिर मंदर भरत भवेय पूजों ताहिअदा ॥१२॥

ॐ ही गोस्वामिनेऽर्थ निर्वपामि ॥१२॥

कल्याण प्रकाशित स्वामि पंच उच्छाह धरें ।

गिर मंदर भरत यजामि भाविय विघ्नहरें ॥१३॥

ॐ ही कल्याणप्रकाशिताय अर्थ निर्वपामि ॥१३॥

दुति मंडित मंडल ईश मंडलनाथ नमैं ।

गिर मंदर भरत भवीश पूजत पाप दमैं ॥१४॥

ह्रीं मंडलेशाय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

चौपाई-लक्ष्मी जासु पदांबु वसै हे, देव महा वसवेस वहै हे ।

पुष्कर पूरव मंदर जानो भाविय भर्त जजो धरिध्यानो ॥ १४॥

ॐ ह्रीं महावसवेऽर्घं निर्वपामि ॥१५॥

जनम स्नान सुमेर पवित्रं, तेज उदै जिनसो जगमित्रं ॥पु० १६

ॐ ह्रीं तेजउदयाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

चारित धारि हरे सव कर्म, दिव्य जोतिषी जिनगुनपरमं ॥पु० १७

ॐ ह्रीं दिव्यज्योतिषे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

घाति विघाति प्रबोध धरैया, जैति प्रबोध कुबोध हरैया ॥पु० १८

ॐ ह्रीं प्रबोधिताय निर्वपामि ॥१८॥

मुक्तसती आलिंगन होर, श्री अभयंक नमो जगतारे ॥पु० १९

ॐ ह्रीं अभयंकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

मुक्ततिया जु कटाक्ष चलौवै, जो परसो प्रमितेश कहौवै ॥पु० २०

ॐ ह्रीं प्रमिताय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥



दिव्य स्फारक श्रीजिनदेवा, चार प्रकार करै सुरसेवा ॥ पु० २१  
ॐ ह्रीं दिव्यस्फारकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जे व्रतव्रात अघात धरैया । ते व्रत स्वामी दोष हरैया ॥ पु०  
ॐ ह्रीं व्रतस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२२॥

जो निधि दुर्लभ है जगमाहीं, सो निधिनाथ जपै निपजाही ॥  
ॐ ह्रीं निधिनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

कर्म कलंक निशंक सिपाये, देव निकर्मक नाम कहाये ।  
पुष्कर पूरव मंदर जानौं, भाविय भर्त जजौं धरि ध्यानौं ॥२४॥  
ॐ ह्रीं निकर्मकाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा-श्रीपुष्कर पूरव दिशा भरत भविष्यंत देव ।

पूजौं पूरन अर्घं सों विघनमिटे स्वयमेव ॥

ॐ ह्रीं मंदरमेरु भरत चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

षष्ठा-जे जे जनरक्षक शिवमग वक्षक चारितकक्षक स्वक्षरा ।

जै लक्षअलक्षक सर्वविलक्षक दक्षक पक्षक रक्षकरा ॥

४६ नैमालिनी—

धरम ध्वज वशत धुज जैजै , खिजयंते नमो अरुज जैजै ।  
 खिस्थंमन भवभंजन जै जै, परम ब्रह्म मुनि रंजन जै जै ॥२॥  
 अवालीश छयालिशगुन जै जै, श्री प्रवादिक परमधुन जै जै ।  
 भूमानंद कंद जस जै जै, त्रिनयन त्रिजग लसत वस जै जै ॥३॥  
 विद्वेषिक निरसगिक जै जै, परमात्म परसगिक जै जै ।  
 भूमिंदक शनेन्द्र नुत जै जै, गोस्वामी गनेन्द्र नुत जै जै ॥४॥  
 शुभ कल्याण प्रकाशित जै जै, मंडल आत्म भासित जै जै ।  
 महावसव वासवनुत जै जै, उदें तेज समरस नुत जै जै ॥५॥  
 दिव्य जोति चतुरानन जै जै, श्रीप्रबोध भवभानन जै जै ।  
 अभैअंक जगजानन जै जै, प्रमित परम पहिचानन जै जै ॥६॥  
 दिस्फरक सुख सागर जै जै, त्रत स्वामी नुत नागर जै जै ।  
 श्रीनिधान निधि दायक जै जै, जिन निःकर्म सहायक जै जै ॥७॥

जान्हवी नीरसां हेमभारी भरो, धार दे तीन तीनों विथाकों हरो  
पुष्करार्द्धे गिरे मंदैरावते, वर्तमानं जजे शर्मकों पावते ॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमान चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं निर्वपामि स्वाहा ।

केदलीनंदनौ चंदनं वावना, पूजते तालुसों शान्तिता पावना । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ।

देवजीरादिसे शालि शोभामई पुंजकों धारते शर्म साता लई । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

पुष्करं पुष्कराद्या धरे पुष्करं, कामनाशै सही पुष्करं दुष्करं पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यःपुष्पं निर्वपामि ।

नव्यगव्यादि नैवेद्यनीके किये, धार में धारते सुखसता लिये पु०

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरुं निर्वपामि ।  
दीपसों हे प्रभू मैं करो आरती, ज्ञान उद्योतता दीजिये भारती । पु०

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।

अग्नि माही दशों गंध खेवो सही, अष्टदुष्टै जैँ धूमधूमै वही पु०  
ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

आम्र काम्रादि एलासु केला लये, पूजतें विघ्नका आजु पानी दये  
ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यःफल निर्वपामि ।

नीर गंधादि लै अर्ध कीनों वरा, पूजतें कर्मकंतारसों निस्तारा  
पुष्करार्द्धे गिरि मंदैरावते, वर्तमानं जजै शर्मकों पावते ॥

ॐ ह्रीं मदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्धं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

दुति मध्यक छंद—

शंकर शंकरते जगमाही, धर्म उदोतक सो निज आही ।

१ जन्म मरण नरा । २ भारती सरस्वती । ३ ज्ञानावरणादि । ४ कर्मरूपी जंगल ।

मंदर मेरु सु उत्तर जानों, वस्तु है अयरावत थानों ॥१॥

ॐ ह्रीं गङ्गाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

कौनन कर्म हुताशनसे है, जिनवर अश्व सुवाश कहे है। म०२

ॐ ह्रीं अक्षयाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

सर्व उपाधिनिवारि सुखदा । अनुभव मग्न सुनग्न जिनंदा । मं०

ॐ ह्रीं नग्याय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

नग्न सुआदि महातप धारी, अमल महा नगनाधिप भारी । मं०

ॐ ह्रीं नग्नाधिपाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

चौपाई-नष्ट क्रिये पाखंड अनेक, नष्ट पखंड नमों शिष्टेक ।

मंदर ऐरावत भगवान वस्तत है पूजों धरि ध्यान ॥५॥

ॐ ह्रीं नष्ट पास्तडाय अर्घ्यं निर्दिशामि ।

१ अग्नि ।

षोडशसुपन लखे जसु माय । स्वप्नबोधजिन सो सुखदाय मं०

ॐ ह्रीं स्वप्नबोधाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशतप विधि निधि दातार । नमो तपोधन जिन अविकार मं०

ॐ ह्रीं तपोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

पुष्पकांड खंडन दुखदंद । पुष्पकेतु मंडन सुखकंद ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं पुष्पकेतवेऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

दशौ धरम परकाशक स्वामी । धार्मिक जिन पदपदमनमामी । मं०

ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

चंद्रकेतु चंद्रानन सुष्ट, किखिषहरत करत सुख पुष्ट ॥ मं० ॥

ॐ ह्रीं चंद्रकेतवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

वीते राग दोष समुदाय । सो निज वीत राग सुखदाय । मं०

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

महाजोति धारी धरमज्ञ । श्री अनुक्त जपे उरतज्ञ ॥ मं० ॥

ॐ ही अनुरक्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

आतम ज्योति उद्योत करंत । उद्योतक निज शिवतियकंत मं०

ॐ ही उद्योतकाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

भविउर तिमिर करत चकचूर तमोपेछ जिन गुनगन पूर । मं०

ॐ ही तमोपेक्षाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

माथव मधुसेवें पदपद्म । श्री मधुनाथ देत शिव सन्न । मं०

ॐ ही मधुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

चक्र गदाधर गनधर वृंद । श्रीमरु देव नमं सानंद । मं०

ॐ ही मरुदेवाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

शमदमजमजुत केवलभान श्रीदममाय जपों धरि ध्यान । मं०

ॐ ही दममाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

वृषचक्री वृषकेत लशंत । वृषदायक वृषभेसुर संत । मं०

ॐ ही वृषभेसुराय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१८॥

पांडुशिलातन क्रांतिपवित्र । नमो शिलातन त्रिभुवनमित्र । मं०

ॐ ह्रीं शिलनाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

विश्वमाहि जिनसम नहिं नाथ । विश्वनाथ सो हें शिवसाथ । मं०

ॐ ह्रीं विश्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

मोतीदाम छद ।

गनेंद्र सुरेंद्र नरेंद्र खगेंद्र जयें नित चित्त महेंद्र जिनेन्द्र ।

सुपुष्कर पूरुष मंतर जान । जजो अयरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं महेन्द्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

जगज्जन ओनेंद्र अबुधि चंद्र । अनंत सुखाकर नंद जिनंद । सु०

ॐ ह्रीं नंदाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

शरीर प्रभातम भंजन जास । तमोनिभ नाथ महा जशरास । सु०

ॐ ह्रीं तमोनिभाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥



सुब्रह्म विचारन तारन ब्रह्म । नमों जिन ब्रह्म सुधारन ब्रह्म ॥  
सुपुष्कर मंदर पूरव जान । जजों अथरावत संत महान ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मधारणाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

शोखा-आठों दरव बनाय आठों अंग नमायकें ।

जजों हरप उरलाय चटु गिरि ऐरावत जिनं ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः पूर्णांघं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घटा-तुव सुजशविशाला गुन मनिमाला परमशाला सुकुमाला ।  
नर सुगगपताला पति तिरकाला कृतनुतमाला सुखसाला ॥

छंद कामिनी मोहन तथा आर्या शखला ।

सारसुखकारसंकर जिनसुरमहा॥स्वच्छअक्षीणपदअक्षवासी लहा॥  
मगन आनंद में नगन जिननायकं भग्नसंताप नगनाधिर्प लायकं ॥

आर्या—पाखंड भुंड खडन नष्ट पाखंड देवअरि दंडन ।  
श्रीस्वप्नबोध भडन नमों नमों मंट मंट भवहंडन ॥२॥

कामिनीमोहन छंद—

मेदि भवहंडनं तपोधन मुक्तहै पुष्पकेतुकजिनं परम सुख जुक्त है ।  
आतमोद्धरन धरंमेशस्थामी कदा चंद्रकेतू नमों होत साता महा ।।  
आर्या—साता महाउपाई तजि राई वीतराग जिनराई ।  
अनुरक्त मुक्तदाई ज्ञानानंद नमों जिनराई ॥४॥

कामिनी मोहन छंद—

नायशिर इंद्र वंदंति उद्योतित जै तमोपश्रितं सारसुख जो जितं ॥  
नमों मधुनाथशिवसाधनिरदोषहै जैति मरुदेव सुखदेवभवि पोषहैं ॥  
आर्या छंद—पोषहि शमदम सुष्ट भीदममाय जिनेन्द्र गुनपुष्ट ।  
जै शृपभेश अद्भुष्ट लोचकृतं केशपंचकरु सुष्ट ॥६॥

कामिनी मोहन छंद—

पंचकरसुष्ट मह शिलातनतपधरे जैति जिन विश्वनाथ शकल भैरहै ॥

नमत शतहृद मोहेन्द पद पकजं । नद आनद दाता जगत रजन ॥  
 आर्या छंद-रंजन जन भव भंजन तमोनिधी दोष दुष्ट दुखगंजन ।  
 श्रीब्रह्मधार भजन नमो नमो ज्ञान नैनन के अंजन ॥

अंजनं मोखमगगामिके हूँ सही, जैति चऊबीसजगराज सुखकेमाही  
 पुष्करे मंदिरैरावते वर्त ही, पंचकलयानपति ध्याय भवि तर्तही ॥६॥  
 आर्या--भवतर्तहि लखि देवै सुर ध्यावै नाय भाल पद सेवें ।  
 नाचें चहु गति लेषें साजै रसाल बहु भेवें ॥१०॥

कामिनी मोहन छंद—

साज बाजै रसालें सुवहु भेवजी सम्रादिसंसाप्रदिसारंगी धुनि लेवजी  
 झिनिनिनिसिनिनि झलछरी बाजई ।

धिकट धुनि धत्रप पुनि त्रिम सुरज साजई ॥  
 आर्या-बाजई बीनानाद तनननन तान छेत अहलादं ।

सनननाट अवादं कृत सुरसुर साल ताल तलपादं ॥१२॥

कामिनी मोहन—

तालतलमाद वादिते जो बाजई, तासु उपमान कछु जगत मे छाजई ॥

धन्य जिनचंद गुनवृद्धपदबंधी, गायजस आज हम छेत आनंद ही॥  
 वषा—जे मनमथमंथक नित शिव पंथक कृतश्रुत ग्रंथक ग्रंथपती ।  
 जे करुना मंदर जंजत पुंरं दर धरम धुरंधर शुद्धमती ॥१४॥

रथोद्धता छद—

पुष्करार्द्धवर पुत्र में कहा, मंदिराद्रि अयसवते महा ।  
 वर्तमान पद जो जै सही, वांछितार्थ पदलेत सो सही ॥१५॥

इत्याशोवाद् ।

इति मंदिराचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिपूजा समाप्ता ।

अथपुष्करार्द्धीपिमंदिराचलैरावतातीत पूजाप्रारभ्यते

स्थापना धनुषबंध—

दोहा—चतुस्य गिरिवर उत्तरे जिन जे तीत प्रमान ।  
 तिनहि सुथापतु भावसों उपजे पदनिखान ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपे मंदराचलैरावतातीतजिनअत्रात्तरअत्रतरसंवीपट्ट आञ्जानन  
 ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपे मंदराचलैरावतातीतजिनअत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन  
 ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपे मंदराचलैरावतातीतजिनअत्रमसंनिहितोभव भव वषट्स्त्रा

अथाष्टक तालजच्च होली की चाल में

गिर मंदिर उत्तरथान पूजों तीतकों ॥ गिर० ॥ टेक ॥

पदमद्रह गतनीर सार शुभ कनक कुंभ भरिआन ।

धार करत तुम चरनन आगे करम कलंक नशान ॥ पूजों० ॥१॥

ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपे मंदराचलैरावतातीतजिनभ्यः जलं निर्वपामि ।

वाधन चंदन कदली नंदन केशर संघ घशान ।

भवतपहरन चरन परि पूजत विधन तपतकी हान ॥ पूजों० ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराब्दीपमदाराचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनभ्यो गध निर्वपामि ।

शालि अपंडित शौरभि मंडित शसि सम हुति दमकान ।

औषे संपदा कारन पूजों हे जिनवर धरि धान ॥ पूजों० ॥३॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

सुमन सुगंधित प्राशुक लीनों गुंजत अलिंगन आन ।

पूजत चरन कमल जिनवर तुव मनमथवान नशानं ॥ पूजों ० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः शुष्य निर्वपामि ॥

धेवर वावर फेनी श्रेनी सौरभ सरस महान ।

छुधा रोग निखारन कारन जजों निराकुल दान ॥ पूजों ० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥

मनिमय दीप उदोत होतवर हे जिन भूमतमभान ।

तासों आरति करत जगत गुरु उपजै आतम ज्ञान ॥ पूजों ० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः दीपं निर्वपामि ॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन धूप सुगंध अमान ।

खेवत धर्मकेतु मैहि ताको जसत दुख दान ॥ पूजों ० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीत जिनेभ्यो धूप निर्वपामि ।  
 श्रीफल पत्रव मनोहर पावन । मधुर रसीले आन ।  
 पूजत मनवांछित परिपूजत अनुक्रम अनुपम यान । पूजों०  
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्यः फल निर्वपामि ।  
 जलफल आदि द्रव वसु साजे अरघ ललित वरदान ।  
 नाचिराचि शिरनाय समरचत मिलत विमल सुखयान । पूजों०॥  
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपमंदराचलैरावतातीतजिनेभ्योऽर्घ्व निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्घ ।

लोलतरंग छद्--

जे उपगारिय वैन बखानैं । ते कृतनाथ नमों धर ध्यानैं ।  
 पुष्कर मंदिर उत्तर मानों । तीत जजों अईरावत यानों ॥१॥  
 ॐ ह्रीं कृतनाथाय अर्घ निर्वपामि ।  
 इष्ट भिसिष्ट प्रविष्ट करैं हैं । श्री उपविष्ट अरिष्ट हरैंहें ॥पु०॥

ॐ ह्रीं उपविष्टाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

मोहमहा तमभंजन भानं । आदित देवनमो गुनखानं ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं आदितदेवाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

अष्टम भूमि सुथानकवासीश्रीअसथान नमो अविनासी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं अस्थानिकाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

चन्द्रसमान प्रमोद प्रकाशी । देव प्रचंद नमो सुखरासी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं प्रचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

वणूके जस गावत देवा । वेनुक गावत हें बहुभेवा ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं वेणुकाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

कोटिकमानु छिपे छविदेखें । नाथत्रिमानु विभूतिविशेखें ॥पु०॥

ॐ ह्रीं त्रिमानवे अर्घं निर्वपामि ॥७॥

ब्रह्मसु ब्रह्म जिनेसुर स्वामी । ब्रह्मविकाशक ब्रह्म नमामी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मब्रह्म्याय अर्घं निर्वपामि ॥८॥



वज्रशरीर लसे जसु आदी वज्र सुअंग नमों निखादी ॥पु०॥

ॐ ह्रीं वज्रागाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

वेरविरोध निरोधन हारे, श्रीअविरोधन है अविकारे । पुष्कर० ॥

ॐ ह्रीं अविरोधनाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

पाषप्रकृत संवे चकचूरे, जैति अपाप जिनाधिप पूरे ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं अपापाय अर्घंनिर्वपामि ॥११॥

लोक अलोक लखे जसरासी लोक मुत्तर ग्यान प्रकाशी॥पु०॥

ॐ ह्रीं लोकोत्तराय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

इंद्रचक्रा छंद—

जलाधिशेषं जिनराज स्वामी जगत्रयी ईशपदं नमामी ।

सुपुष्करे मंदर मेरु सोहै । ऐरावते तीत जजामि जोहै ॥१३॥

ॐ ह्रीं जलाधिशेषाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

विद्योदितु द्योतित वोथलोके । विद्यापती सेवत देय धोकं ॥सु०॥

ॐ ही विद्योत्तिताय अर्थं निर्वपामि ॥१४॥

सुमेरसे गौर सुमेरनाथ भवान्धि मे दूवत थाभि हाथ ॥सु०॥

ॐ ही सुमेरवे अर्थं निर्वपामि ॥१५॥

श्री भावितं भव्य समस्त सेवें । आनंद देवें भवनात्र खें ॥सु०॥

ॐ ही भाविताय अर्थं निर्वपामि ॥१६॥

समस्त पे वच्छल लच्छकरी । नमों नमों वच्छल स्वच्छधारी ॥सु०॥

ॐ ही वच्छलाय अर्थं निर्वपामि ॥१७॥

अतिद्रियज्ञान प्रकाश कीनों । नमों जिनालं जिन ध्यानभीनों ॥सु०॥

ॐ ही जिनालयेऽर्थं निर्वपामि ॥१८॥

पापं सरोजं दहने तुषारं । नमों तुषारं जिन शर्मकारं ॥सु०॥

ॐ ही तुषाराय अर्थं निर्वपामि ॥१९॥

निर्विघ्नदाता भुवनेस स्वामी । आनंद वारानिध चंद्रनामी ॥सु०॥

ॐ ही सुवनेशाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

कंदर्पं सर्पापहरं खगेशं सुकामस्वामी प्रणमो जिनेशं ॥सु०॥

ॐ ही सुकामाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

आनंदकंदं जिनचंद्र वंदं देवाधिदेवं प्रणमो अमंदं ॥ सु० ॥

ॐ ही देवाधिदेवाय अब निर्वपामि ॥२२॥

आकारिमं देवरं पवित्रं निरूपमं रूप अरूपचित्रं ॥ सु० ॥

ॐ ही आकारिमाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

विनीतनें नीत सनै वतायो विनीत सेयें निज नीत पायौ ॥

सुपुष्करें मंदरेमर सोहे ऐरावते तीत जजामि जौहे ॥२४॥

ॐ हीं विनीताय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

वसततिलका छद—

जै तीततीर्थपति मंदरपुष्करार्थे । ऐरावते परमआतम धर्मसाधे ।

ताकों समर्चत सुपूरान अर्थधारी पावे समस्तसुख सो उभयप्रकारी॥

ॐ ही पुकराद्धीपमंदराचल्लावतातीतजिनेभ्यः पूर्णार्थं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

वचा-जे जिन मलवर्जित अरिहरितर्जिति यनमिवगर्जित वैनवरं  
भविजनमनसर्जित सुमति उपर्जित विघनविवर्जित चैनकरं॥

३० मात्रा का उद्द—

वदापो कृत नंदा मदा चंदासे आनंदा दान ।

शुद्धं शुद्धं है निःकृढं देवादित्यं सुष्टामान ।  
इष्टं शिष्टं नष्टानिष्टं भीउपविष्टं पुष्टादान ॥

स्वशक्षेमा हृदा हृदा स्थानिकं संरओमान ॥२॥

त्रिन्वय्यापि है अथापी प्राचंदापी लक्ष्मीमान ।

गोभायारी जे भौतारी प्रीबेणुंरु जै जै जे वान ।

मातैहा भाखंडं मह चड जोत भीप्रीमान् ।

ब्रह्मब्रह्मा ब्रह्मव्यापी ब्रह्मोपेक्षी ब्रह्मध्यान् ॥३॥  
 ब्रह्माधीशं कृतचतुतशीसं श्रीवज्रांगा बज्रांगान् ।  
 ध्याता ध्येर्यं ग्याता गेर्यं अवबोधनञ्जुत शसैहान् ।  
 पापात्यक्ता आपाञ्जुक्ता भुक्ता सुक्ता शंमौघान् ।  
 लोकालोक सर्वविलोकं लोकोत्तर श्रीशोभावान् ॥४॥  
 हेयोदय समुद्र विमंथन ग्रंथ निग्रंथ जलाधिपवान् ।  
 अद्रितियद्भुत जानोद्योत विद्योत सद्धिधादान् ।

ध्यानी ग्यानी हैं निःकंपी मानो मेरु सुमेरु समात्र ।  
 प्रानी भावै भाधित के गुन धीरज वीरज सुकृत खान ॥५॥

निच्छल स्वच्छल सत सुवच्छल वच्छल लच्छित लच्छविधान  
 चक्री शक्रधरं धृषचक्र जिनालै देव नमै हैं आन् ।  
 सातासाना जुगमविमुक्ता जुक्तुपारं मुक्तस्थान् ।

तातातीनों लोकतने हैं श्रीभुनेसुर कृतकल्यात्र ॥६॥  
 जीवाजीवादे प्रत्यभ्रं वकेलक्ष सुकामजितान् ।

भर्माधर्म विशेष चिक्राजो श्रीदेवाप्रिसुदेवमहान् ॥

कर्त्ताकर्ता मुक्ता मुक्ता आकारिक कीर्त्तों विद्मवात् ।

नीतानीत विनीत यताये नीतमती माने है आत् ॥७॥

जे चौथीसा पुष्करमंदर ऐरावत है तातात् ।

ताको इदं चंद गनिदं, बंद है नागिंद आत् ।

ताको सेव है जे प्रानी ते होवै श्रीगोभावात्

पूजाठानै सुनउर आने "चूद" नरिद घरे हं ध्यात् ॥८॥

षष्ठा—जे श्रीजिनकुंजर हरि भवपिंजर कीरति गुंज रही जगमें

जे सुक्तथापति सुक्तमहामति मंगलदायक श्यो मगमें ॥

ॐ ह्रीं पुष्करकंदोपमंदरगन्धर्वतातीनजिनेभ्यो महार्यं निर्वामि ।

अथाशीर्वाट् । अडिल्लंछंद-

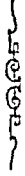
पुष्करमंदरऐरावत जिन तीत जी ।

पूजत सुनर नारि तिन्हे धरि प्रीतजी ।

जो सैव मनलाय हरप उमगायजी ।

सो सुरनर सुख भोगि परमपददायजी ।

इति श्रीपुष्कराधे पूर्वमंदराचलैरावत २४ पूजा संश्रुणा ।



अथ पुष्करार्धे मंदराचलैरावते भाविपूजा प्रारभ्यते।

कमलवद्ध चित्र—

दोहा—चवथवशि वर वतावते वने वरावतवनाव

भावेदेव भव भाव सव आव आव सिवराव ॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रावतरअवतर सर्वौपद् आह्वानन ।

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापन ।

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिन अत्रमम सन्निहितो भव भव वपद् स्वाहाः

अथाष्टकम् ।

( चाल नंदीश्वराष्टक भाषाधानतरायजी कृततालजत्तादिमें बने है )

यह सलिल कलिल मलहार झारी माही भरा ।

पदपंकज पूजत सार मेटत जनम जरा ॥

वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वसे ।

ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसे ॥१॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविजिनेभ्यो जन्माद्विनाशाय जलं निर्वपामि ।  
घसि चंदन केसर सार सौरभि भृंग भरा ।

तुम चरन कमल पखार भौ आताप हरा । वर०॥२॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विगतिजिनेभ्यश्चंदन निर्वपामि ।  
हिम हीर शशीसम सेत तंदुल मंडुल से ।

तस्रु पुंज विभुंज धेत्त वारिद दुःख नसे । वर०॥३॥

ॐ ह्रीं मंदराचलैरावतभाविचतुर्विगतिजिनेन्द्रेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ।

यह काम महाजग शूल आपु निमूल किया ।



यातें लेकर वर फूल पूजत खोल हिया। वर०॥४॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ।

जग रोगवली इक भूख दूपत सव प्राणी ।

ताको तुम नासि अरूप नेवज में आनी। वर०॥५॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ।

तुम ज्ञान प्रकाश जिनेश लोकलोक लखे ।

हम दीप चढाय महेश आपा आप चखें। वर०॥६॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

तुम कर्म कलंक विनाश आतम शुद्ध भये ।

हम खेवत धूप सुवास नाचत कर्म चये। वर०॥७॥

ॐ ही मदराचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामि ।

तुम पाय अतिद्रिय शर्म परम पुनीत फलें ।

फलसौं पूजों तजि भर्म दीजो मोक्ष थलं । वर०॥८॥

ॐ ही मंदराचलैरावतभाविचतुर्गितिजिनन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामि ।

तुम आँनंद कंद जिनद सत्र दुख बंद हरे ।

हम अरघ लेय अभिनंद पूजत भक्त धरे ॥

वर पुष्कर मंदर मेर उत्तर माहि वैसे ।

ऐरावत भावत हेर पूजत पाप नसे ॥९॥

ॐ ही मंदराचलैरावतभाविचतुर्गितिजिनन्द्रेभ्यर्ध्व निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्धे ।

चौपाई छद ।

विसद सुखद जस पूजन चंद । नमों जशोधर जगदानंद ।

पुष्कर पूव मंदर मेर । जजों भाविण्यैरावत हेर ॥१॥

ॐ ही यशोधराय अर्थ निर्वपामि ॥१॥

परम सुकृत पद दायक परम । सुकृतेदेव कृत नितजिनधर्मपु०॥

ॐ ह्रीं सुकृताय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

अभै घोषनाकृत जगजेन । अभैघोष जिन निजगुन देन । पु०॥

ॐ ह्रीं अभैघोषाय अर्घं निवपामि ॥३॥

दायक पद निर्वाण उदार । श्रीनिर्वाण नमों भवतार । पु० ॥

ॐ ह्रीं निर्वाणाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

शुद्ध सकलव्रत जिनके पास । सो व्रतवास भरतं भविआशपु०॥

ॐ ह्रीं व्रतवासाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

राजनिके राजा पदसेय । सो अतिराज राजपद देय । पु० ॥

ॐ ह्रीं अतिराजाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

ध्यान अथ चटुके शिवलीन नमों अथजिन परमप्रवीन । पु०॥

ॐ ह्रीं अथजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

अर्चुनवर्न विवर्डिजत मान, जै अर्चुन जिन गुनमनि खानापु०॥

ॐ ह्रीं अर्जुनजिनाय अर्घं निर्घामि ॥८॥

धरम सुधाधरतें मिय चखें, तपश्चंद्र सो चिदगुन लखें ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं तपश्चंद्राय अर्घं निर्घामि ॥९॥

पंच परावर्तन चक्रचूर । शारीरिक जिन समता पूर । पुष्कर०

ॐ ह्रीं शारीरिकाय अर्घं निर्घामि ॥१०॥

मनवांच्छित पद देत मिलाय । नमों म्हेशुर जिनके पाय । पु० ।

ॐ ह्रीं महेश्वराय अर्घं निर्घामि ॥११॥

सुंदर ग्रीव लखत द्विगचैन । श्रीसुग्रीव नमों निरेण । पुष्कर०

ॐ ह्रीं सुग्रीवाय अर्घं निर्घामि ॥१२॥

द्विदु प्रहागें अरि खेकीन । द्विदुप्रहार समतारस भीन । पु० ।

ॐ ह्रीं द्विदुप्रहाराय अर्घं निर्घामि ॥१३॥

दयानीत जग जस विख्यात दयानीत जिनवर वरगात ॥ पु० ॥

ॐ ह्रीं दयानीताय अर्घं निर्घामि ॥१४॥

पाइता उंद-जिन अंघरीख पद सेवों निरदोष निजातम वेंवों ।

गिरि मंदर पूज रचावों अयशवत भावत भावों ॥१५॥

ॐ ह्रीं अघरीपाय अर्घं निर्वपामि १५॥

जश नारद तुंवर गावैं । जिन तुंवर सों लय लावैं ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं तुसाय अर्घं निर्वपामि १६॥

विफलीकृत कामकलका । जिन सर्व शील जु अटका ॥ गि०॥

ॐ ह्रीं सर्वशील्यय अर्घं निर्वपामि १७॥

जनमोच्छ्व सार धरें हैं । प्रतिजातक पाप हरें हैं । गिरि०॥

ॐ ह्रीं प्रतिजातकाय अर्घं निर्वपामि १८॥

जित इंद्रिय दिव्य भए हैं । सुअतिंद्रिय शर्म लए हैं । गि०॥

ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय अर्घं निर्वपामि १९॥

तप आदिततें अति तेजा । तप आदित भवि शिवभेजा । गे०

ॐ ह्रीं तपादित्याय अर्घं निर्वपामि २०॥

रतनत्रय क्रांत धरें हैं । शिव रतनकीर्ण सुवरें हैं । गिरि०॥

ॐ ही रतनकिरणाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२१॥

दिवसाधिप सेवत आई । प्रणमामि दिवेश सदाई ॥ गिरि०॥

ॐ ही दिवेशाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२२॥

शुभ लच्छन लच्छित गीता । जिन लांछित सो जग तीता।गि०॥

ॐ ही लच्छनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२३॥

निज शुद्ध प्रदंश करैया । सुप्रदंश कलेश हरैया।

गिरि मंदर पूज रचावों । अयरावत भावित भावों ॥२४॥

ॐ ही सुप्रदेगाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥२४॥

लोलतरंग उद्द ।

पूरन अर्घ्य वनाय पुनीतं । पूजत हों जिनके नुत भीतं ॥

मंदर उत्तर भाविय सारं । वदत “वृंद” करो भवगारं ॥२५॥

ॐ ही मंदराचलैरात्रत भाविचतुर्विगतिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

वत्सा-जै चिद्रगुन दर्पन भविसंतर्पन शिवदिव्य अर्पन विघ्नहरा।  
जै जै भगवंतं कृत भव अंतं अतुल अनंतं ज्ञानधरा ॥१॥

तोटक उद--

प्रणमामि जशोधरसार जसी । कृत सुकृत सुकृत देव वसी ।  
जय घोष अम्बै जिन शुद्धमती । निरवान नमो निर्दोष जती ॥२॥  
व्रतवास सदा भवत्रास हरेँ । अतिराज नमो सुखकंद करैँ ॥  
नित अश्वजिनेश विपाद हरेँ । जिन अर्जुन अर्जुन कीर्त करैँ ॥  
चंद्र जिनद गर्निद भजे । सु सरीरिऊ पाय संतद जजैँ ।

र मेर महेश महा । पद ग्रीवक ग्रीवसु देत रुहा ॥४॥

सु प्रहार दिदप्रहर । प्रणमामि दयानिन नीत धरं ॥

संवर अवर ईप गहा । जश गावत तुंवर तुंवरहा ॥५॥

सब सील महामनि भूखन हैँ । प्रतिजात सदा निरदूखन हैँ ।

सुख शुद्ध अतिप्रिय चूखन हैँ । तप आदित ज्ञान अदूखन हैँ ॥६॥

रतमश्रय रत्न सु कर्ण धरै । सु दिवेश महामल जीर्ण करै ।  
 जिन लांछन लांछित वीरकला । सुप्रदेश अशेष कलेश दला ॥७॥  
 वर पुष्कर मंदर मेर लसै । अथरावत उत्तर तास वसै ।  
 तसु भाविय तीरथ नाथ सही । गुनध्यावत पावत मोच्छ मही ८  
 तिनसौं अरदास करों नितही । प्रभु भक्ति सदा निवसो चित ही ।  
 तव आगमज्ञान रहो हियमें । नित आतमध्यान जगो जियमें ९  
 रतनत्रय प्राप्त होहु सही । जिहि ते द्रष्ट पाइय मोच्छ मही ।  
 जब लौं न मिलै जिनराज हमें । तवलों इतनों हम नित पमें ॥१०॥  
 शिवसाधन जोग सदैव मिलो । अनुभौ रस अद्भुत चित्त पिलो ।  
 दु खदारिद विघ्न विनाशकरो । सुखसंपत्तसार सु गेह भरो ॥११॥  
 धता-जै शिवसरभंजन कलमलभंजन मुनिमनकंजन रंजकरा ।  
 जै सद्यनिरंजन भविद्विगंजन विपतिविगंजन तंज हरा ॥  
 ॐ ही मंदराचलैरावतभावि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महाधर्ष निर्वपामि ।



अथाशीर्वादः । चैवोल छंद-

ती.चौ.

२९४

आठों दरब मिलाय गाय गुन जो पूजे जिनराज जती ।  
पुष्करदीप छुस्ति मंदिर गिर ऐरावत भावत सुमती ॥  
सो जन पुत्र भित्र धन जोवन वांछित लाभ लहत है अती ।  
शक्र चक्र अनुभूति पायके "वृंदावन" है मुक्तपती ॥

इति श्रीपुष्करार्द्धदीपे मंत्रराचलैराग्रतभाविपूजा समाप्ता ।

इति चतुर्थमेरूपूजा सपूर्णा ।

अथ पुष्करार्द्धदीपे मेरुसंबंधी विदेहक्षेत्र संस्थित  
विहरमान पूजा प्रारभ्यते ।

छंद सारंगी धुनिवर्ण १५

आपा शुद्ध चैतन्यं मे जे धीरं साधिं बंधे ।

जा देखें हैं हों शं जीमें निग्रयायीं ज्यो पेटे ॥  
सो ह्याति में चाहों तेरो सेवा स्वामी नौ माभी ।

पाँचै मेरं वेदे हों में थापों ह्यां चारों स्वामी ॥  
ॐ हीं पुण्डरीकदीपयस्त्रिभुङ्गनालीमेरुकेविदेहक्षेत्रसर्वधी चारिविहरमान  
श्रीश्रीरसेनमहाभद्र देवजशञ्जितवीर्यं जिन-अत्रावतर अत्रतर संवोपद् आह्वाननं ।  
अत्र तिष्ठतिष्ठ टाड स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भयभव वपद् स्वाशः ।

अथाष्टकम् ।

(चाल भाषा सिद्धाष्टक ध्यानतीवलाशकी)

नीर विमल शीतलमहा भरि कंचनभारी लाय ।  
तुम पद पदम चढ़ाइयो मम करम कलंक नशाय ॥  
विद्यन्माली मेरुके लखि चारि विदेह महान ।  
समवसरन जुत पूजिहौं चहु विहरमान भगवान । वि०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्यचतुर्विहरमानजिनेभ्यःश्री-  
वीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्य जन्मजरामृत्युचिनाशाय जल निर्वपामि ।

केशर चंदन वावनों घसि कदलीनंद मिलाय ।

तुम चरनन पर पूजते सच विघन सघन मिटिजाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्यचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्री  
वीरसेन-महाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यश्चंदन निर्वपामि ।

शालि अखंडित सेत हैं शुभ पुंज धरंत सुधाय ।

दरिद्र द्रुम दुखनाशिकें सुख अखय संपदा पाय ॥वि०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिमविद्युन्मालीमेरुविदेहस्यचतुर्विहरमानजिनेभ्यः  
श्रीवीरसेनमहाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

कूल सुगंध सुवास है अलिगुंजत जापे आय ।

सो तुम आगे धारते सच समरशूल नशिजाय ।वि०।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपपश्चिममेरुविदेहस्यचतुर्विहरमानजिनेभ्यःश्रीवीरसेन-म-

हाभद्र-देवजश-अजितवीर्येभ्यः पुण्यं निर्वपामि ।

नेवज सज छुरस सुगंधता मन नैन स्सन सुखदाय ।

सो ले तुम आगे धरो सम रोग छुवा नशिजाय ॥ वि० ॥

ॐ ह्रीं षण्कारधर्मीपथिमेरुदिहक्षेत्रस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्यः नैवेद्यं निर्वपामि ।

यह दीप प्रकाश महालसे निरक्षम नयन प्रिय लाय ।

तासों तुम आरति करों उर आरततम छै जय । वि० ॥

ॐ ह्रीं त्रिबुन्मात्रीमेरुदिहक्षेत्रस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन-महाभद्रदेवजश-अजितवीर्येभ्यः दीपं निर्वपामि ।

दशगंध सुगंध उखेइये जिन तुम चरनन द्विग लाय ।

करम कलंक जौ सही मो धूम द्रम उडाय । विहरमा ॥

ॐ हा त्रिबुन्मालीमेरुदिहक्षेत्रस्थचतुर्विहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेवराज-अजितवीर्येभ्यः धूं निर्वपामि ।

फल पक् रसीले पावने भरि हाटक थार मगाय ।

दारिद्र विघन विनाशियै हम पूजत हैं शिरनाय ॥ वि० ॥

ॐ ही विद्युन्मालीभेषजिद्वेदक्षेत्रस्थविहरजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव  
जग अजितवीर्येभ्यः फलं निर्वापामि ।

जल फल वसु दसव संजोयके कर जेरि जजों शिवराय ।

आनंद संपति दीजियै अरिनाथ कसो जिनराय ॥ वि० ॥

ॐ ही विद्युन्मालीभेषजिद्वेदक्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्रदेव  
जग अजितवीर्येभ्यो अर्घं निर्वापामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

चौपाई छंद—

पुष्कार्द्ध गिर पश्चिम शीता । उत्तर पुंडरीक नी मीता ।

भातु मातु भुविपाल नरिंदा वीरसेन शैरावत छंदा ॥

ॐ ही वीरसेनाय अर्घं निर्वापामि ॥१॥

पुष्करार्द्धं गिर पश्चिम शीता दच्छिन विजै नगर नवनीता ।  
देवराज सुउमादे जननी । महाभद्र जजि शशि पग जननी ॥

ॐ ही महाभद्राय अर्थं निर्वणामि ॥२॥

पुष्करार्द्धं गिर पश्चिम लसे सीतोदा जम सुशिमा वसे ।  
गंगा माश्रव भूत नरेसुर स्वस्ति लच्छ देवजस जिनेसुर ॥

ॐ ही देवजगाय अर्थं निर्वणामि ॥३॥

पुष्करार्द्धं गिर पश्चिम गनों सीतोदा उत्तर तट भनों ।  
अजितवीर्य नगरीय अजोभ्या मातु कननिका कमल सुवोध्या

ॐ ही अजितवीर्याय अर्थं निर्वणामि ॥४॥

दोहा—समव शरन शोभा सहित विहरमान भगवान ।

पूजत सुरनर नागपति ह्रम पूजत धरिन्धान ॥

ॐ ही विगुन्माळी मेकविदेह क्षेत्रस्थविहरमानजिनेभ्यः श्रीवीरसेन महाभद्र

देवजश अजितवीर्येभ्यः पूर्णाधि निर्विषामि ॥

ती चौ.

अथ जयमाला

घटा—जै केवलदिनमनि मोहतिमिरहनि भव्यसंगजनि मोदकरा  
शिवराय दिखावनजे जगपावन प्रापनशावन विघ्नहरा १

नैमालनी तामरस चंडी छंद—

वीरसेन गुनसेन नमस्ते । महाभद्र सुखदेव नमस्ते ॥  
सदा देव जेशदाय नमस्ते । अजित वीर्य पदध्याय नमस्ते ॥२॥  
तीर्थकर अमलान नमस्ते । संजुत केवलज्ञान नमस्ते ।  
समवसरन थित देव नमस्ते । इंद चढ गनसेव नमस्ते ॥३॥  
द्वयालिश गुनभडार नमस्ते अशरन जन आधार नमस्ते ।  
वानी खरत त्रिकाल नमस्ते । श्लत गनधर हल नमस्ते ॥४॥  
दरसावत सब तत्त्व नमस्ते । गहत जहां भविसत्व नमस्ते ।  
केहू श्रावक नतधार नमस्ते । केहू होत अनगार नमस्ते ॥५॥  
केहू करम प्रजाल नमस्ते । लहत केवल विशाल नमस्ते ।

केइ अघान बियात नमस्ते । शिखपुरकीं सुनिजात नमस्ते ॥६॥  
 केइ आत्मम अनुभवत नमस्ते । सांत सुधारस पवन नमस्ते ।  
 इत्यादिक धूप रीत नमस्ते । चलन मुकूनमग नीत नमस्ते ॥७॥  
 सदा अगम गुनवंत नमस्ते । जै जै शिवतिय कंत नमस्ते ।  
 मम मनसा परिपूर नमस्ते । रहो सु आप हजूर नमस्ते ॥८॥  
 सेवो जुगपद कंज नमस्ते । भववाधा मम भंज नमस्ते ।  
 तुम प्रसाद हानि कर्म नमस्ते । होहु आप सम पर्भ नमस्ते ॥९॥  
 वता-जै जै गुनसंचन दूपन रंच न देव अवंचन ज्ञानपते ।

तुम सेवत सज्जन वाजतवज्जन गावतभज्जन भावरेते ?०

ओं तीं त्रिधुःमायैरुदित्थेनस्थमिहमान जिनभ्यः श्रीश्रीभ्यै न महाभद्र  
 देवज्य अजितवीर्यभ्यः महानं निर्मपामि ।

अनाशीर्वादिः-गीताञ्जलि—

जश गाय गुत उर धाय दख मिलाय जो शिरनाईजी ।



पूजै सदा जिनराय पुष्कर अरध पश्चिम जाइजी ॥  
श्री वीरसेन सु आदि चार विहारमान विदेहमें ।

सोनर सुरग सुख भोग आतम सुख लहे शिवगेहमें ॥  
इति श्री विद्युन्माली मेरु के विदेहक्षेत्रस्थ विहरमान पूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुके भरतक्षेत्र संबंधी  
वर्तमाना २४ जिनपूजा ।

लोलतरग छंद—

विद्युतमालिय मेरु विराजै । दन्दिन्नभर्त सुतामधि छजै ।  
त्रौविश वर्तसुमान जिनंदा । यापतु हों सुखसागर चंदा ॥

ॐ हौं विद्युन्मालीमेरुभरत वर्तमानजिनअत्रावतर अवतर संवौपद् आह्वाननं  
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव  
वपद् स्वाहाः ।

• अथाष्टकं ।

( चाल-मोहि राखों हो शरना ) टप्पा—

हम पूजैँ हो चरना । वरतमान जिनराजके ।हम०  
 विद्युन्माली मेरु विराजत दच्छिन भरत सु वरना  
 चौविश जिन सुरनरसुनिगन धर सेवत पातकहरना।हम०टेका  
 प्राशुक जलभरि कनकभृंगमें धार तीन सो हरना ।

जनम मरन मल धोय तुरित भो सागर पार उतरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतर्तमानजिनेभ्योजन्याद्विविनागाय जल्यैर्निर्वषामि  
 वाचनचंदन कदलीनंदन घस सुगंध विसतरना ।

भवतप हरन चरन जुग पूजत विधन ताप निखरना ।हम०।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतर्तमानजिनेभ्यो गंधं निर्वषामि ।.२।।

तंडुल मंडुल शशिसम शोभत अजिय जुगत जसु वरना ।

पुंज धरत तुम चरनकमल द्विग अखै संपदा करना ॥हम०॥

ॐ ही त्रिदुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्योऽक्षतं निर्वपामि ॥ ३ ॥

सुवरन सुमन सुगंधित शोभित सुवरन थारी भरना ।

मनमथ मथन चरनतर धारत समरशूल छैकरना ।हम०।

ॐ ही त्रिदुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यः पुणं निर्वपामि ॥ ४ ॥

नव्य गव्य पक्कवान वनाथौ मधुर सुरस मृदु धरना ।

क्षुधा रोग निखारन कारन पूजत हों तुम चरना ।हम०॥

ॐ हीं त्रिदुन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यश्चक्रं निर्वपामि ।

जग मग जोत होत दीपगकी तासों आरति करना ।

तिमरमोह निश्नासि छुरित निज आनमजोत सुधरना ।हम०।

ॐ हीं विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामि ।

दशविध गंध मनोहर'ले जिन सनमुख खेवन करना ।

करम काठकों जारि मभू यह विनती बहुविध करना ।हम०॥

ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिन्द्रेभ्यो धूप निर्वापामि ।

सुरस मधुर रितु फल कलवर्जित रसन नैनमन हरना ।

चरचत चरन जुगल जिनवाकै मुकतरमनिक्कूं वरना ।हम०॥

ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिन्द्रेभ्यः फलं निर्वापामि ।

जल फल सकल मिलाय अरघकरि मुजश विविधविधिवरना ।

जजों तुमें त्रिसुवनपति जिनवर भववाधा परिहरना ।

हम पूजै हो चरना, वरतमान जिनराजके । हम पूजै० ।

विद्युन्माली मेरु विराजित दच्छिन भरत सु वरना ।

त्रौविश जिन सुरनर मुनिगनवर सेवत पातक हरना ।हम०

ॐ ही विद्युन्माली मेरु भरत वर्तमान जिन्द्रेभ्योऽयं निर्वापामि ।

अथ प्रत्येकार्थ ।

दोहा-हितकारी सर बांगके श्री सर्वांग जिनेश ।

जजों भर्त वर्तत महा विद्युत नाम नरेश ॥२॥

ॐ ह्रीं सर्वांगस्वामिनर्द्धं निर्दिषामि ॥२॥

प्रभव अनूपमकूं धरें देव प्रभाकर भेस । ज० वि० ॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युत्प्रभाय अर्धं निर्दिषामि ॥२॥

श्री पद्माकर पद्मद्युति पद्मा देत अशेश । ज० वि० ॥३॥

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्धं निर्दिषामि ॥३॥

बल अनंत बलनाथमें शोभत नवल निवेश । ज० वि० ॥४॥

ॐ ह्रीं बलनाथाय अर्धं निर्दिषामि ॥४॥

तिहू जोग निम्बार निज जोगनाथ गुनभेस । ज० वि० ॥५॥

ॐ ह्रीं जोगीश्वराय अर्धं निर्दिषामि ॥५॥

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपात क्रिय । मूक्ष्म अंग निपुनेस । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मार्हाय अर्थं निर्वणामि ॥६॥

चल मल दोष वितीत हे । चला तीत वृत्तदेश । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं चलातीताय अर्थं निर्वणामि ॥७॥

ध्वांत ध्वांस करता अखिल । देव कलंत्रक येश । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं कलत्रकाय अर्थं निर्वणामि ॥८॥

पर परन्त परित्याग क्रिय । श्रीपरित्याग महेश । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं परित्यागाय अर्थं निर्वणामि ॥९॥

विधि पोषक सोपक अविधि श्रीनिषेधक जिनेस । ज०वि० ॥

ॐ ह्रीं निषेधकाय अर्थं निर्वणामि ॥१०॥

पाप हरन सुख करन सत्र ॥ पाप प्रहार जगेस । ज० ॥

ॐ ह्रीं पापप्रहाराय अर्थं निर्वणामि ॥११॥

मुक्त बधू वर-विमल गुन । मुक्त चंद्र बुधि भेस ।

जजो भर्त्तं वर्त्तन महा । विद्युत मालि नगेस ॥१२॥

ॐ ह्रीं मुक्तचंद्राय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१२॥

ब्रह्म सारवती-

स्थान मई अप्रकाश जिनं । वामध सेवत पाय तिनं ।

विद्युत मालिय भर्त्तमहा । वर्त्तन पूजत सुक्खलहा ॥१३॥

ॐ ह्रीं अमकाशाय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१३॥

अस्त रु नास्त पदार्थं कहे । श्री जै चंद्र कलेस दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं जैचंद्राय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१४॥

अन्तर बाह्य हरे मलको । देहु मलाधर श्यो थलको ।विद्यु०॥

ॐ ह्रीं मलधारिणे अर्घ्यं निर्वणामि ॥१८॥

स्याद सु अस्त पदार्थं कहे । जैति सु संजत कर्म दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं सुसंजताय अर्घ्यं निर्वणामि ॥१६॥

स्याद सु नास्तिय वस्तु भने । निरमल श्रीमल सिंधुवने ।वि०॥

ॐ ह्रीं मल्लैस्त्रिन्धवे अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

स्यादकंथचित्त अस्त परं । स्वक्ष गुनाकर अक्ष धरं ।वि०॥

ॐ ह्रीं अक्षधराय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

अस्त अकथ्य कंथचित है । जैति धरा गुन संचित है ।वि०॥

ॐ ह्रीं धराय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

नास्ति अकथ्य कथचित है । देव गणाधिप दोष दहे ।वि०॥

ॐ ह्रीं गणाधिपाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

अस्त रु नास्त अवाच कथं । चित्त अकामिक पाप मथं ।वि०॥

ॐ ह्रीं अकामिकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

सातहु भंग अंभंग भने । नित्य विनीत अनीत हने ।वि०॥

ॐ ह्रीं विनीताय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

राग रु दोष वितीत सदा । वीतित राग जिनेश वदा ।वि०॥

ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥



आनंद अंशुधि वृद्ध करे । शुद्ध स्तानंद मोद भरे ।  
विद्युत मालिय भर्त महा । वर्तत पूजत शर्म लहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं स्तानदाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

शोरठा छंद-विद्युत माली मेरु, पुष्करार्ध पूख दिशा ।

भरत संत जिन हेर, पूजो पूरण अर्घ सों ॥२५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतस्थवर्तमानजिनभ्यो पूर्णार्घं ।

अथ जयमाला ।

धत्ता-जै जै जगवंदित पाप निकंदित नित आनंदित शुद्धमती ।  
जुत विभव अमंदित सदयसुखंदित जै निरफंदित वोधपती ।

पद्यही छंद—

जय जगतहितू सरवांगदेव । वंदामि प्रभाकर शुन अद्वैव ।  
जै पद्माकर पदमानिधान । बलनाथ तनें सुनि धरत ध्यान ॥२॥  
जै जोगीश्वर सुर नमत पाय । सूक्ष्मांग नमो मन वचन काय ।

ॐ बलातीत निहचल सरूप । ॐ ऐति कलंकक सुख अन्तूप ॥३॥  
 परित्याग नमो करजोर चित्त । ॐ ऐति नियत्र जिन जगपचित्त ।  
 ॐ पापप्रहारी हरन पाप । ॐ मुक्तचंद भबिहरत ताप ॥४॥  
 ॐ अपक्राशक प्रकाश ज्ञान । जयचद जिनद दयानिधान ।  
 ॐ मल धारी जिन शिवधाम देत । ॐ ऐति सुसंजत सुगुनसेत ॥५॥  
 मलसिंधु धिमल गुन वेत सार । प्रणमामि अन्नधर जगत तार ।  
 ॐ धरादेव भिव धरा दाय । ॐ ऐति देवगण नितसहाय ॥६॥  
 सुरगज अगामिक नमत आन । नित नीत निपुन सु विनीतवान ॥७॥  
 ॐ वीतराग करुना निधान । लछ देतु रतानद सकल धान ।  
 ए चौविश जिनवर धरतमान । निशुतमाली गिर भरत जान ।  
 जिहि सेवत वासव सुदित अंग । गुन ध्यावत गावत साजसग ८  
 द्विमि द्विमि धिधिरुडवाजत मृदंग । संसाग्रदि साग्रदिसारगिचंग ।  
 क्रिनिकिनिकिनिकिनि क्रिक्रिनि करत । करतलसुरान्वितथुनिशुरन्त ।  
 ता थेड थेड थेड थेड धरत पाव । ताना थेड थुगत अंगत चलाव ।  
 धुगतां धुगतां धुगतां गतवजे पुष्ट । तनननन तान अलापि सुष्ट ॥१०॥

इत्यादि समाज मिलाय इंद्र । तुव जशगावतु ॐ हे जिनंद ।  
 तुम पच कल्याणक ईश परम । गुन सागर अगम अनत शर्म ११ ॥॥  
 हम शरन गही दुख खड खड । मन वांछित आनंद मंड मंड ॥  
 भव वाधा मेरी मंड मंड । शिवराधा सों कर भेट भेट ॥१२॥  
 धवा-जै जै गुनमूरत अनुपमसूरत आनंद पूरत परमपती ।

“वृदावन” ध्यावत शीसनवावत वांछित पावत शर्म अती १३  
 ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीमेरुभरतवर्तमानजिनेभ्यो महार्धं निर्वपामि ॥

अथाशीर्वाद-शार्दूलविकीर्णित छंद—

जो पूजे मनलैय पाय जिनके सद्द्रव्य औ भावसों ।  
 विद्युन्मालिय भर्त वंरतु महा ताकों जपैं चावसों ॥  
 सो पावे धन धान्य शर्म सकलं शक्राधि द्वै के सही ।  
 चक्री होय अतिद्वि आनंद लहै श्रीसिद्ध की जो मही ॥

इति विद्युन्माली मेरुभरतवर्तमान पुजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्माली मेरुभरतीति जिन पूजा प्रारभ्यते ।

दोहा-विद्युन्मालाय मेरु के भरतीति जिनराय ।

थापों चौविश सुगुननिधि आय आय प्रभु आय ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराक्ष्मीये विद्युन्मालीमेरुभरतीतच्चतुर्विंशतिजिनसमूह अत्रा-  
वतर अवतर सर्वोपद् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ टः टः स्थानं । अत्र  
मम सन्निहितो भव भव वपद् स्वाहा

अथाष्टकं ।

वशंततिलका वंद—

सज्जान्हवीय जल उज्जल हेमंभारी धाराकरों त्रिविध रोग हरो हमारी  
श्रीपुष्कर च्छर्द्दगिरिविद्युतमालिनामीपूजोसुभर्तवर्तीतिजिनेशस्वामी

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरु भरतीतच्चतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वयामि ॥

काश्मीरचंदनकपूरसुगंधपूरेतसोसमरचतप्रभु भवतापचूरे ।श्री०।

ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चदनं निर्वपामि ॥  
 युक्ता समान सित तंदुलसार सेहे,

‘धारंत पुंज मनवांछित सुख हो है । श्री० ।  
 ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तंदुलं निर्वपामि ॥

कुंदारु विंदवर केतुकि पुष्पसार,

हे नाथ धारहुँ इहां हर शूलम्हारे । श्री० ।  
 ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

नानाप्रकार चरुसार रसाल लायो,

तासों समरचत क्षुदा दुखको नशायौ । श्री० ।  
 ॐ ही विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चरु निर्वपामि ॥

वाती कपूर घृत पूरित दीपकीनों,

ताकों चढ़ाय निज आतम ज्ञान लीनों । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥  
 कृष्णागरु प्रमुख धूप अनूप सेवो,

कर्मोद्य दाहि निज आतमरूप बेवों । श्री० ।

ओं ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

काम्राप्रजाम शुभ पक्वदल्वंग एला,

इत्यादि सोचत मिले शिव संगवेत्ता । श्री० ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥

गंगा जलादि सत्र द्रव्यफलार्थं साजे,

वाजे वजे जजत पाप समस्त भाजे ।

श्रीगुरुकरार्द्धं गिरि विद्युत्तमलिनामी,

पूजों सुभर्तवरतीत जिनेशस्वामी ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामि ॥

## अथ प्रत्येकार्घं ।

मोदक छंद—

पद्मसुचंद महा ह्यवि आनन । भाषतर्धम अदोप पुरानन ।  
विश्रुतमालियमर्त विराजत तीतज्जे भवि ओनेद साजत ॥

ॐ ही पद्मचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

सद्गुणरत्न विभूषन भूषित रत्नशरीर नमो निरद्वीपत । वि० ।

ॐ ही रत्नांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

जोगि यजोगनि द्वार निहास्त । देव अजोग तिजोगनिवारत । वि०

ॐ ही अजोगाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

दायकसिद्ध सु अर्थ पुनीतम । श्रीसखाथ सिद्ध अभीतम । वि०

ॐ ही सिद्धार्थाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीकृपनाथ किये कृप कर्मनि । दीप्त शरीर हरो भवि भर्मनि । वि०

ॐ श्री कृपनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

इंद सुचंद सदा पद सेवत । श्रीहरिचंद निजांतम वेवत । वि०।

ॐ ह्रीं हरिचन्द्राय अर्थं निर्वपामि ॥६॥

द्वादशभेव सभा जशगावत । सद्गुणजुक्त गुणाधिप ध्यावता । वि०।

ॐ ह्रीं गुणाधिपाय अर्थं निर्वपामि ॥७॥

या भव औ परमौ सुख कारन । देव परत्र कलेश निवारना । वि०।

ॐ ह्रीं परत्रेकाय अर्थं निर्वपामि ॥८॥

पूरन ब्रह्म पदाविन्त राजत । ब्रह्म सु नाथ प्रभाढ्वि छाजता । वि०।

ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्थं निर्वपामि ॥९॥

आँनदकंद चिदानंद स्वामिय । श्रीमुनिचंद नमै शिवगामिय । वि०।

ॐ ह्रीं मुनिचन्द्राय अर्थं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीकुल दीपक दीपक वंदिय । दायक मोखपुरी अभिनंदिय । वि०।

ॐ ह्रीं कुलदीपकाय अर्थं निर्वपामि ॥११॥

राजनिके पति पूजत पंडित । राजशिषी रिषिपंकति मंडित । वि०।



ॐ ही राजर्षये अर्घ्यं निर्वपामि ॥१२॥

भव्यप्रबोधक धर्मं सु भाषत । देव विशाख निजानंद चाखत वि०

ॐ ही विशाखाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१३॥

नाथ अनंदित आनंद मंदिर । हें निकलंक्र नमंत पुंरंदर ।वि०

ॐ ही आनंदिताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१४॥

छंद इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्र ।

जे मानुसे दीप्त धरें शरीरं वंदों रवि स्वामि जिनें संधीरं ।

श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ही रत्नस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१५॥

श्रीसोमदत्तं प्रणमामि देव । आनंदकंदं शतइंद सेव ।श्री०

ॐ ही सोमदत्ताय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१६॥

जेकामे शत्रू कहि छीन कीनों नमों जयस्वामि महाप्रवीनों श्री०

ॐ ही जयस्वामिनेऽर्घ्यं निर्वपामि ॥१७॥

जे मोक्षक्षमी जुत केल कर्ते । ते मोक्षनाथं भवतीत हर्ते । श्री०

ॐ ह्रीं मोक्षनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

निसर्गसम्यक्तमुद्यत्क दाता सो अग्रभावी जगमंविख्याता । श्री०

ॐ ह्रीं अग्रभावनैऽर्घं निर्वपामि ॥१९॥

ध्यावों सदा सो धनुषांग स्वामी धनुषैरशार्चित मुक्तधामी । श्री०

ॐ ह्रीं धनुषांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

सुधाधरं व्यक्त उत्तंगकाया श्रीमुक्तनाथं प्रणमों जिनाया । श्री०

ॐ ह्रीं मुक्तनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

रोमांचको ध्यावत शर्म पावै आनंद रोमांच लुंगंत आवै । श्री०

ॐ ह्रीं रोमाचाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

प्रसिद्ध संबंध सुसिद्ध धारी । प्रसिद्ध नाथं भव सिंधुतारी । श्री०

ॐ ह्रीं प्रसिद्धनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

जो जीव को वांछित देत नीके जिनेश सो ईस सवे जती के ।

श्रीपुष्करे विद्युत मालि नामी । पूजों सदा भर्त अतीत स्वामी ॥

ॐ ही जिनेशस्वामिनेऽर्घं निर्वपामि ॥२४॥

दोहा-पूरन अर्घ वनायकें जजों जुगल कर जोर ।

विद्युतमाली भर्तके तीत जिनेसुर ओर ॥२५॥

ॐ ही पुष्कराद्विहीपविद्युन्मालीमेरुभरतातीतजिनेभ्यः पूर्णांघं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

घटा-जै जिनगुनसागर सुजश उजागर सेवत नागर नीतमती ।

सत्र विघनविनाशन उन्नत शासन ज्ञान प्रकाशन बुद्धपती ।

छद्द दोहा आचलीबंध ।

विद्युनमालीमेरके दच्छिन दिश सुखकार ।

भरतीतजिनपतिजजों ध्यावों पर अविकार ।

भविहो जिनगुनगावो भावशोजीपदमचंद पद्माकरें श्रीरतनांगअनूप

नमहि अजोग जपो सदा सरवारथ सिव भूप । भवि हो० ॥२॥

करम कृपण कृपनाथैँ श्री हरिचंद दयाल ।  
 जैति गुणाधिप सुगुन निध जै परत्रिक गुवमाल ॥ भविहो० ॥  
 ब्रह्मनाथ आनदमैँ नमों सुनिन्द जिनद ।  
 दीपक जग दीपक भए राज ऋषी सुख कंद । भविहो० ॥  
 धौ विशाख अभिलाष मम आनंदित जित कर्म ।  
 रवि स्वामी शिवमग अखैँ शोमदत्त निरभर्म । भविहो० ॥५॥  
 जै स्वामी जै देतु हैं मोक्षनाथ सुख हेत ।  
 अग्रभाव बुधि दीजिये धनुष अग सुधि लेत । भविहो० ॥६॥  
 मुक्तनाथ शिवसाथ हैं रोमांचक अधचूर ।  
 जैति प्रसिद्ध सुसिद्धकौं श्री जिनेश सुख पूर । भविहो० ॥७॥  
 गरभागम पट मासलौं नवथित गरभ मझार ।  
 इंद रतन वरषा करी दिन त्रिवार मनि धार । भविहो० ॥८॥  
 जनमत सुरगिर न्होन करि निज नियोग विसतार ।  
 पिता शौंपि जिनसेवकौं राखे सुर सु कुमार । भविहो० ॥९॥

भोग भोगि तज राजकों जोग धरे अविहार ।  
 त्रैसट सिद्ध लहे तवे मौन सहित त्रतधार । भविहो० ॥१०॥  
 घाति घाति केवल लयो लोकालोक प्रकाश ।  
 समवशरन रचना वनी इन्द्र भर शतदाश । भविहो० ॥११॥  
 फिर अघाति चक्रचूरिके मोक्ष भए जिनचद ।  
 गुन अनत इकरूप है बंदत भवि नित “बृंद” । भविहो० ॥१२॥

वत्ता--जै श्रीजिनस्वामी त्रिभुवननामी गुनअभिरामी शिवधामी ।

तव पादनमामी हृदय धरामी पाप नशामी सुखपामी ।

ॐ ह्रीं त्रिभुमालीमेरुभरतभाविचतुर्विजिन्ग्यो धूं निर्धामि ॥७॥

अथाशीर्वाद-जोगीगसा छद—

पुष्करार्द्ध गिर त्रिभुतमाली पच्छिम माहि विगजै ।

तास भरत तित तीत जिनेसुर आनंदकारी छवजै ॥

तिनपद जो भवि साजि समाजनि पूजत भगत धराई ।

सोसुर नरसुख भोगि सकल विधि अनुक्रम शिवपुर जाई ॥

इति श्री विद्युन्मालीमेरुभरतातीतपूजा समाप्ता ।

अथ विद्युन्मालीमेरुभरतत्राविजिनं पूजा प्रारभ्यते ।

छंद मदाविलिप्त कपोल ।

विद्युतमाली मेरु दीप पुष्कर मह छाजत ।

तासु भरत के माहि भविष्यत जिनवर राजत ॥  
तिनको थापों इहां जुगलपद पूजन कारन ।

आय प्रभु इत अवे सकल दुखदद निवारन ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीभरतभात्रिचतुर्विंशतिजिनममूह-अत्रायतर अत्रतर संबी-  
पद् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठ स्थापन अत्रमम सन्निहितो भवभवपपद् स्वाहाः।

अथाष्टकम् ।

छंद रूपक कविता-

हिमवन गिरगत गंगाजलवर कंचनभारी भरकर लाय ।

मनवचतन पुलकित नित पूजत जनमजरासृत रोग पलाय ॥  
 विद्युत्माली मेरु भरतके भावी जिनवरजग सुखदाय ।  
 पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वंदत जसु पाय ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।  
 वावनचंदन कदलीनंदन केसरसंग सुगंध घसाय ।

भवतप हरन चरन जिनवरके पूजत ही भवताप पलाय । वि०  
 ॐ ही त्रियुन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदन निर्वपामि ॥२॥

सेतशालि शुभ शशिसग दमकत गमकत वास नैनसुखदाय ।  
 पुंजथरत दुखदंदहरत आनंदभरत अनुपम सुखदाय । वि०

ॐ ह्रीं त्रियुन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ॥३॥  
 कमल केतुकी वेलचमेली सुमनसुमन समसुमन सुभाय ।  
 सुमनमथमदमंथनके कारण सेवो मनमथमथनजिनाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यःपुष्पं निर्वणामि ॥४॥

नव्य गव्य मनमोदन मोदक खाजे ताजे लुपित उपाय ।

छुथरोग निखारन कारन पूजत हों पदमंगल गाय वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्य निर्वणामि ॥५॥

जगमग जोत होत दीपक की तासों आरति करी मुजाय ।

प्रभुतन माहि तास दुति दरशत मानों ध्यानकनी सरसाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीपं निर्वणामि ॥६॥

धूप अनूप उखेवत हों प्रभु तुम ढिग वात होत्र में डाय ।

ध्यान अगनि में करम जेरें हूँ धूम धूम यह तास उड़ाय । वि०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो द्रुपं निर्णामि ॥७॥

आम जाम अभिगम सुफल कलवर्जित पक्व मधुर मनलाय ।

तासों अरचत तुम पदपंकज विघनसघन ततखिन नशिजाय । वि०



ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फलं निर्वपामि ॥८॥  
 जल चंदन तंडुल प्रशून चरु दीप धूप फल अग्रघ वनाय ।  
 पूजोँ चरन करन सुखसंपत् तारन तरन जगत वरदाय ॥  
 विद्युतमाली मेरु भरतके भावी जिनवर जग सुखदाय ।  
 पूजत चरन हरन दुख संकट इंद वृंद वदत जस पाय ॥  
 विद्युन्मालीमेरुभरतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्योर्ध्वं निर्वपामि ॥९॥

अथ प्रत्येकार्घ्यं ।

मोतीदास छंद--

प्रभाव कौरै सुरराजुञ्ज आय । प्रभावकदेव, नमोँ शिरनाय ।  
 सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्तं जजोँ यरिभ्यान ।

ॐ ह्रीं प्रभावकाय अर्घं निर्वपामि ॥१॥

नमोँ नरदेव उमंग समेत । नमोँ विनतेन्द्र जिनेंद्र सुचेत । सु०  
 ॐ ह्रीं विनतेद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

विभावसुभाव विभेदन हार । सुभावकदेव नमो अविकार । सु०

ॐ ह्रीं सुभावकाय अर्घं निर्घामि ॥३॥

दिनिंदसमान प्रकाश शरीर । नमो नित श्रीदिनकार सुधीर । सु०

ॐ ह्रीं दिनकराय अर्घं निर्घामि ॥४॥

अनंग विकार निवारन देव । सदा जय अंग सुतेज अर्धेव । सु०

ॐ ह्रीं अनगतेजाय अर्घं निर्घामि ॥५॥

सुभव्यनिकों धनधान्य करंत । नमों धनदत्त जिनेश महंत । सु०

ॐ ह्रीं धनदत्ताय अर्घं निर्घामि ॥६॥

सुप्रख कर्म विपाक विनीत । जिनेसुर पौरव हूं निरभीत । सु०

ॐ ह्रीं पौरवाय अर्घं निर्घामि ॥७॥

सदा समदिष्टिय सेवत पाय । सुखाकर श्रीजिनदत्त जिनाय । सु०

ॐ ह्रीं जिनदत्ताय अर्घं निर्घामि ॥८॥

चंद्रं धनघातियकर्म हनंत । त्रिलोकहितू प्रसु पार्श्वमहंत । सु०

ॐ ही पार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

गनांबुधि श्रीसुनिसिन्धु अगाथाजपे नितचित्त पुनीतम साध सु०

ॐ ही मुनिसिंधवे अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

सु अस्त रु वस्त प्रशस्त वताय । नमो कमलाधर अस्तक भाय । सु०

ॐ ही अस्तकाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

भवोदधि तारनकों समश्रथ । सुरेशनेमं भवनीकहि मश्रथं ।

सुविद्युत मालिय मेरु महान । भविष्यत भर्त जजो धरि ध्यान ॥

ॐ हीं भवनीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद सूत्र ।

नृपनाथ नृपकुल पाल । पूजो सदा गुनमाल ।

पञ्चम सुराचल तथ्य । भावी भरत समश्रथ ॥

ॐ हीं नृपनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

नारायनाय जिनेय । ध्यावो नारायणध्येय । पञ्चम०

ॐ ही नारायणाय अर्घं निर्वापामि ॥१४॥

प्रशमोक प्रशम प्रदाय । पूजों सुजश गुनगाय । पञ्चम०

ॐ हीं प्रशमोकसे अर्घं निर्वापामि ॥१५॥

भूपति भजै पदकंज । सुपति भजों भेभंज । पञ्चम०

ॐ ही भूपत्येऽर्घं निर्वापामि ॥१६॥

केवल सुदृष्ट विकाश । पूजों सुदृष्ट हुलाश । पंचम०

ॐ ही सुदृष्टये अर्घं निर्वापामि ॥१७॥

भवभ्रंति भीत अतीत । भवभीरु जजि जगमीत । पंचम०

ॐ हीं भवभीरवाय अर्घं निर्वापामि ॥१८॥

आनंद कंद जिनंद । नंदन जजों सुख कंद । पंचम०

ॐ हीं नंदनाय अर्घं निर्वापामि ॥१९॥

जै शुद्ध बुद्ध अक्रुद्ध । भार्गव जजों जुत श्रि । पंचम०

ॐ हीं भार्गवाय अर्घं निर्वापामि ॥२०॥

वासव सदा जलु भक्त । पूजों सु वासव व्यक्त ।पंचम०

ॐ ह्रीं वासवेऽर्थं निर्वपामि ॥२१॥

वस विश्व जास वसंत । पर वास जिंनहि जजंत ।पंचम०

ॐ ह्रीं परवासवे अर्थं निर्वपामि ॥२२॥

वनवसत नाशि उपाथ । वनवासि साथ अराथ ।पंचम०

ॐ ह्रीं वनवासिजिनाय अर्थं निर्वपामि ॥२३॥

भरतेश कमला करन । पूजों सकल जन सन ।

पंचम सुराचल तथ्य । भावी भरत समरथ्य ।

ॐ ह्रीं भरतेशाय अर्थं निर्वपामि ॥२४॥

रथोद्धता छंद—

पूर्ण अर्थ यह अत्र धारिहो । ध्याय गाय जश पाप टारिहों ।

पुष्करार्थ गिर पंचमें सही । भर्त भावि जिन पूजिहों यही ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्थद्वीपत्रिद्युन्मालीमेरुभरतभाविजिनेभ्यः पूर्णार्थं निर्वपामि

अथ जयमाला ।

धृता-जे शिवमगमंडन कलुपविहंडन कृतत्रहमंडन शर्म अती  
दाखिद्रुमखंडन जै भवहंडन हरनप्रचंडन कर्मगती ॥

छंद नमालिनी तामरस चंडी ।

जै प्रभाष शिवराव नमस्ते । विनतेंद्रं जुगपाय नमस्ते ।  
जै सुभाविक दयाल नमस्ते । श्री दिनकर गुनमाल नमस्ते ॥१॥  
अगंतज जसपुंज नमस्ते । धनदत्त सुखसुज नमस्ते ।  
पीरव पूरन शर्म नमस्ते । जै जिनदत्त सु पमं नमस्ते ॥३॥  
पार्श्वनाथ शिवसाथ नमस्ते । सुनिसिधव मम नाथ नमस्ते ।  
अस्तिक जिनगुनवत नमस्ते । श्रीभवनीक महंत नमस्ते ॥४॥  
श्री दृपनाथ सुनीश नमस्ते । नारायण जगदीश नमस्ते ।  
प्रशमोकश जठाराश नमस्ते । भूपत यिमलविलाश नमस्ते ॥५॥  
जै सुदिष्ट जग इष्ट नमस्ते । भवभीखव गुन मिष्ट नमस्ते ।  
नंदन आनंद कंद नमस्ते । भांगव जिन निरकंद नमस्ते ॥६॥

जे सुवासव पुनीत नमस्ते । परवासक जगमीत नमस्ते ।  
 श्री वनवास मुनिद नमस्ते । जे भरतेश जिनद नमस्ते ॥७॥  
 पुष्कर पंचम मेर नमस्ते । भरत भविष्यत हेर नमस्ते ।  
 चौवीशों जिनराय नमस्ते । गुन अनत समुदाय नमस्ते ॥८॥  
 पंच कल्याणक राय नमस्ते । शिव मारग दरशाथ नमस्ते ।  
 गनधर पूजत पाय नमस्ते । "दुंदावन" शिरनाय नमस्ते ॥९॥  
 वत्सा-जे जेशवंतं जिनभगवंतं सुगुन अनंतं शुद्ध मते ।  
 नित ध्यावत संतं जेति महंतं लब्धि लेशंतं बुद्धपंतं ॥

ॐ ह्रीं पुष्कार्धद्वीपवियुन्मालीमेरुभरतभावीजिनेभ्यो महाधर्मनिर्वपामि ।

अथाशीर्वाद-गीता छंद—

वसु दस्य सुंदर साज जो जिनराज वरन जजै नरा ।  
 पुष्कर सु पंचम मेरु भरत भविष्य श्रीमजिनवरा ॥  
 सो सकल पुत्र सुमित्र सपत लहत सार समाज कौ ।

अनुक्रम वरे शिव परम गमनी भविक जन हितकाजकों ॥

इति श्री भरतपञ्चमाचलसंन्यासीभारिचतुर्विंशति प्रजा समाप्ता ।

अथ पुष्करार्धद्वीपविद्युन्मालीऐरावत  
वर्तमान २४ पूजा ।

दोहा-विद्युन्माली मेरुके ऐरावत छित माहि ।

‘धरतमान चौवीश जित थापों इत प्रभु आहि ॥

ॐ ह्रीं पचमानैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अमतर सर्वोपद्  
आहाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ वः वः स्थापन । अत्र मम मन्निहितो भव भव वपद् स्वाहा

अथाष्टकं ।

छद चौबोल-

कौरीदधि सम उजल जल शुभ कनक कटोरी माहि भरे ।

जनम जराघृत नाश करनकों श्रीजिन सनमुख धार करे ॥



पुष्करार्थं गिर विद्युत्तमाली ऐरावत शुभ खेत धरे ।  
 वरतमान चौवीश जिनेसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जल निर्वपामि ।  
 केशर चंदन दाह निकंदन कदली नंदन गंध भरे ।

जलसगधसि लसि मसिसम समकर पूजत भवआताप हरे । पु०  
 ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो गध निर्वपामि ।

तंडुलसेत निशकर वारिजं छीर छटा हिम हीरहरे ।  
 कंचनथार विषे तसु पुंज सु पुंजत ही दुख दोष टरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यस्तंदुल निर्वपामि ।  
 कामवली प्रतिकै सबके सब रुद्रनिके सब जेर करे ।  
 तासु विनासनि जानि तुम्हें प्रसु प्रसु पूजत फूल सुगंध भरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्य पुष्प निर्वपामि ।  
 रोग छुधा जंगजलुनिकों नित जेर करें छिन नाहि टरे ।

तासु विनाशन जानि तुमें जिन पूजहु नेवज व्याधि हरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजिनेभ्यः परं निर्वापामि ।

मोह महातम छाया रह्यो जग नाहि हिताहित दिष्ट परे ।

सो तुम नाशि प्रकाश कियो शिव दीप चढ़ावत भर्म हरेपु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपं निर्वापामि ।

काल अनाद वितीत भयो संग कर्मनिके दुख भूरि भरे ।

तुम द्विग धूप अनूप उखेळं ज्यौं वसु कूर प्रचूर जरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशतिजिनुभ्यो धूपं निर्वापामि ।

ज्ञान अतिद्रिय शर्म अनाकुल आतम परम सुधर्म धरे ।

सो प्रगटो मम हे जिन स्वामिय सेवतु हो फलथार भरे । पु०

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतर्तमानचतुर्विंशति जिनेभ्यः फलं निर्वापामि ।

जलचंदन तंडुल प्रशून चरु दीप धूप फल अर्घ करे ।

नाचि राचि शिरनाय समरचत भव भवके सववापहरे ।  
 पुष्करार्ध गिर विद्युतमाली ऐरावत शुभ सेत धरे ।  
 वरतमान चौवीश जिनेसुर सुरपति पूजत प्रीत भरे ॥२४॥  
 ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतवर्तमानचतुर्विंशति जिनभ्योऽर्थं निर्वपामि ।

अथ प्रत्येकार्ध ।

चौपाई छंद--

गंग घटासम अंग विशुद्ध । गांगेयक वंदत वर शुद्ध ।  
 पुष्कर पंचम मेरु लसंत । ऐरावत जिन संत जजंत ॥  
 ॐ ह्रीं गांगेयकाय अर्थं निर्वपामि ॥१॥  
 मल्लवास जसरास पुनीत । मुक्तमुक्त दानी जगभीत । पु०

ॐ ह्रीं मल्लवासे अर्थं निर्वपामि ॥२॥

भीम जिनंद भीम भैहत । मुखकारी जे जे अरिहन्त । पु०  
 ॐ ह्रीं भीमाय अर्थं निर्वपामि ॥३॥

दयानाथ सेवंत विदग्ध । स्तनरास करि दारिद्र्य । पु०।

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

श्रीसुभद्र दायक नित भद्र । भद्रभाव जुत सुगुन समुद्र । पु०

ॐ ह्रीं भद्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

स्वामीनाम नमों जिनराय । ध्वजा चिन्ह जह बहुत मुहाय । पु०

ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

हनिक नामजिन गुनमनिमाल । द्वादशसभा सहित जगपाल । पु०

ॐ ह्रीं हनिकाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

नंदघोष जिन जगजन पोष । चतुरानन राजें निरदोष । पु०

ॐ ह्रीं नंदघोषाय अर्घं निर्वपामि ॥८॥

रूपवीज श्रीजिनगुन खान । कोटि भानु हुति देखि लजान पु०।

ॐ ह्रीं रूपवीजाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

वज्रनाभ वज्राधिप सेव । नटसाला नाचै नट देव । पु०

ॐ ह्रीं वज्रनाभाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

श्रीसंतोष तोपाद पोप । मदिर पंक्तिरुचिर चित चोप । पु०

ॐ ह्री संतोषाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

श्रीसुधर्म जिन परम दयाल । सोहत हे देवद्रुम माल । पु०

ॐ ह्री सुधर्माय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

श्रीफनीस पद फनपति ध्यात । पुष्पवाटि फल फूल सुहात ।

ॐ ह्री फनीश्वराय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

वीरसेन जश किन्नर सार । गावतु हें नानाप्रकार । पु०

ॐ ह्री वीरचंद्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

मेधानीक नभों जिनचंद्र । स्वच्छ छवी ह्याजत मुखकंद पु० ।

ॐ ह्री मेधानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

स्वच्छनाथ गुन स्वच्छ अनंत । सुर जश गावत ध्यावतसंत  
पुष्कर पंचम मेर लसत । ऐरावत जिन संत जंतत ।

ॐ ह्रीं स्वच्छनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

दोहा-कोप छय करि कोप छे भापत सबहित वैन ।

नग पंचम ऐशवते वरतमान जजि चैन ॥१७॥

ॐ ह्रीं कोपछयाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

जयति अकामक कामकर समवसरन थित लेन । नगव्वरा

ॐ ह्रीं अकामकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

धरमधाम अभिराम नमि गंध कुटी छवि देन । नगव्वर ।

ॐ ह्रीं धर्मधामाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

सुक्तेसन वंदत विद्युथ वन उपवन जह ऐन । नगव्वर ।

ॐ ह्रीं सुक्तेसेनाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

क्षेम करनं छेमंग जिन साल फूल सुखदाय ॥

गिर पचम ऐशवते वरतमान पद ध्याय ।

ॐ ह्रीं क्षेमकराय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

दयानाथ आनंद घन मृगराजा सनसीन ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत अमलीन ॥

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

कीर्तपाय जिनराय जजि प्रश्नोतर करतार ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखकार ॥

ॐ ह्रीं कीर्तपायजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

शुभकर जिन शुभ करत नित मंगल नित नौदाय ।

गिर पंचम ऐरावते जजों संत सुखदाय ॥२४॥

ॐ ह्रीं शुभकराय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

मालिनी छद्-जल फल सब साजे बाजते सार वाजे ।

गिर पनम विराजेरावते वर्त ताजे ॥

चटु जुग जिनराजे पंच कल्यान साजे ।

पद जजि महराजे सर्वे कल्याण पाजे ॥  
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतयतेमानचतुर्विगतिजिनेभ्यः पूर्णाधिं निर्वपामि ।

अथ जयमाला ।

जै जिनगुनमालं विरद विसालं सुरनुतमालं सुकुमालं ।  
जै कवि कुलमालं अरिपरिजालं जैति कृपालं शिवचालं ॥

पद्मिणी वंद—

जै गणदेव शिवसंग सार । जै मल्लवास मदमल्ल डार ।  
जै भीम भीम भव हरन देव । जै जैति दयाधिक गुन अछेब ॥२॥  
जै जैति भद्र भद्रेश कर्ण । स्वामी जिनवर भवभीत हर्ण ॥  
जै हनक हरण मनमल समस्त । जै नंदघोष भापत सुवस्त ॥३॥  
जै रूपवीज वीरज उदार । जै वज्रनाभ भवसिंधुतार ॥  
संतोष जैति दुख दोष चूर । जै जिन सुधर्म जिनधर्म पूर ॥४॥  
जै जिन फनीश फनपति नमत । जै वीर चंद जिनगुन अनंत ।  
मेघानिक मेघा नमत पाय । जै स्वच्छनाथ शिव मग यताय ॥५॥



सोप छैकर निज होष दीन । तै जे अहाप कामद मरीन ॥  
 रघीसनाय पुन 'राम शूर । जे मुक्तिमैत जुन रिल्य मिल्द ॥३॥  
 क्षेत्रीग क्षेमदारी मदीच । तै दुरानाय फल्ला अनीर ॥  
 । कोयोग करत द्योग । श्रीशुभ निरार भर समुद योग ॥५॥  
 प पंचम तिर पेरारतंग । तै परतमान योयोग सेव ॥

कल्याणक पण विगासना । जरसागत पाळन निरदगान ॥६॥  
 अर नुस मों दाला पाप आज । दया जार्ची मनु समार काज ॥  
 भ सागर तें नोहो निकाल । मर अरज तगो मिलयो त्रिपाळाः॥७॥  
 रच । तै दयाशुंर शिवपुर मंदर । जज्ञत पुंदर भगत भग ॥

दुानय शत्रुमंजन ममरुत मंडन कलुष विहंडन कुमनिहम ॥  
 २० श्री पंचमरंगानरंगानरुपिगिनिंन्यो मरुठे विरोधि ।

'पंचमरंगानरुपिगिनिंन्यो मरुठे विरोधि -

विजुतसानी भेक विराजत मारजी ।

गगन नट योभित परम उग्ररजी ॥

चौविस जिन तह वरतमान जो पूजई ।

सो भवि सब सुख पाय मुकत पद कूजई ॥

इति श्रीपंचमाचलैरात्रते वर्तमानचतुर्विंशति पूजा समाप्ता ।

## अथैरावतातीतचतुर्विंशति जिन पूजा ।

तोटक छंद-

गिर पंचम पुष्कर दीप तनों । अयावततीत जिनेश भनों ।

चववीस सुथापतु हों इतही प्रभु आय करो भविके हितही ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरात्रतातीतचतुर्विंशतिजिन-अत्रात्रतरअत्रतसवौपद् आहानन ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरात्रतातीतचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ ठःठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनअत्रममसनिहितो भयभयपद्स्वाहा ।

अथाष्टकं ।

लावनी-गही है नाथ शरन तेरी ।

भव पाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ लुरित भेरी । गही०  
पुष्कर पंचम भेर विराजित ऐरावत हेरी ।

तीत जिनेसुर पद परिपूजन मिटत जगत फेरी । ग० टेंक ।  
छीरोदधि सम नीर सीर भरि कनक भुंगमेरी ।

धार करत तुम चरन कमल तर सकल कलुष छेरी । ग० ।  
ॐ हीं पंचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥१॥

वावन चंदन कदली नंदन जल संघ घसि लेरी ।

पूजत चरन जुगल करुनानिध भवतप चूरी ॥ गही० ॥

ॐ हीं पंचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चंदनं निर्वपामि ।

देवजीर सुखदास वास दुतिरास तंडुलेरी ।

पंज धरत दुख कुंज हरत जिनपद सु पूजतेरी । गही० ।

ॐ हीं पंचमाचलैरावतीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यस्तदुलं निर्वपामि ।

पारजात मंदार सुमन संतान जाति केरी ।

चरचौ चरन हरन मनमथ मद शुद्ध शील देरी । गही०

ॐ ही पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः पुप निर्वपामि ।

छुधा रोग निरवार निराकुल पद तुमने लेरी ।

नेवज साजि जजौ जगनायक हेरो व्याध मेरी । गही०

ॐ ही पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यश्चक्रं निर्वपामि ।

केवल भान प्रकाश प्रभू तुम सच परगासेरी ।

दीपक सो आरती उतारों निज प्रकाश देरी । गही०

ॐ ही पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ।

दुष्ट अष्ट तुम नासि पुष्ट पद माहि थिर भयेरी ।

हम पूजें दशगंध धूपसों कूर अरि जेरी ॥ गही०

ॐ ही पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूपं निर्वपामि ॥

विघ्न सधन वन ध्यान अगनिसों तुम परजालेरी ।

हम प्राशुक फलसों पद पुजै वांछितार्थ देरी । गही०

ॐ ही पंचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यः फल निर्वपामि ॥

सुम अनंत गुन लहे अनूपम अमल अचल हेरी ।

हम पूजै पद अशय थार भर मियो जगत फेरी । गही हैनाथ ।

भवपाथ परत जगनाथ गहो अब हाथ तुरित मेरी ।

पुष्कर पंचम मंरु विराजत ऐरावत हेरी ।

तीत जिनेसुर पद परिपूजत मिटत जगत फेरी । गही है ।

ॐ ही पचमाचलैरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ ।

हरिणी छद-

भवातप शांत करंत सदा । नमों उपशांनि प्रशांति प्रदा ।

सु पुष्कर पंचममेर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥१॥

ॐ ही उपशातिजिनराय अर्घ निर्वपामि ॥१॥

शरीर अनूपम सोहत है । सो फल्यु जगजन मोहन है । सु० ।

ॐ ही फाल्युजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥२॥

नमों पुरवास सु आस भरे । जिनेश अशेष कलेश हरे । सु० ।

ॐ ह्रीं पूर्वाशाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

त्रिलोक सुहावन रूप लसै । नमों जिन सुन्दर पाप नसै । सु० ।

ॐ ही सुदराय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

धरे गुन गौरव गौरवता । नमों जिन गौरव गौरवता । सु० ।

ॐ ही गौरवाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

कषाय सवे चकचूर किया । त्रिविक्रम आनंद पूरि दिया । सु० ।

ॐ ही त्रिविक्रमाय अर्घं निर्वपामि ॥६॥

जुशेष गयंद सृगिद सम । नमों नरसिंघ कुकर्म दमं । सु० ॥

ॐ ही नरसिंघाय अर्घं निर्वपामि ॥७॥

कहों विधि हास रतादि हनें । नमों मृगवासव सार पने ।

सु पुष्कर पंचमेपर कहा । जजों अयरावत तीत महा ॥

ॐ ही मृगवासवे ऽर्घं निर्वपामि ॥८॥

छंद प्रियवदा—

पुरुषवेद निखार कीन है । परम शोभ जिन सो प्रवीन है ।

त्रितिय दीप गिरि पंचमैं सही । जजत तीत अयरावते यही ॥

ॐ ही शोभाय अर्घं निर्वपामि ॥९॥

सुमल लोभ जिह्व सूक्षम नासियो । जिन सुधाव सुवोध भासियो ॥ त्रि०

ॐ ही शुद्धावराय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

दुखद पंचविधि नाद नासियो । जिन अपाप सवस्तु भासियो ॥ त्रि०

ॐ ही अपापजिनाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

दरशनावरन अंत कीन है । जिन विवाध नमते प्रवीन हे त्रि०

ॐ ही विवाधाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

मति श्रुतावरन आदि जे कहा । हरन संधिक जिने शते महा ।

त्रितिय दीप गिर पंचमं सही । जजत तीत अयरावते यही ।

ॐ ह्रीं सधिकाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

हेंदू रथोद्धता—

विधन पंचजिन निधनकीन हें । मान थात्र जिनसों अर्धीन हें ।

पुण्कार्थं गिर पंचमं सही । तीत पूजत यरावते मही ॥

ॐ ह्रीं माघात्राय अर्घं निर्वपामि ॥१४॥

शुक्लध्यान दुतिवत शुद्ध हें । अथतेज जिनसों विशुद्ध हें । पु०

ॐ ह्रीं अश्वतेजाय अर्घं निर्वपामि ॥१५॥

पुद्गलीक गुनतें सु जे जुतं । सोय देदवर विद्यया जुतं । पु० ।

ॐ ह्रीं विद्याधराय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

बंध आधि तन भेद थे जिते । सो सुलोचन हने सहीतिते पु०

ॐ ह्रीं सुलोचनाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

सर्वं संहननसों वितीत हें । मौनकं निधि नमों सुमीत हें पु०



ॐ ह्रीं मौननिधाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

पुंडरीक जिनकों नमों सदा । छः प्रकार परजाप्त सों जुदा पु०

ॐ ह्रीं पुंडरीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

जैति चित्रगण मित्रजीय के । रक्षपाल पटकाय ह्रीय के पु०

ॐ ह्रीं चित्रगणाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

छद् दुत्तपा--

त्रिविध जोग जिनमें चकचूर । गुन समुद्र मनि इंद्रजु प्रेर ।

पुहकरार्ध गिर पंचम नामी । जजहु तीत अयरावत स्वामी ॥

ॐ ह्रीं मुनिद्राय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

गुननिधान परघात दला है । सत्र पूज निज सर्व कला है पु०

ॐ ह्रीं सर्वकलाय अर्घं निर्वपामि ॥२२॥

सकल भूखत्रिष रोग निवासे । जयनि भूरिश्रवने सुखरासे पु०

ॐ ह्रीं भूरिश्रवाय अर्घं निर्वपामि ॥२३॥

परमपुन्य जुतकाय अनूपं । जय पुनंग जिनवर जसरूपं ।  
 पुहकरार्द्धे गिर पंचमनाभी । जजहु तीत अथरावत स्वामी २४  
 ॐ ही पुणांगाय अर्घं निर्वपामि ॥२४॥

मुमुषी छद -

पुहकर पंचमंगर गनों । तह ऐगवत खेत भनों ।  
 जिनवर तीत जजामि सदा । कर धर पूरन अर्घं अदा  
 ॐ ही पचमाचंखरावतातीतचतुर्भिगतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामि ॥

अथ जयमाला

वचा-जै जिनजगवंदित जन आनंदित जैति अमंदित मोनवती  
 सम दमजुते राजत सत्र सुख साजत भवभै भाजत हे सुअती

छद नयमालिनी तामरस चढी-

उपशांतिक मति मडिन जै जै । फलगू जिन हुलू खडित जै जै ।  
 श्री पूर्वास अखंडित जै जै । सुन्दर जिन भ्रम दंडित जै जै ॥२॥

गौरिक हरिहर वदित जै जै । त्रीविक्रम सु अमदित जै जै ।  
 नरसिधेस सु छंदित जै जै । मृगवस जगदानंदित जै जै ॥३॥  
 सोमेशुर सुखदायक जै जै । शुद्धाबर सब लायक जै जै ।  
 श्री अपाप गुन ह्यायक जै जै । जिन विवाध शिवनायक जै जै ।४।  
 सधिक भवदधि तारन जै जै । मांधात्रे मद मारन जै जै ।  
 अश्वतेज जगटारन जै जै । विद्याधर उद्धारन जै जै ॥५॥  
 श्री सुलोचन प्रकाशक जै जै । मौनिधी वृत वासव जै जै ।  
 पुंडरीक जसरासक जै जै । चित्रगुनी गुनरासक जै जै ॥६॥  
 श्रीसुनिरिंद महंत जै जै । सर्वकला भगवंतं जै जै ।  
 मूरिश्रव भवअंतं जै जै । जिन पुण्यांग अनंतं जै जै ॥७॥  
 पुष्कर पचम गिरवर जै जै । तीतरावत जिनवर जै जै ।  
 वदत सुरनर सुनिवर जै जै । अमल अचल शिवतिथ वर जै जै ८  
 दास सदा यह जाचतु जै जै । होहु भगत नित शांचतु जै जै ।  
 सुर सुरेश मनरांचतु जै जै । सुजश गाय इमि नाचतु जै जै ।९।

पग नूपुर छवि द्वाजतु जै जै । मांदल द्विमि द्विमि वाजत जै जै ।  
 चंग उपग अवाजत जै जै । अंगत अंगत गत शाजत जै जै । १० ।  
 साग्रदि सांरंगी सुर बाजत जै जै । कटक किनिनिविराजत जै जै  
 द्रुति लखि रवि शसि लाजत जै जै । भगत करत अघ भाजत जै जै ११  
 मिथ्यामति मल मजन जै जै । विघनसमूह विंगजन जै जै ।  
 वृन्दावन" मन रंजन जै जै । जै जिन रवि भविकंजन जै जै ॥ १२ ॥

धचा-जै धरमप्रकाशक भूमतमनाशक शिवमगभासक ज्ञानपते  
 दारिद्र द्रुमच्छेदक जैति अखेदक वेद विवेदक वेदमते ॥ १३ ॥

ॐ ही पचमाचंलरावतातीतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्थ निर्वपामि ॥

चौबोल उद ।

आठों दरब मिलाय गाय गुन जो भविजन जिनराज जैजै ।  
 पुष्करार्थ गिर विद्युतमाली ऐरावत में तीत सजै ।  
 सो लहि पुत्र भित्र सुख संपति भोग मनोग समस्त विजै ।

अनुक्रम करम नासि करि भवि वह मुकत धाम में राज रजै ।

अथाशीर्वादः—

इति पंचमाचलैरावततीतचतुर्विंशति पूजा समाप्ता ।

अथ पंचमाचलैरावतभावि २४ पूजा प्रारभ्यते ।

तोटक छंद—

गिर पंचम को ऐरावत है । जिन भाविय मो मन भावत है ।  
जिहि ध्यावत आनद पावत है तिहि थापत पूज स्वावत है ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्रावतर अवतर सनौपट् ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिन अत्र मम सन्निहितो भव भन वपद्

अथाष्टकं ।

चालनहीधराष्टक भापा दानतरायजी कृतकी तथा होली गर्भाजादि अनेक चालमे

उज्जल जल शीतल लाय हाटक भुंग भरा ।

सुम चरनन देत चढ़ाय भेटत जनम जरा ॥

गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजत धरि ध्यानो ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्गिशतिजिनेभ्यो जलं निर्वपामि ॥

शुभ चदन कंदन दंड कदलीनंद लिया ।

जलसों वसि पूजि जिनंद भवतप दूर किया । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्गिशतिजिनेभ्यो गंधं निर्वपामि ।

सुकताफल हिम हरि हीर दमक गमक धारी ।

धरि तंडुल मंडुल वीर दारिद दुख हारी । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्गिशतिजिनेभ्यस्तंदुल निर्वपामि ॥

शुचि सुमन सुभन सम आन सुमन सुमन नीकि ।

करि मदन कदन पनवान पूजत पदजीकि । गि० भा० ।

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभाविचतुर्गिशतिजिनेभ्यः पुष्पं निर्वपामि ॥

रस रासत नेवज सार कंचन थार भरा ।

तुमकों अरपत अविकार रोग समूह हरा । गि० भा० ।

ॐ ही पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामि ॥

तम भंजन-दीप संवार आरति कीन्ह सही ।

मम तिमर मोह निरवार आरत मेंट यही । गि० भा० ।

ॐ हीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो दीप निर्वपामि ॥

कृष्णागर अगर कपूर धूप उखेवत हौं ।

सव जरत करम मम कूर तुम पद सेवत हौं । गि० भा० ।

ॐ हीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो धूप निर्वपामि ॥

रित फल कलवर्जित लाय सुवरन थार भरा ।

तुम पूजत विघन नशाय वांछित लाभ करा । गि० भा० ।

ॐ हीं पंचमाचलैरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो फलं निर्वपामि ॥

वसु दरव सवार पवित्र अरघ सुहाय लिया

पद सेवों हे जगमित्र दीजे सुकत प्रिया ॥  
गिर पंचम परम पुनीत ऐरावत जानो ।

भावी जिनवर जगमीत पूजों धरि ध्यानो ॥  
ॐ ह्रीं पंचमाचलैरावनभावि चतुर्विंशतिजिनेभ्यो ऽर्घ्यं निर्वपामि ॥

अथ प्रत्येकार्घ्ये ।

छंद समुद्रिका मात्रा १४ ।

अमलगुन अदोप में गनो । परम धरम कारने मनो ।  
गिर पनमयरावतें जजों । जिन भवतव औंनदें सजों ॥

ॐ ह्रीं अदोपाय अर्घ्यं निर्वपामि ॥१॥ .

छंद सुमुखी मात्रा १४

वृषभ जिनेश कलेश हें । जिन वृषको उपदेश करें ॥  
पुहकर पंचम मेर जजों । भवतव उत्तर खेत सजों ॥

ॐ ह्रीं वृषभाप अर्घ्यं निर्वपामि ॥२॥



छंद सूर मात्रा १२—

जिनदेव विनायानंद । आनंद अंबुधि चंद्र ।  
गिर पंचमैरावत । भावी भजे भौ तर्त ॥ ३ ॥

ॐ ही त्रिनयानंदाय अर्घं निर्वपामि ॥३॥

छंद लोलतरंग मात्रा १६—

श्रीमुनि भारत आतमज्ञानी । आतम की अनुभूति धरनी ।  
पंचमैर जजों सिर नाई । भविय देव यरावत राई ॥ ४ ॥

ॐ ही मुनिभारताय अर्घं निर्वपामि ॥४॥

छंद सारस्वती मात्रा १४—

इंद्रक इंद्र फनिंद्र नमे । आतम आँनंद कंद पमें ।  
पुष्कर पंचम मेर सजों । भवियरावत देव जजों ॥५॥

ॐ ही इंद्रकाय अर्घं निर्वपामि ॥५॥

छंद इन्द्रवज्रा मात्रा १८ ।

चंद्राननं चंद्र सुकेत स्वामी । आँनद वाराणिधि वृद्धनामी ।

एरावते भावित नाथ पूजों । श्रीपुष्करे पश्चिम मेर दूजों ॥६॥  
 ॐ ह्रीं चंद्रकेताय अर्थ निर्वपामि ॥६॥

छद्द उपेन्द्रवज्रा मात्रा १५

प्रभाकरक्रांति अनन्त धारी । नमों ध्वजादित्य अनेक तारी ।  
 सु पुष्करार्द्धी परमेर सौहे । भविष्येतेरावत चित्तमोहे ॥७॥

ॐ ह्रीं ध्वजादित्याय अर्थ निर्वपामि ॥७॥

छद्द इंद्रवगा मात्रा १८ ।

सु वस्तुकों एकहि काल जनिहीं । सु वस्तुवोधं जिन धारिभ्यानहीं  
 स पुष्करार्द्धी परमेर सौहे । भविष्येतेरावत चित्त मौहे ॥८॥

ॐ ह्रीं वस्तुवोधकाय अर्थ निर्वपामि ॥८॥

छद्द हरिनी मात्रा १५ ।

नमों नित मुक्तगती जिनकों । सुरेश नरेश नमै तिनकों ।  
 सु विद्युतमालिय भेरु जजों । भविष्य यरावत खेत सजों ॥९॥

ॐ ह्रीं मुक्तगतये ऽर्घं निर्वपामि ॥९॥

छद्द वसततिलका वर्ण १४ ।

श्रीधर्मवोधकप्रवोधकभव्यप्रानीर्ऑनदंक्रदनिजआतमरूप ध्यानी  
श्रीपुष्करार्धं मह पश्चिममेरजानों। ऐरावतें जजत भवितधारि ध्यानों

ॐ ह्रीं धर्मप्रवोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१०॥

छंद आर्यां सर्वं मात्रा ६० ।

श्रीदेवांग जिनेशं, नमं सदा जाहि सर्वं देवेशं ।

पुष्कर पंच नगेशं, ऐरावत भावि संजजैते ॥

ॐ ह्रीं देवाङ्गाय अर्घं निर्वपामि ॥११॥

छद्द प्रियवद्वा वर्ण १२ —

कलुषदारन उदार हैं वली । जिन मरीच अरि मीचकों दली ।

पुष्करार्धं गिर पंचमों रजै । जिन भविष्य अयरावतें जजै ।

ॐ ह्रीं मारीचाय अर्घं निर्वपामि ॥१२॥

छंद भुजंगप्रयात वर्ण ? २-

सर्वे जीवके नाथ हैं जीवनाथं । दयार्थर्म दाता सदा मुक्तसाथं ।  
जर्जो पंचमे भ्रूते भावनीकं । कृपासिन्धु ऐरावते भावनीकं ॥

ॐ ही जीवनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छंदमोत्तदिाम वर्ण ? २

जसोधर देव महा जसरास । सुरेश नरेश खगेसुर दास ।  
शु पुष्कर पंचमैरु लसंत । जर्जो अयरावत भावित संत ॥

ॐ ही जयोधराय अर्घं निर्वपामि ॥१३॥

छंद लक्ष्मीधरा वर्ण ? २

गौतमनाथको गौतमेशं भजै । जास आराधते सौख्यसाता सजै ॥  
पुष्करार्द्धीचले पंचमैरावते । भावि पूजे सर्वै शान्ति को पावते ॥

ॐ ही गौतमाय अर्घं निर्वपामि १५॥

छंद द्रुतिविलवित तथा सुन्दरी-

विशद बुद्ध धरं मुनि शुद्धजी । सुजनको नितदायक र्छिजी ॥

जजत पुष्कर पंचम मेरके जिन भविष्य यरावत हेर के ॥

ॐ ही मुनिसुद्धाय अर्घं निर्वपामि ॥१६॥

छद द्रुतपा वर्ण १२-

चिद विलास बुधि वंदत जाकों जिन प्रबोधक नमों पद ताको ।  
पुहकरार्ध गिर पंचम सेवों । जिन भविष्य अइरावत वेवों ॥

ॐ ही प्रबोधकाय अर्घं निर्वपामि ॥१७॥

छद शिखरनी वर्ण १७-

सदानीकं स्वामी सकल सुख संपत्ति करता ।

सदाज्ञानी ध्यानी जगत जनके बलेश हरता ॥

जजों विद्युन्माली विशद गिरकेरावत विषें ।

कृपाधारी भावी अमलगुन कारी शिव दिखें ॥

ॐ ही सदानीकाय अर्घं निर्वपामि ॥१८॥

छद प्रमिताक्षरा वर्ण ॥१२॥-

जिनराज चारित सुनाथ महा । गहि शुद्ध चारित कलंक दहा ।

गिर पंचमं सु अयरावत है । भवतव्य सेय सुख पावत है ॥

ॐ ह्रीं चारित्रनाथाय अर्घं निर्वपामि ॥१९॥

छंद द्रुतिमध्यक प्रथम त्रितियचरन प्रस्तार ॥१॥॥॥ अर द्वितिय

चतुर्थपाद ॥॥॥॥॥ या भाति मात्रा १६ सर्वत्र यथा-

आनंद अंबुधि चंद समाना । अमल सदानंद श्री भगवाना ।

पंचम मेर ऐरावत ध्यावों । भवतव सेवत ह्रीं सुख पावों ।

ॐ ह्रीं सदानन्दाय अर्घं निर्वपामि ॥२०॥

छंद प्रमानिका वर्ण ८

वेदार्थनाथ ध्याइयै सदैव शीस नाइयै ।

गिरिंद पंच भावनों जजोत्तर सु पावनों ॥

ॐ ह्रीं वेदार्थकाय अर्घं निर्वपामि ॥२१॥

छंद नाराच वरन ॥१६॥

निजातमीक लाभ परम धर्म शर्म देत है ।

सुधासुनीक देवजी भवाब्धि माहि सेत हैं ॥  
सु पंचमाचले पुनीत उत्तरें सुखेत हैं ।

जजामि भावनीक जो सुबोधको निकेत है ॥  
ॐ ही सुधानीकाय अर्घ्य निर्वपामि ॥२२॥

छद चामर वर्ण ॥ १६॥

जोति मूर्त देवकों त्रिलोक धोक देत है ।  
शोक थोक नाशके प्रमोदकों लुहेत है ।  
पंचमाचलें सु उत्तरें पुनीत जानिये ॥

भावनीक देव पूजिगीत नृत्य ठानिये ॥  
ॐ ही जोतिमूर्तयेऽर्घ्य निर्वपामि ॥२३॥

छद रथोद्धता-वर्ण ११

श्री सुरार्ध सुर सर्व ध्यावहीं । जासके न गुन पार पावहीं ।  
पंचमाचल यगावतें महा । भावतव्य पर शर्णा में गहा ॥२४॥

ॐ ह्रीं सुराघाय अर्थे निर्धामि ॥२५॥

ॐद पादुकी लध्वत मात्रा १६

लखि पुष्करार्थं मह अपर मेर । अयगवत जिन भवतव्य हेर ।  
पर पूजों तिनकों अरघ धार । संसारऽसातें तार तार ॥

ॐ ह्रीं पंचमाचलरावतभाविचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महाघं निर्धामि ॥

अथ जयमाला ।

यत्ता ॐद मात्रा ६४

जेजै गुनछायक विघन विनायक दास सहायक जगनायक ।  
धरि वरबुधिसायक अरिगन घायक सिवखुखदायक सवलायक ।

ॐद नोटक-

सब दोष अदोष जुचुरत हैं । वृषभेश वृषामृत पूरत हैं ।  
विनयानंद आनंद सूरत हैं । सुनि भारत भौ भय दूरत हैं ॥१॥  
जिन इंद्रक इंद्रनि बंदित हैं । शक्तिकेत जगत आनदित हैं ।  
धुज आदित जोति अमदित हैं । जिन वस्तु विवोच सुछंदित हैं २



जिन मुक्तगती भवभंजन हैं । जिन परम सुधर्म निरजन हैं ।  
 नित देव सुअग अनजन है । जिन मारिच मीचहि गंजन हैं ॥३॥  
 जिय नाथ अनाथहि रक्षत हैं । सब वस्तु जशोधर वक्षत हैं ।  
 जिन गौतम श्यो मग गक्षत हैं । मुनि शुद्ध प्रबुद्ध प्रतक्षत हैं ४  
 सुखसार प्रबोध उमडित है । भविकार सदानिक पडित हैं ।  
 जिन चारि चारु अखडित है । जु सदानंद आनंद मडित हैं ५  
 सु वेदार्थक वेद विवोधन हैं । जु सुधानिक आतम सोधन हैं ।  
 जिन जोति सुमूर्त तपोधन हैं । जु सुरार्थि जगजन बोधन हैं ॥६॥  
 पनमों अथरावत भाविय है । नमते सब आनंद पाविय हैं ।  
 तुम ही भगवंत अनंत गुनी । तुमरो यश मैं निज औन सुनी ७  
 शरना चरना रज आय गही । मम वडित सिद्ध करो सबही ।  
 तुव भक्ति सदा मन माहि वसौ । उरते दुख दोष कलंक नसो ८  
 तुव आगम में चित नित रमों नित संगति साधरमीय पमो ।  
 नित ही अनुभौ रस पान करों । नित सजम पूजन दान करों ९

रतनत्रय भाव सुभाष मिलौ । मल राग रु दोष कषाय ढिलौ ।  
 भव भौ यह जोग मिलो तयलों । शिव नारि धरो प्रभुजो तयलों?०  
 नित मगल होहु प्रमोद मई । वर सपति सार मिलो नितई ।  
 सब विघ्नसमूह विनाश करो । निज दामनिरे सब आस भरो? ?  
 जगमें सुखसागर नृरि भरो । निज धर्म उदोत सदैव करो ।  
 मन वांछित कारज सिद्ध करो । जन "बृद्ध" तनें घर रिद्ध भरो? ?  
 घटा-जे केवल दिनकरतिभिरमोहहर मोखडगर पराकाश करो ।  
 "बृंदावन" वंदत पापनिंकंदत दीजे आनंद कंदवरा ॥

ॐ ह्रीं पचमाचलैरावतभात्रिचतुर्विगलिनैश्चो महाधर्मनिर्वपामि ।

दोहा-जो पूजे मनलायपद भावी जिज चौवीश ।  
 ऐरावत पंचम तनों सो ह्वे सुकत शतीश ॥

इत्याशर्वादि ।

इति श्रीपुष्कार्थद्वीपे ऐरावतक्षेत्रचौबीभीपूजा समाप्ता ।

## अथ समुच्चय पूर्णार्घ ।

छंद माधवी सवैया वर्ण २४

जल चंदन तडुल पुष्प लसै चरु दीप सुधूप फलोव गहा ।  
 सब उत्तमसौं अति उत्तम है तिनको सजि अर्घ सुथाल लहा  
 गत आगत वरतत जे दशहू थल तरिथनाथ दयाल कहा ।  
 तिहि पूजत पूरन अर्घ लिये प्रसु देहु हमें शिव धाम महा ॥

ॐ ह्रीं ढाई ढाई द्वीपके दशक्षेत्रसंवधी गतागतवर्ततजिनेभ्यो ऽर्घपूर्णार्घं निर्वपामि  
 अथ आशीर्वाद—

कवित्त छंद मात्रा ३१

सातसतक अरु तीस वीस जगदीश जजै जो भवि मनलाय  
 ताके पुन्यतनी अति महिमा को कवि कहै वचन दर्शाय ॥  
 मुक्त महल को नीब दियो तिन इंद्र सरा है तसु जश गाय ।  
 शक्र चक्र अहमिंद्र तीर्थपति पदलहि सुखसौं शिवपुर जाय ॥

इत्यार्थीर्वाद ।

इति श्रीतीसचौत्रीसीपूजा वृंदावन अग्रवाल गोयलगोत्री कृत संपूर्णा ।

प्रथम सूत्रात्तरामिदं पुरस्कृतं लिखित्त ग्रन्थकारेण निजपरोपकार  
भाषा होने का कारण, तथा देश नगर शेखी के नामीजन

तथा सहाई तथा कर्ता नाम  
कुल वर्णन ।

दोहा छंद-एक सैं काशी विषैं भयो संसकृत पाठ ।

काशीनाथ कराइयो वन्यो अनूपम ठाठ ॥१॥

तवसैं यह अमिलाप थी भाषा होय मनोग ।

अवै मिल्यो सब जोग तब भयो सुधारस भोग ॥२॥

मनहरन ३ ?

काशीजी में काशीनाथ मूलचंदनंतराम,

नन्हूजी गुलाबचंद प्रेरक प्रमानिये ।

तहाँ धर्मचंदनंद शिष्य सुखलालजी को,  
 बृंदावन अत्रवाल गौयलगोती ठानिये ॥  
 ताने रचे पाठ निज पर परमारथ को

सज्जन सो इहां यह वीनती वखानिये-॥  
 हीनाधिकशोधि शुद्ध कीजिये प्रमोद धारि  
 बालबुद्ध जानिकें दयाल भाव आनिये ॥

दोहा-दरव तत्त्व गुनकेवलसु सम्मत विक्रमवान ।

माह धवल पांचै नवल पूरन परम निधान ॥ १ ॥

जो पूजै इस पाठसों श्रीजिन पद लवलाय ।

मंगल मोद अनेक सुख सो भवि बहु विधिपाय ॥२॥

जिन पूजा फलको सकल को विधि कहै बनाय ।

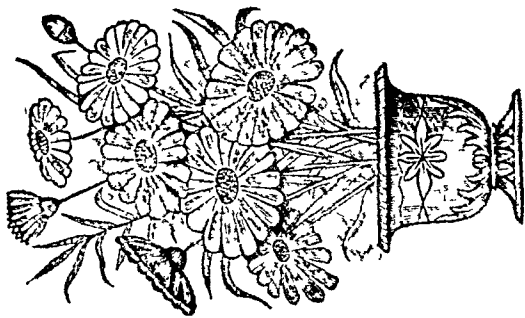
एक दरवसों पूजिके बहुजन सुरपुर पाय ॥ ३ ॥

तातें पूजो देख अरु भाव सहित जिनराय ।  
 जातें हे भवि तुम लहो सुर सुख शिवपुर राय ॥ ४ ॥  
 जवलों रवि शशि गगनमें उदै अमंद धराय ।  
 तवलों यह रचना रहौ निरमल जश सुखदाय ॥  
 जिनवानी रचना रचत जो कछु सुख उपजाय ।  
 सो सुख जाँनै केवली के जाँनै कविराय ॥  
 जै वंतौ जिनराज जो पंच कल्याणक पाय ।  
 सो इत नितमंगल करो मन वृंदांछित पददाय ॥

इति श्री तीरथचौबीसी शृजा भाषा होने का कारन करता देश कुल सैली  
 सहाई फल मंगल संपूर्ण वरनन समाप्तम् ।

शिव भूयात् ।





George Printing Works, Kalbhairo Benares City.

